CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्व प्रसिद्ध लेखक डौमिनीक लापियर तथा लैरी कॉलिन्स

माउंटबैटन और भारत का विभाजन

रहस्योद्घाटनों से भरपूर
बहुचर्चित ऐतिहासिक पुस्तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माउंटबेटन और भारत का विभाजन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5375

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माउंटबैटन और भारत का विभाजन

954.04
S० H०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माउंट भारत का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डौमिनीक लापियर तथा लैरी कॉलिन्स

बैलन और विभाजन

मार्च 22 – अगस्त 15, 1947

सरस्वती विहार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5375

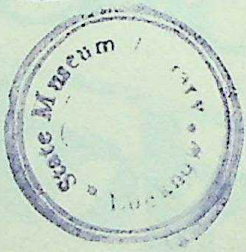

मूल्य : पैंतालीस रुपये

© डौमिनीक लापियर तथा लैरी कॉलिन्स : 1982

प्रथम संस्करण : अक्टूबर 1982
द्वितीय संस्करण : नवम्बर 1982

प्रकाशक | सरस्वती विहार
जी० टी० रोड, शाहदरा,
दिल्ली-110032

☐ Originally published by Vikas Publishing House (Pvt.) Ltd 5, Ansari Road, New Delhi-110002 in the English language under the title :
MOUNTBATTEN AND THE PARTITION OF INDIA

Mountbatten aur Bharat Ka Vibhajan
History of India's Partition
by Dominique Lapierre and Larry Collins

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम

दो शब्द	6
पहला चरण : साक्षात्कार	9
दूसरा चरण : रिपोर्ट	78
नामानुक्रमणिका	173

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' के तीन साल के शोध के दौरान एकत्र सामग्री में से कुछ चुने हुए दस्तावेज़ों का संग्रह अपने लाखों भारतीय पाठकों और मित्रों को भेंट करना हमारे लिए गर्व और सम्मान की बात है।

यह शोध शायद सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम था और जिसके द्वारा किसी इतिहासकार ने संसार के इतिहास को एक बहुत महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय अवधि को न्याय देने का साहस किया है। यह 'दुर्लभ क्षण' वह था जब भारत के एक महान् राजनीतिज्ञ और विश्व-नेता जवाहरलाल नेहरू ने 15 अगस्त, 1947 को आधी रात के समय कहा था, "एक दौर खत्म हुआ और बहुत अरसे से दबी एक देश की आत्मा को शब्द मिल गए हैं।"

हम आज यह सबसे उम्दा फ़सल सिर्फ इसलिए दे रहे हैं क्योंकि हम यह मानते हैं कि यह सामग्री भारत की विरासत है। हम यह भी उम्मीद करते हैं कि यह मूल्यवान अतीत के बारे में जानकारी और समझ को बढ़ाएगी तथा स्वतंत्रता के बाद जन्मी भारतीय पीढ़ियों को अपने गौरवपूर्ण इतिहास को मानने के लिए प्रेरित करेगी।

'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' के शोध में हमने हजार से ऊपर व्यक्तिगत साक्षात्कार किए जिनमें ब्रिटेन, भारत और पाकिस्तान के अतिरिक्त संसार के किसी भी कोने में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं छूटा जिसने ब्रिटिश राज के अन्त और मानवजाति के पांचवें हिस्से की स्वतंत्रता के घटना-क्रम को फिर से निर्मित करने में भाग न लिया हो। हमने तीन लाख मील से भी ज्यादा का सफ़र तय किया और 900 किलो के लगभग सरकारी और गुप्त दस्तावेज़, रिपोर्ट, डायरियां, मेमो, चिट्ठियां, टेप, फिल्म और तस्वीरें इकट्ठी कीं। इस विशाल कार्य में हमने 'इज़ पेरिस बर्निंग?' और 'ओ जेरुसलम!' की सफलता से कमाए 20 लाख रुपये से अधिक लगा दिया।

1971 की गर्मियों में हमारा शोध शुरू हुआ। हम इंगलैण्ड में छः महीने तक राज के आखिरी उत्तरजीवियों से उनके घर जाकर मिलते रहे। आधुनिक युग की एक बड़ी कोलोनियल सत्ता के अन्त की यादें कुछ लोगों के दिलों में ताजी करने के लिए हमने बड़े धैर्य से उनके साथ कई-कई दिन बिताए। एक दिन बरमिंघम के पास स्थित एक रेक्टरी में हम उस आदमी से भी मिले जिसने उत्तर-भारत के नक्शे में विभाजन की रेखा खींची थी। सर सिरिल रैडक्लिफ़ अपने रेक्टरी स्थित निवास के बगीचे में गुलाबों की कटाई-छंटाई कर रहे थे। यह पहला खण्ड है, अगले किसी खण्ड में हम भारतीय उपमहाद्वीप का भाग्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गढ़ने में सहायक उस व्यक्ति से बातचीत का पूरा ब्यौरा देंगे।

इंगलैण्ड में जिस उल्लेखनीय व्यक्तित्व से हम मिले वह थे लार्ड लुई माउंट-बैटन—1947 के महत्त्वपूर्ण दिनों के मुख्य अभिनेता। ब्रिटिश राज के आखिरी वाइसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर-जनरल। हमारे साथ उनकी व्यक्तिगत बातचीत और वाइसराय तथा गवर्नर-जनरल की हैसियत से भारत में उनके ऐतिहासिक मिशन के दस्तावेज़ और कागजात इस खण्ड का एक बेहद जरूरी हिस्सा है। दूसरा चरण इसके बाद आएगा। इससे पहले यह सामग्री जनता के सामने नहीं आई थी। हमें खुद यह सामग्री प्राप्त करने और 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' में इनका इस्तेमाल करने के लिए इंगलैण्ड की महारानी की अनुमति लेनी पड़ी थी।

ब्रिटेन की अपनी उस लम्बी तीर्थयात्रा के बाद हम बाल-बच्चों के साथ भारत और पाकिस्तान के लिए चल पड़े। यह प्रवास बीस महीनों से भी ज्यादा का था। शायद ये हमारे जीवन के बेहतरीन महीने थे। उपमहाद्वीप में बहुत कुछ करना था। ऐतिहासिक घटनाक्रम को फिर से बनाने से पहले हमारा उद्देश्य था भारत का एक सही चित्र प्रस्तुत करना। (यहां हम अपने भारतीय पाठकों को एक बात याद दिलाना चाहते हैं कि 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' उनके लिए नहीं लिखी गई थी। यह विश्व के उन लाखों पाठकों के लिए लिखी गई थी जिन्हें पेरिस, स्पेन, मध्यपूर्व···से सम्बन्धित हमारी पुस्तकें पसन्द थीं। अधिकांश पाठकों ने इस महाद्वीप पर कदम भी नहीं रखा था, कुछ तो यह भी नहीं जानते थे कि भारत है कहां) यह काम बहुत मुश्किल था। इतने बड़े देश की बहुआयामी विविध सच्चाइयां, उसके लोग, धर्म, जातियां, रीति-रिवाज़, संस्कृति, भाषाएं और प्राकृतिक परिवेश का एकदम सही वर्णन चन्द पृष्ठों में हो पाना संभव नहीं। फिर भी, अभारतीय पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने और उन्हें भारत का महान् इतिहास पढ़ने पर बाध्य होने के लिए यह काम जरूरी था, लेकिन उससे पहले हमें खुद भारतीय माहौल में खप कर देखना था। कई महीनों तक हम भारत और पाकिस्तान की यात्रा करते रहे—कश्मीर से केरल, सिंध से बंगाल, उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त से मैसूर के जंगलों···सभी जातियों, संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के सैकड़ों भारतीय और पाकिस्तानियों से मिले। एयर इण्डिया और इण्डियन एयरलाइन्स के तेज-आरामदेह विमानों में, भारतीय रेल के दूसरे दर्जे में हमने सफर किया, पुरानी एम्बेसेडर टैक्सियां, चरमराते रिक्शे और स्कूटरों में हम घूमें, हाथियों और बैलगाड़ी की शाही सवारी का आनन्द भी हमने लिया। इतिहास के सबसे बड़े मानवीय निष्क्रमण की पीड़ा और पच्चीस बरस पहले जिस अग्नि-परीक्षा से लाखों लोगों को गुज़रना पड़ा था उसे शारीरिक और संवेगात्मक रूप में समझने के लिए पंजाब की सपाट सड़कों पर चिल-चिलाती धूप में हम मीलों पैदल चले।

हमने उन महान ऐतिहासिक हस्तियों के पदचिह्नों पर चलकर वह तीर्थ भी किया। उन्हें देखा जिन्होंने विदेशी ज़ंजीरें तोड़कर अपने उपमहाद्वीप का भाग्य बदल दिया और अपनी चालीस करोड़ (400,000,000) जनता को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
स्वतंत्र किया था। इस तरह हमने गांधी, नेहरू, पटेल, जिन्ना और दूसरे नेताओं पर शोध करने में, उनके रिश्तेदारों, अनुगामियों, सहायकों और मित्रों से भेंट-वार्ता उनके कामों से सम्बन्धित कागजात—चिट्ठी-रिपोर्ट, डायरी का अध्ययन-मनन करने में कई महीने लगाए। हमने उन छः आदमियों के साथ भी चार हफ्ते बिताए जिन्होंने 30 जनवरी, 1948, को गांधीजी की हत्या की थी। हत्या के बाद इनकी जांच-पड़ताल इस पैमाने पर किसीने नहीं की थी—पुलिस ने भी नहीं, लेकिन हमने की, उनके जुर्म को समझने और वर्गीकृत करने के लिए। हमारे शोध का यह पक्ष अगली पुस्तक में पाठकों के सामने आएगा (वह पुस्तक भी विकास से ही छपेगी)।

भारत और विदेश में हमारे कई मित्रों ने यह जानना चाहा है कि 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' में हमने अपने जीवन के चार वर्ष क्यों लगाए। हम इतना ही कह सकते हैं कि अपनी कम-से-कम एक पुस्तक में भारत के असाधारण वातावरण को स्थापित करने की आन्तरिक चाह के अतिरिक्त हमें यह लगा कि 1947 में जो कुछ नई दिल्ली में हुआ वह पूरे महाद्वीप के इतिहास में ही महत्त्वपूर्ण नहीं था बल्कि पूरे विश्व के इतिहास में भी निर्णायक था। 15 अगस्त, 1947 के बाद से हमारे ग्रह—पृथ्वी की स्थिति बदलनी थी। उस दिन ठीक आधी रात के समय जो प्रक्रिया शुरू हुई उसे धरती के चारों कोनों पर बार-बार होना था। उस रात उपनिवेशी सत्ता का अन्त और तीसरे विश्व के जन्म से इतिहास का एक और पृष्ठ पलट गया था।

इतने ठोस प्रमाण इकट्ठा करने के बाद हमारे अधिकांश विदेशी प्रकाशकों ने हमसे यह अनुरोध किया कि अपनी पुस्तक का यह विषय हम न चुनें। 1971 में प्रकाशित 'ओ जेरुसलम!' की सफलता! के बाद उन्हें लगा कि हमें अपने पाठकों को भारत के बजाए चीन पर एक पुस्तक देनी चाहिए। लेकिन हमने उन्हें मना लिया और जिन 6000,000,000 लोगों ने 27 भाषाओं में 'फ्रीडम ऐट मिड-नाइट' पढ़ा था उन्होंने अभिभूत होकर हमारा समर्थन किया।

जहां तक अपने काम और शोध के सिलसिले में भारत और पाकिस्तान में बिताए हुए उन खूबसूरत वर्षों का सवाल है, हम यही कहेंगे कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। हम इस अवसर के आभारी हैं जिसके द्वारा लार्ड माउंटबैटन के व्यक्तिगत अभिलेखों का संकलन हम अपने सभी जाने-पहिचाने भारतीय और पाकिस्तानी मित्रों को भेंट कर सके। यह अभिलेख उनकी तथा भावी पीढ़ियों की अमानत है। हमें आशा है कि इससे अपने देशों के गौरवशाली इतिहास की जानकारी बढ़ाने का अवसर उन्हें मिलेगा।

हम अपने प्रकाशक और मित्र नरेन्द्र कुमार के विशेष रूप से आभारी हैं। पुस्तक की तैयारी में हमें उनकी अमूल्य सहायता मिली है। सम्पादन कार्य के लिए हम रितु मेनन और बिभु आचार्य के भी शुक्रगुज़ार हैं।

नई दिल्ली — **लैरी कॉलिन्स**

नवम्बर 6, 1981 — **डौमिनीक लापियर**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहला चरण

साक्षात्कार

लार्ड माउंटबैटन के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कारों का संकलन,
22 मार्च—15 अगस्त, 1947

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस भाग में दिए गए साक्षात्कार 1971, 1972 और 1973 में रिकार्ड किए गए थे जब हमें अंतिम वाइसराय और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर-जनरल से मिलने का अवसर मिला। इनमें से कई मुलाकातें दक्षिण इंगलैंड में साउदैम्पटन के निकट स्थित उनकी पारिवारिक हवेली, ब्रॉडलैंड्स, में हुई थीं। कुछ लन्दन के शेलीज़ा फ्लैट्स में, जहां वह बढ़ती उम्र के बावजूद अनगिनत, व्यक्तिगत या सरकारी काम-काज निपटाने के लिए हर हफ्ते दो-तीन दिन ठहरते थे।

हम लोग पहली बार उनसे इंगलैंड में फ्रांसिसी राजदूत और उनकी पत्नी, श्री और श्रीमती ज़्यो फ्रोए द कूरसे, के घर एक लंच पर मिले थे। 1940 में जब जनरल चार्ल्स द गॉल ने नाज़ी जर्मनी के खिलाफ जेहाद बोल दिया था तब कूरसे, द गॉल के एडीसी थे। वह माउंटबैटन के निजी मित्रों में से थे। अंतिम वाइसराय से हमारी मुलाकात इससे ज़्यादा शुभ नहीं हो सकती थी। बाद में यह भी पता चला कि वह हमारी सारी किताबें पढ़ चुके थे और 'इज़ पेरिस बर्निंग ?' से विशेष रूप से प्रभावित थे। ज़ाहिर है कि राज के अंत और उप-महाद्वीप में सत्ता बदलने के बारे में उसी शैली में पुस्तक लिखने की हमारी योजना के प्रति वह उदासीन नहीं थे। लंच के बाद, कॉफी के दौरान वह अपने इंटरव्यू देने के लिए सहमत हो गए और पूरी सहायता देने की बात भी उन्होंने मान ली। हमारी योजना की सफलता के लिए यह बेहद ज़रूरी था क्योंकि इस युग के वह आखरी महारथी थे जो अभी जीवित थे।

मुलाकात के पहले दिन ही हम उनके साथ उनकी निजी जगुअर कार में ब्रौडलैंड्स पहुंचे जहां उन्होंने अपना पहला साक्षात्कार दिया। कोषों और स्मृति-चिह्नों से भरे उस पुराने विक्टोरियन घर में यह पहली मुलाकात एक अनोखी और मूल्यवान मित्रता की शुरुआत थी। और यह तब तक बनी रही जब गांधी-जी के बलिदान के 31 वर्ष बाद एक हत्यारे के बम से वह व्यक्ति शहीद हो गया जिसने भारत को आज़ाद कराया था।

यह मुलाकातें 1947 के उन उत्तेजक और महत्त्वपूर्ण महीनों की यादों का पुनर्निर्माण करने में बीतीं जब ब्रिटेन ने अपना शासन खत्म करके भारत को आज़ाद कर दिया था और इस प्रक्रिया में कुछ मीठी, सुखद यादें ताज़ी हुईं। पत्रकार और इतिहासकार के अपने काम के दौरान में हम संसार के जितने नेताओं से मिले उनमें शायद माउंटबैटन ही ऐसे थे जो हमें एक बेहद स्पष्ट स्मृति-चिह्न दे गए। उनकी बुद्धि, उदारता, जीवन की ललक, विवरण की ओर उनका ध्यान विनोदी स्वभाव, व्यक्तियों और घटनाओं के प्रति उनकी मानवीय पकड़ ने उन्हें साधारण से ऊपर बना दिया था। जो बात सबसे पहले हम पर ज़ाहिर हुई वह थी भारत और भारतीयों के प्रति उनका गहरा और निश्च्छल प्रेम। जो मुश्किल और बहुमूल्य दिन एडवीना और उन्होंने भारत में बिताए थे

वह निश्चित रूप से उनके लम्बे और घटनापूर्ण जीवन की यादों में संजोकर रखे गए दिन थे। हम लोगों ने देखा कि एक भी दिन ऐसा नहीं गया जब उन्होंने भारत से आई, उनकी सहायता या दखल के अनुरोध की, कोई चिट्ठी न खोली हो। एक भी दिन ऐसा नहीं गया जब वह अपने भारतीय मित्रों की भलाई के लिए किसी काम में व्यस्त न रहे हों। उनकी मेज़ पर चांदी के फ्रेम में जड़ी नेहरू और गांधी की तस्वीरें रखी थीं, और बैठक में एक अलमारी के ऊपर वाइसरीगल लॉज के मुगल उद्यान में ली गई वह प्रसिद्ध तस्वीर रखी थी जिसमें गांधीजी एडवीना के कंधे पर हाथ रखकर चल रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारे कई भारतीय पाठकों ने 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' में माउंटबैटन को दिए गए महत्त्व की आलोचना की है। हमने अपनी पुस्तक की केन्द्रीय भूमिका आखरी वाइसराय को ही दी है जिसे हम ऐतिहासिक सत्य की रोशनी में उचित मानते हैं। इसके अलावा हम यह भी मानते हैं कि यह भारत और ब्रिटेन का सौभाग्य ही था कि उनके सम्मिलित इतिहास के एक कठिन मोड़ पर लुई माउंटबैटन, मोहनदास गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना और वल्लभ भाई पटेल के तबके के राजनीतिज्ञ थे। दूसरे कई उपनिवेशी देश इतने सौभाग्यशाली नहीं थे और अपनी आज़ादी की कीमत उन्हें रक्तपात और युद्ध से चुकानी पड़ी।

इस पुस्तक में दिए गए साक्षात्कार निश्चित रूप से भारत के आखरी वाइसराय की यादों का पूर्ण अन्तरावलोकन है। हमें ऐसा लगा कि माउंटबैटन ने उस अग्नि परीक्षा का पूरा-पूरा मज़ा लिया जो हमने उन पर थोपी थी। सच पूछिए तो पूरी ईमानदारी के साथ हम यह महसूस करते हैं कि अपने जीवन की अंतिम ख़ुशी उन्हें 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' देखकर मिली थी। माउंटबैटन की स्मरण शक्ति अद्भुत थी। भारतीय नेताओं से अपनी मुलाकातें, उनके विषय, दिन, तारीख और परिस्थितियां, वह कुछ भी भूले नहीं थे। अपने नौकरों के नाम, एडवीना के घोड़े की उम्र और रंग, जिन्ना की शेरवानी का आकार, जयपुर के महाराजा द्वारा जीते गए पोलो गोलो की संख्या, यहां तक कि जिस ब्रिटिश कम्पनी ने उनकी बग्घी की लालटेनें बनाई थीं, उसका नाम भी उन्हें याद था। लेकिन, जब भी उनके मन में शंका उभरती, जब भी उनके दिमाग में कोई हिच-किचाहट आती, वह बेझिझक होकर उठ जाते और बैठक से गायब हो जाते। उनकी यह गैरमौजूदगी 20 या 30 मिनट तक खिंचती—इस समय वह अपनी हवेली के बेसमेंट में स्थित अपने निजी अभिलेखागार में जाते; किसी अकेले आदमी का यह सबसे असाधारण निजी अभिलेखागार था। इस खंड के दूसरे चरण में इस अभिलेखागार के दस्तावेज़ों का संकलन हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत करेंगे, जो आधुनिक भारत का इतिहास समझने के लिए बहुत ज़रूरी है।

लैरी कॉलिंस
डौमिनीक लापियर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न : आपकी राय में आखरी वाइसराय के लिए आप ही को क्यों चुना गया ? भारत के साथ आपके ऐसे क्या सम्बन्ध थे जिसकी वजह से एटली ने आप ही को चुना ?

उत्तर : हाल ही में 'ऑल आवर यस्टरडेज़'[1] श्रृंखला में बीबीसी ने पूरे परिप्रेक्ष्य में भारत पर एक प्रोग्राम दिया था। इसके लिए उन्होंने एक युवा और दम्भी व्यक्ति जेम्स कैमेरॉन, को आमंत्रित किया। उनके अनुसार, "माउंटबैटन ने राजनीति के विषय में कुछ भी जाने बिना ही राजनीतिक जोड़-तोड़ का असाधारण काम कर दिखाया। बहुत, बहुत दिलचस्प। उन्हें एक पूर्वाभास हुआ कि वह सूचना उन्हें मिल गई है जिससे किसी तरह कम्प्यूटरबद्ध करके सही जवाब निकाले जा सकते हैं। मैं नहीं समझता कि वह कभी भी यह बता सके होंगे कि उन निष्कर्षों पर वह कैसे पहुंचे। बहुत, बहुत, बहुत दिलचस्प। जहां तक मैं जानता हूं शाही परिवार के वह एकमात्र सदस्य हैं जिसने अब तक कोई रचनात्मक काम किया है।"

मेरे लिए दिलचस्प बात यह है—यहां एक अखबार का संवाददाता है जो समय के घटनाक्रम की खबरें देता है—जो अपने अनुभवों को जिया है जिसने भाषण साक्षात्कार और वार्ताएं दी हैं। वह सचमुच सोचता है कि मैं मात्र पूर्वज्ञान से सही निष्कर्षों पर पहुंचा ! जो कुछ हो रहा था, मैं नहीं समझ सकता था। शाही परिवार का सदस्य होने के नाते किसी भी किस्म की अक्ल होने का सवाल ही नहीं था। लेकिन पूर्वज्ञान से निष्कर्ष पर पहुंच जाता था—हे भगवान !

क्या मैंने आपको वह फ़ार्दिग दिखाई जो मुझे भारत पर लेक्चर देने के लिए मिली थी ?

1931 में एक बड़ी संस्था, 'पोस्ट-वॉर ब्रदरहुड इन पोर्ट्समाउथ', ने मुझे लेक्चर के लिए बुलाया और फीस लेने का आग्रह किया। सबसे कम फीस एक फार्दिग होती थी, जो मैंने ले ली। और उसके साथ ही आया : "भारत पर उनका रोचक और प्रभावी भाषण" (अवधि, 1 घंटा, 1931)।

मैं सिर्फ इस बात को साबित करने के लिए यह सब कह रहा हूं कि भारत का विषय मैंने कभी छोड़ा नहीं। और भारत पर विशेषज्ञ समझे जाने वाले एक अखबार के संवाददाता का मुझे इस तरह गलत समझना बड़ा मनोरंजक लगा। चूंकि वह प्रोग्राम रिकार्ड हो चुका था, इसलिए वह इस बात से मुकर नहीं सकते थे।

---

1. बीबीसी के इस प्रोग्राम को अखबार के एक मशहूर स्तम्भ लेखक जेम्स कैमेरॉन ने प्रस्तुत किया।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रश्न : स्टैफर्ड क्रिप्स[1] ने खुद वाइसराय बनने का आग्रह क्यों नहीं किया ?

उत्तर : वह जानते थे···कि उस धातु के वह नहीं बने थे जिसके वाइसराय बनते हैं। जहां तक मैं समझता हूं किसी ऐसे व्यक्ति को इसके लिए चुनना था जिसमें नेतृत्व की क्षमता हो जो उनके पास नहीं थी···उनके भाई, फ्रेड जो शिकारी, पोलो का खिलाड़ी और बढ़िया रहन-सहन पसन्द करने वाला था, के पास उनसे दस गुना ज़्यादा नेतृत्व की क्षमता थी। अगर आप सिगरेट-शराब नहीं पीते, खाने-खिलाने के शौकीन नहीं···तो आपके अन्दर यह क्षमता आ ही नहीं सकती। मैं समझता हूं कि यही मोह एंथनी एडेन[2] को भी था। आपने देखा, वह मेरे साथ आना चाहते थे। उन्हें मालूम था, उनके पास सारे ज़वाब थे और मेरे पास नेतृत्व की क्षमता —अपने जवाब मैं खुद ढूंढ़ सकता था, इसका अंदाजा उन्होंने, और जहां तक मैं सोचता हूं सबने, कम लगाया···

प्रश्न : स्थिति प्रतिकूल हो जाने पर क्या लेबर सरकार आपको बलि का बकरा बनाना चाहती थी ?

उत्तर : एटली[3] ऐसा नहीं सोचते थे। एक साधारण-सी वजह थी। युद्ध के नहीं, बल्कि युद्ध के बाद स्वतन्त्रता के मेरे संचालन का सम्मान करने लगे थे और इसलिए उन्होंने मुझे चुना।

प्रश्न : आप अपने साथ एक प्रेस अटैची भारत ले गए जो आपसे पहले किसी वाइसराय ने नहीं किया था। यह दृष्टिकोण गलत माना गया था। प्रेस को संभालने का काम निजी सचिव भी कर सकता था। काफी लोगों के अनुसार यह आपकी बहुत बड़ी गलती थी। इसके लिए आपकी कड़ी आलोचना तो हुई ही, एलेन कैम्पबेल-जानसन[4] को भारत जाकर बड़े पापड़ भी बेलने पड़े। इस विषय में आप कुछ कहेंगे ?

उत्तर : बाद में सम्राट ने मुझसे कहा था, यह आपने सबसे अच्छा काम किया; नहीं तो हम विश्व प्रेस तक कभी न पहुंच पाते।" देखिए, इस पद के लिए नियुक्ति मैंने पहले-पहले ही की थी, जिस पर किसी ने भी गौर नहीं किया था। इंगलैंड में एटली ने भी मुझसे पूछा, "आपको प्रेस अटैची क्यों चाहिए ?" किसी ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया। अगर मेरे पास प्रेस को संतुष्ट रखने के लिए कैम्पबेल-जानसन नहीं होता तो···बाद में तो हमारे मुंह से निकली हर

---

1. सर स्टेफोर्ड क्रिप्स, 1942 में ब्रिटिश कैबिनेट मिनिस्टर जिनके नेतृत्व में क्रिप्स मिशन भारत गया। ब्रिटिश लेबर पार्टी के सदस्य और क्लीमेंट एटली की कैबिनेट के एक्सचेकर (राजकोष) के चांसलर।
2. राबर्ट एंथनी एडेन (एवॅन के पहले अर्ल), ब्रिटिश कंसर्वेटिव पार्टी के नेता और अप्रैल 1955—जनवरी 1957 तक प्रधानमंत्री।
3. क्लीमेंट रिचर्ड एटली, 1935-1953 तक ब्रिटिश पार्लियामेंटरी लेबर पार्टी के नेता और 1945-51 तक प्रधानमंत्री।
4. एलेन कैम्पबेल-जानसन, वाइसराय माउंटबैटन के प्रेस अटैची।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बात समाचार बनने लगी थी। अगर यह सब गलत हो जाता तो हमको बेहद मुश्किलों का सामना करना पड़ता।

प्रश्न : आपका मतलब है कि प्रेस अटैची सिर्फ समाचार ही नहीं देता फ़ीडबैक भी लाता है ?

उत्तर : बिलकुल ! आप एक बात समझ लीजिए···विदेश में एक तरह की भावना फैली हुई थी—और मैं ईर्ष्या की बात नहीं कर रहा (हालांकि वह काफी मात्रा में रही होगी), मैं अविश्वास की बात कर रहा हूं—कि अपनी पृष्ठभूमि की वजह से यह काम मैं नहीं कर सकता था। हर बार वह लोग यही मानते थे कि कोई और मेरे लिए काम कर रहा है—जबकि हर कदम पर अपनी बात मनवाने के इतना कृत संकल्प दूसरा और कोई नहीं था। फिर भी, अधिकांश लोग मुझे सिर्फ शाही चेहरा मानते थे।

प्रश्न : प्रचलित प्रेस आपको 'प्लेब्वाय' मानता था, क्या यह सच है ?

उत्तर : हां। पोलो, 'यॉटिंग' आदि। वह सोचते थे, मैं एक अनाड़ी 'प्लेब्वाय' था जिसे युद्ध में सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा अचानक ही मिल गई थी। इस धारणा के विपरीत मैं शुरू से ही बहुत मेहनती और पढ़ाकू था—बाद में जो हुआ उसकी तैयारी में मेरा पूरा जीवन बीता था।

प्रश्न : अपनी नियुक्ति के बारे में आप क्या सोचते थे ?

उत्तर : मेरे दिल में शुरू से ही वाइसराय बनने की एक अजीब, अवचेतन चाह थी। 1921 में मैं जब बाहर था तो यही सोचा करता था कि भारत देश और उसके वाइसराय का काम, दोनों ही अद्भुत हैं। बस, यही वजह थी कि यह चाह मुझमें जन्मी। पर, वाइसराय न बन पाने का अफसोस मुझे मन ही मन होता रहता। मगर, चूंकि मुझे नौसेना में आनन्द आता था, शायद इसीलिए मैं वाइसराय नहीं बन सकता था। फिर भी, कल्पना में मैं सोचा करता था : वाइसराय बनकर कितना मज़ा आएगा ! शिकार और आखेट की दृष्टि से ही नहीं बल्कि मुझे हमेशा यह अनुमान रहता था कि भारतीयों के लिए क्या-क्या करना चाहिए। इस तरह, हर दृष्टि से मैं वाइसराय बनना चाहता था। एक-दो बार यह बात मैंने अपनी पत्नी से भी कही···और फिर यह हो ही गया।

वाइसराय बनने की चाह

मैं एक किस्सा सुनाता हूं, और डोमिनीक चाहें तो पेरिस में उसकी जांच-पड़ताल भी कर सकते हैं। 1931 में मेरी पत्नी यूरोप का भ्रमण कर रही थी जब उसे एक मशहूर भविष्यवक्ता का पता चला जिसने कई आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां की थीं। मेरी पत्नी फ्रांसिसी भाषा भी अच्छा जानती थी। वह उस भविष्यवक्ता के पास गई। एडवीना के भ्रमण का समाचार अखबारों में नहीं छपा था। कोई यह भी अंदाजा नहीं लगा सकता था कि वह फ्रांसिसी नहीं है या कि वह लेडी माउंटबैटन है।

भविष्यवक्ता बोली, "बड़ा अजीब, बेहद दिलचस्प मामला है। मैं तुम्हें किसी राजसिंहासन पर बैठे देख रही हूं। यह सिंहासन राजसी तो नहीं है, मगर तुम उस पर बैठी अपने पति के साथ राज कर रही हो।" उसकी इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भविष्यवाणी को मूर्खतापूर्ण बताते हुए सब हंसने लगे। यह बात 1931-32 की है।[1]

वास्तव में युवावस्था में जो कुछ मैंने सोचा था उससे मेरी वाइसरायल्टी एकदम अलग थी। आकांक्षी की एक भिन्न पूर्ति थी। जो मैंने अपेक्षा की थी, वह नहीं थी यह।

प्रश्न : आपके सामने यह प्रस्ताव कैसे रखा गया ?

उत्तर : बुधवार, 18 दिसम्बर, 1946 को प्रधानमंत्री एटली ने मुझे बुलाया और एकदम स्तब्ध कर दिया। मुझे कुछ भी पता नहीं था। बर्मा और मलाया के विषय में वह कई बार मेरी सलाह ले चुके थे। 10 डाउनिंग स्ट्रीट के अपने कमरे में प्रधानमंत्री की कुर्सी पर वह बैठे थे। उनके बाईं तरफ, चांसलर की कुर्सी पर सर स्टोफोर्ड क्रिप्स, एक्सचेकर के चांसलर, बैठे थे। और मैं हमेशा की तरह उन लोगों के सामने अकेला बैठा था। काफी आराम से और मित्रतापूर्ण ढंग से भारत के बारे में बात शुरू हुई।

इतना तो मुझे पता था कि इस तरह की अन्तहीन बहसें हो रही थीं। और सच पूछिए तो उस वक्त वैवेल[2] शायद अपने घर में ही थे। मैंने सोचा भारत पर मेरी राय ली जा रही है। मेरा वैवेल से काफी नज़दीक से संपर्क था और मुझे वहां हो रही गतिविधियों की खबर थी। लेकिन, इस बहस के दौरान मुझसे बहुत-से सवाल पूछे गए, क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए, इसे मैं क्या सोचता हूं, पूरी स्थिति की ओर मेरा क्या रुख है, यह सब उन्होंने जानना चाहा।

"मुझे यह एहसास हो रहा है, प्रधानमंत्रीजी, कि आप मुझसे आर्ची वैवेल का स्थान लेने को तो नहीं कहने जा रहे हैं ?" मैंने पूछा।

उन्होंने अपने आस-पास देखा और बोले, "इतनी जल्दी यह अनुमान तुम्हें नहीं लगाना था।"

"लेकिन अब तो मैंने लगा ही लिया है।"

"हां," उन्होंने कहा।

"आपको अपने दिमाग की जांच करवानी होगी," मैंने कहा। "मैं तो सपने में भी वहां जाने की बात नहीं सोच सकता। वैवेल एक शांत, खामोश और प्रथम श्रेणी के व्यक्ति हैं। उनकी पूरी ईमानदारी भारत और ब्रिटेन के साथ है। उनसे अच्छा आदमी आपको और कहीं नहीं मिल सकता। मैं तो यह मानता हूं कि उनकी सारी योजनाओं पर हाई कमांड की वजह से पानी पड़ गया। मैं सपने में भी उनकी जगह लेने की बात नहीं सोच सकता। इस विषय पर बहस करने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

मगर उन्होंने कहा कि बहस जारी रखी जाए क्योंकि वह मुझे इस प्रस्ताव

---

1. हमने इस कहानी की जांच-पड़ताल की, और यह एकदम सही है—लेखक
2. लार्ड वैवेल, फील्ड-मार्शल सर आर्चिबाल्ड, 1944-1947 तक भारत के वायसराय। 1947 में लार्ड माउंटबैटन ने उनका स्थान लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए राज़ी करना चाहते थे। उन्होंने यह भी स्पष्ट करना चाहा कि अब वह एक ऐसे बिंदु पर पहुंच गए हैं जहां नेहरू, कांग्रेस पार्टी, जिन्ना, सिक्खों तथा और सबसे वैवेल के संपर्क टूट चुके हैं। बात यह नहीं है कि उन पर लोगों का विश्वास नहीं है—बात यह है कि वे लोग यह समझते हैं कि वैवेल के साथ वह कहीं नहीं पहुंच पा रहे। ऐसा लगता है कि वैवेल में विचारों की कमी आ गई है। अब ऐसे नहीं चल सकता क्योंकि इस तरह तो हम पर आफत ही टूट पड़ेगी। आप ही यह स्थिति संभाल सकते हैं क्योंकि भारत आपका बेस रह चुका है और उसके साथ आपने काफी निकट का संपर्क भी रखा है। आप प्रिंस ऑफ वेल्स के साथ वहां गए थे और वहां के सारे राजे-महराजे आपको जानते हैं।

एटली द्वारा माउंटबैटन के सामने वाइसरायल्टी का प्रस्ताव

मैंने कहा, "मैं हां नहीं कह रहा हूं, जो न कहने से एकदम अलग है," मैं बोला। "लेकिन यह मामला तो राज-सम्राट को तय करना है। है न? क्योंकि, वाइसराय में दो व्यक्ति मिले होते हैं। वह ब्रिटिश भारत का गवर्नर-जनरल तो होता ही है साथ ही भारतीय राज्यों पर प्रभुत्व रखने वाला, ताज का प्रतिनिधि भी होता है।"

"यह बात तो ठीक है," वह बोले।

"इसलिए उस सीमा तक मैं सम्राट जॉर्ज का भी उतना ही उत्तरदायी हूं।"

"यह भी सही है।"

"और उसके लिए मुझे उनसे मिलना होगा।"

"बिल्कुल।"

प्रश्न : क्या यह पूर्वनिश्चित था कि आपको यह प्रस्ताव मानना होगा ?

उत्तर : हां ! और मुझे तब महसूस हुआ कि वह लोग सम्राट से मिलकर इस विषय में बात-चीत कर चुके थे। इस डर से वह लोग मुझे उनसे नहीं मिलने दे रहे थे कि कहीं सम्राट मेरी बात मानकर मुझे जाने से रोक न लें। जब इस बात का अहसास मुझे हुआ तो मैंने सोचा कि इन लोगों के लिए स्थिति को बेहद मुश्किल बना दिया जाए। और मैंने यही करना शुरू कर दिया। मैंने कहा कि अगर मैं बाहर जाऊंगा तो मुझे अपना स्टाफ चाहिए होगा। मुझे, छोटे-बड़े, किसी को भी चुनने की इजाज़त दी जाएगी। अगर वह लोग कोई और नौकरी कर रहे हों तो वह उन्हें छोड़नी होगी। अगर वह किसी बिज़नेस में हों तो भारत से लौटने पर उन्हें फिर से बिज़नेस शुरू करने की अनुमति मिलेगी। और उन सबका चुनाव मैं खुद करूंगा।

माउंटबैटन की शर्तें

"मैं खुद तुम्हारे स्टाफ का चीफ बनकर चलने को तैयार हूं," सर स्टेफोर्ड ने कहा।

"यह मेरे लिए ज़रूरत से ज़्यादा सम्मान की बात होगी, स्टेफोर्ड," मैंने कहा। स्टेफोर्ड क्रिप्स के साथ काम करने की कल्पना ही काफी थी ! मैंने वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बात वहीं खत्म कर दी। फिर मैंने कहा, "मैं पग इस्मे[1] को ले जाऊंगा। एक प्रथम श्रेणी के प्रेस अधिकारी के लिए मैं एलेन कैम्पबेल को ले जाऊंगा।"

अपने सचिवालय के लिए मुझे रौनी ब्रोकमैन[2] चाहिए था। कांफ्रेंस सचिव के रूप में मैं एर्सकीन क्रम[3] को ले जाना चाहता था। और पूरी तरह स्वतंत्र होने के लिए मैं ढेर सारे अंग्रेज़ी स्टेनोग्राफर ले जाना चाहता था।

"ठीक है," वह बोले।

"मुझे वैवेल का पूरा स्टाफ चाहिए," मैंने कहा।

"तुम्हें वह भी चाहिए?"

"बिलकुल।"

फिर मैंने कहा, "यहां स्थितियां काफी कठिन हैं। (उन दिनों इंगलैंड में राशनिंग चल रही थी, पेट्रोल और कोयला नहीं था, हम लोग ठंड में अकड़ते रहते थे।) मैं जिन लोगों को ले जाऊंगा उन्हें पैसे के अलावा रहने को घर, कार, नौकर-चाकर, और अपने पूरे परिवार को साथ ले जाने की इजाज़त मिलनी चाहिए।"

"ठीक है," वह बोले।

"मुझे एक हवाई जहाज़ भी चाहिए।"

"लेकिन वह तो वाइसराय को मिलता ही है।"

"वह सिर्फ डकोटा होता है। मुझे अपने लिए चार इंजनों वाला एक डब्ल्यू 102 चाहिए।

"और अगर मैं सफल हो गया, स्थितियों के देखते हुए जिसकी संभावना कम है, तो अपनी सम्मान सूची मैं ख़ुद बनाऊंगा। जो व्यक्ति जिस सम्मान के योग्य होगा उसे वह सम्मान मिलेगा चाहे वह लार्डशिप हो या ग्रेंड क्रॉस। इस सम्मान सूची की छानबीन नहीं होगी और उसे आप 'स्वीकृत' मानेंगे।

"ठीक है," उन्होंने कहा।

"उसके बाद मैं नौसेना में वापस जाना चाहूंगा···अभी मेरी नियुक्ति पहली क्रूईज़र स्क्वाड्रन के कमांडर के पद पर हुई है और समय सारिणी के अनुसार यह 18 महीने का टूर है। अगर इस पद को मैं छोड़ता हूं तो मुझे यह गारंटी चाहिए कि भारत से लौटने पर मुझे इसी, या इसके बराबर के पद पर नियुक्त किया जाएगा। क्या आप इसकी व्यवस्था कर सकते हैं?"

एटली ने घंटी बजाकर अपने सचिव को बुलाया और 'फर्स्ट लार्ड' (सेना के संसदीय विभाग का प्रधान) को बुलाने को कहा।

"फर्स्ट सी लार्ड को भी बुलवाइए," मैंने कहा।

---

1. लार्ड इस्मे, वाइसराय और दिसम्बर 1947 तक गवर्नर-जनरल के स्टाफ के चीफ।
2. कैप्टन आर० बी० (रौनी) ब्रोकमैन, वाइसराय के व्यक्तिगत सचिव, 15 अगस्त 1947 से भारत के गवर्नर-जनरल के निजी सचिव।
3. लेफ्टिनेंट कर्नल वी० एफ० एर्सकीन क्रम, वाइसराय और भारत के गवर्नर-जनरल के सचिव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थोड़ी देर बाद दोनों आ गए। दोनों को सम्बोधित करते हुए एटली ने कहना शुरू किया :

"मैंने अभी-अभी लार्ड माउंटबैटन के सामने वैवेल के बाद भारत में वाइसराय बनकर जाने का प्रस्ताव रखा है। लेकिन उसे मानने से पहले वह इस बात की गारंटी चाहते हैं कि भारत से लौटने पर उन्हें नौसेना में उसी पद पर, या उसके समकक्ष किसी और पद पर ले लिया जाए। क्या आप इसकी गारंटी दे सकते हैं ?"

"जैसा आप कहें," फर्स्ट लार्ड ने तपाक से जवाब दिया।

"एक मिनट," फर्स्ट सी लार्ड बोले, "यह निर्णय इतनी जल्दी नहीं लिया जा सकता। प्रधानमंत्रीजी, एक बात जो आप नहीं समझ रहे हैं वह है कि लार्ड माउंटबैटन ने नौसेना में कैप्टन की हैसियत से काम शुरू किया था। बाद में उन्हें उत्तर-पश्चिम एशिया का सुप्रीम एलाइड कमांडर बनाया गया। युद्ध के अंत तक यह कैप्टन ही थे। उन्हें रिअर एडमिरल बनाने के लिए हमें 18 महीने कोशिश करनी पड़ी। और अभी-अभी यह रिअर एडमिरल बने हैं। उन्हें नौकरी में दोबारा रखना बोर्ड के लिए खतरे की बात होगी। जब एक व्यक्ति सुप्रीम कमांडर रह चुका हो और उसके नीचे सारे उच्च एडमिरल काम कर चुके हों तब उसे यूं ही लौटाया नहीं जा सकता। चूंकि माउंटबैटन ने सुप्रीम कमांडर का कार्यभार काफी अच्छी तरह सम्हाला था इसलिए अमन के समय उन्हें सेवामुक्त करना हमारे लिए बड़ी छोटी बात होती। इसीलिए हम मान गए थे। लेकिन अब स्थिति दूसरी है। वाइसराय सुप्रीम कमांडर नहीं होता, वह धरती पर सबसे महत्त्वपूर्ण इंसान होता है। उसके बाद उसे कोई भी नौकरी नहीं दे सकता। अपने कमांड के नीचे वाइसराय को कैसे रखा जा सकता है ? इसकी व्यवस्था नहीं की जा सकती। हम लार्ड माउंटबैटन को वापस नहीं ले सकते।"

"मुझे आपकी रज़ामंदी नहीं इच्छा मालूम करनी थी," एटली ने कहा। इसके बाद उसकी भी व्यवस्था हो गई।

प्रश्न : यानी कि, आपका जाना पूर्वनिर्धारित हो गया ?

उत्तर : इस विषय पर मैं आपको ठीक-ठीक नहीं बता सकता क्योंकि किस वक्त क्या प्रगति हुई यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन, जो कुछ भी हुआ वह मैं आपको बताता हूं।

उसके अगले दिन, बृहस्पतिवार 19 दिसम्बर, मैं चेस्टर स्ट्रीट स्थित अपने घर पहुंचा। वहां मेरी पत्नी, मेरा भतीजा राजकुमार फिलिप—तब उसकी सगाई नहीं हुई थी—नौसेना के मेरे बहुत अच्छे मित्र, चार्ल्स लैम्ब, थे। मेरे बाद वही फर्स्ट सी लार्ड बने। हम सबने मिलकर प्रधानमंत्री को दिए जाने वाले जवाब की रूपरेखा तैयार की।

माउंटबैटन राज-सम्राट से मिलने गए

शुक्रवार, 20 दिसम्बर, को राजा से मुलाकात तय कर दी गई। उनके निजी सचिव, सर एलेन लासेल्स, मुझसे मिले और बोले, कि अगर मैं बाहर जाऊं तो उनके बेटे को अपने स्टाफ़ में शामिल कर लूं। मैं मान गया, और उसके बाद राजा से मिलने गया।

CC-0. Vasishtha Tripathi Collection. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"देखिए, मेरे साथ कितनी भयंकर बात हो गई है," मैंने सम्राट से कहा जो रिश्ते में मेरे भाई लगते थे।

"मैं समझता हूं," वह बोले। "प्रधानमंत्री मुझसे मिल चुके हैं, और मैं उनकी बात से सहमत हूं।"

"आप सहमत हैं? आपने इस विषय पर सोच-विचार कर लिया है?"

"हां, हां। मैं काफी सोच-विचार कर चुका हूं।"

"और आप यह समझते हैं कि वैवेल एक घोर संकट में फंस गए हैं? पार्टियों के आपसी समझौते की भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता। कोई भी रास्ता ढूंढ़ लेना नामुमकिन लगता है। अगर वैवेल यह काम नहीं कर पाए तो मैं कैसे कर सकता हूं?"

फिर मैंने कहा, "देखिए, यह बेहद खतरनाक स्थिति है। मैं आपका रिश्तेदार हूं, अगर मैं वहां कुछ अच्छा नहीं कर पाता तो बात आप पर ही आएगी।"

"हां, लेकिन अगर तुम सफल हो गए तो उसका कितना अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

"यह तो बहुत आशावादी तर्क है," मैंने जवाब दिया।

कुछ देर हम इसी विषय पर बात करते रहे। फिर वही बोले:

"तुम्हें यह प्रस्ताव मान लेना चाहिए। लेकिन, फिर भी खूब सोच-विचार लो। प्रधानमंत्री से अगली मुलाकात के बाद अगर यह लगे कि तुम यह काम नहीं कर सकते तो तुम मेरे पास आ जाना। तब, मैं तुम्हें जाने से रोक लूंगा।"

उसके बाद मैं लार्ड इस्मे से उसी दिन मिला क्योंकि मुझे लग रहा था कि अब मुझे जाना ही होगा।

"कितनी मज़ेदार बात है डिकी[1]," वह बोले, "सात साल की कड़ी मेहनत के बाद आज मेरा आखरी दिन है। और तो और औस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड की सरकारों ने मुझे और मेरी पत्नी को वहां तीन महीने रहने का निमंत्रण दिया है। हम उनके मेहमान होंगे। इससे ज़्यादा शानदार बात और क्या हो सकती है?"

मुझसे यह कहते नहीं बना कि मैं उन्हें अपने साथ भारत ले जाना चाहता था।

मैंने कहा, "हां, यह ठीक है, आपको लम्बी छुट्टी लेनी चाहिए। मेरी शुभकामनाएं।"

तब उन्होंने कहा—"आपको क्या हुआ? क्या आप इस नये युद्धपोत का चार्ज लेने जा रहे हैं?"

मैंने कहा, "नहीं, सम्भवतः वे मुझे भारत में वैवेल को भारमुक्त करने के लिए भेज रहे हैं।"

"हे भगवान," उन्होंने कहा, "कितना भयानक मैं अपने बुरे से बुरे शत्रु का भी इतना बुरा नहीं सोच सकता। आप ऐसा नहीं करेंगे, क्या करेंगे?"

---

1. माउंटबैटन का परिवार और उनके अंतरंग मित्र उन्हें प्यार से डिकी बुलाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैंने कहा, "मैं इससे बचने की पूरी कोशिश करूंगा।"

उन्होंने कहा, "आप ऐसा नहीं कर सकते। कोई भी इसका हल नहीं ढूंढ़ सकता। यह असम्भव है। यह एक अव्यवस्थित व्यवस्था है। हे भगवान्, आप इससे दूर ही रहें।"

मैंने कहा, "सम्भव हुआ तो मैं दूर ही रहूंगा। किन्तु तुम्हें चेतावनी दे दूं कि सम्राट ने मुझे इसका चार्ज लेने के लिए कहा है। कल मैं अन्तिम रूप से विचार-विमर्श करूंगा।"

अगले दिन सुबह, पग इस्मे मुझसे मिलने आए। उन्होंने कहा, "डिकी, मैं चिन्तित हूं, कल रात आप मुझसे मिलने क्यों आए थे?"

"सिर्फ, पुराने मित्र से मिलने।"

"मुझे बेचैनी सी हो रही है। मैं सारी रात सो नहीं पाया। सम्राट द्वारा प्राप्त इस आदेश पर कि आप वाइसराय की हैसियत से भारत जाएं, आप निश्चय ही मुझसे सहायता मांगने आए थे। क्या आपको मेरी सहायता नहीं चाहिए?"

मैंने कहा, "देखिए, आप इसे भूल जाइए, निःसन्देह आप ही पहले व्यक्ति हैं जिसका विचार मेरे मन में आया। मैं चाहूंगा कि आप मेरे साथ चीफ ऑफ स्टाफ बन कर चलें।"

"हे भगवान्!" उन्होंने कहा, "यदि आप इस असम्भव कार्य को करने के लिए वहां जाने को तैयार हैं तो मुझे भी अपने साथ समझिए।"

2 जनवरी 1947, बृहस्पतिवार को सर स्टेफोर्ड तथा लेडी क्रिप्स भोजन पर आए और हमने इस मसले पर विचार-विमर्श किया। 3 जनवरी को मैं प्रधानमंत्री के पास गया और स्वीकृति-पत्र दे आया।

प्रश्न : आपके परिवार की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर : आगामी रविवार को मैं कैनसिंगटन पैलेस गया जहां मेरी मां रहती थीं। मैंने उन्हें बताया कि मैं वाइसराय बन कर जा रहा हूं। वे लगभग 84 वर्ष की थीं। वे अधिक धार्मिक नहीं थीं किन्तु उनके सोचने का ढंग सही था। वे प्रखरबुद्धि थीं। वास्तव में मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा था। उनका विशाल अध्ययन था और वे अत्यधिक प्रगतिशील और सूझबूझ वाली महिला थीं। मैं उनके पास आया और उन्हें ब्रॉडलैण्ड्स ले गया। ये वह समय था जब मैं भारत जाने से बच नहीं सकता था। मैंने उन्हें अपने जाने का समाचार दिया।

मैंने कहा, "मुझे यह कहते हुए बहुत दुःख हो रहा है कि मैं अपनी और आपकी आशा के अनुसार प्रथम जहाजी बेड़े पर माल्टा में जलसेना में वापिस नहीं जा रहा, जहां आप मेरे साथ रहना चाहती थीं। मुझे जबर्दस्ती भारत में वैवेल के स्थान पर वाइसराय बनाकर भेजा जा रहा है।"

"भारत का वाइसराय? छिः छिः!"

मैंने कहा, "अब, क्या मामला है? (यहां मैं यह बता दूं कि मेरी मां के मुंह से कभी भी छिः छिः का शब्द नहीं निकला। उनकी माता का देहान्त कम उम्र में ही हो गया था और उन्होंने अपने भाई-बहनों का पालन-पोषण किया तथा महारानी विक्टोरिया के दरबार में उनका बहुत सम्मान था। उनकी दादी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
ने उन्हें कड़े अनुशासन में पाला था और उनके मुख से कभी छि: जैसा शब्द नहीं निकला — किन्तु आज उनके मुंह से ऐसे शब्द निकले।)

उन्होंने कहा, "तुम क्यों नहीं समझते कि भारत की समस्या का कोई हल दिखाई नहीं देता।

लिनलिथगो असफल रहा, वैवेल पूर्णतया असफल रहा, जब कि वह बहुत योग्य आदमी है। वहां के राजनैतिक दल कभी नहीं मानेंगे। जिन्ना ने अपना स्थान बना लिया है, वहां गृह-युद्ध होगा। मजदूर सरकार जानती है कि वे असम्भव स्थिति में हैं और उन्हें कोई बलि का बकरा चाहिए। और तुम वहां जा रहे हो, एक सफल कमांडर और सम्राट के चचेरे भाई। तुम बड़े जोश से जा तो रहे हो किन्तु तुम्हें सफलता की कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।"

मैंने कहा, "ये बहुत निराशाजनक टिप्पणी है जो मैंने आज तक कभी नहीं सुनी।

आपको अपने बेटे पर, जिसको आपने पाल-पोसकर बड़ा किया है, इतना भरोसा नहीं कि वह सरकार से ज्यादा चालाक है? अगर आप समझती हैं कि वह मुझ पर हावी हो जाएंगे, तो ऐसा नहीं होगा। मैं उनको ऐसी गांठों में फंसाऊंगा कि जीत मेरी होगी और उसकी कीमत वह चुकाएंगे। अब चिंता मत करो।"

प्रश्न : वाइसराय की पत्नी के रूप में भारत जाने की बात सुनकर एडवीना को कैसा लगा?

उत्तर : मेरी पत्नी भी खिलाफ थीं। सोचती थीं कुछ होना-हवाना नहीं है।

प्रश्न : अपना विरोध उन्होंने जाहिर कैसे किया?

उत्तर : बोलीं, "मत, जाओ।' मैंने उसे समझाया बुझाया। फिर वह कहने लगीं, तुम सही नतीजों पर पहुंच नहीं पाओगे। दूसरे, गवर्नर तुम्हारा समर्थन नहीं करेंगे। जनता तक तुम पहुंच नहीं पाओगे। जब इतने सारे लोग असफल रहे तो तुम कैसे सफल हो सकोगे?"

प्रश्न : आप दोनों आपस में खुलकर बातचीत कर सके थे?

उत्तर : उसने ठीक कहा था। अजीब बात है कि जिन लोगों से मैं बेहिचक सारी बातें कर लेता था उनमें मेरी पत्नी भी थी···और उस समय प्रिंस फिलिप भी। एक समय ऐसा भी था जब प्रिंस फिलिप ही एक ऐसे इन्सान थे जिनसे मैं प्रधानमंत्री के खतों के बारे में भी बात कर सकता था।

प्रश्न : प्रिंस फिलिप के साथ आपके संबंध कैसे थे?

उत्तर : वह मेरा बेटा जैसा था—मेरा मतलब, हम काफी नजदीक थे। वह समझदार था। तब उसकी शादी भी नहीं हुई थी। मैं दावे से कह सकता हूं कि मेरे पास इस बात का प्रमाण है कि प्रधानमंत्री के एक खत के बारे में मेरी मदद करनेवाला वह एक मात्र व्यक्ति था।

प्रश्न : इतिहास भी कैसे मोड़ लेता है। हजारों वर्षों तक जिस कड़ी ने ब्रिटिश साम्राज्य को जोड़े रखा उसे तोड़ने के लिए महारानी विक्टोरिया के पड़पोते को चुना गया।

5375

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर : हां, लेकिन मैं इस तरह नहीं सोचता···मैं आपको एक बात बताता हूं जो एकदम अलग है···जो मैंने सचमुच महसूस किया···आपको समझ लेना चाहिए कि मेरा विश्वास था कि आम जनता ब्रिटिश सरकार से खुश है। सच्चाई यह थी कि इतिहास का तकाज़ा था, भारतवासियों को अपनी सरकार खुद चलाने का मौका मिलना चाहिए था। ज़ाहिर है कि दबाव में आकर हम कुछ कर नहीं रहे थे। मैं चाहता हूं कि इस बात को आप ठीक समझें। मैं यह नहीं मानता कि हिन्दुस्तानी हमें निकाल देना चाहते थे। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि अंग्रेज वहां से दो-तीन कारणों से जा रहे थे :

भारत को स्वतंत्र कराने के ब्रिटिश प्रस्ताव पर माउंटबैटन के विचार

पहली बात···हमारे देश की यह नीति थी भारत जब अपनी सरकार चलाने लायक हो जाए तो उसे आजाद कर दिया जाए। दूसरी बात यह कि हमारे पास वहां बने रहने के लिए साधन भी नहीं थे। 1939 में हमने भारतीय सिविल सेवा में भर्ती बन्द कर दी थी। जो अभी सेवा में थे उनमें से कई अवकाश की उम्र पार कर चुके थे और सामर्थ्य भर अपना काम कर रहे थे। लेकिन, मान लीजिए कि चर्चिल चुनाव जीत जाते और अड़ जाते कि हम अगले पच्चीस वर्षों तक कोई फैसला नहीं करेंगे तो मुझे नहीं मालूम कि उतनी देर तक हम अपनी मशीन कैसे चला पाते···वह एकदम ठप हो रही थी।

प्रश्न : क्या आपकी गही निजी धारणा भारत और भारतवासियों के साथ आपकी सफलता का कारण है ?

उत्तर : यों तो मेरी बीवी और मैं तरक्कीपसंद माने जाते थे, लेकिन भारत में हमारी इतनी अच्छी कैसे निभी इसके कारण, मुझे लगता है, साफ-साफ बताने होंगे। भारत के लोग अजीब हैं। उन्हें बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। जब कोई उन्हें सचमुच प्यार करता है, वे जान जाते हैं। और तब वे भी प्यार करने लगते हैं। अगर आप उनके साथ अभिनय करना चाहें तो आपकी नहीं चलेगी। हमारी खुशकिस्मती यह थी कि मेरी बीवी और मैं भारत में नियुक्त हुए, और उसके लिए हमारे दिलों में भावना जगी, तो हमने आधा रास्ता तय कर लिया था क्योंकि हम वैसे भी उस देश और उसकी जनता को चाहते थे।

तो इस तरह हिन्दुस्तान से हमारा एक लगाव था जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत गहरा था। हमें भारत से प्यार था, भारतवासियों से प्यार था···हमने वहां अपने दोस्तों से निकट संपर्क बनाए रखा था।

कई राजे हमारे दोस्त थे। और फिर दक्षिण-पूर्वी एशिया में बिताए गए समय को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। बर्मा में मेरे नीचे करीब दस लाख हिन्दुस्तानी काम करते थे। मैं उन्हें अच्छी तरह जान-समझ गया था।

प्रश्न : दिसम्बर 1946 में आपको अपनी नियुक्ति पर कैसा लगा था ?

उत्तर : मैं आपके सामने एक साफ तस्वीर रखता हूं, अस्पष्ट विचार नहीं।

सत्ता की अदला-बदली

जैसा कि आप अन्दाजा लगा सकते हैं। मैं भारत जाना नहीं चाहता था—सोचता था बेकार का प्रस्ताव है—लेकिन इतना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए समय की सीमा

जानता था कि अगर नया तो कुछ नया शुरू करना होगा। पहली बात जो मैंने रखी, वह थी कि समय की एक अवधि निश्चित करनी होगी।

प्रश्न : ऐसा क्यों कहा आपने ?

उत्तर : क्योंकि इससे पहले जितने समझौते हुए थे उनकी कोई अवधि निर्धारित नहीं थी, कोई निश्चित क्षण भी नहीं था। जब पार्टियों में आपसी कलह हो, सभी हाथ-पांव मारें तब यह कशमकश की हालत चलती ही जाती है। मिसाल के तौर पर जिन्ना, अंग्रेजी राज्य की मातहत अपनी सरकार चलाकर खुश थे। सभी राजे भी अंग्रेजी सरकार से खुश थे, उनके जाने के पक्ष में नहीं थे। कांग्रेस अंग्रेजों के प्रस्थान के पक्ष में तो थी लेकिन देश के बटवारे के रूप में उसकी कीमत अदा करना नहीं चाहती थी। कोई भी झुकने को तैयार नहीं था, इसीलिए मैंने कहा, 'मैं वहां एक लम्बे अरसे के लिए नहीं जाना चाहता कि पांच साल वाइसराय बनकर बगैर कुछ किये-धरे, मौज करके वापस आ जाऊं।'··· अगर मेरे पहले के वाइसरायों को देखा जाए तो आपको लगेगा कोई किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा था। 1935 का भारत-सरकार-एक्ट याद कीजिए जिसे पास कराने के लिए लिनलिथगो ने क्या कुछ नहीं किया, खास तौर पर राजाओं-महाराजाओं की वजह से ही यह एक्ट नाकामयाब रहा। उसके बाद क्रिप्स के प्रस्ताव[1] और भारत में आया कैबिनेट मिशन भी खास तौर पर गांधी की वजह से नाकामयाब रहा।

प्रश्न : इसका मतलब कि एक निश्चित सीमा रख लेने की बात आपके दिमाग में पहले ही थी ?

उत्तर : शुरू से जब एटली के साथ इस विषय पर बहस हुई मैंने यह बात साफ कह दी थी कि मैं वहां असीमित काल के लिए नहीं जाऊंगा।···उन्होंने जवाब दिया, 'हम भी इसी नतीजे पर पहुंचे हैं कि बेहिसाब समय नहीं दिया जा सकता इस काम के लिए। एक अवधि तो तय करनी ही होगी। हमने फिर इस पर भी बहस की कि हमें तो निश्चित दिन चाहिए। उन्होंने कहा, 'कम-से-कम समय जो मैं तुम्हें दे सकता हूं, गर्मियों या पतझड़ का मौसम समझ लो।' मैंने कहा, 'ऐसे काम नहीं चलेगा। दिन नियत कीजिए।'

हम बहस ही करते रहे—मैं उनसे कोई दिन नियत नहीं करवा पाया था। बाद में जब उन्होंने 'ए प्राइम मिनिस्टर रिमेम्बर्स' शीर्षक पुस्तक फ्रॉसिस विलियम्स को लिखवाई तो उसमें एक हास्यास्पद बात कही कि अवधि सीमा की बात उन्होंने कही थी और उसे मानने के लिए मुझको बाध्य किया था—जबकि बात एकदम उल्टी थी।

प्रश्न : आपने अवधि सीमा की बात उठाई, इससे यह जाहिर है कि आपने

---

1. 11 मार्च, 1942 में कैबिनेट मिनिस्टर सर स्टेफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक कैबिनेट मिशन भारत आया था और यह ब्रिटिश-नीति स्पष्ट करने की कोशिश की गई थी कि जल्दी से जल्दी भारत को अपनी सरकार बना लेनी चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भारत के मसलों पर काफी कुछ सोच लिया था।

उत्तर : जी हां, एक तरह से यह सच है। ब्रिटिश कैबिनेट भारत में अपने प्रतिनिधि के रूप में वाइसराय को सुप्रीम एलाइड कमाण्डर नियुक्त करती थी। देश के बाहर हर कमाण्ड के लिए एक मंत्री होता था जिसके पास वह जा सकता था। मसलन, मध्य-पूर्व का कमाण्डर-इन-चीफ राज्यमंत्री के पास जाता था। जो किसी ज़माने में लॉर्ड माइन थे···कभी मि० केसी थे। वाइसराय मेरा राज्यमंत्री होता था। यह नियुक्ति बिल्कुल फिज़ूल साबित हुई क्योंकि मैंने न उनसे कभी कोई बात की और न उनके ज़रिए चर्चिल से। चर्चिल सीधा मुझको तार भेजते थे। मैं वापस उनको सीधा तार भेजता था। तो मैं कभी—वैवेल की मारफत उन तक नहीं पहुंचा।

लेकिन मुझे लगा कि मुझे उनको रिपोर्ट देनी चाहिए। मेरा एक हेडक्वार्टर दिल्ली में था। मैं कुछेक हफ्तों में एक बार दिल्ली जाता था। दो दिन वहां रहता था और देखता था कि वहां मेरे हेडक्वार्टर में क्या हो रहा है और वाइसराय के साथ बातचीत करता था।

साढ़े नौ बजे से लेकर साढ़े बारह बजे तक सारी सुबह वाइसराय के साथ गुज़रती थी। वैवेल कुछ बोलते ही नहीं थे—वे अपने को व्यक्त नहीं कर पाते थे। इसलिए मैं ही शुरू करता था, 'आप जानना चाहेंगे कि बर्मा में क्या हो रहा है?' वह मेरे पहले वहां आपरेशनल कमाण्डर रह चुके थे। तो मैं ही उन्हें बता देता।

वे कभी कोई टीका-टिप्पणी नहीं करते थे। अंत में मैं पूछता, "आपको कुछ कहना है?"

"नहीं, आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।"

"कोई और काम है जो मुझे करना चाहिए?"

"मैं ऐसा कोई काम सोच नहीं पा रहा हूं। तुम वही कर रहे हो, जो सही है।"

"आप बताइए, भारत में क्या हो रहा है?" मैं पूछता।

और उनका चेहरा खिल उठता। आखिर कोई ऐसा व्यक्ति उन्हें मिला जिसके सामने बेझिझक वह सब कुछ कह सकते थे बिना औपचारिक हुए। मैं उन्हें दफ्तरी कार्रवाइयों के बारे में बताता, इनके पास इस तरह की कोई बात न होती। फिर बातचीत होती। एक दिन वह बोले, 'गांधी को कैद से रिहा करके मैं काफी परेशान हो गया हूं। मैंने लन्दन में सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट से कहा कि उनकी सेहत ठीक नहीं है और उनके डॉक्टरों ने उन्हें रिहा करने की सलाह दी है। हम उन्हें कैद में मरने नहीं दे सकते। मैं उन्हें रिहा करना नहीं चाहता था, मुझे यह लगा कि उनसे मिलना चाहिए। उनसे बात करने का मौका मिलना अद्भुत अवसर है। फिर मैंने इस बात की अनुमति चाही कि उन्हें, मुझसे मिलने दिल्ली बुला लिया जाए। लेकिन यह अनुमति मुझे नहीं मिली। मेरा दिल टूट गया। स्थिति को आगे बढ़ाने का यह एक मौका था

वैवेल और भारत के विषय में चर्चिल क्या सोचते थे?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो मुझे नहीं दिया गया। मुझे पता है विंस्टन ने खुद हस्तक्षेप किया। हम क्या कर सकते हैं ?''

'यह तो सीधी-सी बात है। आप जानते हैं कि विंस्टन आपसे नफरत करते हैं, क्योंकि आपके साथ उन्होंने अन्याय किया है। जब आप मध्य-पूर्व में कमाण्डर इन-चीफ थे, काफी अच्छा काम कर रहे थे, तब उन्होंने आपको अपनी सेना यूनान ले जाने को कहा था। आप जानते थे उनका यह फैसला सैनिक दृष्टि से अनर्थ-कारी था। इसका मतलब था यूनान और अफ्रीका, दोनों जगह हार।···राज-नीतिक स्तर से आप पर यह निश्चय थोपने और आपको दोहरी हार का सामना कराने को विवश कर आपसे छुटकारा पाने में वह कामयाब हो गए। भारत में किसी भी तरह के विकास का विचार उन्हें अच्छा नहीं लगता। क्योंकि भारत के बारे में वह बहुत भावुक है। 1897 में वह चौथी हुसार्स (एक सेना) में सब-आल्टर्न या ऐसे ही कुछ थे। उनके लिए भारत किपलिंग है, पोलो है, फौजी जीवन है, तड़क-भड़क है—सब कुछ है। वह नहीं चाहते कि ये सब हाथ से निकल जाए। वह सोचते हैं, और कुछ हद तक ठीक ही सोचते हैं कि ब्रिटिश राज्य के अधीन भारत खुश है। मानव जाति का पांचवां भाग हिन्दुस्तान में रहता है। अगर 99% लोग हमारे साथ न होते तो हम उन पर एक दिन भी शासन नहीं कर सकते थे—यह ज़ाहिर है···। लेकिन 1% जो हमारे खिलाफ हैं, वे पढ़े-लिखे, नेता लोग हैं। उन्हें या तो हमेशा के लिए कैद में रखा जाए जिसके लिए हमें अपनी मोर्चाबन्दी बढ़ानी होगी, या फिर 1800 वीं ईस्वी में उनसे दो बार किए गए वायदे के अनुसार उनको आजाद कर दिया जाए। चर्चिल नहीं चाहते कि वह दिन आए। उन्होंने सोचा कि उसको रोकने का एक रास्ता यह है कि आप उस किस्म के आदमी हैं जिसको वह धमका सकते हैं। आप इतने शरीफ हैं कि हर हुक्म मानते हैं—और वह आपको कभी कुछ करने नहीं देंगे।

मैं आपको समझ नहीं पा रहा। आप वाइसराय हैं। सम्राट के बाद वाइसराय ही सबसे बड़ा और सबसे ज्यादा ताकतवर होता है। प्रधानमंत्री से ज्यादा अधिकार हैं उसके। आपको सिर्फ इतना कहना है कि मैंने गांधी को रिहा करके दिल्ली बुलाया है और उनसे बातचीत की। बातचीत अच्छी हुई। ये बातें हुईं ··।'

'विन्सटन बहुत नाराज़ होंगे।'

'सो तो होंगे, लेकिन वह आपको हटा नहीं सकते। विरोध करेंगे तो वह उन्हीं की बेवकूफी साबित होगी। विंसटन से निबटने का एक ही तरीका है कि उनकी **चालों को ताड़ लिया जाए और समझ लिया जाए कि वह जो कुछ कर रहे हैं, किसी अच्छे उद्देश्य से नहीं। वह ऐसी इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वह नहीं चाहते कि आप तरक्की करें। वह आपको इसी तरह नाकारा साबित करते रहेंगे जब तक कि आप उनकी हरकतों के प्रति चौकन्ने नहीं हो जाएंगे।'**

---

1. विंस्टन चर्चिल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके बाद वैवेल ने मुझको धन्यवाद दिया। मैं समझता हूं कि तभी उनकी आंखें खुलीं कि विंसटन उनके खिलाफ हैं।

यह मैं आपको वैवेल से मेरी बातचीत के और उनको दी गई मेरी राय के एक उदाहरण के तौर पर ही नहीं बता रहा। लेकिन वाइसराय जब तरह-तरह की राजनीतिक समस्याओं से घिरा हो तो उनमें दिलचस्पी दिखाए बिना आप उससे बातचीत नहीं कर सकते। मेरे लिए बहुत दिलचस्प था। मेरे लिए उसकी अहमियत भी थी क्योंकि मेरे मातहत दस लाख हिन्दुस्तानी काम कर रहे थे और चाहे-अनचाहे मुझे उनकी समस्याओं के बारे में मालूम होता रहता था। इसलिए जब मैं वहां से आया तो ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं था जो वैवेल की समस्याओं के बारे में मुझसे अधिक जानता था। मैंने कभी उन समस्याओं पर खास सोचा-समझा नहीं। मैं तो अपनी सलाह से वैवेल की मदद करने की कोशिश करता था।

प्रश्न : वैवेल के लौटने से पहले ही आप दिल्ली जाना क्यों चाहते थे?

उत्तर : परम्परा के अनुसार दो वाइसराय भारत-भूमि पर इकट्ठे नहीं हो सकते थे। पहले बम्बई के 'गेट वे टु इण्डिया' से पहले वाइसराय को धूमधाम से विदा किया जाता था और अगले स्टीमर से दूसरा वाइसराय आता था। दोनों मिलते नहीं थे। इसलिए एक ही देश में दो खुदाओं की उपस्थिति जैसी पसोपेश की हालत नहीं होती थी। लेकिन मैंने कहा, 'मुझे वाइसराय के आगे झुकने या उन्हें सम्मान देने में कोई आपत्ति नहीं है। मुझे उनके साथ केवल 24 घण्टे चाहिए', इस तरह वैवेल के रहते मेरे वहां पहुंचने की व्यवस्था कर दी गई।

जिस शाम मैं दिल्ली पहुंचा; वैवेल ने कहा, "मुझे अफसोस है कि मेरी जगह लेने के लिए यहां तुम्हें भेजा गया है।"

"क्यों···क्या मैं इस काबिल नहीं ?"

"मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं···एक नामुमकिन काम सौंपा गया है तुम्हें। उससे निबटने का कोई रास्ता नहीं। न तो व्हाइट हॉल[1] से कोई मदद मिलती है, और यहां की हालत विकट है। हम घोर संकट में हैं।" उन्होंने कहा (तिजोरी खोलते हुए), "तुम्हारे लिए जो चीजें हैं। एक तो वाइसराय का ताज, (जो एक जरूरत से ज्यादा कीमती आभूषण था) और दूसरी एक फाइल थी जिस पर 'ऑपरेशन मैडहाउस' लिखा है। इस फ़ाइल में प्रान्त-दर-प्रान्त, आदमी, औरतों, बच्चों, प्रशासन और अंत में सेना को हटाने की योजना है। अगर स्थिति ऐसी ही रही तो किसी भी नतीजे पर पहुंचना मुश्किल हो जाएगा। सब गड़बड़ है। मैं तुम्हें विरासत में सिर्फ यही स्थिति दे सकता हूं···अगर तुम्हें कोई रास्ता सूझ गया तो तुम वह चमत्कार कर सकोगे जो मैं नहीं कर पाया। मुझे बेहद···बेहद···अफसोस है।"

मैं सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि वैवेल ने हल निकालने की सचमुच कोशिश की थी। मैं यह भी कहूंगा कि लन्दन ने उनके साथ जो सलूक किया

---

1. ब्रिटिश-सचिवालय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वह शर्मनाक था।

पर यह उस आदमी द्वारा दी गई सफाई है जो बहुत अच्छा लिखता है, जिसके पास अव्वल दर्जे का दिमाग है और जो नेक इरादों वाला और सही अर्थ में तरक्कीपसंद है। वैवेल में कोई खराबी नहीं थी। कमी थी तो बस यह कि वह अपनी बात नहीं कह पाते थे। जब तक लोग न बोलें, वह नहीं बोलते थे। यही कारण था उनकी असफलता का। उनपर भरोसा न हो, ऐसी बात नहीं थी। बात यह थी कि लोगों को लगता नहीं था कि वह किसी नतीजे पर पहुंचना चाहते हैं।

प्रश्न : उनके साथ जो सलूक किया गया था क्या उसके कारण वह कटु हो गए थे ?

उत्तर : हां ! खास तौर से जो सलूक चर्चिल ने किया ! चर्चिल खुद्दार थे। और मैं आपसे कहता हूं कि अगर वह चुनाव दुबारा जीत जाते—जो हो नहीं सकता था क्योंकि चौदहवीं सेना उनके नेतृत्व के खिलाफ थी—तो हम कहीं नहीं पहुंच सकते थे। वह किसी भी तरह की तरक्की का काम फौरन रोक देते। मलाया या सिंगापुर, फ्रेंच इस्ट इण्डीज़ या फ्रेंच इण्डोचीन में कुछ भी नया करने से वह मुझे रोक देते, सब कुछ बन्द करा देते।···मैं रुकता नहीं, या तो वह मुझे निकाल बाहर करते या मैं खुद छोड़छाड़कर चल देता। लेकिन एटली के साथ दूसरी बात थी। वह इन सब बातों की जरूरत समझते थे।

अब सुनिए, मेरे भारत पहुंचने से पहले वहां का खाका। एक बार मैं यह फिर स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मुझसे पूछने से पहले ही मुझे वाइसराय बनाने की बात तय कर ली गई थी। उन्होंने बात शुरू की और मेरी मर्जी का जब उन्हें पता चला तब वे हैरत में आ गए। आप देखिए न, उन्हें इस बात का सुराग तक नहीं था कि मैं पहले से ही वैवेल से बातचीत करता रहा हूं। यह जानकर उन्हें ताज्जुब हुआ—बर्मा की जिम्मेदारी मेरी थी लेकिन मेरी राय मांगी जाती इसके बारे में, अब भारत के बारे में भी मेरी राय ली जाने लगी।

प्रश्न : अपनी नियुक्ति और प्रस्थान के ऐलान के बीच आप चर्चिल से मिले ?

उत्तर : जी हां, पहले उनके स्टाफ के चीफ पग इस्मे उनसे मिले, फिर मैं भी मिला। इस्मे मेरे साथ आने के लिए तैयार थे।

बोले, "मुझे अफसोस है कि आपको यह तकलीफदेह काम करना पड़ रहा है। मैं यह नहीं कहूंगा कि आप यह काम कैसे करें लेकिन एक बात याद रखें कि किसी का बाल भी बांका न हो।"

"किसी का बाल बांका करने की मेरी कोई इच्छा नहीं, मुसलमानों ने फ़ौज में बड़े पैमाने पर मेरा साथ दिया है, जाहिर है मैं ऐसा क्यों चाहूंगा ?"

"हां···वे हमारे मित्र रहे हैं और हिन्दू इन्हें दबाने की सोच रहे हैं, इसलिए आपको ऐसा इन्तज़ाम करना होगा कि ऐसा कुछ नागवार न गुजरे।"

"मैं राजी हूं।"

"ठीक है···।"

मजेदार बात तो यह है कि बाद में उन्होंने मेरी बड़ी तारीफ की। इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बात का महत्त्व है क्योंकि इससे पता चलता है कि बाद में उन्होंने अपनी राय बदल ली थी। 1947, जुलाई में जब सत्ता की अदला-बदली का इन्तज़ाम हो गया तब लन्दन के 'टाइम्स' ने यह लेख छापा, "ऐटली जब अपना वक्तव्य देने के लिए खड़े हुए तब माहौल भारी था, लोग सोच रहे थे पता नहीं क्या कहें। लेकिन जब उन्होंने यह कहा कि डोमिनियन स्टेटस का प्रस्ताव, अधिवेशन का प्रतिनिधित्व करती तीन पार्टियों और वाइसराय ने मान लिया है तो ताली बजाकर उनका अभिवादन किया गया। वह लार्ड माउंटबैटन और उनके काम की प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे। चर्चिल ने इस अभिवादन पर जोर देते हुए कहा कि इस घोषणा से जो उम्मीदें जागी हैं वे पूरी हुईं तो वाइसराय ही नहीं उस प्रधानमंत्री को भी जिसने उनकी नियुक्ति करने की बुद्धिमानी की मान्यता देनी होगी।"

डोमिनियन दर्जे का प्रस्ताव

प्रश्न : भारतीय स्वतंत्रता के लिए चर्चिल क्या राजी हो गए थे ?

उत्तर : जी नहीं, मुझे नहीं लगता कि वह किसी तरह राजी हुए होंगे··· जब उन्होंने पग इस्मे से विदा ली तब सिर्फ इतना कहा—'गुडबाई पग···तुमने ब्रिटेन के नाम पर बट्टा लगा दिया है, मैं दावे से कह सकता हूं कि और अधिक इज्जत बटोरने के लिए तुमने ऐसा किया है।' पग इस्मे उनके स्टाफ के चीफ रह चुके थे, उनके दोस्त थे, एक बार उनकी जान भी बचाई थी, उनके बिना विंस्टन टिक नहीं सकते थे।

प्रश्न : आपने सम्राट से विदा ली थी ?

उत्तर : जी हां, इस दौरान सम्राट का व्यवहार असाधारण था। वैसे तो वह पुराने दोस्त थे, मैं उन्हें अच्छी तरह जानता भी था। उन्हें भरोसा था कि हम ठीक कर रहे हैं। राजाओं से यह कहने का अधिकार कि उनकी भलाई का ख्याल रखकर ही हम कदम उठाएंगे, उन्होंने मुझे दे दिया। मुझ पर अजीब तरह का भरोसा था, और बेहद था। उसके बारे में और कुछ नहीं कहा जा सकता।···उन्होंने गहरी दिलचस्पी दिखाई, वह बहुत-बहुत अच्छे थे इससे बेहतर वह हो ही नहीं सकते थे।

प्रश्न : आपकी विदाई कहां हुई ?

उत्तर : बकिंघम पैलेस की एक बैठक में।

प्रश्न : महारानी विक्टोरिया की तस्वीर के सामने ?

उत्तर : यह मुझे पता नहीं···देखिए, अब तो मैं महारानी से मिलने उनकी बैठक में जाता हूं जो एकदम अलग है।

प्रश्न : दिल को छू लेने वाली कोई बात उन्होंने कही कि महारानी विक्टोरिया हजार वर्षों से सम्राज्ञी हैं···या इसी तरह की कोई और बात ?

उत्तर : नहीं···जो बात मुझे याद आ रही है···एक बात पर वह उदास थे, बोले, "मैं हमेशा भारत जाना चाहता था, दक्षिण-पूर्व एशिया में जहां तुम युद्ध कर रहे हो, तुमसे मिलना चाहता था, लेकिन तुम जानते हो, प्रधानमंत्री ने मुझे रोक लिया।"

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाएं। मैं वहां तैयार था लेकिन उन्होंने कहा, "अब लगता है मैं वहां नहीं जा सकूंगा।"

"मुझे पता नहीं।" मैंने जवाब दिया। "कितनी बुरी बात है," वह बोले, "मैं भारत में गए बिना वहां का सम्राट बना दिया गया और अब यह राज मुझसे छिनने वाला है।"

प्रश्न : एटली से पहली बातचीत···अपने प्रस्थान के दौरान आपने स्टेफोर्ड क्रिप्स से भी बात की ? गांधी के बारे में वह क्या चाहते थे ?

उत्तर : उन्होंने सबके बारे में मुझे जानकारी दे दी थी। नेहरू को मैं पहले से ही जानता था लेकिन उनके बारे में और भी बहुत कुछ पता लगा। स्टेफोर्ड ने मुझे जिन्ना के बारे में बहुत कुछ बताया। पटेल और गांधी के बारे में भी अपनी राय जाहिर की। जहां तक मुझे याद है सबके बारे में उनके विचार ठीक थे।

वह काफी तेज़ थे। लेकिन गांधी के बारेमें उनकी एक राय गलत साबित हुई। उनका ख्याल था कि सभी सवालों के हल गांधी के पास हैं। लेकिन सभी सवालों का एक ही जवाब था—वह तहस-नहस कर सकते थे, कुछ बना नहीं सकते थे।

प्रश्न : वैवेल ने नेहरू के बारे में आपसे क्या कहा था ?

उत्तर : उन्होंने कहा था, "नेहरू के पास एक आकर्षण है, उनके साथ काम करने का अपना मजा है, साथ ही मुश्किलें भी हैं। क्योंकि वह बहुत तीव्र बुद्धि वाले हैं। उनके पास आदर्शवादी विचारों की भरमार है लेकिन किसी भी तरह का राजनीतिक अनुभव नहीं है उनके पास। तुम्हें यह बात उन्हें समझानी होगी कि इस तरह की स्थितियों के परिणाम क्या होते हैं, यह काम मैं ठीक से नहीं कर पाता। उन्होंने 'इण्डियन नेशनल आर्मी' के कोर्ट मार्शल को अवैध करार देकर भारतीय सेना को नष्ट कर देना चाहा। और अगर उन्होंने ऐसा किया तो सब जानते हैं, कमाण्डर-इन-चीफ और सभी अंग्रेज त्यागपत्र दे देंगे। और अगर हमने ऐसा किया तो कोई सेना नहीं बचेगी ! नेहरू यह देख नहीं पा रहे हैं और भारतीय यह स्थिति झेल नहीं पाएंगे।"

प्रश्न : और गांधी के बारे में ?

उत्तर : उनके विचार से गांधी एक प्रिय व्यक्ति थे, आदर्शवादी, बादलों के साथ उड़ानें भरने वाले। उनके पास कोई व्यावहारिक सुझाव नहीं था लेकिन अनशन की तरकीब जरूर थी। अगर वह कुछ करवाना चाहते तो अनशन शुरू कर देते। लेकिन यह वहीं तक ठीक है जहा अनशन अच्छे उद्देश्य के लिए हो।

प्रश्न : और जिन्ना के बारे में ?

उत्तर : एकदम नाउम्मीदी जैसी। उन्होंने कहा था, "जिन्ना के बारे में एक बात कभी मत भूलना कि तालीम, नजरिए और सुझाव की नजर से वह पक्के अंग्रेज हैं, अंग्रेजी में बात करते हैं और जहां तक मुझे पता है कोई और जुबान नहीं बोल सकते।

जब वह लगभग साठ साल के थे तब उन्होंने राजनीति में दिलचस्पी लेनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुरू की, अपनी जिन्दगी के तमाम दिन बिताकर बेहद नाजुक मौके पर वह राजनीति में आए क्योंकि 1935 के भारत सरकार एक्ट के बाद 1938 में वहां चुनाव हुए थे। इस चुनाव में उन्होंने अलग-अलग सूबों में स्थानीय रूप से चुनी हुई लोकप्रिय सरकार खड़ी की थीं। हर सूबे में कांग्रेस पार्टी ने चुनाव जीता और मुस्लिम लीग कहीं की न रही।"

अलग-अलग पार्टियों की मिली-जुली सरकार बनाकर उसमें मुस्लिम लीग को भी एक जगह देने की जगह उन लोगों ने उन्हें नजदीक भी नहीं फटकने दिया, उन पर जुल्म भी किए (अगर वह लीग को मिली-जुली सरकार में शामिल नहीं कर सकते थे तो कम-से-कम अपने दायरे से बाहर जाकर मुसलमानों के साथ भरसक अच्छे बर्ताव तो कर सकते थे)। इससे मुस्लिम लीग को यह यकीन हो गया कि अगर वह अपनी आजादी के लिए आवाज़ नहीं उठाते तो उनके साथ ऐसा ही सलूक किया जाएगा।

यों तो मुसलमान सारे भारत में फैले थे, फिर भी मुस्लिम लीग ने ही आजादी की आवाज बुलन्द की। असल में वह सिर्फ दो सूबे अपने कब्जे में ले सकते थे। जिन्ना का विचार था कि पूरा पंजाब और पूरा बंगाल ले लें और इनके साथ वहां बसे लाखों हिन्दुओं को भी। अगर नेतृत्व ठीक होता तो यह बंटवारा ठीक हो सकता था। लेकिन उनका कहना था कि उनको जिन्ना पर विश्वास नहीं।

प्रश्न : इस तरह जब आप भारत गए तो आपकी अपनी भावनाएं क्या थीं ?

उत्तर : भली हो या बुरी। एक बात आपको समझनी होगी। मैं बहिर्मुखी हूं और खूब बोलता हूं। मैं फिर कहता हूं, हमेशा से ही मुझको भारत से प्रेम रहा है। मैं बहुत प्रेम से गया था वहां। याद रखिए कि एक बहुत महत्त्वपूर्ण दिन मैं वहां था। हमारी सगाई वहां हुई थी। आपको विश्वास करना होगा कि भारत के लिए मेरे दिल में प्रेम था। मेरे परिवार को भारत से प्रेम था। सच्चा प्रेम। मैं सोचता था कि उनकी सेना कमाल की है। मेरे कितने ही भारतीय दोस्त थे। वहां सच्चा दोस्त बनाना कठिन नहीं था। वैवेल के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन मैं नहीं सोचता कि लिनलिथगो हिन्दुस्तानियों को पसन्द करते थे।

माउंटबैटन का भारत प्रेम

उनको चकमा देना आसान नहीं। उनको फौरन पता चल जाता है कि आप सचमुच उन्हें चाहते हैं या सिर्फ दिखावा कर रहे हैं। मेरी बात और थी। मैं उन्हें चाहता था। हमारी भावनाएं कहीं जुड़ी हुई थीं।

आप देखिए, वैवेल और उससे भी ज्यादा, लिनलिथगो के साथ हर जगह सुरक्षा का भारी प्रबन्ध रहता था। वैवेल गोल्फ़ खेलने जाते तो गोल्फ़-कोर्स खाली कर दिया जाता था, और हर पचास गज पर पुलिस के आदमी तैनात रहते। जब वाइसराय रेलगाड़ी से सफर करते तो हर सौ गज पर उनकी सुरक्षा के लिए आदमी रहता। वह पहले से बताये रास्तों पर ही जाते—पुलिस की गहमा-गहमी, आगे-पीछे मोटरें उनके साथ चलतीं। मैं वह सब बदल देना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहता था। जो भीड़ पहले गायब रहती थी, (चाहे वह सद्भावना से खाली न हो) वह जहां-जहां हम गये भारी संख्या में जुटने लगी। एक दिन नेहरू ने कहा, "आप से बातचीत करना बड़ा मुश्किल हो गया है। मुझको पता चला है कि जितनी भीड़ आपको देखने के लिए टूटती है उतनी गांधीजी के या मेरे लिए भी नहीं।"

"मानता हूं।" मैंने जवाब दिया।

"जिसके पीछे चलनेवाली भीड़ अपनी भीड़ से बड़ी हो, उससे बात करना मुश्किल हो जाता है।" वह मुस्कराए थे।

अब मैं इसका कारण नहीं बता सकता। हमारी हिन्दी-उर्दू काफ़ी खराब थी। आम सभाओं में मैं बहुत कम बोला था। यह सच है कि सेना हमें चाहती थी और लोगों तक यह खबर पहुंचा दी थी। यह भी सच है कि लोग हमें अच्छे लगते थे।

लिनथलिगो जैसा आदमी हिन्दुस्तानियों को सह नहीं सकता था। उनका व्यवहार दुरुस्त होता था, लेकिन किसी के लिए प्रेम की गरमाहट नहीं थी उनमें। उनके दिल में शायद भावनाएं नहीं थीं।

हम यहां आए और माहौल बदल गया। असल में इसी ने जादू किया। मेरी भूमिका को वह नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते थे क्योंकि मैं भी अपने लिए उतनी ही भीड़ इकट्ठी कर सकता था, जितनी वे। इसलिए मेरी स्थिति काफी मजबूत हो गई।

प्रश्न : आप 22 मार्च 1947 को इंगलैण्ड से दिल्ली के लिए रवाना हुए। इस महाद्वीप पर उड़ते हुए आपको कैसा लगा था? स्तंभित रह गए थे?

उत्तर : स्तंभित क्यों होता? उससे पहले के ढाई वर्ष मैंने इस जगह पर उड़ानें भर-भरकर ही बिताए थे। फर्क सिर्फ इतना था कि अब एक सेना के कमाण्डर की बजाय मैं राज्य का प्रमुख होकर जा रहा था। मुझको मालूम था कि यह काम युद्ध से ज्यादा मुश्किल होगा। युद्ध कठिन तो था, अव्यवस्था के कारण। मगर सीधी बात थी—जापानियों से लड़ना था।

अपनी कार्य-विधि पर माउंटबैटन के विचार

यहां मुझको पूरी तरह से अपनी अक्ल पर निर्भर करना था। यह समझाना होगा। मुझे तय करना था कि बातचीत किस तरह संभाली जाए। मुझको विश्वास था कि बातचीत सिर्फ दो के बीच अनौपचारिक रूप से होनी चाहिए। मैंने एक से ज्यादा व्यक्ति को कभी अपने कमरे में नहीं आने दिया। और उन्हें एक घण्टे से ज़्यादा ठहरने भी नहीं दिया। अगर बातचीत पूरी न हो पाती, तो मैं कहता, फिर मिलेंगे।

शुरू के दिन मैंने गांधी, जिन्ना और दूसरों के साथ अपने बीच की दीवार तोड़ने में लगाए। उनके साथ मैं उनके जीवन और गुजरे दिनों की बातें करता। एक तरह का रिश्ता मैंने उनके साथ कायम कर लिया था। इसलिए जब वे फिर आते तो जहां बात खत्म हुई थी वहीं से शुरू हो जाती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं यह सब इसलिए कह रहा हूं कि आपको अपनी पुस्तक[1] में बताना होगा कि मेरे काम के तरीके, स्थिति के बारे में मेरे अनुमान क्या थे—अगर आप ऐतिहासिक दृष्टि से सही होना चाहते हैं तो। लेकिन मेरा दावा है कि यह केवल मन का इशारा या अनुमान नहीं था। मेरा दावा है कि यह अपने भारतीय साथियों के मनोविज्ञान का गहरा अध्ययन था। वी० पी० मेनन[2] जैसे भारतीयों से बात करने का ख्याल वैवेल को नहीं आया। वी० पी० मेनन को उनके पास जाने की इजाजत नहीं थी। वह वैवेल के स्टाफ में थे लेकिन उनसे कभी मिले नहीं थे। मेनन कहते थे, मैं वायसराय से कभी नहीं मिला। मेरी राय कभी नहीं पूछी गई।

मेरे साथ इस तरह की जितनी मुलाकातें हुईं उन्हें मैं 'गोलमेज़ मुलाकातें' कहता हूं। भारत में मेरा हर काम लोगों के ख्यालों के विपरीत था। ज्यादातर लोगों ने सोचा था, पता नहीं क्या हो जाएगा। भयंकर परिणामों की भविष्यवाणियां की गई थीं। सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि इतनी देर से पहुंचने के कारण प्रवास के बारे में मैं कुछ नहीं कर सका। इसके लिए दोषी मैं ठहराया गया। लेकिन मैं सोचता हूं कि अगर मैं कुछ देर और रुक जाता तो क्या होता? भारत की सरकार न बन पाती और मुझे धारा 93 के अन्तर्गत फैसला करना पड़ता। ऐसी स्थिति में वायसराय की हैसियत से ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत भारत पर शासन करते हुए, मैं सत्ता उन्हें सौंपने की आशा कैसे करता? भारत विषयक मेरे फैसलों के पीछे मेरा एक खास फलसफा था। सुप्रीम कमाण्डर की हैसियत से मैंने एक-दो साल आगे से कम की बात नहीं सोची। भारत पहुंचकर अपने-आपसे मैंने कहा था, "अपने फैसले में आने वाले दस सालों को नज़र में रखकर करूंगा। दस-पन्द्रह साल बाद इतिहास में जो लिखा जाएगा वह पढ़ने में कैसा लगेगा। यही विचार मेरे फैसलों को निश्चित करेगा।

···मैं उस इतिहास के लिए काम कर रहा हूं जिसे मेरे पोते-पड़पोते पढ़ेंगे। इससे थोड़े समय के लिए भी आलोचना परेशान नहीं करती।

प्रश्न : 24 मार्च, 1947 के दिन वायसराय हाउस के भरे दरबार-हाल में आपको और आपकी पत्नी एडवीना को भारत में···एक ऐसे महाद्वीप में, जहां मानवता का पांचवां हिस्सा बसता हो, वाइसराय और वायसरीन घोषित किया गया था। यह आपके जीवन की सबसे शानदार घटना थी। उस स्मरणीय दिन की कुछ बातें हमें भी सुनाइये।

उत्तर : क्यों नहीं। मुझे उस दिन का हर क्षण याद है। सौ-सौ आदमियों के तीन गार्ड-ऑफ-ऑनर बाहर कतार में खड़े थे और यही जश्न हज़ारों बार पूरे देश में दोहराया जा रहा था। रॉयल हॉर्स, आर्टिलरी बन्दूकों की एक बैटरी, मॉस, बैण्ड, अंगरक्षकों की कतारें, हाल के ऊपरी हिस्से में तुरही

---

1. कॉलिंस और लापिएर : 'फ्रीडम एट मिडनाइट' (नई दिल्ली, विकास, 1976)
2. वी० पी० मेनन, जुलाई 1947 से वायसराय के रिफॉर्म्स कमिश्नर, भारत सरकार के राज्य विभाग के सचिव रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
बजाने वाले गार्ड, और हमारे अन्दर प्रवेश करते ही तुरही का उद्घोष·· इस लम्बे जलूस के हम आखिरी सदस्य थे।

मैं पूरे लिबास में था—सफेद वर्दी, आर्डर्स, तमगे, पदक···सब कुछ। पिछली रात ही वैवेल ने हीरों में जड़ा पारम्परिक आभूषण मुझे दे दिया था। उसे मैंने गले में पहना था। गार्टर भी पहन रखा था। 'स्टार ऑफ इण्डिया', 'ग्रेण्ड मास्टर ऑफ आर्डर', 'स्टार ऑफ इण्डियन एम्पायर,' और 'विक्टोरियन आर्डर' भी मैंने पहन रखा था। यह चार आर्डर पहनने की आज्ञा थी। सम्राट के निजी ए० डी० सी० की कलगी भी मैंने लगा रखी थी। ओहदे में मैं रिअर एडमिरल था।

मेरी पत्नी मुकुट और तमगों के साथ शाम की पोशाक में बहुत खूबसूरत लग रही थी। सजना-संवरना उसे आता था। उस वक्त उसके पास 'डेम कमाण्डर ऑफ द विक्टोरियन आर्डर' था। 'सेण्ट जॉन', आर्डर का ग्रेण्ड क्रॉस था। यह एक तरह का कमरबन्द होता है। फिर उसको 'क्राउन ऑफ इण्डिया' भी मिला था! स्त्रियों के लिए गार्टर को छोड़कर यह सबसे ऊंचा आर्डर होता है। गार्टर सिर्फ महारानी पहन सकती हैं। मेरी पत्नी के पास 'विक्टोरियन आर्डर का स्टार' भी था। तब वह पैंतालीस वर्ष की थीं। और मैं छियालीस का। तब भी उसके शरीर की सुडौलता निर्दोष थी। जब कोई इस सेना समूह में होता है तो उसके आगे-आगे उसके अपने स्टाफ के लोग भी पूरी वर्दी में चलते हैं। यह अनुभव बयान नहीं किया जा सकता।

दरबार हॉल के लिए रवाना होने से पहले मेरी बीवी पूरी तरह सज-धजकर मेरे कमरे में आई। हमारी सगाई यहीं भारत में हुई थी, इसलिए यह उसकी अद्भुत संपूर्ति थी। मुझे अभी भी याद है···मैं लगभग तैयार हो चुका था। हम उन कमरों में ठहरे थे जो 'रीडिंग रूम्स' कहलाते थे। थोड़ी देर बाद हम ऊपर वाइसराय के कमरे में गये। मेरा नौकर चार्ल्स तब भी कुछ न कुछ किए जा रहा था। मेरी पत्नी हमेशा समय से पहले तैयार हो जाती थी। वह चौखट पर खड़ी थी···बेहद खूबसूरत। वह सचमुच गजब की लग रही थी।

लेडी वैवेल मेरी पत्नी की नौकरानी-सी लग रही थी। वह बड़ी मामूली-सी थी। वहां मौजूद लोग दोनों का फर्क देखकर चौंक उठे। वैवेल समारोहों के शौकीन नहीं थे, और हमें यह सब बड़ा अच्छा लगता था, इस तरह हम अपनी गरिमा को महसूस करते हुए गए। यह बात पहले बिल्कुल नहीं पाई जाती थी। सब कुछ एक नये स्वर के साथ शुरू हुआ।

एक आश्चर्यजनक सुख और उत्थान की भावना थी। मैं आशंकित था, यह कहना ठीक न होगा। लेकिन पहले मैं सोचता था किसी भयावह स्थिति का सामना करने जा रहा हूं। दरबार हॉल से लौटा तो लगा, यही मेरा इनाम है। जैसे किसी ने दैवी शक्ति मुझे दे दी हो। यकायक लगा, धरती का सबसे ज्यादा ताकतवर इन्सान बना दिया गया हूं। मानव जाति का पांचवां हिस्सा मेरे हाथ में है—जिन्दगी और मौत का फैसला करने की शक्ति। इन सबके साथ थी आदर और मित्रता की भावना। लगता था, सभी लोग हमें देखकर खुश थे। मैं अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तमाम पृष्ठभूमि (मेरे विक्टोरियाई रक्त-सम्बन्ध)···और मुझे सब पता था कि क्या कुछ हो रहा है। दूसरे आश्चर्यजक अनुभव पहले भी मुझको हो चुके थे। सिंगापुर के सिटी हॉल में हम अंग्रेजों को घोर बेइज्जती सहनी पड़ी थी। उसी सिटी हॉल के सामने लगभग सात लाख जापानियों का सार्वजनिक रूप से आत्म-समर्पण स्वीकार करना अपने में बहुत बड़ा अनुभव था।

दरबार हॉल में वह क्षण भी आया जब कहना पड़ता है, "मैं निष्ठापूर्वक शपथ लेता हूं···" और जैसे ही आप पुस्तक नीचे रखते हैं पहली तोप दागी जाती है। इक्कीस तोपों के साथ देश-भर की दुर्ग-सेना ने सलामी दी—और 'गॉड सेव द किंग' की धुन बजने लगी। माहौल हद से ज्यादा भावुकतापूर्ण था। तुरही की ध्वनि गुम्बद के इर्द-गिर्द गूंज रही थी। भारत भव्य सजावट और समारोहों का देश है। उस दिन भव्यता की चरम सीमा थी। अलौकिक क्षण था वह !

प्रश्न : आपने दरबार हॉल में भाषण क्यों दिया ? इसकी कोई खास वजह थी ?

उत्तर : शुरू से मुझको यकीन था कि लोगों को भरोसा नहीं है कि मैं एक अलग ही तरीके से काम करने आया हूं। मैं कैसे बताता उनको ? मैं ऑल इण्डिया रेडियो से भाषण नहीं देना चाहता था, न ही प्रेस कान्फ्रेंस बुलाना चाहता था। मैंने सोचा, क्यों न वाइसराय के सिंहासन से भाषण दिया जाए ? सिंहासनों से दिए गए सम्राट और वाइसराय के भाषणों में फर्क इतना ही था कि सम्राट का भाषण कोई और लिखता था। अपना भाषण मैंने खुद लिखा था। परम्परा से हटने का आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा···कि एक वाइसराय ने पद संभालने के साथ ही अपनी नीतियां सार्वजनिक रूप से घोषित कर दीं। भाषण शुरू करने के एक मिनट पहले ही मैं वायसराय बना था। शपथ के तुरन्त बाद पुस्तक रखकर मैं घूमा और बोला, "मैं यह···करने जा रहा हूं।" यह मेरी गुस्ताखी थी···

प्रश्न : आपने भारत पहुंचते ही एक असाधारण तनाव महसूस किया होगा।

उत्तर : यह बयान करना कि उस समय हालात कितने उत्तेजक और तकलीफदेह थे, बड़ा कठिन होगा। मैं युद्धों का सामना कर चुका था, लेकिन वाइसराय के सिर पर हर समय लटकती तलवार के आगे वह कुछ नहीं था।

ऐसे हालात में मैं निखरता हूं। मैं कभी इस कदर खुश और उत्साह से भरा नहीं था। मुझे लगता है, मेरे हौसले से लोग हैरान रह गए। स्थिति जितनी बिगड़ती, मेरा हौसला उतना ही बढ़ता। मेरी जिंदगी का वह सबसे ज़्यादा उत्तेजक मौका था।

मैं इसलिए यह सब कह रहा हूं कि अगर लोगों को हैरानी हो कि मैं काम कैसे पूरा कर सका तो इसलिए कि मैं कभी, कभी परेशान नहीं होता था। इसीलिए अपने काम में सफल हो सका। मैं समझता था कि मैं अपनी क्षमता भर काम कर रहा हूं, और इसके आगे और कुछ नहीं कर सकता। प्रवास के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
समय दंगे-फसाद, मुसीबतों का मुकाबला कर व्यवस्था को बनाए रखने के लिए मैंने तुरंत युद्ध-कक्ष (वार-रूम) बनाया, काम का संचालन किया, नक्शे लगाए, लेकिन कभी परेशान नहीं हुआ।...किसी ने भी मुझको कोई चेतावनी नहीं दी थी। मैंने सबको हैरानी में डाल दिया। मैं चिन्तित ज़रूर था, मगर परेशान नहीं। भारत की स्थिति के मुकाबले युद्ध ज़्यादा आसान था। बड़ी कठिन परीक्षा थी। अगर मैं जवान न होता, अच्छा स्वास्थ्य और ताकत न होती तो करना मुश्किल होता।[1]

प्रश्न : आपने कैसी कार्यप्रणाली अपनाई ?

उत्तर : सबसे पहले तो मैंने लोगों से अकेले में मिलने का आग्रह किया। किसी तीसरे आदमी का कमरे में रहना भयंकर गलती होती। इसलिए सिर्फ मुझको ही मालूम था कि क्या हुआ। लेकिन मेरी मदद के लिए मेरे पास बड़ा स्टाफ था, यह जानने के लिए भी मैं कर क्या रहा था। लोगों के जाते ही एक सेक्रेटरी आ जाता और मैं उसे बातचीत का सारांश लिखा देता। उन दिनों मेरी याददाश्त बहुत तेज़ थी। जो कुछ घटता था मुझको एक दिन बाद भी आसानी से सब याद रहता।

शाम को, जब सब टाइप हो जाता, हम बैठकर दिन की घटनाओं का लेखा-जोखा लेते। हमारे नोट्स बेजोड़ निकले। उस समय लिए गए सैकड़ों-सैकड़ों नोट्स सहेजे नहीं थे, और जैसा कि आप स्वयं देखेंगे बिल्कुल सच्चे और अछूते बयान हैं। ये गलत नहीं हो सकते क्योंकि ये तुरंत लिखे गए थे। लेकिन कभी-कभी मैं जान-बूझकर कुछ छोड़ जाता था, जैसे कि पटेल के साथ हुई गर्मागर्मी।[2] मुझको पटेल पसन्द थे, इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैंने सावधानी नहीं बरती तो मेरा स्टाफ उनके खिलाफ हो जाएगा। उनसे हुई पहली मुलाकातों के नोट मैंने खुद बनाए थे।

प्रश्न : इस प्रणाली का विश्वास कैसे किया आपने ?

उत्तर : सिर्फ रफ्तार के लिए इसको मैंने बढ़ाया। मैं अपने साथ अव्वल दर्जे का स्टाफ लाया था। वैवेल का स्टाफ भी बहुत अच्छा था। मैंने दोनों स्टाफों को मिला दिया। मैं उनकी बुद्धि और जानकारी का लाभ उठाना चाहता था। आनेवाली पीढ़ियों के लिए यह आकस्मिक था। हर कदम पर एक दृश्य याद आ जाता है। जैसे ही मेरा मुलाकाती जाता, मैं नोट लिखा देता। कभी मेरे सामने कागज़ का टुकड़ा भी नहीं होता था। हरेक वही कहता था जो वह सुनना चाहता था। जब जिन्ना पहली बार मुझसे मिलने आए और अपनी मांगें पेश कीं, मैंने कहा, "मिस्टर जिन्ना, मैं कामकाज की बात नहीं करना चाहता।

---

1. 1947 के अंत में भारत से जाते हुए इस्मे ने माउंटबैटन से कहा, "विंसटन के साथ लड़ाई के सात वर्षों की अपेक्षा आपके साथ भारत में सात मास से ज़्यादा थकाने वाले थे।

2. सरदार वल्लभ भाई पटेल गृहमंत्री और सूचना तथा प्रसार मंत्री, 1 जुलाई 1947 से अंतरिम सरकार में देसी राज्यों के मंत्री।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं सिर्फ आपका परिचय पाना चाहता हूं। अपनी ज़िंदगी के शुरू के दिनों के बारे में बताइए कुछ।" गांधी से भी मैंने यही कहा, "इस वक्त मेरी रुचि राजनीति में नहीं है। दक्षिण अफ्रीका के बारे में कुछ बताइए। भारत में आपको इतनी कठिनाइयां क्यों उठानी पड़ीं ?" थोड़ा-थोड़ा करके सिर्फ बातचीत करने की गरज़ से उनसे बुलवाकर हमने धीरे-धीरे अपनी योजना बनानी शुरू की।

प्रश्न : भारतीय नेताओं से पहली बातचीत के अलावा गवर्नरों का आपके साथ काम करना कितना महत्त्व रखता था ? उनके साथ व्यवहार में आपको कितने असहयोग का मुकाबला करना पड़ा ?

उत्तर : बड़ा अच्छा प्रश्न है यह। गवर्नर्स कान्फ्रेंस की रिपोर्ट आपने देखी ?

माउंटबैटन ने गवर्नरों और रेजिडेण्टों को काबू में किया

नहीं ? अगर आप चाहें तो देख लेंगे। रेजिडेण्ट कान्फ्रेंस भी देसी राजाओं के लिए उतने ही महत्त्व की थी। आप वाइसराय भवन देखेंगे तो पाएंगे कि वह इस तरह बना हुआ है कि मैं ग्यारह गवर्नरों को उनकी पत्नियों, उनके प्राइवेट सेक्रेटरी और ए० डी० सी० के साथ में निमंत्रित कर सका था। उनमें कई के पास अपनी बैठक और खाने के कमरे थे। घर इस तरह बना था कि एक बहुत बड़ा होटल लगता था। स्थिति बड़ी उलझन भरी थी। पहली बार ऐसा वाइसराय आया था जो उम्र में गवर्नरों से बहुत छोटा था। राजनीतिक प्रशासक के रूप में उसका कोई अनुभव भी नहीं था। मेरा मतलब दूसरे वाइसराय पार्लियामेण्ट और प्रशासन में काफी समय लगाकर आते थे। यह सच है कि मैं सुप्रीम कमाण्डर था, लेकिन दोनों एक ही बात नहीं। अजीब स्थिति थी। क्योंकि यह स्पष्ट था कि मैं अपना फैसला अपने-आप करने वाला था। पहले मुझे उनका विश्वास जीतना था, अपने साथ चलने को राजी करना था। और मैंने यह किया उनकी खुशामद के द्वारा किया। मैंने कहा, "मैं जल्दी से जल्दी आपको यहां बुलाना चाहता था क्योंकि आपकी सलाह और मदद के बिना मैं कहीं भी नहीं पहुंच पाऊंगा। आप मुझको रास्ता सुझाएं, और बताएं कि आप क्या सोचते हैं और मुझको क्या करना चाहिए।" देखा आपने ?

मैंने उनकी पसंद की बात की। वे हैरान रह गए यह देखकर कि मैं उनसे सलाह मांगने आया था, हुक्म देने नहीं। उनको यह पता नहीं था कि पहले दिन उनसे पूछूंगा कि मुझे क्या करना चाहिए, और दूसरे दिन उन्हें बताऊंगा कि क्या करना चाहिए। मेरी पत्नी ने सारी पत्नियों को खूब संभाला। उन्होंने मुझको अपने प्रान्तों की स्थिति बताई।

अब जो समझना मुश्किल है···फ्रेड बरोज़[1] को ही लें। आप समझते हैं···मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि वह उस समय बीमार नहीं था। बंगाल की आबादी पूरे संयुक्त राज्य से ज़्यादा थी। इन सब का विराट आकार ही विचलित कर देने वाला था। हर गवर्नर की अपनी अलग समस्याएं थीं। मैं उन सबकी बातें ध्यान से सुनता रहा।

---

1. सर फ्रेडरिक बरोज़, बंगाल का अंतिम ब्रिटिश गवर्नर।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta Foundation, Chandigarh

मेरी चार सूबों बीजेपी, आसाम, बम्बई और इन लोगों में वार्ता शुरू किया। हर एक के अपने विचार थे, और हर एक सलाह देने को तैयार था। मैंने पाया कि उनकी राय एक-सी थी। वह बहुत चाहते थे कि विभाजन न हो लेकिन उससे बचा कैसे जाए, इसके लिए किसी के पास कोई सुझाव नहीं था।

प्रश्न : क्या इन लोगों के साथ आपकी गोलमेज़ वार्ता भी हुई ?

उत्तर : मैंने उन्हें लार्ड इस्मे के साथ एक गोलमेज़ के गिर्द बैठाया था। मेरा ख्याल है, मेरे साथ सचिव सर जॉर्ज एबल भी[1] थे। हमने बातचीत की।

प्रश्न : शुरू में तो आप लोग एक-दूसरे के प्रति ठण्डे बने रहे होंगे ?

उत्तर : उतने नहीं। काफी उत्तेजित थे। माहौल में तनाव था—क्या होने वाला है ? उनको बहुत कम जानकारी थी। और जब उनको पता चला कि उन्हें कहने का मौका दिया जाएगा तो वे हैरत में आ गए। उन्हें पता चला कि वह सिर्फ अपने सूबों के बारे में बात ही नहीं कर सकेंगे, बल्कि उसको संभाला कैसे जाए, इस पर राय भी दे सकेंगे। उन्होंने अपने दिलों के बोझ उतारे। मेरे ख्याल से, पहले दिन मैं उन लोगों को सुनता ही रहा।

प्रश्न : क्या वे बारी-बारी बोले थे ?

उत्तर : जहां तक मुझे याद है मैंने उन्हें उनके ओहदे के हिसाब से बारी-बारी बोलने को कहा था। सबसे पहले बारी थी तीनों बड़ी प्रेसिडेंसियों—बंगाल, बम्बई और मद्रास की···फिर सूबों की। हर कोई बोला। भूलिए मत, उनमें से एक-दो हिन्दुस्तानी गवर्नर भी थे। चन्दूलाल त्रिवेदी[2] और आसाम के गवर्नर अकबर हैदरी।[3] तो यह कान्फ्रेंस पूरी तरह अंग्रेजों की नहीं थी। सच पूछिए तो भारतीय गवर्नर ज्यादा दक्षिणपंथी नहीं थे। पहले उन लोगों ने अपने-अपने सूबे के हालात के बारे में बताया। फिर अपनी समस्याएं बताईं। मैंने पूछा कि उनकी राय में किस प्रकार का हल मेरा ध्येय होना चाहिए ? यह भी पूछा कि मैंने कोई कदम उठाया तो उनके सूबों पर क्या असर पड़ेगा ? फिर जब मैंने उन्हें यह बताया कि विभाजन को रोका नहीं जा सकता, और यह कि पंजाब और बंगाल को विभाजित करना ही होगा तो वे लगभग बेहोश-से हो गए। उन्होंने मुझको याद दिलाया कि लॉर्ड कर्जन[4] ने बंगाल का विभाजन करने की कोशिश की थी और असफल रहे। उन्हें विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा था। उसके बाद काफी समय तक यही बहस ज़ोर-शोर से चली कि कलकत्ता को स्वतंत्र क्षेत्र बना दिया जाए क्योंकि वह इतना बड़ा शहर है कि दंगा-फसाद, खून-खराबा को कोई रोक नहीं सकेगा।

---

1. जी० इ० बी० (बाद में सर जॉर्ज) एबल वाइसराय के निजी सचिव थे।
2. सर चन्दूलाल त्रिवेदी, उड़ीसा के गवर्नर और 1947 में पंजाब के पहले भारतीय गवर्नर।
3. सर अकबर हैदरी 1945-46 में वाइसराय की काउंसिल के सूचना व प्रसारण के सचिव।
4. कैडलस्टन के लार्ड कर्जन, 1899-1905 तक भारत के वाइसराय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन किसी भी गवर्नर ने प्रवास और खून-खराबे के पैमाने का अंदाज़ नहीं लगाया था। मेरा मतलब, वे यह तो जानते थे कि मुश्किलें आएंगी, लेकिन किस पैमाने पर उसकी कल्पना उनको नहीं थी। कहीं कोई चेतावनी नहीं दी गई थी। सच पूछिए तो जब मैंने पंजाब बाउंड्री फोर्स स्थापित किया, जो मैंने खुद किया था, आखिर सारी सेना मेरे अधीन लड़ चुकी थी।

पंजाब बाउंड्री फ़ोर्स का निर्माण

मैं हर जनरल और बड़े अफसर को जानता था। मैंने बाउंड्री फोर्स के कमाण्ड के लिए जनरल रीस को चुना जिन्होंने उन्नीसवीं डिविज़न का कमाण्ड किया था। कमाल था, छोटा-सा आदमी था। हमने वही यूनिटें चुनीं जो दृढ़ थीं और असाम्प्रदायिक थीं। हमारे पास गुरखे बहुत थे। अंग्रेज अफसरों के मातहत मिली-जुली रेजिमेण्टें थीं। अंग्रेज ब्रिगेडियर के नीचे ब्रिगेड, आदि-आदि। अयूब खां एक कमांडिंग कर्नल थे जो बाद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति बने।

वाइसराय भवन भारतीयों के लिए खुला

गवर्नरों की कान्फ्रेंस में खास चीज थी—माहौल। लंच, डिनर, इधर-उधर की बातें, सामाजिक गपशप और मुलाकातें। मैं सोचता हूँ उनको सुखद आश्चर्य हुआ था। हम लोगों ने वैवेल दम्पति से बेहतर काम किया। उनकी खातिर के लिए हमने कुछ नहीं छोड़ा। अगर आपको एक मजेदार वाकया चाहिए तो पीटर हौज़ की पुस्तक की 'पोस्ट-स्क्रिप्ट' पढ़िए जहां वह लिखते हैं कि भारत के वाइसराय के सारे ताम-झाम का सालाना खर्च ढाई लाख पौण्ड आता था, जो असल में काफी कम था। कई हज़ार प्रशासकों की जगह हमने ले ली थी। हम उन भारतीयों को वाइसराय भवन में लाना चाहते थे जिन्होंने सपने में वहां निमंत्रित किए जाने की बात नहीं सोची थी। कैम्पबेल जॉनसन[1] की किताब के एक फुटनोट में आप देखेंगे कि हमने लगभग 15,000 को डिनर और 12,000 को दिन के खाने पर बुलाया। लगभग 45,000 लोग आए थे। बहुत पैसा खर्च हुआ इन सब पर। महंगाई के साथ-साथ वाइसराय की तनख्वाह में वृद्धि नहीं की गई थी! उस वक्त भारत में खाना काफी महंगा था। लेकिन फिर भी हमने लोगों को बुलाया, बढ़िया-से-बढ़िया शराब, आला दर्जे का खाना। हमारे पास भारी संख्या में नौकर-चाकर और बड़ा स्टाफ था। मेरा स्टाफ वैवेल के स्टाफ से दो गुना ज़्यादा था। मेरे पास हिन्दुस्तानी ए० डी० सी० थे जो पहले किसी वाइसराय के पास नहीं थे।

प्रश्न : हिन्दुस्तानियों पर इसका अच्छा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा होगा?

उत्तर : जी हां, मैं अपने स्टाफ से मिला तो हर आदमी से हाथ मिलाया। उनमें ऐसे लोग भी थे जिनसे मेरा सीधा साबका नहीं पड़ता था। किसी ने यह नहीं सुझाया कि अपने नजदीकी सहायकों में मुझे वी० पी० मेनन को भी रखना चाहिए। जार्ज एबेल ने भी उनको बुलाने की बात नहीं सुझाई। एक दिन अपने

---

1. 'मिशन विथ माउण्टबैटन'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्टाफ की सूची देखते हुए मैं दुखी हो गया, वी० पी० मेनन से मैं उस दिन के बाद नहीं मिला। मैं उनसे मिलना चाहता हूं।''

भारतीय सलाहकार वाइसराय के नजदीकी सहयोगियों में शामिल

यह जान कर कि वाइसराय उनसे मिलना चाहते हैं, मेनन को ताज्जुब हुआ। उस दिन, पहली मुलाकात में ही मुझको लगा कि मैं उनके साथ काम कर सकूंगा। वह बुद्धिमान थे, ईमानदार थे, ऐसे प्रस्ताव रखते जो स्वीकार किए जा सकते थे। फिर मुझे पता चला कि उनके व्यक्तिगत संबंध पटेल से हैं (नेहरू से नहीं) तो मैंने गुप्त रूप से उनका उपयोग करना शुरू किया।

फिर धीरे-धीरे मैंने उन्हें स्टाफ-मीटिंगों में आने की इजाजत दी। मैं उनके मन की बात जानने के लिए उनसे अकेले में मिलने का आग्रह करता था। उनकी राय को मैं अपनी राय बताकर अगर स्टाफ के सामने रखता तो उन लोगों को मान्य होती। मैं उनकी बातों का बेजा फायदा नहीं उठाना चाहता था। वह भी यही चाहते थे कि उनकी बातों को अपना कहकर सामने रखूं। मैं यह नहीं कहूंगा कि वी० पी० मेनन की बातों का असर मुझ पर नहीं पड़ा।

वी० पी० मेनन के लिए मेरी श्रद्धांजलि : समझौतों को आगे बढ़ाने के अपने प्रयत्नों में मैं वी० पी० मेनन से बहुत प्रभावित हुआ था।

कई लोग आपको बताएंगे कि उनका कोई प्रभाव नहीं था। जितना प्रभाव सचमुच था वी० पी० मेनन उससे ज़्यादा समझते थे। सच यह है कि मुझ तक उनकी पहुंच थी और उन्होंने मुझको बहुत प्रभावित किया था।

प्रश्न : क्या आप यह नहीं सोचते थे कि पटेल के साथ अपने संबंध के कारण उनका महत्त्व था?

उत्तर : बिल्कुल ठीक।

प्रश्न : नेहरू के साथ भी ऐसी कोई कड़ी थी?

उत्तर : नेहरू के साथ मेरी अनौपचारिक कड़ी कृष्ण मेनन थे जिनसे मेरी दोस्ती इंगलैण्ड में हुई थी। अजीब आदमी थे। अपनी किताब के लिए आपको इसकी ज़रूरत नहीं, पर इससे आपको समझने में मदद मिलेगी। मेनन ने नेहरू के साथ बड़ी बुरी हरकत की। नेहरू से कुछ कहे-सुने बगैर, रक्षा-मंत्री की हैसियत से, गोआ पर हमले की तैयारी कर दी, और उसके बाद नेहरू को बताया। नेहरू को मानना पड़ा वर्ना वह जनमत के खिलाफ जाते। तो गोआ पर हमला हुआ, और मेनन ने नेहरू को खतम कर दिया। नेहरू महान आदर्शवादी थे। किसी भी हालत में ताकत का इस्तेमाल करना नहीं चाहते थे। अगर गोआ के लोग पुर्तगालियों के साथ रहना चाहते थे तो उनके साथ ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती थी। गोआ के हमले को अपना समर्थन देने के लिए नेहरू को मजबूर करके मेनन ने उनको खत्म कर दिया—न केवल उनकी विश्वसनीयता, उनकी इज्ज़त, उनका यश, बल्कि उनका उनके ऊपर जो विश्वास था, वह खत्म कर दिया, क्योंकि नेहरू को लगा कि उनके साथ धोखा हुआ। और बाद में सर्वनाशी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
चीनी लड़ाई के बाद तो उनकी जान ही ले ली।

प्रश्न : भारतीय नेताओं के बारे में आपकी राय क्या है ?

उत्तर : जो पांच व्यक्ति महत्त्वपूर्ण थे उनको मैं पहले से ही जानता था—नेहरू, पटेल, गांधी, लिआकत अली खां और जिन्ना। दिलचस्प बात यह थी कि पांचों में पांच गुण एकजैसे थे—पांचों अधेड़ उम्र के थे, और एक-दूसरे से बहस-मुबाहिसे में ज़िंदगी बिता चुके थे।

दूसरे, आज़ादी के लिए आन्दोलन करने की कला में पांचों दक्ष थे। प्रशासन का उनमें से किसी को कोई अनुभव नहीं था।

तीसरे, पांचों वकील थे। इंगलैण्ड के इन्स कोर्ट में तालीम पाई थी। और ब्रिटिश संवैधानिक कानून के अच्छे जानकार थे।

चौथे, आज़ादी का मसला मेरे लिए बिल्कुल नया था लेकिन उनके लिए वह जिंदगी-भर की गई कोशिशों की परिणति थी।

पांचवें, उन्होंने अपनी ज़िंदगियां पूरी तरह से राजनीति में डुबो दी थीं। लोगों को उनकी पृष्ठभूमि के बारे में मालूम नहीं था—कम-से-कम मुझको नहीं मालूम था।

जब पहली बार वे मुझसे मिले तो मैंने तय कर लिया था चुप्पी को तोड़ूंगा, और उनसे परिचित होऊंगा। बात करने में सब से ज़्यादा मुश्किल मुझको पटेल के साथ हुई।···लेकिन मैंने उन्हें एक-दूसरे के बारे में बताने के लिए राज़ी कर लिया। वे क्या चाहते हैं, यह बताने के लिए मेरे पास आना चाहते थे। मुझको वह प्रचार से प्रभावित करना चाहते थे। लेकिन मैंने सुना ही नहीं। मैंने कहा, "मुझको प्रचार नहीं चाहिए आपका। मुझको यह बताइए कि आपकी राय में मुझको क्या करना चाहिए। मैं तो आपके जीवन के बारे में जानना चाहता हूं।"

गांधी, नेहरू और पटेल अंग्रेज वाइसरायों और गवर्नरों के साथ काम करने के आदी थे लेकिन, अलग-अलग मौकों पर, उनमें से हरेक ने स्वीकार किया कि मेरे साथ काम करना पहले किसी भी अंग्रेज़ के साथ काम करने से अलग था। मुझमें उन्हें खुला दिमाग और एक नया अन्दाज़ मिला। उन्हें लगा कि वह जो चाहते हैं उसे मैं समझने और करने की कोशिश कर रहा हूं।

प्रश्न : गांधी के साथ अहिंसा पर बहस हुई आपकी ?

उत्तर : जब गांधी ने चर्चा चलायी तो मैं भी नहीं हिचकिचाया। हमने अहिंसा और सेना, दोनों के बारे मैं बात की। उन्होंने सैनिक अनुशासन की तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारे आन्दोलन में अनुशासन काफी नहीं है। अहिंसा को बहुत अनुशासित होना चाहिए क्योंकि आवेश में, मार खाने पर, अहिंसक बने रहना पड़ता है। यह बात हम दोनों की मिलती-जुलती है। आपके यहां पूरा अनुशासन है। अगर आप सेना को लोगों को मार डालने की आज्ञा दें तो वह मार डालेंगी। व्यवस्था और शांति बनाए रखने की कोशिश भी वह करेगी। लोगों को मारने का फैसला आप नहीं करते। वह सरकारें करती हैं जिनकी आप नौकरी करते हैं। मैं ऐसी नौकरी कभी नहीं कर सकता जिसमें मुझे एक आदमी को सिर्फ इसलिए मारना पड़े क्योंकि मुझे हुक्म दिया गया था। मैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो न करूं।

दूसरी ओर, बिना अनुशासन के देश को नहीं चलाया जा सकता। स्थल, वायु और नौसेना को हटा देने की बात मैं कभी नहीं सुझा सकता। यह अहिंसा नहीं है। अहिंसा बिना खून खराबे के राजनीतिक सफलता पाने का तरीका है।

ऐसा नहीं कि वह सोचते थे कि दुनिया में हिंसा होनी नहीं चाहिए। उन्होंने कहा, "मेरे विचार में आपका नाज़ियों फासिस्तों का विरोध करना उचित था। अगर आप ऐसा न करते तो आज हम बड़ी खराब स्थिति में होते।" इस मुद्दे पर वह समझदार और व्यावहारिक थे। हमारे बीच यह बात कभी आड़े नहीं आई। दुर्भाग्य से, समस्याओं का हल ढूंढ़ने के लिए उनका कोई सुझाव नहीं था। उनका केवल इतना योग था कि बिल्कुल शुरू में ही उन्होंने मुझसे कह दिया था कि मैं जो भी करूं, विभाजन की बात सपने में भी न सोचूं।

विभाजन पर

मैंने उनसे कहा कि विभाजन मैं भी नहीं चाहता। एकीकरण ही इस उपमहाद्वीप के लिए हमारी छोड़ी हुई विरासत हो सकती है। लेकिन मैंने यह भी बता दिया कि अगर किसी बिन्दु पर कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहमत नहीं होते और अगर जिन्ना ऐसे बिन्दु पर पहुंच गए हैं जहां मुस्लिम लीग लड़ने को तैयार है—तो हमारे पास और कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। 1946 में कलकत्ता में हुए 'डाइरेक्ट एक्शन डे' मत भूलिए। वह चेतावनी है इस बात की कि वह क्या कर सकते हैं। मेरा मतलब है कि प्रदर्शन में ही उन्होंने 5000 लोगों को मार डाला था और 15,000 को घायल कर दिया था। और मैं तो सोचता हूं कि अगर आधी बात भी नहीं मानी गई तो वह गृह-युद्ध भी करा सकते हैं।

एकीकृत भारत के प्रधानमंत्री जिन्ना

"हां," गांधी ने कहा, "मैं मानता हूं। आप जिन्ना साहब से कहिए, मैं सत्ता आपको सौंपता हूं। मैं आपसे प्रधानमंत्री बनने को कहूंगा। मैं आप से कहूंगा कि संयुक्त भारत के प्रशासन के लिए सरकार बनाएं।"

मैंने कहा, "कमाल है। मैं इस अनोखे ख्याल की दाद देता हूं। लेकिन कांग्रेस पार्टी मान जाएगी, ऐसा आप क्यों सोचते हैं?"

उन्होंने कहा, "कांग्रेस पार्टी की पहली चिन्ता है कि विभाजन न हो। उनकी राय में उससे अनर्थ हो जाएगा। वे सोचते हैं कि ब्रिटिश ने जो सब से भलाई का काम किया वह था देश का एकीकरण। इसलिए उसकी कीमत ऊंची है, और मैं सोचता हूं वे मान लेंगे। जिन्ना ज़्यादा कुछ नहीं कर सकेंगे क्योंकि केन्द्र में अधिनियम बनाकर आप बहुसंख्यक जनता पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। वह जितना सोचेंगे, उससे कम अधिकार होंगे उनके पास।"

मैंने कहा, "मैं बताऊं, गांधीजी। वह सोचेंगे कि उनको कोई अधिकार-वधिकार नहीं मिलेगा। वह समझेंगे कि दाल में कुछ काला है।"

"हम उनको अपनी ईमानदारी का विश्वास दिला देंगे।"

मैंने कहा, "उनको विश्वास दिलाने का एक ही तरीका है। आप कांग्रेस पार्टी में जाकर उनको विश्वास दिलाइए कि यह ईमानदारी की बात है और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उन्हें हमारा साथ देना होगा।"

"हां, मैं पण्डितजी और दूसरों से इस बारे में बात करूंगा।" उन्होंने कहा।

प्रश्न : इस विचार से आप कहां तक सहमत थे ?

उत्तर : मैं इस सवाल को दूसरी तरह रखता हूं। विभाजन से बचने के लिए मैं हर तिनके का सहारा लेने को तैयार था। यह भी एक तरीका था। मैं यह भी जानता था कि इसकी सफलता इसी में होगी कि कांग्रेस पार्टी ईमानदारी से अपना सहयोग दे। मेरा मतलब कि इसका कोई फायदा नहीं होगा कि मैं जिन्ना से कह दूं आप अपनी मुसलिम बहुसंख्यक सरकार बनाइए, और उधर पता चले कि कांग्रेस उसको चलने देना नहीं चाहती। दूसरी ओर, अगर जिन्ना को विश्वास हो जाता कि कांग्रेस ईमानदारी से उसको सहयोग देने को तैयार है (वह केवल सत्ता चाहते थे) और मुसलमानों की रक्षा करेगी, तो वह सब कुछ ले सकते थे। मगर मुझको विश्वास था कि कांग्रेस नहीं मानेगी ! अगर लोग गांधीजी की तरह होते और उनकी जैसी अजीब नैतिक मान्यताएं होतीं उनकी, तो शायद यह काम कर जाता। लेकिन इससे काम चलने वाला नहीं, यह ज़ाहिर था।

मैंने उनके प्रस्ताव के खिलाफ दलील नहीं की। मुझको याद है, मैंने कहा था, "कितना बढ़िया हल है। कितने बुद्धिमान हैं आप।" आदि, आदि। उनके असाधारण प्रस्ताव से मेरे अन्दर एक कौतूहल जागा।

प्रश्न : गांधी ने अपनी योजना आपके सामने कैसे रखी, क्या आपको लगा कि वह अपना आखिरी पांसा फेंक रहे हैं ?

उत्तर : जहां तक मुझको याद है वह कोई कागज़ दिखाते हुए मेरे पास नहीं आए थे कि "मेरा एक झुकाव है।" उन्होंने मेरी राय जाननी चाही थी। मैंने स्थिति की मुश्किलों का जिक्र किया था। उन्होंने कहा, "जिन्ना को बुलाइए और सरकार बनाने दीजिए। तब केन्द्र मजबूत हो जाएगा और उसे सब स्वीकार करेंगे। मुसलिम उसे स्वीकार करेंगे, और वही लोग तो हैं जो अलग होने की कोशिश कर रहे हैं। उनको खुश रखना होगा।"

"कांग्रेस का क्या होगा ?"

"अगर कृपलानी,[1] पटेल, नेहरू और मैं मान जाएं तो सब ठीक हो जाएगा।"

"यह प्रस्ताव बढ़िया है···मुझे भरोसा भी है। लेकिन उन लोगों के सामने प्रस्ताव क्या आप रखेंगे ?"

"नहीं, मैं चाहता हूं यह काम आप करें।"

"मैं यह नहीं कर सकता। आपके लिए जो प्रेम उनके दिलों में है उसकी वजह से आपकी बात मान लेंगे।" उतना प्रेम अभी मेरे लिए नहीं है। ऐसी योजना उनके सामने रखकर जिसके लिए वह 'न' कह देंगे, मैं अपनी स्थिति को

---

1. आचार्य जे० बी० कृपलानी, कांग्रेस पार्टी के सचिव थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
खतरे में नहीं डाल सकता। इसके अलावा आपकी अपेक्षा मुझसे उनका 'न' कहना ज्यादा आसान होगा।"

ईमानदारी की बात तो यह है कि मैं शुरू से ही जान गया था कि चलने वाली योजना यह नहीं है। इसे पेश करके मैं अपना सम्मान घटाना नहीं चाहता था। लेकिन मैं इसके बिल्कुल पक्ष में था कि वह इस प्रस्ताव को सामने रखें ताकि यह तो पता चले की हल निकालने की कोशिश की जा रही है।

जिस तरह गांधी चाहते थे अगर उसी तरह काम करती तो योजना सफल हो सकती थी। जिन्ना को सत्ता मिल जाती, मुसलमानों को सुरक्षा। लेकिन इससे यह सत्य तो नहीं मिटाया जा सकता कि बहुसंख्या हिन्दुओं की थी। मेरी राय में गांधी ने इस पर ठीक से सोच-विचार नहीं किया था। बचाव के लिए क्या हो सकता था ? अगर सब के सब सरकार के खिलाफ आम हड़ताल कर दें तो ? वे क्या करेंगे ? इन सब के बारे में उन्होंने नहीं सोचा था।

अगर मुझे ठीक-ठीक याद है तो वह इस बात से उदास हो गए थे कि मैं नेहरू, कृपलानी और पटेल को बुलाकर उनसे कहने को तैयार नहीं था कि उन्हें यह करना होगा। न करने का मेरा मुख्य कारण था कि अगर मेरे पहले प्रस्ताव पर भले ही वह गांधी का सुझाया हुआ हो, अगर वे लोग 'न' कह दें, तो वह मेरा प्रस्ताव अस्वीकार कर रहे होते। और मैं अपने को उस स्थिति में नहीं डालना चाहता था।

प्रश्न : जिन्ना की क्या प्रतिक्रिया थी ?

उत्तर : बात करते समय वह किसी भी प्रस्ताव पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर नहीं करते थे। लेकिन मुझको लगा कि वह बिल्कुल चकित रह गए हैं। उनको विश्वास नहीं हुआ था। उन्होंने एकदम कहा, "कांग्रेस पार्टी से नहीं मनवा सकेंगे।"

कांग्रेस पार्टी से वापस आने पर गांधीजी बोले, "पूरे भारत में आप ही एक समझदार व्यक्ति हैं। और कोई भी मेरी बात नहीं समझ सका।" यही कारण था कि वह मुझको इतना मानते थे।

उनके राजनैतिक सुझाओं का स्तर ऐसा ही था—एकदम बकवास। लेकिन उनका प्रभाव और आकर्षण जबर्दस्त था। वह बहुत ईमानदार थे। मुझे याद है जब कश्मीर की समस्या खड़ी हुई—मैं यहां थोड़ा विषय से दूर हट रहा हूं, पर यह दिलचस्प है—किसी बात से भारत सरकार पाकिस्तान से बेहद नाराज़ थी। बात कश्मीर की थी—किसी बड़ी घटना को लेकर पाकिस्तान को उसकी जो सम्पत्ति देनी थी, रोक ली गई। हम निर्णय कर चुके थे कि पाकिस्तान को स्टर्लिंग की कौन-सी रकम जाएगी। उसे इन लोगों ने रोक लिया।... मैंने पटेल से बात करनी चाही लेकिन वह कुछ सुनना ही नहीं चाहते थे। पटेल ने मेरी बात समझ तो ली लेकिन बोले, "मैं दूसरों को नहीं मना सकता। वह नहीं देंगे, कभी नहीं।"

"ठीक है, मैं करूंगा यह काम।" मैंने कहा।

"कैसे ?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"यह नहीं बताऊंगा।"

मैंने गांधी से मिलकर उनसे कहा, "आप अपना नाम एक बेईमानी के साथ जोड़ लेंगे। संयोग से वह रकम इस वक्त दिल्ली में है जो पाकिस्तान की अमानत है। क्या आप इसके पक्ष में हैं? आप पाकिस्तान के करोड़ों पौण्ड मार लेंगे?"

"नहीं।"

"क्या करेंगे फिर?"

"मैं आमरण अनशन कर दूंगा—जब तक वह रकम पाकिस्तान को पहुंचा न दी जाए।

"मुबारक हो।" मैंने उठकर उनसे हाथ मिलाया।

कांग्रेस पार्टी के नेता इस बात से काफी परेशान हुए कि गांधी यह करने को मान गए थे। उन लोगों को ऐसी स्थिति में उन्होंने खड़ा कर दिया था कि उन्हें हार माननी पड़ी। इसको कहते हैं हिम्मत। वह आमरण अनशन करने को तैयार थे। वह जानते थे कि यह काम बेईमानी वाला है।

मेरा मतलब है कि भारत सरकार से वह रकम पाकिस्तान को दिलवाने के लिए गांधी को इस्तेमाल किया गया। उन पर जोर डाला गया कि वह भारत सरकार पर जोर डालकर पाकिस्तान का रुपया उसको भिजवा दे। अगर ऐसा न होता तो भारत सरकार बेईमान कहलाती। असल में भारत के सांवैधानिक गवर्नर-जनरल की हैसियत से मैं भारत सरकार से ऐसा काम कराना चाहता था जो इतिहास में याद रखने लायक हो—परिपक्व राजनैतिक के व्यवहार की तरह, और मेरा ख्याल है मैं इसमें सफल भी हुआ। लेकिन इसके लिए मुझको गांधी से अनशन करवा कर पटेल से जबर्दस्ती दस्तखत करवाने पड़े थे।

प्रश्न : क्या आपका अवधि-सीमा का विचार दक्षिण-पूर्व एशिया में सुप्रीम कमाण्डर के अनुभव से प्रभावित था?

उत्तर : जहां तक मुझे याद है···और याद रखना कठिन है···यह फैसला तत्काल लिया गया था। पहला तो यह काम मैं करना ही नहीं चाहता था। इसलिए मैंने सोचा कि अवधि-सीमा के प्रस्ताव का स्वागत तो होगा नहीं (और यही हुआ)···और अगर वह न माने तो मना करना मेरे लिए ज़्यादा आसान हो जाएगा।

अगर यह बात मान भी ली जाती तो यही एक तरकीब थी जो कारगर हो सकती थी। वैसे यह कोई बड़े मार्के की बात नहीं थी। मुझसे पहले सब असफल हुए थे। क्योंकि बातचीत की पहल या तो लन्दन में की गई, जो सफल हो ही नहीं सकती थी, या फिर लन्दन से कैबिनेट मिशन भेजे गए। वे भी नाकामयाब रहे।

वाइसराय को किसी भी अधिकार से बातचीत करने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि लन्दन से पूछना पड़ता था। जवाब दिया गया या नहीं, इसकी परवाह वहां किसी को नहीं थी। यों ही आगे बढ़ते जाना था।

मैं पांच साल बेकार बैठने को तैयार नहीं था। मुझे यह बात बड़ी नागवार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माउंटबैटन का भारत में शक्ति-प्रयोग का दर्शन

गुजरी। दो घण्टे बाद मुझे लगा कि हम उस स्थिति में आ गए हैं जिसमें बातचीत की पहल की जा सकती है। अवधि-सीमा सबसे ज़रूरी थी। मैं मानता हूं कि अगर मैं किसी अवधि-सीमा के बगैर वहां जाता तो आज भी वही होता।

मैं नहीं सोचता कि कोई बड़ी मार्के की बात थी, लेकिन स्पष्ट थी। मुझसे पहले लोगों ने उस ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे सत्ता छोड़ना चाहते ही नहीं थे। अब सत्ता दे देने के दो कारण थे। एक तो यह कि एटली और लेबर सरकार विश्वास करते थे कि कामनवेल्थ में एक स्वतंत्र राज होना चाहिए। उन्हें यह काम करना ही था क्योंकि यह उनका आदर्श था। दूसरे, भारत पर शासन करने के हमारे साधन खत्म हो चुके थे। भारत का चमत्कार सिर्फ ब्रिटिश प्रशासन की कुशलता थी। 'इण्डियन सिविल सर्विस' जैसी कुशल सर्विस थी जिसमें हर कोई आना चाहता था। उसमें जो लोग थे, सभी उच्च कोटि के थे। बहुत कम लोग थे उसमें—मानवजाति के पांचवें हिस्से पर नियंत्रण रखने के लिए केवल 1200-1500 लोग। वह पूरी तरह से विश्वसनीय और पूरी तरह ईमानदार थे। वाइसराय के ज़रिए वे उदार स्वेच्छाचारी प्रशासन चला रहे थे। और यही सबसे अच्छा तरीका था। हो सकता है आपकी पुस्तक[1] के लिए यह ज़रूरी हो। भारत के लोग—ठीक आंकड़े मेरे पास नहीं हैं, लेकिन 99% तो होंगे—हुकूमत से खुश थे। इसमें कोई शक नहीं, जो मुट्ठी-भर लोग अब आवाज़ उठा रहे थे, उनको हमीं ने सिखाया-पढ़ाया था। वह समझ गए थे। कब्ज़ा करने वाली सत्ता को उनके राष्ट्र पर शासन क्यों करने दिया जाए?

अब जब मेरी उन अंग्रेज़ दोस्तों से बहस होती है जो इस बात का समझते नहीं तो मैं कहता हूं, "देखो, मान लो जर्मनों ने इंगलैण्ड पर हमला करके उसपर कब्ज़ा कर लिया होता, और वे यहां होते? शायद तब हमारा प्रशासन ज़्यादा कुशलता से होता—ट्रेड यूनियन जैसी आफतें नहीं होतीं। लेकिन हम यही चाहते हैं कि हम खुद अपनी सरकार चलाएं, जर्मन नहीं। सीधी-सी बात है।"

प्रश्न : आपके अधिकारों को चुनौती देनेवाले पहले नेता पटेल थे। क्या आपको याद है कि क्यों?

उत्तर : पटेल से हुई सारी बातें मैंने दर्ज नहीं की थीं क्योंकि मैं अपन स्टाफ के सामने उन्हें बदनाम नहीं करना चाहता था। बात यह थी, मेरे साथ अशिष्टता की थी उन्होंने। एक अशिष्ट-सा नोट लिखा था उन्होंने जिसमें कई मांगें की गई थीं। मैंने उनसे नोट वापस लेने को कहा तो उन्होंने इन्कार कर दिया।

"ठीक है। मैं अभी अपना हवाई जहाज़ बुलवाता हूं।" मैंने कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि मैं घर जाना चाहता हूं। यहां नहीं ठहरूंगा! मैं यह काम चाहता ही नहीं था। आपने बड़ी कृपा की है। आपने मुझको निकल भागने का बढ़िया

---

1. 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौका दे दिया है। मुझको आप जैसे किसी व्यक्ति की तलाश थी जो मुझे इस नामुमकिन काम को छोड़कर चले जाने का कोई बहाना जुटा दे।"

"क्या मतलब है आपका ?"

"आप क्या सोचते हैं ? मैं यहां रहकर आप जैसे लोगों के हुक्म बजाता रहूंगा ? मैं वाइसराय हूं। आप नये नवाब हैं। अगर आप समझते हैं कि आप मेरे साथ अशिष्टता कर सकते हैं, मेरे ऊपर हुक्म चला सकते हैं तो आपका ख्याल गलत है। लेकिन जाने से पहले मैं आपके प्रधानमंत्री, कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष को बता दूंगा कि मैं आपकी वजह से वापस जा रहा हूं। मैं हिज़ मेजेस्टी की सरकार को भी बता दूंगा कि इसका कारण आप हैं। जिन्ना को भी बता दूंगा। आप सहयोग देने से इन्कार कर रहे हैं, और इसके बाद भारत में जो गड़बड़ होगी, जो खून-खराबा होगा उसका कारण होगा सिर्फ वी० पटेल, और कोई नहीं।"

उन्होंने कहा, "बुरी बात तो यह है कि आप कर भी दिखाएंगे।"

मैंने कहा, "बिल्कुल ठीक।"

उन्होंने कागज़ फाड़ दिया। मैं जानता था कि वह लड़ाकू किस्म के हैं और ऐसे लोगों को आघात पहुंचाकर ही उन्हें काबू किया जा सकता है। उसके बाद हम बड़े दोस्त बन गए।

मैं डींग नहीं हांक रहा था। जाने को तैयार था। दक्षिण-पूर्व एशिया कमान में ऑकिनलेक[1] के साथ मैंने यही किया था। मैंने कहा, वापस जा रहा हूं। विंसटन से कह दूंगा आप मुझे अपने संचार की लाइनों को बढ़ाने नहीं देते। इस तरह इस कमान को रखना असंभव है। बात यह है कि ऐसी बात से धमकी नहीं दे सकते जो आप करना नहीं चाहते। हालात इतने खराब थे—इसका सपने में भी मुझको ख्याल नहीं था। पार्टी के बड़े नेता मुझको जाने का मौका दे देता तो बहुत अच्छा होता।

पटेल उम्र में नेहरू से काफी बड़े थे, और जानते थे कि उन्हें बहुत दिन नहीं जीना है। सत्ता पाने की जल्दी उनको नेहरू से ज़्यादा थी। मैं यह समझता था। लेकिन हम बहुत अच्छे दोस्त बन गए। मैं उनको सचमुच चाहता था। उनको यही मालूम करना था कि हुक्म किसका चलेगा। दुबारा कोशिश उन्होंने नहीं की।

गांधी से पहली मुलाकात

गांधी एक धोती-भर पहन कर आए थे। दिल्ली की गर्मी···कमरे के एयर-कण्डीशनर को मैंने 70° पर कर रखा था। बाहर का ताप-मान 110° के करीब। एडवीना गांधी के आने के घण्टा-भर पहले एयर कण्डीशनर बन्द करवा देती और खिड़कियां खोल देती। मुझसे कहती, "तुम इस बूढ़े को मार डालोगे।" इस

---

1. फील्ड मार्शल सर क्लॉड **ऑकिनलेक**. 15 अगस्त 1947 तक भारत में कमाण्डर-इन-चीफ, 30 नवम्बर, 1947 तक भारतीय सेना के विभाजन का प्रबंध करने के लिए सुप्रीम कमाण्डर थे।

तरह उनके आने के पहले मेरे कमरे का तापमान 100° कर दिया जाता।

CC-0. Agam Nigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहले दिन वह मिलने आए तो बेहद उदास थे। "एक बहुत ही बुरी बात हो गई है।" उन्होंने कहा, "वैसे तो मेरे पास कुछ नहीं है। लेकिन एक घड़ी थी। लन्दन में पांच शिलिंग की एक इंगरसोल घड़ी खरीदी थी मैंने। उसे अपनी कमर में बांधे रहता था। ट्रेन में किसी ने चुरा ली।"

"कितनी चिंता है आपको!"

"आप नहीं मानेंगे। यही एक चीज़ थी मेरे पास जो चोरी चली गई।" वह रुआंसे हो आए। वह चिड़ियों की तरह चहचहाते रहते। पहले जब मैंने उन्हें और जिन्ना को साथ बुलाया तो उन दोनों ने अपनी कुर्सियों के बीच दो गज़ का फासला रखा। दोनों एक-दूसरे की बात नहीं सुन सकते थे। मैंने उनकी कुर्सियां खींचकर पास कर दीं।

प्रश्न : जब आपने जिन्ना को यह समझाने की कोशिश की जो पाकिस्तान वह बनाना चाहते हैं वह एकदम कीड़ों का खाया हुआ-सा होगा। क्या आपने जो वह मांग रहे थे उसकी सच्चाई का एहसास कराया—इस आशा से कि शायद वह होश में आ जाएं?

उत्तर : मैं हर मुमकिन दांव खेल रहा था। उन्हें हर तरह से समझाने की कोशिश मैंने की। लेकिन उन्होंने बराबर 'न' कहकर असाधारण कामयाबी हासिल करना जान लिया था। इसको मात नहीं दिया जा सकता। यह वह पहले ही पहचान चुके थे—मेरे भारत जाने से पहले। फर्क इतना था कि पहले दर्शक नहीं होते थे, और सिर्फ एक आदमी के सामने 'न' कहने में वह बात नहीं। दर्शक मिले तो उनका सिर्फ सिर हिलाना ही काफी था। मेरा अनुभव है कि लोग अकेले में और ढंग से बात करते हैं और लोगों के सामने कुछ और।

प्रश्न : 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' के शोध के दौरान हमें पता चला कि 1947 में जिन्ना को तपेदिक था। डाक्टरों ने कहा था कि वह 6-7 महीने जीवित रहेंगे। क्या आप यह जानते थे?

उत्तर : नहीं कोई नहीं जानता था···मुझे खुशी है कि यह बात मुझे मालूम नहीं थी। मालूम होती तो पता नहीं मैं क्या करता। जिन्ना अपनी सनक के पक्के थे। अगर कोई मुझको बताता कि वह इतने महीनों में मर जाएंगे तो क्या मैं (यह सवाल मैं अपने-आपसे पूछ रहा हूं) उनसे कहता कि भारत का विभाजन मत करो? क्या मैं घड़ी की सूई पीछे करके स्थिति को जहां की तहां बनाए रखता?···शायद···मुझे लगता है उन्हें खुद नहीं मालूम था कि उनको तपेदिक है। वह बड़े सख्त, ठण्डे और दमित इन्सान से। उनके बारे में कोई भी बात मुझे हैरान नहीं करती थी। वह एक असाधारण जीव थे।

···मगर इतना ज़ाहिर था कि वैवेल और दूसरे लोग मेरे दिल्ली पहुंचने के समय यह जानते थे कि जिन्ना बहुत बीमार थे और यह बात मुझे, मेरी पत्नी, बेटी और स्टाफ को बिल्कुल मालूम नहीं पड़ी। अगर पिछले स्टाफ को मालूम था तो उन्होंने कुछ बताया नहीं। यह अनर्थकारी साबित हुआ, क्योंकि अगर मुझे मालूम होता तो मैं हालात को दूसरी तरह सम्भालता। लियाकत अली खां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ व्यवहार आसान था—वह एक भारतीय सज्जन थे। जिन्ना सनकी थे—पागल। बिल्कुल असंभव। मैं नहीं सोचता हम उनके मरने का इन्तजार करते···न हमारे पास उतना समय था, न हम निश्चित थे, लेकिन हम उनके साथ दूसरी तरह बहस कर सकते थे। मैंने सोचा था कि मैं ऐसे आदमी के साथ पेश आ रहा हूं जो हमेशा बना रहेगा। जिसका लक्ष्य पाकिस्तान है और मैं उसे इस लक्ष्य से हटा नहीं सकता था। **एक पल को मान लीजिए कि अगर सत्ता के हस्तांतरण के पहले ही जिन्ना मर जाते** तो अपने सबसे बड़े दुश्मन के हट जाने से कांग्रेस पार्टी निश्चित ही राहत की सांस लेती। बाकी लोगों को जिन्ना की सिर्फ छाया माना जाता था। तब हम ऐसे आधार पर काम करते जहां **कांग्रेस का कहीं ज़्यादा मत देने** के लिए तैयार हो जाता और दूसरे लोग उसे स्वीकार करते। भयंकर बात है कि हमें कुछ भी नहीं बताया गया।

प्रश्न : वैवेल ने शायद इन अफवाहों को सही न माना हो ?

उत्तर : शायद···लेकिन उन्हें इसकी खोज-बीन करवानी चाहिए थी। उनके पास दुनिया का सबसे बढ़िया सी० आई० डी०[1] था। अगर मुझको कुछ पता लगाना हो तो खुफिया विभाग में कहने-भर की जरूरत थी। ब्रिटिश साम्राज्य एक बहुत बड़ी संस्था थी जिसकी पहुंच हर कहीं थी। अगर इस मामले की छानबीन सी० आई० डी० ने की होती तो मुझको पता चल जाता।

मुझको न बताना बड़ा गुनाह था, मुझे अभी लग रहा है भारत को अविभाजित रखने का वही एक तरीका था क्योंकि हमारे सामने जिन्ना ही रास्ते के रोड़ा थे। बाकी लोग इतने जिद्दी नहीं थे। मुझे विश्वास है कि उनके साथ कांग्रेस कोई समझौता ढूंढ़ ही लेती।

प्रश्न : मुस्लिम लीग के साथ भी ?

हिन्दु-मुसलमान और दूसरे लोगों पर माउंट बैटन के विचार

उत्तर : मुस्लिम लीग के सदस्य वे लोग ज्यादातर भारतीय सेना के अफसर लोग थे। हिन्दुओं से ज्यादा अच्छे लगते थे मुझे। वैसे हिन्दुओं से साबका भारत आने के बाद ही ज़्यादा पड़ा। मैं किसी के पक्ष में नहीं था। लेकिन मुसलमान मुझे ज़्यादा अच्छे लगते थे। मेरे कई मित्र थे। भारत का इतिहास जय-पराजय की कहानी रहा है। मुगल आए तो उन्होंने भारत को जीत कर उसे चलाया, और निज़ाम जैसे लोग लोग दक्षिण में मुगलों के वाइसराय थे। सैनिक स्तर पर हिन्दू पूरी तरह मार खाए हुए थे। और विजयी शक्ति द्वारा अधीन जाति की तरह व्यवहार किया जाता था उनके साथ···

लेकिन उनके पास मुसलमानों से कई गुना बेहतर दिमाग था। हिन्दू अच्छे व्यापारी, दुकानदार, क्लर्क, अफसर थे। मुसलमानों की नौकरी करने की बजाय उन्हें अंग्रेजों की नौकरी ज्यादा पसन्द थी। मुसलमान अच्छे मेज़बान थे और शिकार आदि के लिए आते थे, मगर अंग्रेजों के पाबन्द नहीं थे। वे सेनाओं में जाने को तैयार थे, पर सच्चाई यह है कि पूरी व्यवस्था में हिन्दू भरे थे, और

1. क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेन्ट।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वे उसमें इसलिए आए क्योंकि मुसलमान उस तरीके से हमारे साथ काम करने को तैयार नहीं थे।

अंग्रेज बड़ी आसानी से मुसलमानों से दोस्ती कर लेते थे क्योंकि वे भी पोलो खेलते थे, शिकार पर जाते थे, उन्हें किसी बात का संकोच नहीं था। हिन्दुओं की अंग्रेजों के साथ उतनी अच्छी नहीं निभी। किसी भी मुसलमान ने अंग्रेजों के खिलाफ कोई साज़िश नहीं की। वे हमें जाने देना नहीं चाहते थे क्योंकि वे सुरक्षित महसूस करते थे। जिन्ना नहीं चाहते थे कि हम जाएं। पहले तो उन्होंने यही कहा था कि उन्हें अलग पाकिस्तान नहीं चाहिए, हम उनके लिए शासन की बागडोर थामे रहे। लेकिन चूंकि हिन्दू ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में पढ़े थे, और फ़ेबियन विचारों से प्रभावित थे, इसलिए वह सोचते थे कि अंग्रेज़ों का भारत पर हुकूमत करना गलत है। मैं फिर कहता हूं कि हम जनता की रज़ामन्दी और प्रेम से शासन कर रहे थे। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन पढ़े-लिखे बुद्धिमान लोगों को यह पसन्द नहीं था। हमारे खिलाफ जो बातें थीं, उनमें एक यह थी।

ऐसी हालत में, हम सत्ता सौंपे बिना कांग्रेस पार्टी की इच्छाओं को कैसे पूरा करते? हमें सत्ता सौंपने पर बाध्य होना पड़ा। विभाजन कोई नहीं चाहता था। यह विचार ही खतरनाक था। उसके कामयाब होने की उम्मीद भी नहीं थी, क्योंकि मुसलमान पूरे हिन्दुस्तान में फैले हुए थे। मैं नहीं समझता कि पूर्व-पश्चिम पाकिस्तान बनाकर हमने आधे से ज़्यादा मुसलमानों को दोनों जगहों में बांटा होगा। बाकी तो पूरे भारत में बसे थे। वहां खुश भी थे।

मैं और मेरी पत्नी···शायद पहले लोग थे जिन्होंने धार्मिक विश्वासों की चिन्ता किए बिना, हिन्दुस्तानियों के प्रति सच्चा प्रेम दिखाया था। याद रखिए, यहां पारसी भी थे, जैन भी थे। आखिरी जैन राजा युद्ध में सिर्फ इसलिए हार गया था क्योंकि ऐन लड़ाई के समय बारिश होने लगी थी। यह सोचकर कि उनके घोड़ों से अनगिनत कीड़े-मकोड़े मर जाएंगे, उन्होंने कूच की तैयारी रोक दी थी।

···इनमें ईसाई भी थे। संत थॉमस के मातहत ईसा बाद पहली शती में ही दक्षिण भारत ईसाई हो गया था। भारत एक देश नहीं है, जब तक यह न मान लिया जाए, इसकी समस्याओं को नहीं समझ पाएंगे। एशिया महाद्वीप से जुड़ा है, यह इसलिए उपमहाद्वीप कहलाता है, लेकिन सच तो यह है कि भारत एक महाद्वीप है। इसकी तुलना हर पहलू से योरोप से की जा सकती है। लम्बाई-चौड़ाई में बहुत अन्तर नहीं। जातियां, भाषाएं, उपभाषाएं, धर्मों की संख्या भी लगभग उतनी ही है। अंग्रेजों ने उन्हें एक 'कॉमन मार्केट' दिया और दो सौ वर्षों से ऊपर एक सर्वाधिपति की तरह उन पर शासन किया। यह एक बहुत असाधारण सामाजिक कार्य था जिसे कम नहीं समझना चाहिए। और इसीलिए इसे छोड़ते हुए विभाजित करना, हमें इतना दुखद लग रहा था।

भारत एक महाद्वीप है

प्रश्न : भारत आने से पहले ही क्या आपका रवैया बन चुका था?

उत्तर : यह बताना अब मुश्किल है कि जब मैं यहां आया मेरे दिमाग में क्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकीकृत भारत पर विश्वास करने वाला

हो रहा था। मैं एक संयुक्त भारत में विश्वास करता था। और मैं सोचता था कि यही एकमात्र विरासत हम आनेवाली पीढ़ियों के लिए छोड़ सकते थे। मुझे मालूम था, बाकी भारत के साथ देशी राज्यों को मिलाना था जो सबसे मुश्किल काम था। लेकिन यह एक चमत्कार ही था कि हमने यह मामला सुलझा लिया। मैंने सोचा था भारत को एक बनाये रखने के लिए मुझे हर कोशिश करनी चाहिए। मैं हल ढूंढ़ पाने के लिए बहुत उत्सुक था।

प्रश्न : विभाजन के बारे में हिन्दू नेताओं का क्या विचार था ?

माउंटबैटन और हिन्दू नेता

उत्तर : विभाजन की बात से नेहरू स्तंभित हो गए थे। वह असाधारण रूप से बुद्धिमान व्यक्ति थे। बातों का मतलब जल्दी समझते थे।

गांधी के पास कोई कुंजी नहीं थी लेकिन जिन्ना के पास थी। सिर्फ यही नहीं, स्थितियां बुरी तरह उलझी हुई थीं।

लेकिन वह न गांधी के पास थी न नेहरू के। जिन्ना और पटेल के पास थी। यही दोनों थे।

अगर जिन्ना दो वर्ष पहले अपनी बीमारी से मर जाते तो हम भारत को एक रख सकते थे। वही थे जिन्होंने इसे असंभव बना दिया था। जब तक मैं जिन्ना से मिला नहीं, मैं सोच भी नहीं सकता था कि कितनी असंभव स्थिति है।

प्रश्न : स्थिति क्या विकट थी ?

उत्तर : मैं समझौते की बात ही कर सकता था। मसलन, जिन्ना को समूचा पंजाब और बंगाल चाहिए था। लेकिन मैंने कह दिया, ऐसा नहीं हो सकता।

कारण बताते हुए जिन्ना से मैंने कहा, वह भारत का विभाजन नहीं कर सकते।

"विभाजन तो करना ही होगा," उन्होंने कहा, "1938-39 में उन लोगों ने हमारे साथ जो किया था। उन पर हमको भरोसा नहीं। देखिए, आपके जाने के बाद हम कुछ चुने हुए हिन्दुओं के रहम पर रह जाएंगे। हमें दबाया जाएगा। बहुत बुरा होगा।"

मैंने उनको विश्वास दिलाना चाहा कि नेहरू और उनके जैसे उनके दूसरे साथियों का कोई इरादा नहीं है ऐसा करने का।

"अगर आपको पाकिस्तान चाहिए तो मुझे पंजाब और बंगाल का विभाजन करना होगा। आप पंजाब और बंगाल के हिन्दुओं को पाकिस्तान नहीं ले जा सकते।"

"योर एक्सेलेंसी, आप यह नहीं समझते कि पंजाब एक राष्ट्र है, बंगाल एक राष्ट्र है। एक आदमी पहले पंजाबी या बंगाली है, बाद में हिन्दू या मुसलमान। अगर आप ये सूबे हमें देंगे तो किसी भी हालत में उनका बंटवारा नहीं कर सकते। इससे खून-खराबा होगा।"

"मानता हूं। लेकिन हिन्दू-मुसलमान, पंजाबी-बंगाली से पहले वह भारतीय है। आप जो कह रहे हैं वही उत्तर तो मैं ढूंढ़ रहा था। आपने भारत के एक बने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रहने के पक्ष में अच्छी दलील दी है।"

बहस घण्टों नहीं, कई-कई दिन चलती। वह अपने ही जाल में फंस गए थे। अन्त में हारकर बोले, "आप मुझे कटा-पिटा पाकिस्तान देकर ही रहेंगे?"

"मैं नहीं चाहता कि आप यह भी लें। मैं तो चाहता हूं कि आप भी भारत को एक रखने पर राज़ी हो जाएं।"

लेकिन वह अपनी ज़िद पर अड़े रहे। वह अपने जमाने के डि गॉल थे। तीन-चार मुलाकातों में ही मैं उनकी मंशा समझ गया था। थक कर मुझे ही कहना पड़ा, "कैबिनेट मिशन प्लान[1] जैसी किसी व्यवस्था को मान लेते तो आपको बहुत स्वायत्त अधिकार मिल जाते। पंजाब और बंगाल अपना शासन खुद करते। संयुक्त राष्ट्र अमरीका से भी ज़्यादा स्वायत्तता होगी। फिर आप अल्पसंख्यक जनता को मनचाहे ढंग से दबाने की खुशी भी हासिल कर सकेंगे क्योंकि आप केन्द्र को हस्तक्षेप करने से टोक सकेंगे। यह बात आपको माफिक लगती है?"

"नहीं। मैं भारत का एक हिस्सा नहीं बनना चाहता। हिन्दू राज्य के अधीन होने से तो मैं सब-कुछ खो देना ज्यादा पसंद करूंगा।"

वह बोलते गए। जल्दी ही मैं समझ गया कि किससे पाला पड़ा है। मैं कभी नहीं सोच सकता था कि एक इतना पढ़ा-लिखा, काबिल, इंगलैण्ड में शिक्षित आदमी अपने दिमाग के दरवाज़े इस तरह बन्द कर सकता है।

जिन्ना को लोग अब भूल चुके हैं। **बंगला देश और वह सारी विपत्तियों का कारण अकेले वह थे। और कोई नहीं। और उनके खिलाफ एक शब्द भी नहीं कहा गया। सारे मामले का कारण उनका शैतानी दिमाग था।**

'न' कहने में ही उनकी सारी ताकत छिपी थी। मेरी समझ में नहीं आता कि **लोगों ने यह कैसे नहीं देखा कि समस्या की, महाद्वीप की, कुंजी जिन्ना के हाथ में है। मेरे मन में कोई भ्रांति नहीं थी। मैंने देखा कि बेचारे गांधी के हाथ में कुछ नहीं है।**

प्रश्न : दूसरों ने राहत महसूस की?

उत्तर : दर असल, मैंने महसूस किया कि उनमें से किसी को भी रत्ती-भर भी अंदाज़ नहीं था कि जो फैसला वह कर रहे हैं उसके प्रशासनिक नतीजे क्या होंगे। मैंने यह काम इस्मे को सौंप दिया।

भगवान जाने, 30, 40, या 50 प्रमुख चीज़ें थीं। सत्ता के हस्तांतरण के प्रशासनिक परिणामों पर इस्मे ने बहुत अच्छा पेपर तैयार किया। परीक्षा

---

1. अप्रैल, 1946 में, दिल्ली में 'कैबिनेट मिशन' आया था—लार्ड पेथिक लॉरेंस, स्टेफोर्ड क्रिप्स और ए० वी० एलेक्जेण्डर भी थे इसमें। क्रिप्स प्लान के नाम से जानीजाने वाली एक योजना बनाई गई। प्रांतीय स्वायत्तता और राष्ट्रीय एकता बनाए रखने की योजना थी। प्रांतों और राज्यों का एक संगठन बनेगा। केन्द्र केवल रक्षा, विदेशी मामले और संचार देखेगा। प्रांत अपनी क्षेत्रीय यूनियन बना सकते थे जिसको वह आपसी सहमति से अपने कुछ अधिकार सौंप सकते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभाजन के प्रशासनिक परिणाम

पत्र की तरह मैंने और एर्सकीन क्रम में वह पेपर सबको दिखाया तो उनकी खुशी खत्म हो गई। मैं स्टेज मैनेजर के अलावा कुछ नहीं था। यह सचमुच स्टेज मैनेजमेंट जैसा ही था। नतीजा यह हुआ कि उनका सारा ध्यान उस ओर चला गया। जिन्ना भी घबरा गए।

मुझको इसकी परवाह नहीं है कि जिन्ना की नीचता सब पर जाहिर हो गई। वह सचमुच तुच्छ था। मेरी तो उससे इस लिए निभ गई कि मेरी सबके साथ निभ जाती है। उसने एक भी कोशिश नहीं की। मेरे साथ जो उसने सबसे बुरा किया वह यह कि मुझसे कहता रहता कि आप मत जाइए, यहीं बने रहिए इसलिए कि अगर मैं चला जाऊंगा तो उनकी सम्पत्ति उनको नहीं दी जाएगी। कहते कि सत्ता-हस्तांतरण के बाद भी मैं इन-चार्ज बना रहूं। इसमें एक मुश्किल थी। आजादी के बाद एक वाइसराय के नीचे दो गवर्नर-जनरल नहीं रह सकते थे। अतः तय हुआ कि सत्ता सौंपने के दौरान मैं दोनों राज्यों का गवर्नर-जनरल रहूं। दोनों पक्षों ने यह बात खामोशी से मान ली। मेरे और जिन्ना के स्टाफ़ों में बातचीत हुई। पहले भारतीयों ने सुझाव दिया कि मैं उनके साथ रहूं। यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात थी कि वह मुझे अपने साथ चाहते हैं। मैंने कहा कि अगर जिन्ना भी चाहते हैं कि मैं रहूं तो तरकीब यह होगी कि मैं पाकिस्तान का भी गवर्नर-जनरल बनूं।

दो घरों में एक ही समय रहना कष्टकर होता लेकिन मैं कोशिश करने के लिए तैयार था। लेकिन जिन्ना ने यहां भी चकमा दिया। आखिरी मौके पर उस आदमी ने जो पाकिस्तान का शासन करना चाहता था, प्रधानमंत्री का पद न लेकर राज्य के संवैधानिक प्रमुख (गवर्नर-जनरल) का पद ले लिया जिसके संविधान के अंतर्गत कोई प्रशासकीय अधिकार नहीं थे।

प्रश्न : जिन्ना से हुई इस बातचीत के बारे में आपकी क्या भावनाएं थीं ?

उत्तर : मुझको यह यकीन करना बहुत मुश्किल लगा कि एक शिक्षित आदमी जिसके दिल में ब्रिटेन के लिए स्नेह और प्रशंसा थी, भारत को एक दूसरे दर्जे की ताकत बनाने के लिए राज़ी है और सारे किये-धरे पर पानी फेंक रहा है।

और इस तरह उन्होंने पाकिस्तान का टूटना पहले से ही निश्चित कर दिया, क्योंकि सम्पत्ति और आबादी पूर्वी बंगाल में थी और वे दूसरों से नफरत करते थे—वे अलग हो गए पूरी तरह।·· अब वे भारत से दोस्ती कर रहे हैं। उत्तर के छोटे-छोटे कबीले भी बिखर जाएंगे। अगर अमरीका उनकी **मदद नहीं करेगा तो जीना मुश्किल हो जाएगा उनका। जिस दिन अमरीका अपना हाथ खींच लेगा, ये लोग खतम हो जाएंगे।** ये कैसे बचेंगे मैं नहीं जानता। सेना, वायु-सेना के बावजूद ये भारत के रहम पर रहेंगे। मैंने यह सब जिन्ना को समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई असर नहीं हुआ।

प्रश्न : सत्ता के हस्तांतरण में इतनी जल्दी क्यों की गई ?

उत्तर : जानता हूं मुझ पर जल्दबाज़ी का आरोप लगाया गया है। डर था

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या सत्ता के हस्तांतरण में जल्दबाज़ी की गई थी ?

कि मैं भारत को जोड़े रख सकूंगा या सब कुछ टूट जाएगा। मैं एक मूर्ख भारत-सरकार के साथ बांध दिया गया था जिसके 15 सदस्य थे—छः मुसलिम लीग, छः कांग्रेस और तीन दूसरे। कांग्रेस जो भी चाहती उसके पक्ष में 9-6 वोट ही पड़ते थे। ऐसे में शासन कर पाना संभव नहीं था क्योंकि मुसलिम लीग मानती नहीं थी। मुझको एक विचार सूझा। मैंने सोचा, सरकार को तोड़कर दो सरकारें बना दी जाएं—होनेवाले भारत और होनेवाले पाकिस्तान की सरकारें। इससे हुआ यह कि ये लोग विभाजन और सम्पत्ति के बंटवारे के मामलों को लेकर व्यस्त रहने लगे। लेकिन कभी-कभी गड़गड़ाहट इतनी तेज़ हो जाती कि मैं सोचने लगता तारीख मुकर्रर करने में मैंने जल्दबाज़ी तो नहीं की ?

एक सवाल के जवाब में बस यों ही तारीख चुन ली। मैं यह दिखा देने पर दृढ़ संकल्प था कि सब-कुछ मेरे कब्ज़े में है। जब उन्होंने पूछा, क्या तारीख तय हो गई ? तब मैं जान गया कि जल्दी ही होना चाहिए। तब तक मैंने इस पर बहुत सोचा-विचारा नहीं था। लेकिन तभी सोच लिया कि अगस्त या सितम्बर तक यह काम हो जाना चाहिए। फिर मैंने 15 अगस्त तय कर लिया, क्योंकि जापान के आत्मसमर्पण की यह दूसरी सालगिरह थी। मैं जानता था कि स्वतंत्रता की भी कोई तारीख तो होगी ही। फिर यही सही। मेरे स्टाफ ने अलग-अलग तारीखें सुझाईं—बाद की तारीख। जब मैंने उन्हें बताया तो इतने पास की तारीख सुनकर वे घबरा गए।

तारीख का चुनाव

फिर सभी को काम करना पड़ा। मुझको यकीन है कि अगर हम धीरे-धीरे चलते दिल्ली में सब-कुछ ध्वस्त हो जाता। तब क्या होता ? मैं धारा 93 के अंतर्गत पूरे भारत को सीधे अपनी हुकूमत में ले सकता था। देश को संभालने का यही एक तरीका होता।

मुझको पूरा यकीन है, और मैं कोई भी शर्त लगाने को तैयार हूं कि ऐसा समय भी आएगा जब यह माना जाएगा कि मैं इससे धीरे नहीं चल सकता था। स्थितिको टिकाए रखने के लिए मुझको तेज़ी से काम करना पड़ा। यह खयाल कोरी बकवास है कि मेरी अंधाधुंध जल्दबाज़ी के कारण इतना खून-खराबा हुआ। शायद किसी दूसरे रास्ते से भी इतना ही सर्वनाश होता। इस्मे से या मेरे साथ के किसी भी व्यक्ति से पूछा जा सकता है। मैंने हालात को बनाए रखा। इस चीज़ को अभी तक नहीं समझा गया।

विंसटन ने मुझसे कहा, "तुमने 20 लाख भारतीयों को मार डाला।" पहली बात तो यह कि सही संख्या बीस लाख नहीं थी। वैवेल के पत्रों के सम्पादक पेंडेरल मून अपनी पुस्तक में मरनेवालों की संख्या दो लाख बताते हैं। दर असल 1943-44 के अकाल ने उन बीस-तीस लाख लोगों की जानें लीं जिनको ठीक ब्रिटिश प्रशासन नहीं मिला था। सच तो यह है अपने फौजी जहाज़ी बेड़े का 5% मैंने भारतीयों के लिए खाना लाने के लिए दे दिया था। 1947 में जितनी जानें गई थीं उससे ज़्यादा जानें हमने तब बचाई थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारी तेजी का कारण पाकिस्तान का घोटाला करना नहीं था। मैंने जल्दी इसलिए की क्योंकि स्थिति मेरे हाथों में ही बिगड़ने लगी थी। इसका कारण था दोनों पक्षों का आपसी असहयोग। मुझको लग रहा था कि स्थिति में दबाव आ रहा है। लगता था, मैं एक ज्वालामुखी पर खड़ा हूं जो कभी भी फूट सकता है।

जून 1948 तक स्थिति को संभाले रखने की कोई उम्मीद नहीं थी। मैं जिधर देखता, मुझे यही लगता कि काश, यह काम जल्दी हो जाए। पाकिस्तान को उसकी रकम, स्टेनोग्राफ़र, टाइपराइटर उसे दिलवाने की क्षमता मुझमें थी। सारे काम ठीक-ठीक करवाने के लिए मैं अपने को बाध्य पा रहा था। मैं पाकिस्तान का फ़ारवर्डिंग एजेण्ट बन गया था क्योंकि कुछ हद तक वे काफ़ी धक्के खा चुके थे और मुझे अब यह देखना था कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जाए। 55 करोड़ वाली बात मैंने बताई थी गांधी को। उससे पहले उन्हें उसके बारे में मालूम नहीं था।

यह बात पटेल ने मुझ पर नहीं थोपी थी। सच तो यह था कि मैं स्थिति को और संभाल नहीं सकता था। हमें चाल आगे बढ़ानी थी। लोगों ने कहा, धीरे चलो। धीरे तो आप दस साल चलते रहते लेकिन हालात को दस महीने भी यों लटकाए नहीं रखा जा सकता था।

प्रश्न : 15 अप्रैल की गवर्नर्स कान्फ्रेंस में अपनी सत्ता के हस्तांतरण की योजना की चर्चा की थी ?

उत्तर : नहीं। मेरा दिमाग़ जिस ढंग से काम कर रहा था वही मैंने उनको बताया। कोई योजना नहीं थी मेरी।

प्रश्न : 14 अप्रैल को जनरल ऑकिनलेक के साथ अपनी भेंट में आपने अपनी योजना को 'बाल्कनी योजना' कहा था।

उत्तर : वह तो बड़े मोटे तौर पर बनाई गई योजना थी। यह भारत के 'बाल्कनीकरण' का प्रस्ताव था—लोग क्या करना चाहते हैं यह खुद उन्हें तय करने दें। हालात लचीले थे, दिन-ब-दिन बदलते जा रहे थे। पहले मैं एक अविभाजित भारत चाहता था, लेकिन जब यह न हो सका तब मैंने चाहा कि एक ऐसा भारत बने जिसका केन्द्र भी कमज़ोर न हो और व्यवस्था भी ठीक हो। अगर वह सब परेशानियां न होतीं तो एक व्यापक रक्षा-समिति होती जिसे जिन्ना ने स्वीकार किया था, और विकल्प यह था कि जिन्ना उसके अध्यक्ष हों। दरअसल उन्होंने मुझसे कहा था अध्यक्ष बनने को। और यही जवाब होता विदेशी मामले, रक्षा और संचार का।

प्रश्न : हल ढूंढ़ने में गवर्नरों ने आपकी कोई मदद की ? क्या उनके मन में पक्षपात नहीं था।

उत्तर : कर रहे थे। अपनी पूरी जिंदगी भारत को समर्पित करने में मेरा एक फ़ायदा था। मुझसे पहले जो विशेषज्ञ आए थे वे कोई हल ढूंढ़ने में असफल रहे—शायद अपनी पृष्ठभूमि के कारण। वे लोग ब्रिटिश राज की नीतियों में इस तरह रंगे थे कि वे ऐसा हल चाहते थे जिसमें कम-से-कम हिंसा हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं हल ढूंढने आया था किसी पूर्व निर्धारित विचार के बगैर अलावा इसके कि मुझको एक निश्चित तारीख को सत्ता सौंप देने की आज्ञा लेकर आया था। मुझसे कहा गया था कि मैं किसी न किसी तरह भारत को एक बनाए रखने की कोशिश करूं। लन्दन में यह बात खास तौर पर कही भी नहीं गई थी। जब मैंने खास तौर से कहा तो मेरे सुझावों की सूची में इसे जोड़ दिया गया। **मैंने उनसे यह भी आदेश देने को कहा कि मैं भारत को कॉमनवेल्थ में रखने की कोशिश करूं। उन्होंने इसके बारे में नहीं सोचा था। आप कह सकते हैं कि मैंने अपना टिकट खुद ही काटा !**

फिर मैं यह सोचकर भारत आया कि जो काम मेरे हिसाब से सही है, वही करूंगा। हर शाम हम स्टाफ़ की मीटिंगों में देखते कि हम कहां तक पहुंच गए हैं, कितना कुछ कर लिया है, कौनसे नये पहलू (जब सिखों के साथ पेश आना पड़ा) सामने आए हैं। वहां से हम अगले दिन की योजना बनाते। एक संभावना बनती जा रही थी। मैं अलग-अलग योजनाओं के बारे में सोचा करता। स्टाफ़ की मीटिंग में ही मैं फैसला करता कि यह काम हम इस तरीके से करें, और उस पर दूसरों की प्रतिक्रिया जानने की कोशिश करता।

मैं सोचता था कि लॉर्ड इस्मे के द्वारा जो प्लान मैंने भेजा था उस पर मुझे पूरी सहमति मिल जाएगी। फिर उसके बाद शिमला में नेहरू के साथ वह प्रसिद्ध काण्ड[1] हुआ जब मुझको अपने मन के इशारों से काम लेना पड़ा। जब अपने स्टाफ़ की राय के खिलाफ़ फ़ैसला करने का कोई तर्कसंगत कारण न होता तो मैं अपने मन के इशारों को ही मानता था।

प्रश्न : डोमिनियन स्टेटस का विचार कैसे उभरा ?

उत्तर : कुछ लोगों का कहना है कि डोमिनियन स्टेटस का विचार वी० पी० मेनन ने मुझको सुझाया था। और वह अपने छोटे-से अहंकार में दिखाना चाहते थे कि यह उनका विचार था, उन्होंने मसौदा तैयार किया, और मुझको दे दिया। बहसों में बराबर यह बात उठाई जाती रही थी। जिस तरह कृष्ण मेनन अपने विचारों से नेहरू को जीत लेते थे उसी तरह मेनन अपने विचारों से पटेल को जीत लेते थे। मैं इतिहास को यह मानने की इजाज़त नहीं दे सकता कि 'डोमिनियन स्टेटस' का यह हल जो उस समय एक बढ़िया दिमाग़ी तरंग था; सिर्फ़ वी० पी० मेनन का था।

पाकिस्तान और भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस

प्रश्न : अपने भारतीय सहयोगियों से आपने कॉमनवेल्थ से जुड़े रहने का आग्रह किया था ?

उत्तर : मुझको लन्दन से कहना पड़ा कि मुझको ऐसा हुक्म दें। इसकी अहमियत थी। मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कॉमनवेल्थ से निकालना होगा, या पूरा अलगाव स्वीकार करना होगा। मैं हल निकालने के लिए तैयार था। मैं दिल से चाहता था कि भारत कॉमनवेल्थ में रहे। मैं तमाम

---

1. देखिए 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट', पृ. 125

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वक्त यही इजाज़त मांगता रहा कि मुझे हल कॉमनवेल्थ के अंदर ही ढूंढ़ने दिया जाए।

प्रश्न : क्या आपने सोचा था कि स्वतंत्र भारत के विकास के लिए कॉमनवेल्थ सब से अच्छा पालना होगा ?

उत्तर : जी हां। मैं वही व्यवस्था बर्मा के लिए भी चाहता था लेकिन वहां देर हो गई। लेकिन भारत के लिए यह मैं कर सका।

प्रश्न : यह बात आपके दिमाग़ में कैसे आई ?

उत्तर : कॉमनवेल्थ मेरे लिए बड़ा महत्त्व रखता था। सही दिशा में जाने के लिए हर तिनके का सहारा मैंने लिया। जब भी मौक़ा देखता···एक ओर नेहरू के लिए कृष्ण मेनन और दूसरी ओर पटेल के लिए वी० पी० मेनन—इन्हीं दोनों की राय का महत्त्व था—वे ज्यादातर मेरी ही तरह सोचते थे। एक दिन में बैठे-बैठे वह कड़ी मैंने नहीं बनाई, लेकिन उन्होंने भी ऐसा नहीं किया। यह काम दोनों तरफ़ से हुआ। कृष्ण मेनन और वी० पी० मेनन के बारे में महत्त्व की बात यह थी कि वे स्वयं नेता नहीं थे, मुझको नेताओं से जोड़नेवाली कड़ी थे।

प्रश्न : इस बंधन का प्रतीक है ब्रिटिश ताज। लेकिन भारतीय नेता सर्व प्रभुत्व-सम्पन्न गणराज्य चाहते थे। ताज से जुड़ने के साथ संगति कैसे बैठी।

उत्तर : एक दिन नेहरू ने पूछा, हम कॉमनवेल्थ में कैसे रह सकते हैं ? मैं सम्राट जॉर्ज VI के पास गया और मैंने अनुरोध किया कि भारत को गणतंत्र के रूप में कॉमनवेल्थ में रहने दिया जाए। मुझे याद है मैंने सम्राट के साथ विस्तार से बात की थी—कि वे अपनी वर्दी नहीं बदलेंगे, तीन सिंहों का प्रतीक ताज की बजाय उनके कन्धे पर होगा। नौ सेना की तरह उन्हें अपना झण्डा भी वही रखना होगा। सेंट जॉर्ज का लाल क्रास सफेद झंडे पर करीब-करीब वही। सम्राट के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। हमने कॉमनवेल्थ के प्रधान की उपाधि नहीं बनाई थी क्योंकि जब इस मुद्दे पर बातचीत हो रही थी तभी किंग जॉर्ज मर गए। कृष्ण मेनन उसी दिन मेरे पास आए और बोले, 'नई महारानी के लिए अब हमें शुरू से ही 'टाइटिल' ढूंढ़ना होगा।

हमने आपस में सोच-विचार कर कॉमनवेल्थ के प्रधान की धारणा बनाई जिसे उन्होंने भारत से स्वीकार कराया फिर हमने टाइटिल भी जोड़ दिया जिसके अन्तर्गत गणतंत्र भी कॉमनवेल्थ में रह सकते थे।···शुरू में मैं उनके साथ भावनात्मक कारणों से रहना चाहता था। फिर न जाने क्या हुआ, लेकिन मैं महसूस करने लगा कि हम उन्हें तर्कसंगत आवश्यकता के द्वारा भी रख सकते हैं। **यह बात मैं समझा नहीं सकता लेकिन ऐसा कुछ हुआ जो मेरे दिलोदिमाग़ पर छा गया। उसका मेरे स्टाफ़ या और किसीसे कोई सम्बन्ध नहीं था।**

किस हद तक यह विचार विकसित हो रहा था। मुझे याद नहीं, इस पर विश्वास करना भी आसान नहीं। ज्यादातर लोग नहीं करते आप भी नहीं करेंगे। अच्छा हो या बुरा लेकिन इस पूरे काम में मैं अकेला था। यह मेरा विकसित हो रहा व्यक्तित्व ही था कि कहीं भी टकरा जाता। क्योंकि मैं जो कुछ कहता

लोग मान लेते और यही सबसे ज्यादा डराने वाली बात थी।
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न : कॉमनवेल्थ के विचार में किंग जॉर्ज का कितना हाथ था ?

उत्तर : लोग जितना समझते हैं उससे वह ज्यादा प्रगतिशील इन्सान थे। थोड़ा हकलाते थे, इसलिए ज़्यादा बात नहीं करते थे। मैं उन्हें शुरू से जानता था, उन्होंने कभी मेरे काम में हस्तक्षेप नहीं किया। हम एक-दूसरे को बहुत प्रभावित करते थे। जब कभी मुझे बाहर भेजना चाहते, वह कहते, 'मेरी आशाएं तुम पर टिकी हैं, तुम्हारी जगह कोई और होता तो मैं यह नहीं सोचता कि वह मैं जो चाहता हूं वह करने की कोशिश कर रहा है।' मुझे मालूम था, उनका समर्थन मुझे अन्त तक मिलेगा।

प्रश्न : क्या सम्राट चाहते थे कि यह सूत्र बना रहे ?

उत्तर : यह उन्हीं का विचार था। उन्होंने कहा, 'अब मुझे जी० आर० आई०[1] में से 'आई' निकालना होगा। मुझे राज-सम्राट की पदवी त्यागनी होगी। क्योंकि मैं भारत से यह सूत्र तोड़ना नहीं चाहता। उनके जीवन का एक उद्देश्य था भारत आना। मैंने महारानी से भी कहा था, 'आपके पिताजी वहां जाते। आपको भी वहां जाना चाहिए, मैं सारा इन्तजाम करवा दूंगा।'

सम्राट भारत को कॉमनवेल्थ में रखना चाहते थे। मैं यह नहीं कहता कि यह बात मैंने उनके दिमाग़ में डाली थी या उन्होंने मेरे दिमाग में लेकिन··· बात ऐसी बन आयी। जब दो व्यक्ति धीरे-धीरे प्यार करने लगें तब यह नहीं देखा जाता कि पहल किसने की। आपस में प्रेम-भाव जन्मता है। उसी तरह पारस्परिक व्यवहार में किसी विचार को फलीभूत भी किया जा सकता है।

प्रश्न : अब शिमला अधिवेशन के बारे में बात करें। यहां भी आपको कोई पूर्वाभास हुआ ?

निर्णायक शिमला अधिवेशन

उत्तर : याद हो कि 2 मई, 1947 को जो योजना[2] मैंने लन्दन भेजी थी वह किसी भी भारतीय नेता ने देखी नहीं थी। मैंने यह योजना हर नेता से बात करके उसकी प्रतिक्रिया जानकर निजी तौर पर तैयार की थी। मुझे विश्वास था उसमें ऐसा कुछ नहीं था जिसपर उन्हें एतराज़ होता। लार्ड इस्मे—सर जॉर्ज एबल भी—लन्दन रवाना हो गए और मैंने सोचा, मैं शिमला चला जाऊं।

मैंने मिलिट्री सचिव कर्नल क्यूरी को बुलाकर कहा, 'मैं शिमला जाना चाहता हूं।' मई का अन्त था, काफी गरमी पड़ रही थी। मैं हिमालय के ठण्डे पहाड़ों पर आराम करना चाहता था। मेरे सारे अधिवेशन खत्म हो चुके थे, कुछ दिन बचे भी थे मेरे पास। मैंने कहा, 'मैं आठ दिनों में रवाना होना चाहता हूं जिस दिन लार्ड इस्मे रवाना होंगे उसी दिन।'

'इतने कम समय में वाइसराय लॉज नहीं खुलवा सकता।' उन्होंने कहा,

---

1. जॉर्ज रेक्स, इम्परेटर (जॉर्ज किंग एम्परर)
2. देखिए, 'फ्रिडम ऐट मिडनाइट', पृ० 124, तथा इस खण्ड के दूसरे चरण की रिपोर्टें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
'कम से कम तीन सप्ताह का समय चाहिए।'

'लेकिन समय सिर्फ़ एक सप्ताह का है।'

'मैं यह काम नहीं कर सकता।'

'फिर किसी होटल में बुकिंग करा दीजिए।'

'यह असंभव है।''

'कर्नल क्यूरी, मैं वाइसराय लॉज में ठहरूंगा या होटल में, यह फैसला आपको करना है। लेकिन आज से आठ दिन बाद मैं शिमला जाऊंगा। मेरे साथ हर एक्स (वाइसराय की पत्नी को हर एक्स और वाइसराय को हिज़ एक्स कहा जाता था। और पैम्मी[1] के अलावा और कोई नहीं होगा। नेहरू और कृष्ण मेनन को साथ चलने को कहूंगा। वे मुझे अच्छे लगते हैं, इस तरह हम पांच हो जाएंगे। सचिवालय दिल्ली में चलता रहेगा। अपने साथ मैं एक निजी सचिव ले जाऊंगा। शायद वह एडमिरल ब्रौकमैन थे। प्रेस से सम्पर्क रखने के लिए एलेन कैम्पबेल जान्सन और स्टाफ के तीन चार लोग और होंगे।'

'आठ दिन में लॉज खुलवा कर सारी तैयारी मैं नहीं कर सकता।'

मैंने कहा, 'सोच लीजिए। याद रखिए, मैं आठवें दिन शिमला जाऊंगा। अब यह आप पर है कि आप हमें कहां ठहराएंगे। अगर घर में नहीं हो सकता तो मैं होटल में जाऊंगा।'

थोड़ी देर बाद वह लौटे, 'मैंने एमर्जेन्सी मीटिंग बुलाई थी—अगर आप वायदा करें कि आप सिर्फ़ आराम करेंगे, पार्टियां नहीं देंगे तब लॉज खुलवाया जा सकता है।'

''नहीं दूंगा।'

'लंच-डिनर—गार्डेन पार्टी, कॉकटेल पार्टी, बॉल डान्स कुछ भी नहीं...''

'कुछ भी नहीं·· '

'तब हम यह काम कर सकते हैं।'

शिमला पहुंचकर मैंने नोट भेजा कि 'हम कितने लोग आए हैं दिल्ली से और जो जवाब मिला उससे मैं आज भी नहीं उबर पाया हूं—कुल आने वाले 333 लोग थे। पहाड़ों पर जाने के दो रास्ते थे—या तो आप नैरो गेज ट्रेन से जा सकते थे या कार से। अम्बाला तक कार में जाया जा सकता है। वैसे हवाई जहाज का रास्ता भी है। मैं अक्सर हवाई जहाज से जाता था।···जब हम शिमला में थे तभी लन्दन ने तार द्वारा मेरी योजना में संशोधन शुरू कर दिया। हस्तक्षेप की उनकी आदत नहीं छूटी। जब उनका कार्य समाप्त हुआ योजना का मौलिक रूप बिगड़ चुका था। लेकिन योजना की मूल बातों में कोई खास परिवर्तन नहीं आया था।

जिस रूप में नेताओं के सामने पहले रखा गया था, वह रूप नहीं था अब उसका। मैं चिंता में था। मैंने कहा, 'मुझको ऐसा लगता है कि यह मंजूर नहीं किया जाएगा। उन्होंने पुराना प्लान नहीं देखा था लेकिन उसके शब्द जानते थे।

---

1. पैमिला माउण्टबैटन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब उसका रूप कुछ और था। मैंने स्टाफ की एक मीटिंग बुलाई। इसमें वी० पी० मेनन, एलेन कैम्पबेल जॉन्सन और रौनी ब्रॉकमैन थे। मैं जहां भी जाता वी० पी० मेनन को साथ ले जाता।

'इसे आज़माए बग़ैर मैं इसका उपयोग नहीं करना चाहता। सारे नेताओं को बुलाने का समय नहीं। औपचारिक मीटिंग मुझे चाहिए भी नहीं। इसे नेहरू और कृष्ण मेनन पर आज़मा कर देखता हूं।'

17 मई, 1947
शिमला-संकट

मेरे स्टाफ ने कहा, 'यह तो विश्वासघात होगा। अगर जिन्ना को पता लग गया कि योजना आपने इन लोगों को दिखा दी है तो वह फौरन 'ना' कर देंगे। बलदेव[1] को भी 'ना' करने का मौक़ा मिल जाएगा। शायद कांग्रेस पार्टी भी अपनी सहमति वापस ले ले। इससे पूरा उद्देश्य जान जाएगा। ईमानदारी और स्पष्टवादिता की जगह हमें गुप्त कूटनीति से काम लेना होगा।'

मई 17,
शिमला की
संकट-स्थिति

'शायद आप ठीक कह रहे हैं।' काफी देर बाद मैंने कहा। लेकिन मेरा मन कहता है कि नेहरू को यह बात पसन्द नहीं आएगी और यह कि मुझे यह योजना उन्हें दिखा देनी चाहिए। अगर उन्हें अच्छी लगी तो ठीक है वरना उन्हें संभालना मुश्किल था। मैंने तय किया, नेहरू को योजना दिखा दूंगा, और उनको यह पसंद नहीं आएगा।

उस रात पढ़ने के लिए वह योजना नेहरू ने ले ली। मैं जानता था गुस्से से आगबबूला हो जाएंगे उसे पढ़कर। शायद बरस भी पड़ें।

प्रश्न : वह रिपोर्ट आपने उन्हें कैसे दी ?

उत्तर : जिस कमरे में अधिवेशन बुलाता था उसी में थे। वह अन्दर आए। मैंने संक्षेप में समझाते हुए रिपोर्ट उन्हें दे दी जिसे लेकर वह अपने कमरे में चले गए। दुबारा जब मैंने उन्हें देखा तब वह गुस्से में लाल-पीले हो रहे थे। जेल में रहने के कारण गुस्से का दौरा उन्हें पड़ने लगा था। अपने पर काबू पाने में उन्होंने काफी समय लगाया। घण्टों मैं उन्हें शान्त करने की कोशिश करता रहा।

'मुझे यह मंजूर नहीं' वह बोले, 'यह तो भारत का बाल्कनीकरण है, जो हम नहीं चाहते।' इसके बाद जो मन में आया वह बकते गए और कृष्ण मेनन अपनी सहमति प्रकट करते रहे।

मुझको याद आता है कि तब मैंने स्टाफ को बुलाया। उन्होंने कहा, 'हमारी राय न लेने का नतीजा देखा आपने···खुद को मुसीबत में डाल लिया, उन्होंने तो इसे नामंजूर कर दिया। अब क्या हम सारे नेता फिर बुलाएंगे ?'

प्रश्न : अधिवेशन की घोषणा क्या हो चुकी थी ? उसे रोकने का कारण आपने क्या दिया ?

उत्तर : मैंने कहा अभी हम उसके लिए तैयार नहीं हैं। लन्दन को भी बताना

---

1. बल्देव सिंह, सिक्ख नेता, भारतीय डोमिनियन की सरकार में रक्षा के सदस्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
था कि उनके संशोधन मुझे पसन्द नहीं ।

मैंने अलग से वी० पी० मेनन से बात की, 'मुझे मालूम है वी० पी० आप नेहरू या कृष्ण मेनन के विशेष मित्रों में नहीं हैं, न ही आप उनके साथ अच्छी तरह काम कर पाते हैं। वह पटेल के आदमी थे···हम इस स्थिति को कैसे संभाल सकते हैं ? मुझे लगता है इसका नया मसौदा तैयार करना होगा। हम अपनी स्थिति नहीं बदल सकते। इसका मतलब है विभाजन हमें स्वीकार करना होगा। संविधान सभा के मतों पर विभाजन निर्भर होगा··· लेकिन जिस तरह अब लिखा गया है, नेहरू की राय में इस योजना का मतलब था अलग-अलग प्रांतों को मत के लिए बुलाना और फिर सब-कुछ खत्म कर देना।

और तब वी० पी० मेनन ने एक दूरव्यापी प्रस्ताव मेरे सामने रखा। उसमें विशेष बात यह थी कि 1935 में भारत सरकार अधिनियम के अन्तर्गत 'डोमिनियन स्टेटस' का इस्तेमाल किया गया था और वह सफल रहा।[1]

वी० पी० मेनन की ओर से यह दावा किया गया है (उन्होंने खुद नहीं किया) कि उन्होंने सारी योजना दुबारा खुद लिखी। ऐसा नहीं था। उन्होंने हर कदम पर मेरी सलाह ली। **लेकिन यह सच है कि इस सलाह-मशविरे में मैंने दूसरों को शामिल नहीं किया।**

नेहरू और कृष्ण मेनन दोनों खुश हो गए।

प्रश्न : क्या नेहरू का गुस्सा आपने पहली बार देखा था।

उत्तर : नहीं। ऐसे हास्यजनक सीन हमारे बीच होते रहते थे। वह चाहते थे कि राजनीतिक सचिव सर कौनरेड कोरफील्ड को जिनसे वे नफरत करते थे (जो 1921 में वाइसराय के स्टाफ में थे) सार्वजनिक रूप से ज़लील करके नौकरी से निकाल दिया जाए। वह चाहते क्योंकि वह भारत के दुश्मन थे !

कभी-कभी उनको काबू करना मुश्किल हो जाता था। मैं कहता, 'आप न अपनी मदद कर रहे हैं न मेरी, न ही अपना रुतबा बढ़ा रहे हैं इस तरह।'

'मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता इसलिए कह रहा हूं।'

'जानता हूं आप अपने दिल का गुबार निकाल रहे हैं, लेकिन अगर आपको प्रधानमंत्री बनना है, इस देश को चलाना है तो खुद पर काबू पाना होगा। जब तक मैं हूं मैं आपके लिए स्थिति को संभाले रहूंगा।'

ऐसे मौकों पर वह दिल की बात मुझसे कहते। **एक अजीब-सी धारणा मेरी यह है कि नेहरू को काम करने के लिए गांधी के बाद मेरी सख्त जरूरत थी।** वह बार-बार गांधी के पास जाते थे, हालांकि उनकी उपयोगिता कम होती जा रही थी, और बाद में तो उनका कत्ल ही हो गया।

प्रश्न : नेहरू की 'ना' से आपके लिए संकट पैदा हुआ ?

उत्तर : नहीं, मुझे मालूम था कि यह योजना रखूंगा तब क्या होगा। न होता तो मेरी कोशिशें बेकार हो जातीं, संधिवार्ता की मेरी नीति असफल रह जाती, मैं बेवकूफ माना जाता। इससे पहले की संधियां क्यों असफल रहीं ? क्यों-

---

1. देखिए, 'फ्रीडम ऐट मिडनाइट' पृ० 197

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कि गोलमेज़ कांफ्रेंस पर सबकी आपत्तियां कही-सुनी जातीं। और यह मेरी टेकनीक का एकदम उल्टा था। सबके बीच मैं ही एक जोड़नेवाला सूत्र था और इसीलिए सबको मेरे पास बार-बार आना पड़ता। वे क्या चाहते हैं क्या नहीं, इसपर मुझे निर्णय लेना होता। **लेकिन इस योजना की अस्वीकृति की सबसे बड़ी बात यह थी कि अगली योजना बेहतर बन गई।**

प्रश्न : शिमला-संकट के बाद क्या आपको लगा कि फौरन लन्दन जाना होगा ?

माउंटबैटन लन्दन गए

उत्तर : हालांकि उन लोगों को मेरे पास आना चाहिए था फिर भी मुझे लगा कि मैं ही लन्दन चला जाऊं। मैं वी० पी० को अपने साथ ले गया। वह बकिंघम पैलेस में किंग से मिले। उन्होंने तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वह सम्राट से मिल पाएंगे। मुझे याद है वह रोमांच से कांप रहे थे।

प्रश्न : सम्राट ने उनसे क्या कहा ?

उत्तर : बड़ी अच्छी बातें कीं। कहा, 'आपने वाइसराय की बहुत मदद की है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।'

असाधारण बात यह है कि वे लोग किंग के लिए एक खास इज्जत महसूस करते थे। जब कोई अच्छा सलूक हम करते जिसे वे सभ्य-सुशील मानते तभी उनकी मित्रता फूट पड़ती।

प्रश्न : लन्दन वापस जाने में आपकी क्या दिलचस्पी थी ?

उत्तर : मैं कोई सफाई देना नहीं चाहता था। स्थितियों पर अच्छी तरह काबू पाने की तैयारी में था। मैं उन्हें बताना चाहता था कि मुझे जो कयास हुआ वह उनका सौभाग्य ही था। हमारी योजना में जो संशोधन उन्होंने किया। मूल विचारों को तो नहीं बिगाड़ा था लेकिन उसका रूप बदल गया जिसकी वजह से नेहरू नाराज़ हुए, कुछ आपत्तियां उभर आईं जो हर हालत में होतीं। जिस तेज़ी से हम काम कर रहे थे, उसकी वजह बताने के बाद मैंने कहा, 'अभी सब कुछ निर्माण की हालत में है, मुझे विश्वास है यह योजना सफल रहेगी।'

मैंने बराबर कहा, "यह उनका सौभाग्य था। मैंने कोई याचना नहीं की। यही कहा कि रफ्तार बनाए रखनी होगी···हालात मेरे काबू में थे। पूरी कैबिनेट चुपचाप सुनती रही, किसी ने चूं भी नहीं किया।

—कैबिनेट पर मेरी पकड़ उतनी ही मजबूत थी जितनी भारतीय नेताओं पर। गर्व नहीं, लेकिन अपने में आशायुक्त विश्वास था कि सब-कुछ अब मुझ पर ही निर्भर है, जैसा मैं कहूंगा उन्हें करना होगा।

अतः मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने मन ही मन कहा, जो कुछ हुआ अंग्रेज सरकार का सौभाग्य था। एक ऐसा काम मुझे सौंपा गया था, जिसे वे नामुमकिन समझते थे। मेरी बात मानने के अलावा उनके पास कोई रास्ता नहीं था। लार्ड इस्मे ने मुझसे कहा था 'वे गुस्से से बौखलाए हुए हैं। आपको मालूम नहीं आप क्या कर रहे हैं, मुझे पता नहीं, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं··· आपने मुझे अन्दाज़ भिड़ाते रहने के लिए छोड़ दिया है—यह काम तुम्हारे लिए

.CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काफी मुश्किल होगा।' वह बड़े गुस्से में थे।

'मैं परेशान नहीं हूं पग···जो कुछ हुआ, यह इनका सौभाग्य ही था' कहकर मैं अन्दर चला गया। बाद में उन्होंने बताया, 'लेकिन आपने जो जादू फेरा है इन लोगों पर वह भारत में हुए करिश्मे से ज़्यादा अजूबा है'···मेरा मतलब वे लोग हक्के-बक्के रह गए थे।

प्रश्न : एटली क्या खास व्यक्ति थे ?

उत्तर : एटली और स्टेफोर्ड क्रिप्स। चूंकि एक बार वह भारत हो आए थे इसलिए हमेशा एटली के साथ रहते थे।

प्रश्न : लन्दन में आप चर्चिल से भी मिले ?

उत्तर : जी हां, मैंने आपको 'टाइम्स' की कटिंग दिखाई थी न जिसमें उन्होंने मेरी प्रशंसा की थी। उसमें उन्होंने सरकार की उस सूक्ष्म दृष्टि को बधाई दी थी कि मेरे जैसा काबिल आदमी इस काम के लिए रखा गया। उन्होंने कुछ कहा था आपको याद होगा, मैं चाहता हूं उसे बता दिया जाए।'

चर्चिल की सहमति के लिए माउंटबैटन उनसे मिले

प्रश्न : उस सुबह वह अपने बिस्तर में थे ? वहीं काम करना पसंद करते थे ?

उत्तर : जी हां, हमेशा की तरह, हर सुबह।

प्रश्न : किस जगह थे वह ?

उत्तर : हाइड पार्क गार्डेन में। रुई भरा ड्रेसिंग गाउन पहनकर वह बिस्तर पर आराम से अधलेटे एक बड़ा-सा सिगार पी रहे थे, उनका चश्मा नाक पर खिसक आया था।···

जो हो रहा था उससे सहमत नहीं थे वह। उन्हें लग रहा था, अंग्रेजों के कुशल प्रशासन की जगह सत्ता अनाड़ियों के हाथ चली गई, इसमें भारत की भलाई के लिए अंग्रेजों का कुशल प्रशासन जरूरी था। वह ईमानदारी से विश्वास करते थे कि भारतीयों की भलाई इसी में है।

मुझे मालूम था बाद में स्थिति असमर्थ और असुरक्षित हो जाएगी। उन्हें हमेशा के लिए इन्तज़ार में नहीं रखा जा सकता था। मैं तो चर्चिल की शुभ-कामनाएं चाहता था···

प्रश्न : लिस्टावेल[1] के अनुसार चर्चिल को सदन में विभाजन के खिलाफ बोलने से रोकना ही आपकी सबसे बड़ी सफलता थी जिसका अन्दाज़ा नहीं लगाया गया था ?

उत्तर : बात सही है, पर मैं नहीं कहूंगा।

प्रश्न : क्या एटली ने यह कहा कि चर्चिल को कोई राजी नहीं कर सकता लेकिन आप कर सकते हैं।

उत्तर : उन्होंने कहा, 'न तो मैं और न मेरी सरकार चर्चिल को राजी कर

---

1. लिस्टावेल के अर्ल, भारत के लिए ब्रिटेन के आखिरी राज्य सचिव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पाई है, वह तुम्हें चाहते हैं, तुम पर यकीन करते हैं, सिर्फ तुम्हीं उन्हें राजी कर सकते हो। और मैंने कर लिया था।'

प्रश्न : लिस्टावेल के अनुसार चर्चिल स्वतंत्रता-बिल का विरोध कर उसे दो साल तक टाले रह सकते थे।

उत्तर : फिर तो सारा कुछ तबाह हो जाता। मैं अन्तरिम सरकार को ज्यादा संभाल नहीं सकता था क्योंकि उसमें छः कांग्रेसी पांच मुस्लिम लीग और तीन अल्पसंख्यक—यानी कुल चौदह लोग थे। मतदान पर स्थिति हमेशा 5-9 की होती। लियाक़त अली खां जैसे मंत्री (कुशल वित्त मंत्री) भारत की अर्थ व्यवस्था ऐसे चला रहे थे कि आगे चलकर नुक़सान सिर्फ भावी भारतीयों को होता। मसलन, बड़े-बड़े व्यापारियों पर वह हमले कर रहे थे। कांग्रेस पार्टी यह बात नहीं होने दे सकती थी, क्योंकि उसे मोटी रक़म मिल रही थी उनसे—ज्यादातर काला धन। अगर लियाक़त अली खां का विधान पास हो जाता तो इससे व्यापारी वर्ग को बड़ी चोट पहुंचती। और ये कांग्रेस को अपना समर्थन बन्द कर देते।

यह तो सिर्फ एक मिसाल है। लगभग सभी काम इस तरह किए गए कि अपनी स्थिति तो मजबूत हो जाए लेकिन दूसरा कहीं का भी न रहे। इस तरह सभी आपस में झगड़ते रहते। 1939 तक इण्डियन सिविल सर्विस में निश्चित रूप से संसार के सबसे ज्यादा अक्लमंद लोग शामिल थे। कुछ भारतीयों को साथ लेकर उन्होंने इस देश को बहुत अच्छी तरह चलाया। मगर 1939 में इंग्लैण्ड में आई० सी० एस० की भरती बन्द हो गई। 1947 तक कोई नयी नियुक्ति नहीं हुई और आठ साल तक नई नियुक्तियां बन्द करके शासन जारी तो नहीं रखा जा सकता। भारतीय पुलिस के लिए भी अंग्रेज भर्ती करने बन्द कर दिए गए थे। अनिश्चित काल तक हम भारत पर हुकूमत नहीं कर सकते थे। मैं लिनलिथगो की तरह सारे नेताओं को दुबारा जेल नहीं भेज सकता था। अपने अपर्याप्त साधनों के द्वारा मैं धारा 93 के अन्तर्गत पूरे भारत पर शासन नहीं कर सकता था। सब कुछ टूट रहा था। हां, मंत्रालय के लिए मैंने दो मंत्रियों की व्यवस्था की—एक भावी भारत और एक भावी पाकिस्तान के लिए। दोनों व्यक्तियों को विधान की देख-रेख करते हुए अपने देश चलाने थे। क्योंकि सब कुछ बिखरता जा रहा था क्योंकि छाया-मंत्री असली मंत्री के काम में अड़चन डाल रहा था। अगर एक आफिस में एक को विशेषाधिकार दे दिया जाए तो प्रशासन का काम नहीं हो सकता।

विंस्टन के पास जाना मेरा सबसे महत्वपूर्ण मिशन था। आप जिन्ना की हां-ना की बात करते हैं। विंस्टन का 'ना' तो एकदम घातक होता। ताश का महल, जो भरभराकर गिर पड़ता। एटली ने कहा, 'डिकी···जिन्ना के पास भारत की कुंजी होगी, मगर यहां की कुंजी विंस्टन के पास है।' हम जानते थे, दोनों सदनों (हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स, हाउस ऑफ़ कॉमन्स) में विंस्टन का बहुमत है और ऐसा होता तो अन्तरिम सरकार तितर-बितर हो जाती। **धारा 93 पर वह मुझे अमल करने को विवश करते और मेरे पास साधन नहीं थे। लोग हमसे नफ़रत**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते, धक्के खाने पड़ते, मैं इतना बता दूं कि विंस्टन इसके लिए तैयार थे, उनके अन्दर कोई संवेदना नहीं थी।

अपनी मिलनसारी की दाद अगर मैंने कभी दी तो वह समय यही था।

प्रश्न : लिस्टोवेल यह दावा करते हैं कि सत्ता के हस्तांतरण की प्रस्तावित तारीख उन्हें प्रेस से मालूम हुई। 4 जून को यह सूचना क्या उनके लिए नई खबर थी ?

उत्तर : उन्हें ही नहीं, औरों को भी, खुद मुझे भी यही लगा।

प्रश्न : आपको संभावित नाटक की जानकारी थी ?

उत्तर : मैं जानता था संसद में गर्मी की छुट्टियां होने वाली हैं। मैं शरारत पर उतर आया। मेरा दिमाग बहुत तेज भागता है। जब यह सवाल मेरे सामने आया तब मुझे लगा अपने स्टाफ़ से बातचीत करनी चाहिए। मैं और चुप नहीं रह सकता था। अगर गर्मी की छुट्टियों से पहले यह न होता तो हमें अक्टूबर तक रुकना पड़ता। इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई और इससे मुझको मदद मिली। काम बन गया। अगर छः हफ्ते से दो महीने के भीतर यह नहीं हो जाता तो खत्म ही हो गया था। यह कोई नहीं समझता था। मुझे इस बात का अफ़सोस नहीं। मेरे स्टाफ़ के लोग दंग रह गए। और प्रेस स्तब्ध। 'ह्वाइट हाल' दुविधा में भी आ गया था, लेकिन मैं अपनी जगह सही था।

सत्ता के हस्तांतरण की निकटतम तारीख

प्रश्न : लन्दन से रवाना होने से पहले एटली के साथ जो बातचीत हुई उसमें किस समय का ज़िक्र है ?

उत्तर : उन्होंने पूरा काम मुझ पर छोड़ दिया था। **उन्होंने कहा, 'जब तुमने विंस्टन को मना लिया है। हम अपना काम शुरू कर सकते हैं किसी भी विधान की रफ्तार उससे जुड़े महत्व पर निर्भर करती है।** अगर उसे प्राथमिकता दी जाती है तो आप कुछ भी कर सकते हैं बशर्ते विपक्ष आपको सहयोग देने के लिए राज़ी हो जाए। लेकिन अगर विपक्ष ही विरोध करे तो आप कुछ नहीं कर सकते। मेरे सामने खतरा यह नहीं था कि संसद इजाजत नहीं देगी बल्कि यह था कि विंस्टन अनुमति नहीं देंगे, और यह बात एकदम अलग थी।

प्रश्न : लिस्टोवेल को यह डर था कि अगर चर्चिल को असली तारीख पता लग गई तो वह पीछे हट जाएंगे···

उत्तर : नहीं, विंस्टन ऐसे व्यक्ति नहीं थे। लिस्टोवेल ने उन्हें ग़लत समझा है। अगर वह मुझे वचन देते तो वापस नहीं जाते। मैंने अपनी जल्दबाजी के कारण उन्हें समझाए थे।

प्रश्न : चर्चिल ने जिन्ना के लिए जो सन्देश भेजा था वह कितना महत्त्वपूर्ण था ?

उत्तर : इससे जिन्ना का विश्वास डगमगा गया। इससे उनके पांव के नीचे की जमीन खिसक गई। यह भी एक कारण था उनके 'हां' करने का। भगवान की कृपा थी मुझपर कि उन्होंने 'हां' में सिर हिलाया। चर्चिल की चेतावनी ने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन्ना को यह समझ दिया कि मेरी बात मानने के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं है। यह बात वैसे भी उनके दिमाग में थी। इसलिए उन्होंने सोचा मुझे पकड़े रहने से उन्हें विंस्टन और कन्जर्वेटिव पार्टी का समर्थन मिल जाएगा।

प्रश्न : आप चिंतित या नाराज़ थे ?

उत्तर : अपने भाव मैंने जाहिर नहीं किए। मैं शान्त स्वभाव का आदमी हूं। किसी को नौकरी से निकालते समय भी मैंने बड़ी नर्मी से काम लिया है। मैं नाटकबाजी में विश्वास नहीं करता। जरूरत पड़े तो मुखौटा लगा सकता हूं। मगर जिन्ना के साथ यह नहीं चल सकता था। मुझे गुस्से से आग-बबूला देखकर उन्हें सन्तोष मिलता और यह मौक़ा मैं उन्हें नहीं देना चाहता था।

प्रश्न : 3 जून की योजना पर सबने या किसी एक भारतीय नेता ने 'ना' कर दिया होता तब आप क्या करते ?

उत्तर : मैं उस योजना को असफल होने नहीं दे सकता था।

अगर जिन्ना इनकार करते तो मैं उन्हें दबाता, बेवक़ूफ साबित करता। जहां तक गांधी का सवाल है मैं वाक़ई चिन्तित था। जिन्ना मुश्किल पैदा कर सकते थे लेकिन गांधी की बात और थी। वह किसी भी मूल्य पर आज़ादी और भारत की एकता चाहते थे। उन्हें इस सच का सामना करना पड़ रहा था कि देश की एकता परतंत्र रहकर ही सम्भव थी, आज़ादी की क़ीमत थी बंटवारा।

भारत के विभाजन की योजना : गांधी के विरोध का डर

यह बात उन्हें पागल बनाए दे रही थी। मैं नहीं समझता कि वह आज़ादी का बलिदान करके अंग्रेजों की मातहत एकता क़ायम रखने के पक्ष में होते। वह अंग्रेजों के बिना किसी भी रूप में एकता चाहते थे और इसीलिए मैं उनकी प्रतिक्रिया का अन्दाज़ा नहीं लगा पा रहा था।

प्रश्न : दुबारा बने हुए मसविदे को लेकर भारत लौटते वक्त आपका मिज़ाज कैसा था ?

उत्तर : काफ़ी आशावादी था लेकिन डर भी था कि कहीं गांधी मेरे खिलाफ़ न हो जाएं। जब मैं करांची पहुंचा तो मूडी[1] मुझसे मिलने आए, बोले, 'हमें आगाह किया गया है कि गांधी आपका विरोध करेंगे।'

इसके बाद एक चमत्कारी बात हुई। गांधी आए और उन्होंने इशारे से कहा, 'यह उनका मौन-दिवस है।' मैं जानता हूं ऐसा उन्होंने मित्रतावश किया था क्योंकि उनके मौन रहने का दिन वह नहीं था।···वे अपने साथ लगभग आधा दर्जन लिफ़ाफे इस्तेमाल किए हुए लाए थे जो मेरे साथ अब भी ब्रॉडलैंड्स में पड़े हुए हैं। एक गंदी-सी टूटी हुई पेंसिल का टुकड़ा उनके हाथ में था जिसकी नोक भी ठीक नहीं बनी थी। उन्होंने लिफ़ाफों के पीछे ढेर सारे बेतुके तर्क लिखे और मुझे बातचीत का मौक़ा दिया। अगर वह गांधी का मौन-दिवस न होता तो पता नहीं उस दिन क्या हो जाता। मित्रता का यह प्रदर्शन मेरे लिए एक उपहार था।

---

1. सर रॉबर्ट फ्रांसिस मूडी, 1946-47 तक सिंध के गवर्नर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न : उनके आने से पहले आपका मिज़ाज कैसा था ?

उत्तर : ज़्यादा परेशान नहीं था। मुझे यकीन था मैं उन्हें मना लूंगा। उनके मूड के बारे में पता नहीं चलता था। मगर वह सबके हितैषी थे।···अपने लिए नहीं, मैं दूसरों के लिए आशंकित था। भारत वापस लौटने पर मैं कैबिनेट के लिए आशंकित था। मैं मूडी या डरपोक नहीं हूं। मेरे अन्दर दृढ़ विश्वास है।

प्रश्न : जब गांधी ने होंठों पर उंगली रखकर मौन-दिवस का ऐलान किया तो आपको कुछ राहत मिली ?

उत्तर : मैं समझ गया कि काम मेरे लिए आसान हो गया है, मन ही मन मैं खुदा का शुक्रगुज़ार हुआ। मेरे साथ एक बात है, मैं पहले से ज़्यादा सोच-विचार कर नहीं बैठता। मैं एकत्रीकरण में विश्वास करता हूं। लोगों से उनकी प्रतिक्रियाएं बटोरता हूं। जिन्ना के साथ भी मेरा वार्तालाप कभी 'स्वगतकथन' नहीं रहा जो इतना कम बोलते थे। जो लोग मुझसे बात करने आते हैं, उन्हें मालूम है मैं उनकी पूरी बात बड़े ध्यान से सुनूंगा, उनसे विमर्श करूंगा। मैंने कभी किसी को अपनी बात सुनने के लिए नहीं बुलाया। गांधी के साथ भी यही बात थी, और उन्हें यह अच्छी लगती थी।

प्रश्न : वह आपके पास सहज रूप से आए ?

उत्तर : मुझे तो यही लगा। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की। यह योजना भारतीयों के सामने एक विकल्प रखती थी। संविधान-सभाएं बारी-बारी अपने वोट डालतीं कि वे भारत को एक रखना चाहती हैं या विभाजित करना। यदि विभाजन चाहती हैं तो सूबों का भी बंटवारा चाहती हैं या नहीं ? इस बात से गांधी काफी संतुष्ट हुए।

मतदान की बात वह जानते थे लेकिन यह नहीं जानते थे कि विकल्प चुनने का मौका दिया जाएगा। इसलिए मैंने इस योजना को गांधी योजना कहा। वह बोले, 'आपको वही करना चाहिए जो भारतवासी चाहते हैं।'

उनके साथ मुझे कभी परेशानी नहीं हुई। वह मुझे चाहते थे, मेरे लिए एक खास स्नेह था उनके मन में। बाद में तो सभी का रवैया वैसा हो गया—बूढ़े पटेल का भी। जून, 1948 में जब मैंने विदा ली तो वह रो पड़े थे।

मेरे साथ जज़बाती तौर पर जुड़े थे वह। मैं भी उनके साथ बंधा था, लेकिन यह बंधन और भी कई लोगों में बंटा था। असाधारण बात तो यह थी कि उनका सारा स्नेह मेरे, मेरी पत्नी और मेरी बेटी पर केन्द्रित था।

मैं आपको समझा नहीं सकता। उस अजीब जज़बात को फिर से पकड़ नहीं सकता। जून, 1948 में विदा के समय हम समारोही सवारी में जा रहे थे। एक घोड़ा अड़ गया। हमें रुककर घोड़ा बदलना पड़ा। हमारे पीछे-पीछे जो भीड़ आ रही थी, एकसाथ बोल उठी, 'देखिए घोड़ा भी आपको विदा करना नहीं चाहता। भगवान की यही इच्छा है। आप यहीं रुक जाइए !'

प्रश्न : अगर गांधी ने 'न' कहा होता तो परिणाम क्या होते ?

उत्तर : तब उन्हें गांधी से अलग होना पड़ता। वह शायद कर भी देते लेकिन मैं अड़ा हुआ था कि ऐसा नहीं होने पाएगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जासूस कहना गलत होगा, लेकिन कृष्ण मेनन और वी० पी० मेनन मेरे सम्पर्क-सूत्र थे। इसलिए कांग्रेस के भंग हो जाने की आशंका मुझे हो गई थी। मैंने इसकी गुंजाइश नहीं रखी। अगर मेरे वे सम्पर्क-सूत्र न होते तो मुझे समय रहते पता नहीं लगता। तब मुश्किल हो जाती।

और गांधी ऐसा कर भी सकते थे। फर्क इतना था कि **मुझसे पहले समझौते की बातचीत करने आए लोगों ने सोचा था कि गांधी को ही समझाना-बुझाना होगा। मैं इस नतीजे पर पहुंचा, कि सारे नेता उनके विरुद्ध और मेरे साथ हैं। बात दिलचस्प थी और उसी ने उनसे बातचीत करने की ताक़त मुझको दी।**

प्रश्न : जब कृष्ण मेनन ने बताया कि अपनी प्रार्थना-सभा में गांधी आपकी योजना की भर्त्सना करेंगे तो ज़रूरी कार्रवाई करने की बात आपको सूझी थी ?

उत्तर : जी हां, मैंने कहलवाया कि प्रार्थना-सभा के पहले वह मुझसे आकर मिल लें। मुझे मालूम था कि इतने से वह समझ जाएंगे कि वह क्या करने जा रहे हैं इसका पता मुझको मिल चुका है। वह मुझे निराश नहीं कर सकते थे। यह विश्वासघात होता, मित्रता का अभाव होता। और वह ऐसा नहीं कर सकते थे। उन्हें आना पड़ा।

प्रश्न : आपने उन्हें कैसे बुलवाया ?

उत्तर : मैं हमेशा एक अफसर भेजा करता था। वाइसराय सिर्फ शक्तिशाली ही नहीं होता, उसके हुक्म की फौरन तामील होती है, सारे काम रोककर।

मेरा निमंत्रण पाकर न आने की बात गांधी कभी सोच भी नहीं सकते थे। प्रार्थना-सभा में वह मुझको चाहे जितना बुरा-भला कहते लेकिन मेरे बुलाने पर आते ज़रूर।

मैं वापस नौसेना में जाना चाहता था। सब लोग जब यही कहते रहें कि आप महान हैं, अद्भुत हैं···लेकिन जब दुबारा धरती पर उतरना पड़ता है तो यह बुरा है।

मुझे मालूम था कि 'मौन-दिवस' वाली बहस से गांधी खुश नहीं थे। वह आए लेकिन उदास-गुपचुप। हाथ उठाकर उन्होंने कहा, 'कितना भयंकर है।' क्या वह अपनी प्रार्थना-सभा में शायद यही कहने जा रहे थे कि वे हालात पर कितने दुखी हैं ?

मैंने उनको सुझाया कि लोगों से कह दें कि यह 'गांधी योजना' है। वह आश्चर्यचकित हो गए। मैंने कहा, 'आप ही तो चाहते थे कि लोग अपना चुनाव खुद करें। आपको बताना यह है कि यह योजना अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा यह निश्चय करने का अधिकार दे रही है कि वह क्या चाहते हैं।' इस तरह थोड़ा-थोड़ा करके हमने आपस में सब-कुछ समझ-समझा लिया।

प्रश्न : इसका मतलब जब वह लौटे तो माहौल स्वीकारात्मक था ?

उत्तर : मैं जानता था वह मुझे निराश नहीं करेंगे। मैंने उन्हें फिर बताया, आखीर उनकी तरह भारत को एक रखने की कोशिश मैं भी कर रहा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अगर किसी तरह संविधान-सभाएं एकीकरण की बात चुनतीं तो हम जो चाहते हैं वही होगा। मैंने इशारा कर दिया कि 'अगर वे लोग नहीं मानते तो आप यह तो नहीं चाहेंगे कि उनका विरोध करने के लिए हम बन्दूकें उठाएं।' वह समझ गए।

प्रश्न : अप्रैल 29 के अखबारों ने अस्पृश्यता को अन्त करने का जिक्र किया था।

उत्तर : जी हां, लेकिन हिन्दू ऐसा नहीं चाहते थे। असली हिन्दू छुआछूत से खुश थे। इससे उनका महत्त्व बनता था। उनकी संख्या तब लगभग 600 लाख थी। अगर किसी हिन्दू के खाने पर किसी अछूत की परछाईं भी पड़ जाती तो वह उसे फेंक देता। असाधारण बात थी।

वे नहीं चाहते थे और अभी भी अस्पृश्यता नहीं गई। जगजीवनराम जैसे व्यक्ति अब रक्षामंत्री हैं, छुआछूत का अन्त करने के लिए उन्हें 25 वर्ष मिले थे। लेकिन वह अभी भी नहीं गई।

प्रश्न : सर सिरिल रैडक्लिफ़ नाम के एक अंग्रेज़ जज को विभाजन रेखा खींचने की जिम्मेदारी दी गई। क्या आपको विश्वास था कि 10 अगस्त से पहले वह अपना काम कर लेंगे ?

उत्तर : नहीं, मेरा खयाल था कि 13-14 अगस्त तक मुझे काम पूरा करके दे देंगे। लेकिन जब 10 अगस्त तक काम खत्म होता नजर नहीं आया तब मैं समझ गया कि जो कुछ रैडक्लिफ़ कर रहे थे उसका विरोध दोनों ओर से जमकर होगा। और अगर यह विरोध स्वतंत्रता-दिवस पर होता तो सद्भावना की सारी आशाओं पर पानी फिर जाता। इसलिए मैंने सोचा, दोनों पक्षों को आज़ादी की खुशियां मना लेने दिया जाए, बाद में जो दुर्दशा होगी देखी जाएगी। 15 अगस्त के दिन ऐसा नहीं होना चाहिए। अगर पांच दिन या हफ्ता-भर पहले कुछ हो जाता तो बेहतर था, एक-दो दिन में कोई फर्क नहीं पड़ता।

रैडक्लिफ़ की सीमारेखाएं

प्रश्न : क्या सही परिनिर्णय के लिए उन्होंने आपसे एक-दो साल का समय मांगा था ?

उत्तर : मांगा था। लेकिन ज़्यादा समय नहीं दे सकता था। 10 अगस्त मैंने उनके लिए तय कर दिया था।

जब भारतीय नेताओं ने वाइसराय काउंसिल चेम्बर्स में परिनिर्णय परीक्षा-पत्र की तरह पढ़ना शुरू किया तो दोनों पक्षों से रोष की आवाज़ें बराबर आ रही थीं। मैंने राहत की सांस ली। **रैडक्लिफ़ ने जो उन्हें दिया था, उसके लिए आभारी कोई नहीं था, जो उन्होंने नहीं दिया था उसके लिए लोग उनसे नफ़रत करने लगे थे।**

अब जो बात मैं आपको बताऊंगा वह भयंकर है। रैडक्लिफ़ के परिनिर्णय के पीछे कोई गहरा कारण नहीं था। मुझे यकीन है कि वह जनसंख्या के अनुपात के किसी मोटे नियम पर आधारित था। यह बात शायद उनके दिमाग में आई ही नहीं कि भविष्य में कश्मीर पर इसका वह प्रभाव हो सकता है—जो बाद में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हुआ।

...उनके साथ हुए पहले विमर्श में मैंने कहा था, 'सब कुछ मैं आप पर छोड़ रहा हूं और आशा करता हूं कि रेखा के दोनों ओर सही आबादी पहुंचेगी। यह हो सकता है कि थोड़े लोग रेखा के ठीक तरफ हों लेकिन अगर आपकी रेखा ही असम्भव होगी तब परेशानियां तो होंगी—हमें वह बेहतर सीमा-रेखा चाहिए जो जनसंख्या को तहस-नहस न करे।'

प्रश्न : जनरल हबीबुल्ला ने भारतीय अफसरों से विरोध करवाने की जो कोशिश की थी, आप उस विषय में कुछ कहेंगे ?

उत्तर : यह घोषणा के बाद की बात है। तब तक काफी देर हो चुकी थी। विभाजन की घोषणा से पहले अगर वे लोग ऑकिनलेक से मिलते तब कुछ किए जाने की आशा थी। लेकिन अब तो पांसा फिंक चुका था। आर्मी किसी भी तरह से राजनीतिक नेताओं के साथ जोर-जबर्दस्ती नहीं कर सकती थी। उन्हें सिर्फ जिन्ना के साथ बल का प्रयोग करना पड़ता। अगर सारे मुसलमान अफ़सर जाकर जिन्ना से बात करते तो शायद कुछ प्रभाव पड़ता, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

भारतीय सैनिक अफसरों का विभाजन-विरोध-प्रयास

जिन्ना ने जिस बात का ग़लत अन्दाजा लगाया था वह यह कि मैं भारत को हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में बांट दूंगा। **मैं नहीं जानता था कि भारतीय मुझसे कहना चाहते थे कि इण्डिया को जारी रखा जाए पहले की सारी चीजों की विरासत के साथ और पाकिस्तान को बाहर कर दिया जाए। जब जिन्ना को यह पता चला कि वे अपने देश को इण्डिया ही कहेंगे तब वह आगबबूला हो गए।**...मेनन का यह सुझाव कि भारत को पूरी विरासत मिले, पाकिस्तान को नागवार गुज़रा। जिन्ना किसी भी तरह इसे बदल नहीं सकते थे। इसकी वजह से लोग सोचने लगे कि पाकिस्तान न अपना अस्तित्व बना पाएगा, न जीवित रह सकेगा।

भारत भारत ही रहा

प्रश्न : आप संयुक्त बंगाल के पक्ष में थे ? क्या आपने सोचा था कि विभाजन दो की जगह तीन हिस्सों में होता तो बेहतर था ?

उत्तर : जी हां, एक हल हो सकता था जो बांगला देश के रूप में हमारे सामने अब है। दरअसल, गड़बड़ यह हुई कि मैंने यह समझ लिया था कि भारत कलकत्ता को नहीं जाने देगा। बंगाल के गवर्नर फ्रेड बरोज अपना पूरा सहयोग देते, यह बात मुझे बाद में मालूम हुई। वरना यह ठीक ही होता, इसमें दोनों करीब आ जाते। लेकिन भारत ने यह बात नहीं मानी क्योंकि इसमें केन्द्र कमज़ोर होता। अगर ऐसा हुआ होता तो पाकिस्तान सिर्फ पूर्व पाकिस्तान होता। मैं इससे सहमत था। ऐसा क्यों नहीं हुआ इसके लिए आपको रिकार्ड देखना होगा।

विभाजन : तीन हिस्सों में

मैं अब भी सोचता हूं कि वह विचार काफी अच्छा था। मैं जानता हूं वे लोग सहमत क्यों नहीं थे। मैं देश के टुकड़े-टुकड़े करना नहीं चाहता था। मैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी विखण्डन नहीं चाहता था, इसलिए जो बन पड़ा मैंने किया। बंगाल की जनसंख्या तब 600 लाख थी, लगभग ब्रिटेन जितनी। बाकी राज्यों में कुछ लाख लोग थे। वह राष्ट्र नहीं बन सकते थे जैसे बंगाल बन सकता था। अगर विभाजन पूरे बंगाल को समेटते हुए हुआ होता तो वह भी ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में रह सकता था।

लेकिन मुझे इसके खतरे नज़र आ गए थे। इसलिए जब कांग्रेस ने 'ना' किया तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। बांगला देश का जो हश्र बाद में हुआ उसे देखकर मुझे लगा कि दोनों को साथ रखने की बात मैंने कितनी सही सोची थी।

प्रश्न : क्या यह कहना उचित होगा कि स्वतंत्र बंगाल के निर्माण को कांग्रेस ने वीटो किया था।

उत्तर : शायद, उचित होगा।

प्रश्न : ऐसी ही एक स्थिति उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त में जन्मी थी जब कांग्रेस को मत पर स्वतंत्र विकल्प चाहिए था।

उत्तर : उसपर मैंने अपना विशेषाधिकार (वीटो) कर दिया था क्योंकि भौगोलिक रूप से वह इलाक़ा छोटा था। वहां की जनसंख्या कुल 50 लाख थी।

प्रश्न : कराची के लिए रवाना होने से 13, 14, 15, अगस्त तक क्या हुआ यह आप बताएंगे ?

उत्तर : लेडी लुई के एक मेमो में लिखा था, 'पाकिस्तान की उन्नति की कामना करने मैं और मेरे पति 13 तारीख की दोपहर कराची के लिए रवाना हुए।'

पाकिस्तान में बदला-बदली का दिन

हवाई अड्डे से जब हम शहर की ओर चले तो बड़ी भीड़ इकट्ठी नजर आई। ये लोग जिन्ना के लिए नहीं बल्कि हमारे लिए आए थे। हम पाकिस्तान में बहुत लोकप्रिय थे। बाद में राजनीतिज्ञों ने हमारे विषय में जो कुछ कहा उससे वह हमारे खिलाफ़ हुए, ···स्वतंत्रता दिवस की धूमधाम से जब हम वापस आ रहे थे, भीड़ उतनी ही जोर से 'माउंटबैटन जिंदाबाद' के नारे लगा रही थी, जितनी उत्तेजना से 'जिन्ना जिन्दाबाद' चिल्ला रही थी। मेरी पत्नी मेरे पीछे बैठी थी। सारे रास्ते मैं देख रहा था कि कौन बम फेंकनेवाला है। **सी० आई० डी० ने मुझे चेतावनी दे दी थी कि इस परेड में जिन्ना को मार डालने की कोशिश की जाएगी।** हम एक खुली रौल्स रॉयस कार में धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। जब हम पहुंच गए तब जिन्ना के चेहरे का सारा तनाव खत्म हो गया और पहली बार भावुक हो गए। मेरे घुटने पर हाथ रखते हुए बोले, 'खुदा का शुक्र है कि मैं आपको वापस ले आया।'

'आप मुझे लाए ? खुदा का शुक्र है कि मैं आपको जीवित लाया हूं।' मैंने कहा।

प्रश्न : सुरक्षा अधिकारियों के अलावा क्या आपने विशेष सावधानी बरती थी ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर : बंगाल के गवर्नर के सेना-सचिव को उस बम को पकड़कर वापस फेंकने के लिए जॉर्ज मेडल मिला था। एक क्रिकेट-खिलाड़ी की हैसियत से मैं कभी अच्छी 'कैचें' नहीं ले पाया था।

प्रश्न : क्या रास्ते में कोई अजीबोग़रीब हरकत दिखाई पड़ी आपको ?

उत्तर : नहीं, हम दोनों ने देखने की कोशिश ज़रूर की लेकिन दिखाई कुछ भी नहीं पड़ा। तनाव काफ़ी हो गया था लेकिन वापस लौटने पर ख़त्म हो गया। जिन्ना भावुक हो उठे थे, कितना करुण था वह दृश्य !

प्रश्न : परेड के दौरान वह तनाव की स्थिति में थे ?

उत्तर : तनाव की स्थिति में तो वह सारी जिन्दगी थे। वह शरारती और बहुत चुप्पे थे।

प्रश्न : क्या यह आपको ज़िंदगी की सबसे लम्बी सवारी-यात्रा लगी थी ?

उत्तर : यक़ीनन। याद रखिए कि हमें मुसकराकर सबका अभिवादन करना था। वह मेरा हौसला था कि 'बहुत अच्छा दिन है, बम फेंको और छुट्टी करो'...

प्रश्न : सवारी-यात्रा में कितना समय लगा ?

उत्तर : समझ लीजिए चौबीस घण्टे।

प्रश्न : पहले मना करने के बाद भी जिन्ना ने महाभोज पर भाषण दिया ?

उत्तर : ऐसा उन्होंने जान-बूझकर किया शायद। उन्होंने पक्का आश्वासन दिया था कोई भाषण नहीं होंगे। शायद वह खास-खास बातें अपने भाषण में कहना चाहते थे। लेकिन वह नहीं जानते थे कि मैं बिना तैयारी के भाषण देने में माहिर हूं।

प्रश्न : पाकिस्तान के निर्माण में आपकी प्रशंसा में व्यंग्य था ?

उत्तर : बिल्कुल। और बाद में वे लोग मुझको गालियां देते रहे। एक और बात। उन्होंने सम्राट का जामे सेहत उठाया था। ऐसा उन्होंने आखिरी बार किया था शायद—पूरे वक्त उनका आचरण बिल्कुल दुरुस्त था।

वह कभी झुकते नहीं थे। लेकिन भयंकर तनाव में ढील आते ही वह मानवीय हो उठे—यहां तक कि उन्होंने मेरे घुटने पर अपना हाथ रख दिया। फिर उनको शायद अफ़सोस हुआ कि ज़रा देर के लिए ही सही, मानवीय कैसे हो गए ? उसके बाद वह फिर अपनी खोल में वापस घुस गए। वह अच्छे, बुद्धिमान और महान इन्सान बन सकते थे, एक अच्छे दोस्त भी, लेकिन ...

प्रश्न : परेड के बाद जिन्ना के साथ इस तरह का पहला सम्पर्क था ?

उत्तर : जी हां, उनका मुखौटा खिसक गया था। वह उसे रख नहीं सके थे। आप कल्पना कर सकते हैं—वह मार नहीं डाले गए थे—कितना बड़ा एडवेंचर था।

प्रश्न : और उनकी बहन फ़ातिमा ?

उत्तर : मेरी पत्नी से उनकी बातचीत काफ़ी थी। बाद में तो वह उससे काफ़ी घुल-मिल गई थीं।

अपनी पत्नी से मुझको बहुत मदद मिली। उनके आकर्षण और मिलनसार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वभाव के कारण। ज़्यादा मदद की मेरी सत्रह वर्षीया बेटी ने। वह शर्मीले स्वभाव की थी लेकिन हमउम्र लोगों में जल्दी घुलमिल जाती थी।

फ़ातिमा को मेरी पत्नी ने पिघला दिया था। जब हम वहां से चलने लगे तो वह बड़े स्नेह से उसके गले मिलीं। हमारे चले जाने के बाद वह फिर बर्फ़ की तरह जम गए।

प्रश्न : गवर्नमेण्ट हाउस में जिन्ना की मेज़बानी कैसी थी ?

उत्तर : सीधी सादी, लेकिन उम्दा।

प्रश्न : 15 अगस्त के समारोह के लिए आपके पास पहले की कोई मिसाल तो थी नहीं, फिर उसकी व्यवस्था किसने की ?

15 अगस्त स्वतंत्रता के लिए अशुभ

उत्तर : मैंने नेहरू से बात की थी। 15 अगस्त का दिन चुन तो लिया था मगर किसी ज्योतिषी से नहीं पूछा था। आप जानते हैं भारतीय ज्योतिष पर बहुत विश्वास रखते हैं। अशुभ दिन कोई काम नहीं किया जा सकता। नेहरू खुद तो विश्वास नहीं करते थे, पर दूसरे लोग करते थे। वह बोले, 'लोग कहते हैं यह दिन अशुभ है। लेकिन चिंता मत कीजिए। अगर आप आधी रात को अधिवेशन करने को राजी हैं तो बारह का घण्टा बजना शुरू होगा तो हम सत्ता सौंपने का काम कर सकते हैं।' मैंने सोचा, 'कितने कमाल का नाटकीय विचार है—आधी रात को मीटिंग करना जब सारी दुनिया सो रही होगी।' आपको याद होगा, यही किया गया नाटकीयता के लिए नहीं; इसलिए कि मैंने गलत दिन चुना था। क्योंकि ज्योतिषियों ने कहा था कि वह दिन अशुभ है।

कई भारतीय गवर्नरों ने मुझको संदेश भेजा, 'मुझको अमुक जगह का गवर्नर बनना मंजूर है लेकिन मेरा ज्योतिषी इस तारीख को निकलने नहीं दे रहा।'

'ठीक है, आप लोग किसी भी दिन रवाना होइए। आप किस होटल में ठहरेंगे 15 अगस्त तक ?'

प्रश्न : क्या आपके पास कोई सरकारी ज्योतिषी था ?

उत्तर : नहीं, यह तो कोई भी ज्योतिषी बता सकता है। भारत में तो यह एक व्यवसाय है। वैसे अंग्रेज़ भी इस तरह की बातों में विश्वास करते हैं। राशि, भविष्य आदि···

इस तरह एक नाटकीय अर्धरात्रि अधिवेशन की शुरुआत हुई। मैं वाइसराय की हैसियत से अंतिम टेलिग्राम पर दस्तखत कर रहा था तो नेहरू आए जिन्हें मैंने प्रधान मंत्री चुना था, कांग्रेस के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद, जो वास्तव में एसेम्बली के भी अध्यक्ष थे, कमरे में आए। मैंने सिर्फ़ एक-दो फ़ोटोग्राफ़रों को आने की इजाज़त दे रखी थी।

अर्धरात्रि का समारोह

तब राजेंद्र ने मुझसे कहा, 'मैं आपको एसेम्बली की सर्वसम्मति से स्वतंत्र रूप से चुने गए भारत का राज्यप्रमुख बनने का आमंत्रण देता हूं।' देखा जाए, तो यह बड़े सम्मान की बात थी।

"यह मेरा सम्मान है। मैं एक अच्छे भारतीय की तरह पूरी कोशिश

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करूँगा।"

"आपने मुझे प्रधानमंत्री चुना है," नेहरू बोले, "यह मेरी कैबिनेट है..." कहते हुए उन्होंने एक लिफ़ाफ़ा मेरे हाथ में पकड़ा दिया जिसके अन्दर एक खाली कागज़ था। बाद में जब मैंने पूछा तो वह बोले, "इसके बारे में हमारी काफ़ी बातचीत हो चुकी है। क्या होना है इसका निर्णय भी हम पहले ही कर चुके हैं।"

वाइसराय भवन को अस्पताल बना देने का गांधी का अनुरोध

जब भारतीयों ने मुझको अपना गवर्नर-जनरल बनाने का फ़ैसला कर लिया तब गांधी आए और बोले, 'मैं बहुत खुश हूं कि कांग्रेस पार्टी ने आपको राजप्रमुख बनाने का फ़ैसला किया है। यह बड़ा साहसपूर्ण फ़ैसला है उनका। उनको समर्थन मिलेगा। मगर आपको सब के लिए एक मिसाल रखनी होगी। हमारा देश ग़रीब है। अंग्रेजों ने काफ़ी शानोशौक़त से राज्य किया। वाइसराय ने ऐसी चीज़ बनाई कि उसकी तरफ़ देखने की भी कोई जुर्रत भी नहीं करता। अगर आप राज्य-प्रमुख बनेंगे तो आपको विनीत होना होगा, अपने परिवार के साथ किसी छोटे घर में रहना होगा—मेरी तरह सुलभ बनना होगा।'

मैंने पूछा, 'और उस शानदार घर का क्या होगा जिसे बनाने में इतना पैसा खर्च हुआ है?'

'उसमें अस्पताल खोला जाएगा।'

'आप मेरी पत्नी से बात कर लीजिए। वह आपको समझा देंगी कि उस घर को अस्पताल में नही बदला जा सकता, क्योंकि इसे उस तरह बनाया ही नहीं गया।'

'तब उसका कोई और उपयोग ढूंढ़ना होगा। लेकिन आपको तो इसे छोड़ना ही होगा। इससे काफ़ी हल्के स्तर पर रहना होगा हम सब को।'

'अभी तो सत्ता का हस्तांतरण भी नहीं हुआ,' मैंने कहा, 'महीने-भर तक आप रह जाइए, फिर मुझसे, मिलिएगा तब बात करेंगे।'

एक महीने बाद जब दंगा-फ़साद, जनसंहार अपने ज़ोर पर था वह मुझसे फिर मिलने आए। तब वाइसराय हाउस को अपने हेड क्वार्टर की तरह इस्तेमाल कर रहा था। आपात्कालीन कमेटी की मीटिंगों के लिए मैंने 'वाइसराय एक्जेक्यूटिव कांउसिल चेम्बर' दे दिया था। लार्ड इस्मे का कमरा नक्शों का कमरा बना दिया गया था जैसा कि जंग के समय होता है। गांधी को जब यह सब दिखाया गया तब वह बोले, 'मुझे खुशी है कि आपने ईश्वर की आवाज़ सुनी, गांधी की नहीं।'

'अगर किसी की आवाज़ आपसे पहले सुनूंगा तो सिर्फ़ उसकी लेकिन किस तरह मैंने आपकी सलाह के खिलाफ़ ईश्वर की आवाज़ सुनी?'

'उसने आपसे गांधी की बात न सुनने को कहा होगा, जो मूर्ख है। यह नहीं छोड़ा जा सकता। यह तो भारत का हृदय है, यहीं से देश का शासन होगा। आपके सारे उत्तराधिकारी यहीं रहेंगे।'

'आपकी बात मैं दोहरा सकता हूं?'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'हां...

'स्टाफ़ तो कम नहीं हो सकेगा', मैंने कहा, 'क्योंकि इस महल की सफ़ाई एक आदमी के झाड़ू और बाल्टी से नहीं हो सकेगी—मेरा मतलब यहां आपको इसी स्तर पर रहना होगा। नौकरों को वही सुविधाएं मिलेंगी, उतनी ही तोपें होंगी···इसी तरह लोग आपको परख सकेंगे।' वे लोग उसके लिए तैयार हो गये।

वे सिर्फ़ इतना चाहते थे कि उन्हें बैठक या सोने के कमरे में न रहना पड़े। इस तरह के कमरे वह जनता के लिए इस्तेमाल करते थे और ख़ुद ऊपर के छोटे-छोटे कमरों में उठते-बैठते, सोते थे। वाइसराय हाउस का भी यही हाल हुआ।

प्रश्न : क्या आपको भारत की स्वतंत्रता के वास्तविक क्षण ठीक-ठीक याद हैं ?

उत्तर : मुझे मालूम था क्या हो रहा है···आधी रात के बारे में नेहरू ने और मैंने हल निकाल लिया था। आधी रात को जब सारी दुनिया सो रही है...याद है वह भाषण ?

उस दिन बहुत गर्मी थी। मैं एक सफ़ेद डिनर-जैकेट पहने हुए था। अपना सारा काम मैंने ख़त्म कर लिया था। अब मैं इस भ्रम में था कि गवर्नर-जनरल बनकर आराम से बैठूंगा, उन लोगों की सलाह पर काम करूंगा, जहां उन्हें शंका होगी उनके सवालों का जवाब दूंगा। **सत्ता को समर्पित करने के बाद स्थिति बदतर हो जाएगी इसका खयाल भी नहीं था मुझे** मैं तेज़ी से काम कर रहा था, भारत का माहौल भी असाधारण था। फिर भी दूसरों पर यह जताना तो होता है कि हम जल्दबाज़ी में नहीं हैं, जो भी मिलने आए उसके लिए सारा वक़्त हमारे पास है। मैंने कभी जल्दबाज़ी में बात नहीं की। अनौपचारिक बातचीत मैं पहले करता था ताकि वातावरण कामकाजी न लगे या किसी तरह का दबाव न हो। स्थिति मित्रतापूर्ण बनी रहे। इसका प्रभाव एकदम अलग पड़ा क्योंकि वे लोग कागजों, नोट्स से कार्यसूची के आदी थे।

···हमको दिखाई पड़ता था कि हम निश्चिन्त हैं, लेकिन एक पल भी हमारा खाली नहीं था। एलेन कैम्पबेल-जॉन्सन मेरे पास तब आये जब मैं नहा रहा होता, वही समय था जब वह मुझे अखबार पढ़कर सुना सकते थे। सब काम ख़त्म करके मैं सुबह के एक या दो बजे लगभग आधा घण्टा अपनी वंशावली पर काम करके सोने जाता था।

प्रश्न : भारत के वाइसराय की हैसियत से आपका आखिरी काम क्या था ?

उत्तर : आधी रात के कुछ मिनट पहले ही मैंने यह काम किया था। इसकी **वाइसराय की हैसियत से आखिरी काम** भी बड़ी रोचक कहानी है।

···1947 में जब वाइसराय बनकर मैं आया तो पल्लनपुर के नवाब मुझसे मिलने आए। सर जॉर्ज एबेल ने एक चिट भिजवाया जिस पर लिखा था : 'पल्लनपुर के नवाब अपनी बेगम को 'हाईनेस' की पदवी दिलवाने की बात ज़रूर कहेंगे, लन्दन के राज्य-सचिव ने मना कर दिया है इसलिए यह काम आप नहीं कर सकते।'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

14 अगस्त की रात, बारह बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। मैं अपना सारा काम निबटाकर खाली बैठा अपने आपसे कह रहा था, 'और कुछ ही मिनटों के लिए मैं संसार का सबसे ताकतवर आदमी हूं···दुनिया में कोई दूसरा नहीं जो मानवता के पांचवें हिस्से की जिन्दगी और मौत का मालिक हो।'

मैं सोचने लगा इस सत्ता का आखिरी उपयोग क्या हो···मैं पल्लनपुर की बेगम को 'हाईनेस' बना दूंगा। मैंने तय किया।

'आप ऐसा नहीं कर सकते', मेरे विशेषज्ञों ने कहा।

'कौन कहता है मैं नहीं कर सकता ? आप पार्चमेण्ट फौरन ले आइए।'

पार्चमेण्ट आ गया तो मैंने लिखा, 'बधाई हो···उपस्थित लोगों के सामने हम आपकी बेगम को 'हाईनेस' का ओहदा अता करते हैं।' उस पर दस्तखत करके मैंने नवाब के रेज़ीडेण्ट को भिजवा दिया। नवाब, उनकी बेगम और रेज़ीडेण्ट इससे बेहद खुश हुए।

प्रश्न : आधी रात से पहले क्या आपको कुछ हटा देना पड़ा जिससे यह लगता कि वाइसराय की पदवी आप छोड़ रहे हैं ?

उत्तर : कुछ ज़्यादा नहीं, लाल डिब्बों की तरह कुछ डिब्बे थे, बीच में एक हैण्डिल, सामने ताला और शायद सम्राट के बिल्ले के साथ 'एच० ई० वाइसराय' अंकित था।

वाइसराय से गवर्नर-जनरल

भारत के वाइसराय का अलग अस्तित्व बनाने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया था। ब्रिटिश साम्राज्य के हर गवर्नर-जनरल और गवर्नर को राज-प्रतीक पहनने पड़ते थे। मगर वाइसराय के पास उसका अपना कुल-चिह्न था। मेरे नौकर-चाकर, मेरा स्टाफ़ मेरा ही प्रतीक-चिह्न पहनते थे। जब सिगार आते तो उनकी कम्पनी की पट्टी उतारकर वाइसराय के प्रतीक-चिह्नवाली पट्टी लगा दी जाती थी। माचिसों, मक्खन, यहां तक कि साबुन तक पर मेरा प्रतीक-चिह्न होता।

प्रश्न : जिस रफ्तार से आप वाइसराय से गवर्नर-जनरल बने उससे लोग दंग रह गए होंगे।

उत्तर : आधी रात की सारी तैयारी हो चुकी थी। हमने यूनियन जैक नीचे करके गवर्नर-जनरल का नीले रंग का झण्डा लहरा दिया। इसका डिज़ाइन मैंने खुद ही बनाया था।

प्रश्न : नेहरू का उस रात का 'टोस्ट' आपको याद है ?

उत्तर : हां। उन्होंने इंगलैण्ड के सम्राट की जगह 'किंग जार्ज द सिक्स्थ' कहा था। इसमें काफी अंतर है। वह डोमिनियन के वफादार नेता की तरह बोल रहे थे।···वैसे वह पीते नहीं थे। मगर दो बजे सुबह भारत की स्वतंत्रता की पहली सुबह सम्राट के 'टोस्ट' के लिए पोर्ट[1] लेना काफी बड़ी बात थी।

प्रश्न : 15 अगस्त की ऐतिहासिक सुबह मोटर कार से अपनी यात्रा याद है आपको ?

---

1. एक किस्म की शराब।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर : एकदम असाधारण थी वह। पूरी धूमधाम से हम निकले थे। हम लोग विधिवत् रवाना हुए। सारे ऊंचे अधिकारी हमें छोड़ने आए—सौ आदमियों के तीन 'गार्ड ऑफ ऑनर' थे, थल-सेना, नौसेना, वायुसेना···31 तोपों की सलामी और 'गॉड सेव द किंग' की धुन पर हम चल पड़े थे।

15 अगस्त, 1947

भीड़ घनी होती गई। हमारे अंगरक्षक और उनके प्रशिक्षित घोड़े न होते तो हम भीड़ पार नहीं कर सकते थे। जैसे-जैसे हम संसद-भवन की ओर बढ़े भीड़ और घनी होती गई। जहां तक नज़र पहुंचती वहां तक उत्साही लोगों की भीड़ ही दिखाई पड़ती।

अद्भुत क्षण था वह। हम जब बाहर आए, देखा भीड़ काबू से बाहर हो चुकी थी। मैंने नेहरू से कहा, 'अब हम क्या करेंगे, ये तो आपके देशवासी हैं।'

'मैं उनसे बात करूंगा' कहते हुए नेहरू छत पर चले गए। वहां से उन्होंने भीड़ को सम्बोधित किया, 'थोड़ी जगह बनाइए, थोड़ा रास्ता दीजिए···'

भीड़ में थोड़ी हरकत हुई।

इस दौरान गार्डों की कतारों के बीच से हम लोग किसी तरह निकलकर बग्घी तक पहुंच गए। नेहरू छत पर चढ़े चीख रहे थे, भीड़ से अनुरोध कर रहे थे, मुक्के दिखा रहे थे···हम लोग बेहद धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। जनता बग्घी पर चढ़कर हमसे हाथ मिलाने के लिए बेकरार थी। यह सब वह इससे पहले नहीं कर सकी थी। समां बड़ा लुभावना, बड़ा उत्तेजक था। लेकिन झण्डा फहराने वाले समारोह की तुलना में यह कुछ भी नहीं था। दोपहर में जब हम वहां पहुंचे तो माहौल और भी रंग पर था।

लोगों की संख्या बता पाना मुश्किल है—लाखों की तादाद में जमा हुए थे लोग। झण्डा फहराने के लिए हमने जो जगह चुनी थी खचाखच भरी हुई थी।

'गार्ड ऑफ ऑनर' 'फर्स्ट सिक्ख रेजिमेण्ट' का था। वे अब भी भीड़ से ढके हुए थे। सिर्फ उनकी लाल पगड़ियां ही देखी जा सकती थीं। भीड़ के उस हुजूम में हिलने-डुलने की गुंजाइश भी नहीं थी।···झण्डा फहराने की तैयारी पूरी हो चुकी थी। मेरी पत्नी और मैं आगे-आगे थे, पीटर होज[1] हमारे पीछे थे। लेकिन वहां पहुंचते ही मुझे लग गया कि जिस समारोह का आयोजन हुआ था वह नहीं हो सकेगा।

मैं लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। तभी भीड़ को चीरते हुए कमाण्डिग जनरल के साथ प्रधानमंत्री भी वहां पहुंच गए।

'पैमी कहां है' मैंने पूछा।

'यहीं है, उसकी देखभाल के लिए लोग खड़े हैं, लेकिन अब आप उसे अपने साथ ले जाइए।'

पैमी हाथों-हाथ उठाकर हमारे पास पहुंचा दी गई।

'जल्दी से झण्डा फहराकर चलते हैं', मैंने कहा, 'गार्ड, बैण्ड···सभी भीड़ से

---

1. लार्ड माउंटबैटन के एडीसी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
घिरे हुए हैं। मैं खड़े होकर सैल्यूट करता हूं…

हमने ऐसा ही किया। फिर एक अविश्वसनीय घटना घटी। आसमान पर एक इन्द्र-धनुष छिटक आया। जिन लोगों का चेहरा उस तरफ था उन्होंने उसे देखा। पैमेला ने भी देखा। यह एक शुभ लक्षण था आसमान पर अचानक किसी इन्द्र धनुष का दिखाई पड़ना…और खालिस भारतीय रंगों का एक दूसरा इन्द्र धनुष भी था—सफेद, जोगिया और हरी आड़ी धारियों वाला आसमानी इन्द्र धनुष के चौखटे में फहराता हुआ। लोग खुशी से पागल हो उठे थे।

हमने वहां से प्रस्थान किया। मेरी पत्नी, बग्घी में लोगों को भरती जा रही थी, इस डर से कि कहीं वे भीड़ में कुचल न जाएं। नेहरू बग्घी के हुड पर बैठे थे। लगभग आधा मील तक भीड़ जमा थी…इतना उत्तेजक…इतना भावुक माहौल!

प्रश्न : आपकी बग्घी में खुद को पाकर लोग दंग तो हुए होंगे?

उत्तर : हां…ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़ी-सी पार्टी पिकनिक मनाने जा रही है। शाही शानोशौकत जैसे एकदम खत्म हो गया था। छोटे-बड़े सभी लोग नज़दीक आ गए थे। सद्भावनाएं छलकी पड़ रही थीं। ऐसा उत्साह मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

शाम का स्वागत समारोह भी एक भावुक अनुभव था। जो लोग पहले कभी वाइसराय हाउस में दाखिल नहीं हुए थे वह भी थे वहां। कटुता का कहीं नामोनिशां नहीं था। सबके चेहरों पर आभार छलक रहा था।

'यहां आकर हमारी आज़ादी हमें लौटाने के लिए धन्यवाद…हम ब्रिटिश राज्य को कभी नहीं भुला सकते…आपने हमारे लिए कितना कुछ किया…' मन हिल उठे ऐसा अनुभव था वह।

उस रात हम बड़े भावुक हो गए थे। मैं और मेरी पत्नी जब गले मिले हमारी आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा चरण

रिपोर्ट

भारत के विभाजन सम्बन्धी व्यक्तिगत और सरकारी दस्तावेजों का संकलन,
22 मार्च-15 अगस्त, 1947

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
"फ्रीडम एट मिडनाइट" की तैयारी के दौरान हम लोगों ने लगभग 900 किलोग्राम दस्तावेज़ों और कागज़ात का अध्ययन किया था। इनमें भारत के अंतिम वाइसराय के निजी संग्रह भी थे।

अपने या अपने परिवार से सम्बन्धित हर कागज़ लार्ड माउंटबैटन ने सारी जिन्दगी बहुत सहेज कर रखा। उनके शाही सम्पर्कों और महत्त्वपूर्ण पदों के कारण यह कागज़ात एक प्रकार से बीसवीं सदी के आरंभ से लेकर इंगलैण्ड और यूरोप, एक सीमा तक पूरे संसार के इतिहास के साक्षी बन गए। ब्रॉडलैण्ड्स स्थित माउंटबैटन के भवन के पूरे तहखाने में ये कागज़ स्टील की अलमारियों में सुरक्षित थे।

हम जैसे इतिहासकारों के लिए इस तहखाने में प्रवेश अलीबाबा की गुफा में प्रवेश करने जैसा था। अलमारी की हर दराज़ में एक खज़ाना था, जैसे माउंटबैटन की जिन्दगी के सारे प्रीतिभोजों के मीनू; एक दराज़ में फटे-पुराने लिफाफ़े थे जिन पर पेंसिल से लिखा हुआ था। हम हैरान रह गए कि इन्हें गांधी ने लिखा था। माउटबैटन ने बताया, "22 मार्च 1947 को जब मैं उपमहाद्वीप की समस्या का हल ढूंढ़ने नई दिल्ली पहुंचा, मैं फौरन समझ गया कि गांधी की सहमति के बिना कुछ नहीं किया जा सकेगा। इसी बीच मुझे एक असाधारण बात पता चली कि गांधी हर सोमवार को मौनव्रत रखते हैं। मैंने फौरन फैसला कर लिया और मैं उनसे बातचीत सोमवार को ही करने लगा। लेकिन वह हर सम्भावित घटना के लिए तैयार थे। पुराने लिफाफ़ों की एक गड्डी और एक छोटी-सी पेंसिल उनकी टेंट में खुंसी रहती थी। जब मेरी किसी बात से असहमत होते तो इन लिफाफ़ों पर कुछ लिख कर मुझे दे देते।"

...25 वर्ष बाद, भारत के आधुनिक इतिहास के नाजुक मोड़ों पर, भारत के राष्ट्रपिता की प्रतिक्रियाएं और अंतरंग भावनाएं हम इन कागज़ के टुकड़ों पर ब्रॉडलैण्ड्स के तहखाने में देख रहे थे।

मुगल गार्डन के सामने अपने अध्ययन कक्ष में माउंटबैटन द्वारा लिखवाए गए सारे मेमो भी रखे थे।...इन दस्तावेजों में माउंटबैटन द्वारा इंगलैण्ड के सम्राट और लन्दन में भारत विषयक सेक्रेटरी ऑफ स्टेट को भेजे गए गुप्त रिपोर्ट और चिट्ठियां भी थीं।

ये दस्तावेज़ किसी भी इतिहासकार के लिए भारत के लम्बे और महान इतिहास के स्वर्णिम क्षणों को जानने में सहायक हो सकते हैं।

लैरी कॉलिन्स
डौमिनीक लापियर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाग 1 : विभाजन का प्रस्तावना

अ. विभाजन की योजना
वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 1, 2 अप्रैल 1947

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट[1] के नाम वाइसराय का पत्र

जून 1948 में सत्ता-समर्पण की पूरी प्रक्रिया, उसकी समय सारणी पर मैं आपके विचार जानना चाहता था। मैं इस नतीजे पर पहले ही पहुंच गया था कि लन्दन में हुई हमारी बातचीत में जो तारीख निश्चित की गई है उससे काफी जल्दी हमें निर्णय लेना होगा। मैं अच्छी तरह समझता हूं कि जरूरी विधान को संसद से पास कराने में समय लगेगा, लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि किसी भी निर्णय के बावजूद हमारे उद्देश्य की घोषणा विधान को प्रस्तुत करने से पहले हो।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 2, 9 अप्रैल, 1947

* * *

11. 14 अप्रैल को गांधी से मुलाकात के बाद मैंने उन्हें घण्टे-भर के लिए इस्मे के पास भेज दिया ताकि उनकी योजना की प्रमुख बातें लिख ली जाएं। यह तो हो गया था मगर इस्मे के नाम दो चिट्ठियों में गांधी ने अपनी निराशा जाहिर करते हुए कहा था कि उन मुलाकातों का ध्येय एक औपचारिक अनुबंध तैयार करना था न कि उसका सारांश तैयार करना। दूसरे शब्दों में वह माउंट-बैटन-गांधी समझौते की आशा कर रहे थे। मैंने उन्हें लिख दिया है कि इस समय कोई फैसला करने का मेरा इरादा नहीं है। योजना को अनुबंध के रूप में ढालना फिलहाल जल्दबाजी होगी। उन्होंने मेरी झिड़की विनम्रता से स्वीकार कर ली।

12. 5 अप्रैल को मैं पहली बार जिन्ना से मिला। उस वक्त वह बेहद अहंकार और तिरस्कार से भरे थे। उन्होंने यह कहकर शुरू किया कि वह बताने आए हैं कि वह क्या स्वीकार करेंगे। लेकिन मैंने वहीं रोककर उनसे कहा, 'इस समय तो मैं सिर्फ आपसे परिचित होना चाहता हूं।' 6 अप्रैल, रविवार को वह अपनी बहन के साथ हमारे साथ खाना खाने आए और आधी रात के बाद गए। हमारे बीच का फासला उस दिन खत्म हो गया था।

---

1. फ्रेडरिक विलियम-पैथिक लारेंस, 1945-47 तक भारत और बर्मा के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट थे, 1946 में भारत के लिए कैबिनेट मिशन के सदस्य।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

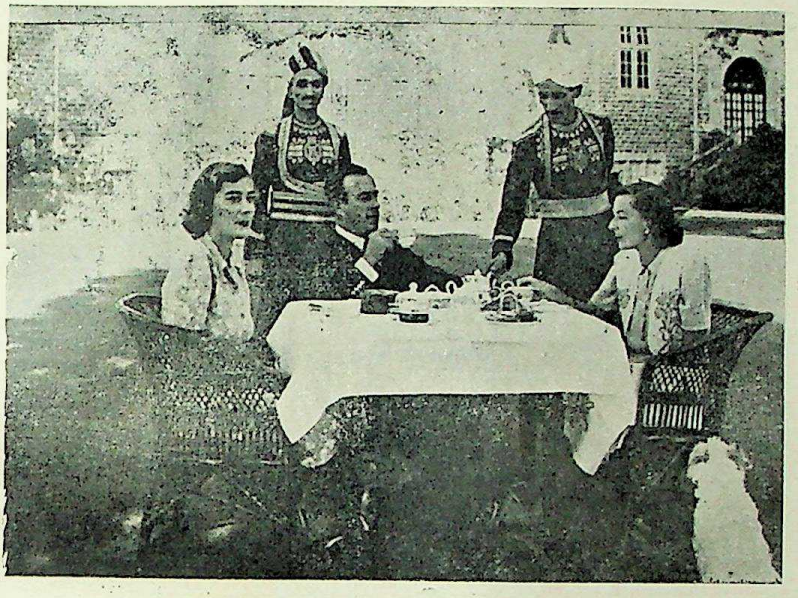

पमेला माउंटबैटन, लार्ड लुई माउंटबैटन और लेडी एडविन माउंटबैटन चाय लेते हुए (शिमला)

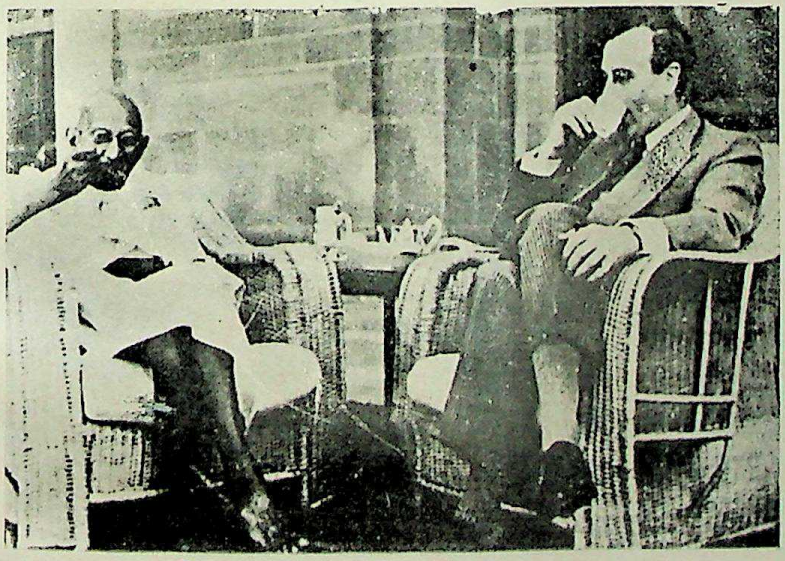

महात्मा गांधी और लार्ड माउंटबैटन, वायसराय भवन में हुई अनगिनत निजी मुलाकातों में से एक मुलाकात में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

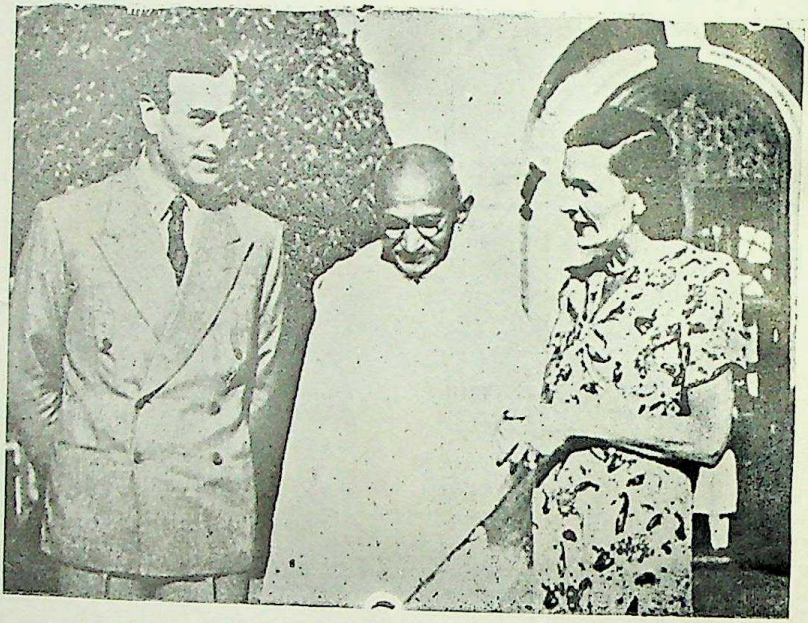

लार्ड और लेडी माउंटबैटन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ

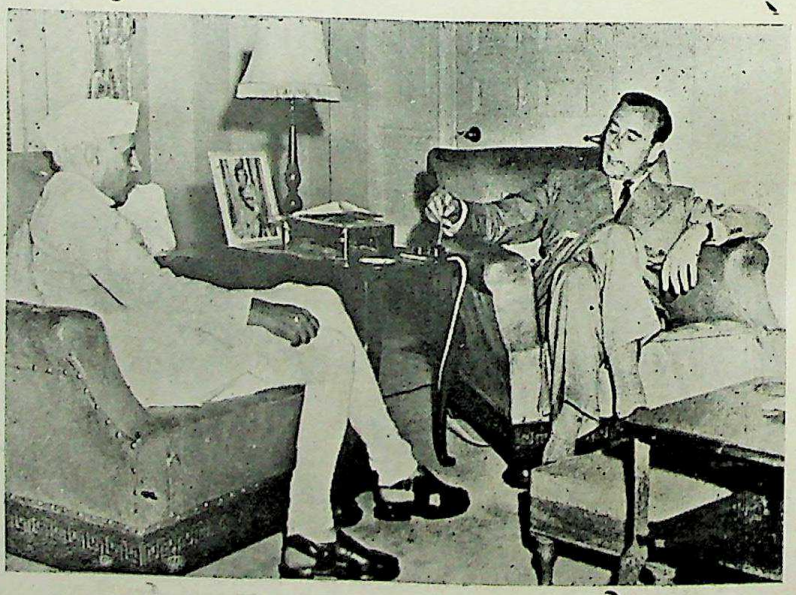

पंडित जवाहरलाल नेहरू और लार्ड माउंटबैटन : एक अनौपचारिक क्षण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

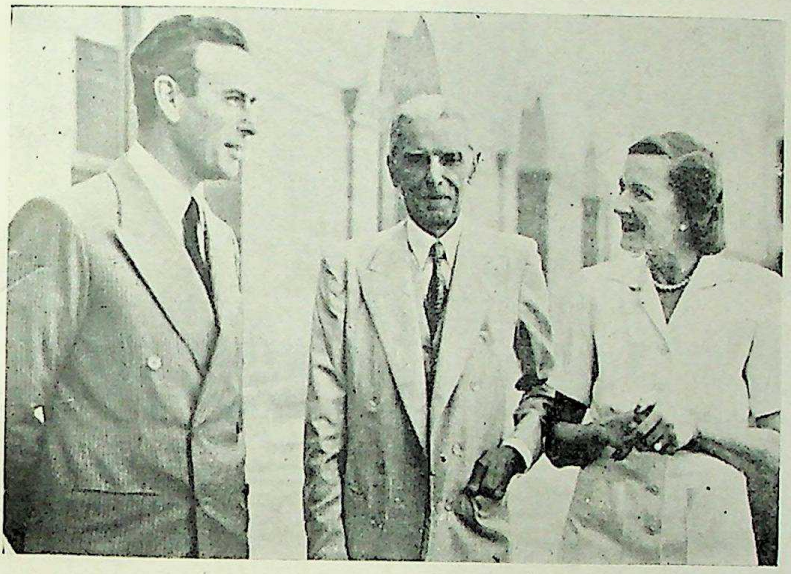

लार्ड माउंटबैटन, मुस्लिम लीग के नेता श्री मुहम्मद अली जिन्ना और लेडी माउंटबैटन

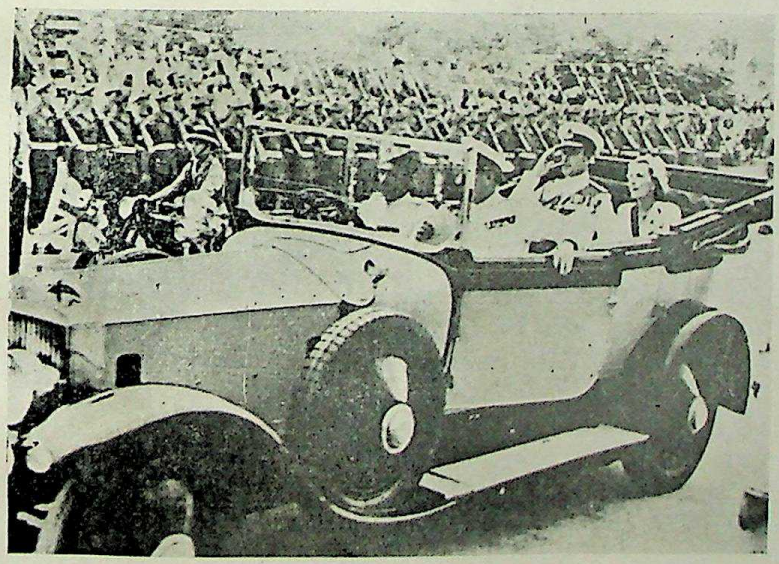

लार्ड औरलेडी माउंटबैटन कराची में अभिवादन स्वीकार करते हुए, अगस्त13, 1947

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

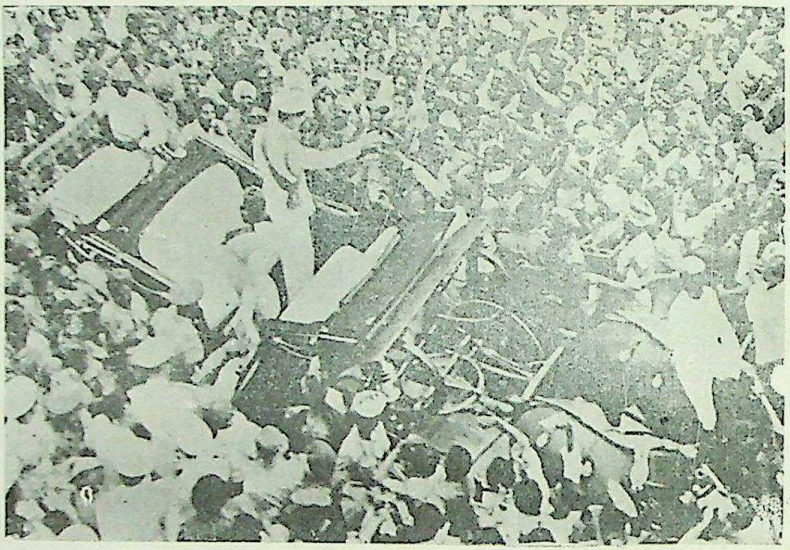

लार्ड और लेडी माउंटबैटन की गाड़ी को घेरे हुए लाखों लोगों की भीड़, अगस्त 15, 1947

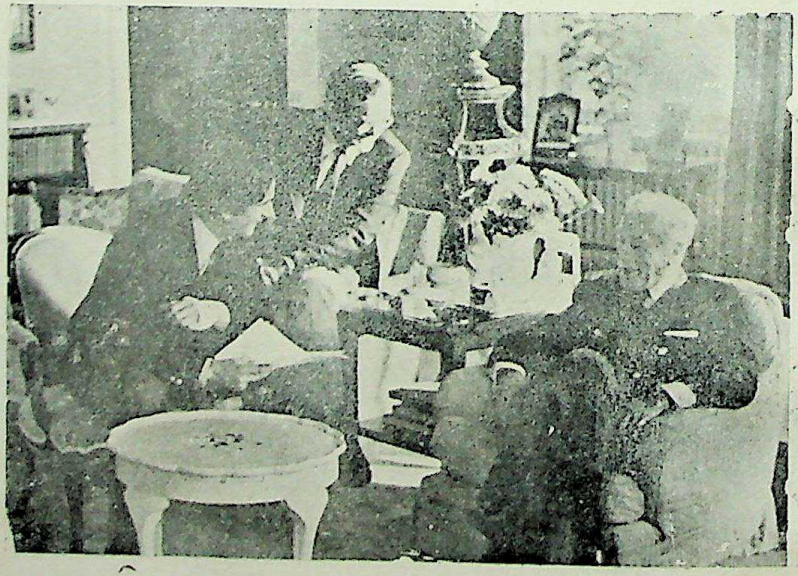

डोमिनीक लापियर, लैरी कॉलिन्स और लार्ड माउंटबैटन, इंगलैंड में ब्राडलैंड्स स्थित लार्ड माउंटबैटन के घर साक्षात्कार के समय आराम करते हुए।

CC-0. Agamnigam Foundation. Chennai. Digitized by eGangotri

13. सोमवार, 7 अप्रैल को हमारी बातचीत जारी रही। वह गांधी और कैबिनेट-मिशन से हुई बातचीत की पृष्ठभूमि के बारे में बताते रहे जबकि मैं लगातार कोशिश करता रहा कि कैबिनेट-मिशन की योजना मानकर वह संविधान-सभा में प्रवेश कर लें।

14. उन्होंने यह समझाने में जरा भी कसर नहीं छोड़ी कि संविधान-सभा या कैबिनेट-मिशन-योजना का कोई फायदा नहीं था, क्योंकि इस योजना की मूल जरूरत थी पारस्परिक विश्वास और सहयोग से काम करने की भावना। मई, 1946 में ऐसा लगा था कि इस तरह का वातावरण बनाया जा सकता है। लेकिन साल-भर में मामला बहुत बिगड़ गया था। यह स्पष्ट था कि किसी भी स्थिति में कांग्रेस इस योजना की भावना पर अमल नहीं करेगी।

15. उन्होंने कहा कि भारत उस दौर से गुजर चुका है जहां किसी समझौते को सफलता मिल सकती है। उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि जल्दी से जल्दी प्रांत-दर-प्रांत सत्ता दे दी जानी चाहिए। और प्रान्तों को अपना गुट बनाने की इजाजत होनी चाहिए। इसका विकल्प यह था कि अगर मैं चाहता तो इन गुटों का चुनाव कर सकता था।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

* * * **रिपोर्ट नं० 3, 17 अप्रैल, 1947**

11. पिछले हफ्ते मैं जिन्ना से लगभग छः बार मिला। एक-एक मुलाकात दो से तीन घण्टों की थी। हमारी बातचीत उसी ढर्रे पर चलती रही। उन्होंने साफ़-साफ़ कह दिया कि मुस्लिम लीग किसी भी हालत में कैबिनेट-मिशन-योजना पर फिर से सोच-विचार नहीं करेगी और पाकिस्तान लेकर रहेगी। मैंने उनसे इस्मे से मिलने का अनुरोध किया। लेकिन बाद में जब उनके साथ हुई बातचीत के नोट्स इस्मे ने मुझे दिए तो जिन्ना मुकर गए। बोले, 'यह योजना आपकी है, मेरी नहीं।' अगर मैं भारत के विभाजन की उनकी बात मान लेता तो मुझे बंगाल और पंजाब के विभाजन सम्बन्धी कांग्रेस के तर्कों को भी मानना पड़ता। इस बात से वह तनफना उठे और मुझे समझाने लगे कि पंजाब और बंगाल की एकता कायम रहनी चाहिए क्योंकि दोनों प्रान्त अपने में एक पूरे क्षेत्र हैं, वे लोग विभाजन बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे।

12. मैंने कहा, 'आपके तर्कों से मैं प्रभावित हुआ, इस पर अमल भी कर सकता हूं। वह खुश हो गए। लेकिन जब मैंने कहा कि इन्हीं तर्कों द्वारा पूरे देश को विभाजन से बचाया जा सकता है तो उनका चेहरा उतर गया···हमारी बात-चीत फिर शुरू से शुरू हो गई।

13. आखिर मैंने उन्हें बता दिया कि सत्ता के हस्तान्तरण की योजना मैंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जान-बूझ कर गांधी के अलावा और किसी को नहीं बताई थी, न ही मैं गांधी के सुझाव मानने को तैयार था। किसी ने मेरे सामने प्रचार भी नहीं किया था··· यह मेरा ही निष्कर्ष था। मज़बूत केन्द्रीय सरकार से पूरी तरह जुड़ जाने में ही भारत की भलाई थी। मैंने उनसे कहा कि अन्तरिम सरकार में आपके शामिल हो जाने से सरकार मज़बूत हो जाएगी और जून 1948 में मैं अंतरिम सरकार को पूरी तरह सत्ता सौंप देता। अगर मैं पोप को 'ब्लैक मास' के लिए आमंत्रित करता तो वे भी इतना संत्रस्त न होते जितना जिन्ना हो गए। मैंने जल्दी से आश्वासन दिया कि मेरी अपनी धारणाएं भारत का समाधान ढूंढ़ने में बाधा नहीं पहुंचाएंगी। फिर भी अगर मैंने अंग्रेज़ सरकार को विभाजन के लिए राजी कर लिया तो वह प्रान्तों की सीमाओं पर भी लागू होगा। मुझे विश्वास था कि जिस तरह कांग्रेस के प्रभुत्व पर मुस्लिम लीग लड़ने-मरने को तैयार हो जाएगी, ठीक उसी तरह पंजाब और बंगाल के हिन्दू मुसलमानों के प्रभुत्व पर लड़ने-मरने को तैयार हो जाएंगे।

14. सेक्रेटरी आफ़ स्टेट, सम्राट और संसद के सामने भारत में क़ानून और व्यवस्था के लिए मैं जिम्मेदार था, लेकिन मैं सशस्त्र सेनाओं को विभाजित नहीं होने दे सकता था क्योंकि राष्ट्रीयकरण के कारण वे पहले ही कमजोर हो गई थीं। लेकिन, अगर अन्त में विभाजन का निर्णय लिया जाता तो मैं रक्षा-कमेटी द्वारा पूरे मामले की जांच-पड़ताल करवाने के लिए तैयार था।

15. जिन्ना ने मित्रतापूर्ण व्यवहार नहीं छोड़ा लेकिन निरर्थक तर्क देते चले गए। अन्त में बोले, 'अगर आप अपने निष्ठुर तर्कों से मेरा पीछा करेंगे तो हम कहीं नहीं पहुंच सकते।'

16. मैं जिन्ना को मनोविकार-ग्रस्त मानता हूं। उनसे मिलने से पहले मैं यह मान नहीं सकता था कि जिस आदमी में प्रशासन या जिम्मेदारी की भावना ज़रा भी न हो वह इतनी ऊंची जगह कैसे हासिल कर सकता है।

17. अंत में मैंने उनसे कह दिया कि वह मुझसे ज़्यादा से ज़्यादा यह उम्मीद कर सकते थे कि प्रान्तों और प्रान्त के हिस्सों पर यह दायित्व छोड़ दिया जाए कि वह पाकिस्तान में शामिल होने या न होने का फैसला खुद करें। इस तरह उन्हें सिंध और पंजाब मिल जाता, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत की मुझे चिंता थी, और अगर किसी तरह यह भी मिल जाता तो उन्हें कबीलों को ठीक से चलाने के लिए साढ़े तीन करोड़ रुपया सालाना का खर्च उठाना पड़ता। पूर्व में उन्हें कलकत्ता के बिना बंगाल का बिल्कुल बेकार-सा हिस्सा मिलता और अगर वह चाहते तो असम में सिलहट भी मिल सकता था।

* * *

19. इस तरह उनके पास जो विकल्प होंगे, वे या तो :

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(i) कैबिनेट-मिशन-योजना होगी जो पूरी स्वायत्तता के साथ पंजाब के पांचों प्रान्त दे देगी। लेकिन उनका केन्द्र कमजोर होगा और अपनी रक्षा को उसी पर उन्हें आधारित रखना होगा।...या...

(ii) एक कटा-पिटा पाकिस्तान उनके हाथ में होगा जिसकी पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से किसी भी तरह की आर्थिक सहायता मिलने की गुंजाइश नहीं होगी। हमारे चले जाने के बहुत बाद आम रक्षा के लिए भी उसे किसी न किसी तरह का केन्द्र बनाना होगा।

20. उन्होंने कहा, 'आप कितना कम देते हैं इसकी मुझे परवाह नहीं लेकिन जो भी दें, पूरी तरह दें। मैं कोई ऐसी-वैसी बात नहीं कहना चाहता लेकिन पाकिस्तान आपके साम्राज्य के अन्तर्गत डोमिनियन स्टेटस तो चाहेगा ही।' मैंने इस विषय में उन्हें टेरेंस शोन[1] से बात करने की सलाह दी। अंग्रेजी सरकार से मैं यह सिफारिश नहीं कर सकता था कि इतने वर्ष तक पाकिस्तान की जिम्मेदारी ले।

* * *

22. इतना उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अगर मुस्लिम लीग पर किसी भी तरह से कैबिनेट-मिशन-योजना थोपने की कोशिश की गई तो वह लड़ने-मरने को तैयार हो जाएंगे।

* * *

24. सबसे पहले अगर गृह-युद्ध या प्रशासन को तहस-नहस होने से रोकना है तो हमें जल्दी ही इधर या उधर, निर्णय लेना होगा। यूरोपीय और भारतीय दोनों यही चाहते हैं। गवर्नर को इसमें जरा भी शंका नहीं थी। अतः मेरा पहला निर्णय यह है कि हमें अपना फैसला मई के अन्त तक सुना देना चाहिए।

* * *

26. तीसरे, सत्ता के हस्तान्तरण करने से पहले, विभाजन की मुश्किलों से पैदा हुई समस्याओं के बावजूद, दोनों पक्षों को एक-दूसरे का दुश्मन नहीं होना चाहिए।

* * *

32. मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि भारतीय नेताओं के प्रति मेरे रवैये के लिए मुझे सारे गवर्नरों का समर्थन प्राप्त है। सबने यह स्वीकार किया है कि निर्णय की घोषणा जल्दी से जल्दी कर दी जाए। दूसरे प्रांत जिन पर विभाजन का सीधा प्रभाव नहीं पड़ता, यह मानते हैं कि हम एक ज्वालामुखी पर बैठे हैं जो तीनों स्थानों—बंगाल, पंजाब और उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त—में से किसी एक में कभी भी फट सकता है; असम, बम्बई और बिहार में भी इसके विस्फोट के आसार हैं।'

---

1. भारत में इंग्लैंड के उच्च आयुक्त (हाई कमिश्नर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट

* * * **रिपोर्ट नं० 24, 4 अप्रैल 1947**

21. मोल भाव करने जैसी स्थिति पैदा हो गई है। शायद मुस्लिम लीग समय रहते अपनी मूर्खता समझ ले और कैबिनेट-मिशन-योजना तथा कांग्रेस के साथ कोई समझौता करने को तैयार हो जाए। लेकिन इस उम्मीद का पूरा होना असम्भव ही लगता है।

* * * **वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों के विवरण**

22वीं मीटिंग, 25 अप्रैल 1947

प्रकरण 7, भारतीय नेताओं से मीटिंग का प्रस्ताव (वी० सी० पी० 33)

वाइसराय ने घोषणा-मसविदा की रूपरेखा पर जिन्ना के साथ बातचीत करने की बात सर एरिक मेईविल से कही।···बातचीत के दौरान स्कॉट ने सुझाव दिया कि हर पार्टी की कार्य समिति को अपनी योजनाओं के पूरे प्रचार-प्रसार और उनके सुझावों पर सोच-विचार के लिए पन्द्रह दिन का समय दिया जाना चाहिए। ताकि हर पार्टी के वाम और दक्षिण पंथ आमने-सामने आ जाएं। एक बार अगर विभाजन का तंत्र चालू कर दिया गया तो उसे रोकना या लौटाना मुश्किल होगा। उनके अनुसार हर पार्टी में कैबिनेट-मिशन-योजना से सहमत होने के आसार नज़र आ रहे थे। एकीकृत भारत के लिए कई कांग्रेस सदस्य मतगणना करने को तैयार थे। दूसरी ओर जिन्ना और लियाक़तअली खां को कटे हुए पाकिस्तान की समस्याएं समझ में आ रही थीं।

एबेल के अनुसार घोषणा लागू होने के बाद प्रचार-प्रसार की पूरी रोशनी में जनता का विचार जानने का काफ़ी समय बचा रहेगा। वैसे भी घोषणा के लागू होने के बाद थोड़ा विराम मिल जाएगा और पार्टियों के फिर से मिल जाने की सम्भावना और समय दोनों होंगे।

वाइसराय ने कहा, 'घोषणा लागू करते समय कोई ऐसी धारणा नहीं बननी चाहिए, जिससे विभाजन को पूर्व निश्चित मान लिया जाए। यह सवाल जनता की इच्छा पर छोड़ा जाना चाहिए।' आरोप-प्रत्यारोप और झगड़ा-फसाद रोकने के लिए जल्द से जल्द निर्णय लेना होगा। घोषणा के लागू होने और मतदान तक की स्थिति के कड़वे होने की पूरी सम्भावना थी। भारत के एक रहने की सम्भावना बढ़ाने के लिए भी एक खण्ड शामिल करना होगा।·· भारत को एक रखने की किसी भी योजना पर विचार करने के लिए वाइसराय तैयार थे जिसमें केन्द्र, कैबिनेट-मिशन-योजना के विषयों को अंजाम दे। कैबिनेट-मिशन-योजना के अन्तर्गत केन्द्र में हिन्दू जनमत हमेशा मुस्लिम अल्पसंख्यक को हराकर उन्हें दबाएगा। इसका विकल्प यह हो सकता था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधि समान रूप से केन्द्र में आएं। अगर एकीकृत भारत इस रूप में बने तो पंजाब, बंगाल और असम के एक रहने की सम्भावनाएं भी बढ़ जाएंगी।

वाइसराय चाहते थे कि भारतीय नेताओं से बातचीत के लिए एक संक्षिप्त मसविदा कर दिया जाए। इस बातचीत के पहले दिन वह पूरी कोशिश करना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाहते थे कि कैबिनेट मिशन योजना स्वीकृत हो जाए। यह मुलाक़ात थोड़ी छोटी होनी थी · नेताओं को अपनी कार्य समितियों से विचार-विमर्श करने का समय मिल जाता। अगले दिन वे अपने जवाब दे देते। अगर यह जवाब प्रतिकूल हो तो पूरे विभाजन की सम्भावना उठाई जा सकती थी। यहां वाइसराय यह स्पष्ट कर देंगे कि इस योजना में सारी पार्टियों के सहमत होने पर ही अदल-बदल हो सकेगा। तब वे केन्द्र की सम्भावना पर किसी तरह लौट जाएंगे। पूरी मीटिंग काफी सतर्कता से होनी चाहिए।

स्कॉट ने कहा, भारत की दोनों पार्टियां काफ़ी परेशान थीं क्योंकि वाइसराय के दिमाग का ऊहापोह उन्हें मालूम नहीं था। उनके अनुसार भारत में जो गड़बड़ियां हो रही थीं उन्हें गम्भीरता से नहीं लिया जाना चाहिए था। हालांकि महीने भर में गृह-युद्ध की कोई सम्भावना नहीं थी लेकिन यह स्थिति हमेशा बनी नहीं रह सकती थी। लार्ड इस्मे ने कहा निरंकुशता तेजी से बढ़ रही थी।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट

रिपोर्ट नं० 5, 1 मई 1947

* * *

पिछले हफ्ते मैं नेहरू, पटेल, जिन्ना, लियाक़त अली और बलदेव सिंह को छोड़कर और लोगों से कम ही मिला। जिस योजना पर हम काम कर रहे थे, उसके बारे में उन लोगों के सुझाव लेकर मैंने अपने स्टाफ़ को योजना का अन्तिम रूप तैयार करने को दे दिया। स्वयं मैं दो दिन की यात्रा पर पंजाब और उत्तर-पश्चिम-सीमाप्रान्त चला गया।

2. मेरी व्यवस्था के मुताबिक इस्मे नेहरू और जिन्ना से योजना के विषय में बात नहीं कर पाए। उत्तम-पश्चिम-सीमाप्रांत के विषय के अलावा नेहरू से मेईविल की बात सन्तोषजनक रही, पर जिन्ना के साथ बातचीत एकदम निराशाजनक रही। क्योंकि वह प्रान्तों के विभाजन के विरुद्ध थे। उन्होंने मांग की कि मुझे फौरन विधान-सभा खत्म कर देनी चाहिए। प्रेस को जो वक्तव्य उन्होंने दिया था वह अपने अनुयायियों के डर से दिया था, या मोल-भाव करने का यह उनका अपना तरीका था, यह कहा नहीं जा सकता। मैं नहीं सोचता कि वह योजना को अमल में आने से रोक सकते हैं, हालांकि उनके समर्थन से काम आसान हो जाता।

3. शुक्रवार, 2 मई को मैं इस्मे को रिपोर्ट के साथ लंदन भेज रहा हूं। उनके पास योजना रहेगी ताकि कैबिनेट को स्पष्टीकरण देने के लिए वह वहां मौजूद हों। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों से बिगड़ती हुई हालत को चौंका देने वाली खबरें मिलने लगी हैं। अब और देर नहीं की जा सकती।

4. इस योजना का सार यह है कि जहां तक सम्भव हो, भारतवासियों और संसार को मालूम हो कि हम भारतवासियों को छूट देते हैं कि वे ही तय करें कि सत्ता का हस्तांतरण किस तरह होना चाहिए। प्रांतों को यह फ़ैसला करने का हक रहेगा कि वे सब संविधान-सभा में शामिल होंगे, या कुछ प्रांत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
(हिन्दुस्तान) शामिल होंगे और बाकी नई संविधान-सभा (पाकिस्तान) बनाएंगे। पंजाब, बंगाल और आसाम में, जिनका विभाजन पाकिस्तान ने मांगा है मैंने एक ऐसी व्यवस्था का प्रस्ताव किया है जिसमें इन प्रांतों को स्वयं निर्णय करने का मौका मिलेगा कि वे विभाजन चाहते हैं या नहीं। किसी भी नुस्खे को अपनाने से लोग हिचक रहे हैं, जो मेरी समझ में, इसलिए है कि भारतीय चाहते हैं कि सत्ता के हस्तांतरण के बारे में निर्णय अंग्रेज लें ताकि बाद में कोई गड़बड़ हो तो उनको दोषी ठहराया जा सके।

* * *

6. मैं आशा करता हूं कि कैबिनेट मुझे काम आगे बढ़ाने का अधिकार दे देगी। और इस्मे को हफ्ते-भर के अन्दर वापस भेज देगी। यहां हमें ऐसा लग रहा है कि ज़रा-सी देर हो जाने से साम्प्रदायिक दंगे इस हद तक बढ़ जाएंगे कि संभालना मुश्किल होगा।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों का विवरण
27वीं मीटिंग, 7 मई 1947
प्रकरण 1, वैकल्पिक योजना

मेईविल ने बताया कि उस दोपहर हुई एक मीटिंग में राव बहादुर मेनन ने कहा कि यह बहुत संभव है कि मसविदा-घोषणा की योजना को जिन्ना अस्वीकार कर देंगे। इसलिए दूसरी योजना तैयार रखनी चाहिए, जिससे जिन्ना के सामने स्पष्ट विकल्प हों।

वाइसराय ने कहा कि जिन्ना की अस्वीकृति की संभावना वह हमेशा अपने दिमाग में रखते थे। लेकिन जिन्ना ने ऐसा कोई इशारा नहीं किया। जिन्ना और लियाकतअली के साथ मुलाक़ातों में वाइसराय ने गौर से देखा कि कहीं कोई ऐसा इशारा तो नहीं। लेकिन उनका उद्देश्य तो था आखिरी वक्त पर अस्वीकार करके लोगों को हैरान करना। और अपने इस उद्देश्य में वह निश्चय ही सफल हुए। शायद अस्वीकार करने का उनका एकमात्र कारण यह होगा कि मोल-तोल जारी रखकर वह शायद उस कटे-छटे पाकिस्तान से ज़्यादा कुछ पा सकें जो अभी उनको दिया जा रहा था। जिन्ना का असली उद्देश्य था कि ब्रिटिश भारत से न जाएं, और उन्होंने सोचा था कि प्लान को नामंजूर करने से अंग्रेजों का जाना ज़्यादा मुश्किल हो जाएगा।

वाइसराय ने बताया कि जिन्ना की आखिरी मिनट की अस्वीकृति का दूसरा संभावित कारण यह हो सकता है कि उन्होंने समझ लिया हो कि पश्चिमी पाकिस्तान व्यावहारिक नहीं होगा। कटे-छंटे पाकिस्तान की भयंकरता का सामना करने पर हो सकता है वह उससे निकलना चाहें। लेकिन यह संभव नहीं है। सुहरावर्दी ने वाइसराय को बताया था कि जिन्ना स्वतंत्र बंगाल के लिए सहमत हैं तो शायद उन्हें सिर्फ उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान से संतोष करना होगा। स्वतंत्र बंगाल के बारे में के० एस० राय[1] के विचार भी जाने गए। राय ने कुछ शर्तों पर अपना समर्थन दिया।

1. किरण शंकर राय, बंगाल के कांग्रेस नेता।

मगर राव बहादुर मेनन यह मानते थे कि जो शर्तें के० एस० राय रखेंगे वे सुहरावर्दी नहीं मानेंगे। उन्होंने उन सभी तरीकों की ओर संकेत किया जिनके द्वारा जिन्ना योजना का बहिष्कार कर सकते थे। वह अपने अनुयायियों को यह आदेश देंगे कि वे प्रतिनिधियों के बटे हुए आधे अधिवेशन में न जाएं प्रांतों के भविष्य पर वोट देने के लिए, और संविधान-सभा में बैठें। राव बहादुर मेनन की राय थी कि मुस्लिम लीग अपने अध्यक्ष की बात ज़रूर मानेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाइसराय ने कहा कि ऐसी स्थिति में वह योजना को लेकर आगे बढ़ सकते थे और अल्पसंख्यक कांग्रेस से कह सकते थे कि वह वोटर लाए और उन प्रांतों या अर्ध-प्रांतों में संविधान-सभाएं और मंत्रिमडल बनाएं जहां मुस्लिम लीग बहिष्कार करे। जिन्ना को भी पता चल जाएगा कि उनका खेल दोनों खेल सकते हैं। लेकिन इससे खून-खराबा होगा और जनता की इच्छानुसार भारत को सौंप जाने का अंग्रेज़ सरकार के आशय के अनुकूल नहीं होगा। इसलिए बेहतर होगा कि एक वैकल्पिक योजना रखी जाए जिसमें चालू संविधान के अंतर्गत अधिकार का त्याग भी शामिल होगा। उस योजना के लिए भारतीय नेताओं की सहमति नहीं चाहिए। प्रांतीय विषय प्रांतीय सरकार के और केन्द्रीय विषय केन्द्रीय सरकार तक सीमित रहेंगे। भारतीय नेताओं से प्रस्तावित मुलाकात से एक दिन पहले एक विकल्प के साथ जिन्ना से मिलने का उनका इरादा था। उनका ख़याल था कि इतने स्पष्ट विकल्प से शायद जिन्ना का मसविदा-घोषणा मान लेना ज्यादा मुमकिन होगा।

स्कॉट की राय थी कि अगर तब भी जिन्ना अस्वीकार कर दें तो उनके फैसले को अंतिम न माना जाए। विश्व-प्रचार की रोशनी में मुस्लिम लीग कार्य-समिति के सामने दोनों विकल्प रखे जाएं। बंगाल और पंजाब में शायद मुस्लिम लीग सत्ता में आएगी। इन प्रांतों के महत्त्व और मोल-तोल करने की क्षमता होने के कारण कांग्रेस और लीग के सम्बन्ध आप ही एक स्तर पर पहुंच जाएंगे और दोनों पार्टियों को करीब आना पड़ेगा।

प्रकरण 2 : भारत का कॉमनवेल्थ में बने रहना

वाइसराय ने कहा कि अगर चालू संविधान के अंतर्गत सत्ता के त्याग की योजना काम में आती है तो उसको डोमिनियन स्टेटस के साथ जून 1948 से पहले लागू किया जा सकता है। लेकिन किसी भी स्थिति में उस तारीख के छः महीना पहले भारत को डोमिनियन या इसके बराबर का दर्जा देना बेहतर होगा। लेकिन फिर यह व्यवस्था करनी होगी कि अंग्रेज़ सेना सीधे गवर्नर-जनरल के अधीन रहे।

वाइसराय ने इस पर जोर दिया कि अगर जून 1948 के पहले ब्रिटिश पूरी तरह से भारत से चले गए और अपने पीछे घोटाले की हालत छोड़ गए, जो मौजूदा हालात में होगी ही, तो सारी दुनिया उनकी निंदा करेगी। आगे बातचीत में राव बहादुर मेनन ने यह दलील दी :

(अ) सर चंदूलाल त्रिवेदी ने भारत के कॉमनवेल्थ में बने रहने के बारे में पटेल से बात की। राव बहादुर की राय थी कि अगर वाइसराय पटेल या नेहरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
से इस बारे में पूछें तो उन्हें उत्तर 'हां' में मिलेगा।

(ब) सर चंदूलाल त्रिवेदी ने कहा कि 'राज-सम्राट' को 'सम्राट' छोड़कर सिर्फ 'भारत का राजा' बन जाना चाहिए। साम्राज्य शब्द पर कई भारतीयों को आपत्ति थी।

इस पर वाइसराय ने कहा, 'दोनों देशों के भावी सम्बन्ध कैसे होंगे इसमें शब्दों का नहीं तत्त्व का महत्त्व होगा। साम्राज्य या डोमिनियन का ज़िक्र ही ग़लत होगा। भारत को शायद 'स्वतंत्र देशों के ब्रिटिश कॉमनवेल्थ' (या एसोसिएशन) का सदस्य कहा जा सकता है।'

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट
रिपोर्ट नं० 7, 15 मई 1947

मैंने नेहरू से कहा कि आप हमारे मेहमान बनकर आइए, क्योंकि वह काम के बोझ से बेहतर थक गए थे। वह हमारे साथ चार दिन रहे। हमारी बहुत अच्छी दोस्ती हो गई उनके साथ, और मुझे विश्वास है कि चाहे जो कुछ हो, यह दोस्ती सच्ची है और बरकरार रहेगी।

2. इस्मे, जो योजना लेकर लन्दन गए थे उस पर कैबिनेट ने जिस तेज़ी से काम किया उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। योजना का नया मसविदा पहले से बेहतर था। उसके आने के बाद मैंने आखिरी प्रक्रिया के बारे में बात करने के लिए स्टाफ़ की मीटिंग बुलाई। मेरा मन कह रहा था कि नेहरू के साथ हुई अपनी नई दोस्ती का फ़ायदा उठाकर मसविदे पर उनकी निजी राय भी जान लेनी चाहिए। स्टाफ़ इसके पक्ष में नहीं था क्योंकि यह हमारे पहले के इस निर्णय के खिलाफ होता कि पांचों नेता मसविदा एक साथ देखेंगे। लेकिन एस० ई० ए० सी०[1] के अनुभवों ने मुझे सिखाया था कि मन जो कहे उसपर अमल करना चाहिए। इसलिए नेहरू जब सोने लगे तब उन्हें मसविदा पढ़ने को दिया इस विश्वास पर कि एक मित्र के नाते वह मुझको बताएंगे कि उनकी समझ में 17 मई को इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

3. अगले दिन मैं पंजाब के गवर्नर से बात कर रहा था कि नेहरू का खत मुझे मिला। वह खत क्या था, बम का गोला था। मैंने फौरन तार के ज़रिए लन्दन को बताया और उस पत्र की हर प्रति इस रिपोर्ट के साथ लगा रहा हूं रिकार्ड के लिए। बाकी का सारा दिन मैंने नेहरू की आपत्तियां ढूंढ़ने समझने में लगा दिया।

4. इतना लिखने के बाद मुझे प्रधानमंत्री का तार मिला कि मैं लंदन जाकर उनसे परामर्श करूं। अगले कुछ दिन मैं इसी कोशिश में गुजारूंगा कि पार्टी के नेता इस संशोधित योजना को मान लें। इस दौरान मैं डोमिनियन स्टेटस के कुछ पहलुओं पर भी उनसे बात करूंगा।

---

1. साउथ-ईस्ट सर्विस कमाण्ड

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta Foundation, Chandigarh

संलग्न संख्या 1) वाइसराय के नाम पंडित नेहरू का पत्र
11 मई 1947

कल रात आपने मुझे प्रस्ताव देखने का मौका दिया और एक मित्र की हैसियत से मेरी राय जाननी चाही। मुझे विश्वास है कि आप भारत को जल्द से जल्द स्वतंत्र कर देना चाहते हैं। आपको बेहतर जानने का मौका मुझे मिला है और मैं आशा करता हूं कि एक-दूसरे को बेहतर जान-समझ लेने के बाद हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति में एक-दूसरे के सहायक होंगे।

मैंने मसविदा-प्रस्तावनाओं को अच्छी तरह पढ़ा और कोशिश की कि जहां तक हो सके उससे सहमत होता चलूं। लेकिन अपनी सद्भावना के बावजूद मेरी प्रतिक्रिया बड़ी तीखी रही। **उस योजना ने मेरे ऊपर घातक असर छोड़ा है।** एक साधारण-सा प्रस्ताव हमने सोचा था और आप लोगों ने कितना खराब मतलब दे दिया है। हमारा जो अभिप्राय था उसको उलट कर रख दिया है। **इससे भारत की जो तस्वीर उभरती है उसने मुझे भयभीत कर दिया है।** जो कुछ हमने किया था उसे धो-पोंछ दिया है, कैबिनेट-मिशन की योजना और उसके बाद के विकास को भी अलग रख दिया गया है। एकदम नई तस्वीर सामने रख दी गई है—**विखण्डन, संघर्ष और अव्यवस्था की तस्वीर, जिसमें भारत और ब्रिटेन के सम्बन्ध खराब होने की सम्भावना भी है।** मुझे विश्वास है यह आपकी इच्छा नहीं हो सकती। मैं यह भी नहीं मान सकता कि अंग्रेज़ सरकार ऐसा चाहती है। यह सरकार एकान्त में बैठकर भारत की वास्तविकता को नजरअन्दाज़ करके काम करेगी, कुछ अनुमानों पर आगे बढ़े हैं जिनका यथार्थ से कोई वास्ता नहीं। उन्होंने भारतीय परिस्थिति की मूल सत्य की ही उपेक्षा कर दी है।

अगर मेरी प्रतिक्रियाएं इतनी सख्त हैं तो आप सोच सकते हैं बाकी लोग क्या सोचेंगे? अगर अभी भारत और ब्रिटेन की मित्रता का प्रवाह बांध बनाकर मोड़ दिया गया हो अनर्थ हो जायेगा।

मैंने इन आजमायशी प्रस्तावों पर एक नोट लिखा है जो चाह कर भी संक्षिप्त नहीं हो सका। जैसे ही वह तैयार हो जाएगा मैं आपको दूंगा। तब तक यह खत भेज रहा हूं ताकि आपको पता लग सके कि मैं उन प्रस्तावों से कितना परेशान हो गया हूं। मुझे विश्वास है, सारे देश में इसका विरोध किया जाएगा।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों के विवरण

* * *

21वीं मीटिंग, 12 मई, 1947

प्रकरण 2 : पंडित नेहरू की योजना

वाइसराय ने पंडित नेहरू के साथ उस योजना पर विमर्श किया जिसमें डोमिनियन स्टेटस के आधार पर सत्ता को अंतरिम सरकार तक सीमित रखने की बात थी। यह योजना, उस वैकल्पिक योजना से काफ़ी मिलती-जुलती थी जिससे वाइसराय, जिन्ना को डब्ल्यू० ई० योजना अस्वीकृत करने पर धमकाना चाहते थे।

वाइसराय ने कहा, डोमिनियन स्टेटस के आधार पर सत्ता के हस्तान्तरण में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सबसे मुश्किल समस्या सेना के नियन्त्रण की होगी। कांग्रेस का प्रस्ताव था कि पूरी सेना का पूरा नियन्त्रण, उन्हें कुछ विषयों को छोड़कर जिसका नियन्त्रण संयुक्त रक्षा समिति करेगी, दे दिया जाए।

पंडित नेहरू ने काफी ज़ोर देकर अपना मत प्रकट किया कि वाइसराय या अंग्रेज़ भारत के लिए स्वीकार योग्य हल नहीं ढूंढ़ पाएंगे। अगर उन्होंने कोई निर्णय लिया और बाद में खून-खराबा हुआ तो सारा दोष उन्हीं पर मढ़ा जाएगा। भारत-ब्रिटेन सम्बन्ध भी खराब होंगे। नेहरू चाहते थे कि ऐसी हालत में दोष भारतीय अपने सर लें। अगर सत्ता अंतरिम सरकार को दे दी जाती है तो वह मुस्लिम लीग को हर तरह का आश्वासन देने को तैयार हैं। तब उत्तर-पश्चिमी सीमा और सीमा कमीशन के बारे में जनमत के प्रस्ताव पर भी अमल किया जा सकेगा।

वाइसराय ने कहा कि उनकी राय में उनकी योजना ज़्यादा स्वीकार योग्य लगेगी अगर पूरे ब्यौरे के साथ पेश की जाए—राजधानियों का चुनाव भी। सरकार के दफ्तरों के लिए शिमला उनको उधार दे दिया जाए। और चालू तंत्र के साथ लाहौर प्रांतीय सरकार की सीट बन जाए। अस्थाई रूप से पश्चिमी पंजाब को संयुक्त प्रांत से मिला दिया जाए। पश्चिमी बंगाल की सरकार कलकत्ते में होगी। पूर्वी बंगाल की राजधानी ढाका या चटगांव हो सकती है।

सर एरिक मेईविल और स्कॉट दोनों ने कहा कि इसकी कोई आशा नहीं है कि डब्ल्यू ई प्लान की बनिस्बत जिन्ना इसको ज़्यादा पसंद करेंगे।

●●●

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों के विवरण

34वीं मीटिंग, 31 मई 1947

प्रकरण 7 : जिन्ना

कैबिनेट कमेटी की एक मीटिंग में स्टेफोर्ड क्रिप्स ने कहा था कि अगर जिन्ना के असहयोग का डर हो तो उन्हें धमकी दी जा सकती है कि विभाजन सिखों के पक्ष में होगा। इस्मे ने कहा इससे तो योजना के आधार को आघात पहुंचेगा और जिन्ना को भुलावे में नहीं रखा जा सकता। दूसरी सम्भावना यह हो सकती है कि जिन्ना से कहा जाए कि अगर उत्तर-पश्चिम सीमाप्रांत में मुस्लिम लीग झगड़ा करवाती है तो वहां जनमत संग्रह गवर्नर-जनरल नहीं, प्रांतीय सरकार करेगी। इस्मे सहमत थे कि इस तरह उन्हें धमकाया जा सकता है, लेकिन एवेल ने कहा कि जिन्ना को धमकी नहीं देनी चाहिए।

वाइसराय का मत था कि जिन्ना पर हावी होने का ज़्यादा अच्छा तरीका यह होगा कि उन्हें जताया जाए कि हमारे दिल को चोट पहुंची है, इस पर सब सहमत थे।

वाइसराय ने यह भी कहा कि वह जिन्ना को चर्चिल का संदेश देनेवाले हैं कि योजना को स्वीकार करना या न करना उनके लिए ज़िंदगी और मौत का सवाल होगा। जिन्ना को अपनी कार्य समिति के सामने यह संदेश दोहराने की इजाजत दे सकते हैं बशर्ते वह इसे अखबारों में न दें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
वाइसराय ने जिन्ना को धमकाए बगैर योजना को स्वीकार करवाने का निर्णय किया। यह भी फैसला कर लिया कि वह उन्हें बताएंगे कि उनके हाल के वक्तव्य ने उन्हें कितनी परेशानी में डाल दिया और उसी समय चर्चिल का सदेश भी दे दें।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट
●●● 8 वीं रिपोर्ट, 5 जून 1947

12. सोमवार, 2 जून को दस बजे सुबह मेरे अध्ययन कक्ष में भारतीय नेताओं की पहली मीटिंग हुई। उसमें कांग्रेस के नेहरू, पटेल, कृपलानी, मुस्लिम लीग के जिन्ना, लियाकत, और निश्तर[1], सिखों के नेता बलदेव शामिल हुए।

हम लोग एक छोटी मेज़ के गिर्द बैठे थे। इस्मे, मेईविल और मेरा अधिवेशन सचिव ठीक मेरे पीछे थे। वातावरण में तनाव था। मुझको लगा, नेतागण जितना कम बोलें उतना ही अच्छा होगा। आरंभ तनाव से ही हुआ लेकिन बाद में माहौल कुछ मित्रतापूर्ण, कुछ आशाजनक हो आया। खासकर जब मैंने सरकार और विपक्ष की सहायता की खबर दी।

13. मैंने नेताओं से कहा, अपने जवाब मुझे आधी रात से पहले दे दें। और बलदेव ने पत्र भेजने का वायदा किया, जिन्ना ने कहा वह अपनी कार्यसमिति से सलाह करके मुझसे ग्यारह बजे रात को मिलेंगे। मैंने जिन्ना को मीटिंग के बाद रोक लिया क्योंकि यह उचित लगे कि मैं गांधी से अकेले मिलने वाला था। (गांधी कांग्रेस नेताओं के साथ मेरे पास कभी नहीं आए।) मैं यह भी बता देना चाहता था कि लीग के 'न' कहने का कोई सवाल नहीं उठता था।

14. 24 मई को जब गांधी लौटे तब से उन्होंने नई योजना के विरोध में प्रचार शुरू किया। साल-भर पहले मुझे यह बताया गया था कि कैबिनेट-मिशन-योजना की अस्वीकृति के पीछे गांधी का हाथ था। अब वह उसी योजना को देश पर थोपने की कोशिश कर रहे थे। वह महात्मा हो सकते हैं लेकिन ट्राटस्की के अनुयायी लगते हैं। मुझे मालूम हुआ कि परिणामस्वरूप कांग्रेस कार्य-समिति की मीटिंग काफी रूखी हो गई थी। वे आशंकित थे कि गांधी से मेरी क्या बात होगी। सोचिए, मेरी खुशी ! जब वे अपने मौन-दिवस का संकेत करते हुए कमरे में आए तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था।

15. 45 मिनट तक मैं उन्हें समझाता रहा कि किसी समुदाय की इच्छा के विरुद्ध कैबिनेट-मिशन-योजना क्यों लागू नहीं होती। नई योजना के प्रति उनका विरोध कम करने की कोशिश भी की। इस्तेमाल किए लिफ़ाफ़ों के पीछे उन्होंने

---

1. अब्दुर रब निश्तर, अंतरिम सरकार में संचार के सदस्य, बाद में पाकिस्तान सरकार में संचार मंत्री।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्भावना पूर्ण नोट लिख कर दिए और फिर से उ० प० सी० प्रां० से केरो[1] को हटाने का अनुरोध किया। यह अनुरोध नेहरू और उ० प० सी० प्रां० के प्रधानमंत्री ने भी किया।

17. मैंने कमाण्डर-इन-चीफों और आर्मी-कमाण्डरों को भी इस पार्टी में आमंत्रित किया था। उसके बाद उन्हें डिनर दिया। फिर उन्हें योजना दी। अन्तरिम काल में कानून और व्यवस्था बनाए रखना और नैतिकता खोए बिना सेना के विभाजन पर बातचीत की। इस योजना ने सबको (आकिनलेक को छोड़कर) आश्चर्य में डाल दिया और उन्होंने इसे समस्या का सम्भावित हल मानकर स्वीकार लिया।

18. उस रात 11 बजे जिन्ना आए। आधे घंटे तक वह अपनी कार्यसमिति का प्रान्तों के विभाजन का विरोध बताते रहे। उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेज़ सरकार अगर यह निन्दाजनक कदम उठाएगी तो कार्यसमिति यह आशा करती है कि ठीक जनमत-संग्रह द्वारा कम से कम बंगाल की अनुसूचित जातियों के प्रति न्याय होगा। मैंने उन्हें याद दिलाया, सुबह की मीटिंग में जनमत के विरुद्ध गवर्नर द्वारा दिए गए कारणों का मैंने स्पष्टीकरण कर दिया था, किसी भी हालत में मैं इस छपी हुई योजना में संशोधन की बात तब तक नहीं सोचूंगा जब तक सारी पार्टियां उस पर सहमत नही होंगी।

19. मैंने उनसे सीधा सवाल किया कि उनकी कार्य-समिति योजना स्वीकार करेगी या नहीं। उन्होंने कहा, 'उम्मीद है···।' मैंने पूछा, वह स्वयं करेंगे या नहीं। उन्होंने कहा, वह मुझे अपना व्यक्तिगत समर्थन देंगे और उसकी पूरी कोशिश करेंगे, मुस्लिम लीग कौंसिल भी उसे मान ले। यह भी बताया कि उसके लिए उन्होंने अगले सोमवार को एक आवश्यक मीटिंग बुलाई है। मैंने उन्हें सूचित किया कि मैं प्रधानमंत्री को घोषणा करने के लिए कहने जा रहा हूं तो उन्होंने बड़ी दृढ़ता से 'हां' किया। इस्मे और मुझे लगा कि इससे ज़्यादा उनकी स्वीकृति काउंसिल की मीटिंग से पहले नहीं मिल सकती।

20. जिन्ना के जाने के थोड़ी देर बाद कृपलानी का पत्र आया। वह पत्र काफी लम्बा था। उसकी प्रति लन्दन भेज दी गई है। हालांकि उसमें कुछ आपत्तियां और मानसिक प्रतिबन्ध (Reservations) थे, फिर भी पूरी कांग्रेस कार्य-समिति की ओर से स्वीकृति भी थी, इस शर्त के साथ कि पन्द्रह दिन के अन्दर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अनुसमर्थन मिल जाएगा।

21. मंगल की सुबह बलदेव सिंह का पत्र आया जिसमें सिक्खों की ओर से सीमा कमीशन के बारे में कुछ आपत्तियां थीं, मगर योजना की स्वीकृति भी थी।

1. सर ओलोफ़ केरो, उ० प० सी० प्रां० के गवर्नर।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

22. कांग्रेस द्वारा उठाई गई दो आपत्तियों पर विचार करने के लिए सुबह-सुबह मैंने स्टाफ़ मीटिंग बुलाई। वी० पी० मेनन को पटेल से मिलने भेज दिया और नेहरू को साढ़े नौ बजे, मीटिंग से पहले मिलने का निमंत्रण दिया।

23. इन दो मुद्दों पर नेहरू के साथ जो पद्धति मैंने अपनाई, वह थी :

(अ) उ० प० सी० प्रां० के जनमत संग्रह में तीसरा विकल्प—स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस का अनुरोध तब तक नहीं माना जा सकता जब तक मुस्लिम लीग अपना समर्थन न दे दे। नेहरू भी यह बात मान गए। मैंने यह भी कहा कि उन्हीं के अनुरोध पर 'बाल्कनीकरण' से बचने के लिए मैंने बंगाल और दूसरे प्रान्तों की स्वतंत्रता की बात हटा ली थी। मैंने आश्चर्य प्रगट किया कि इस चालबाजी में वह भी शामिल हैं। इसलिए और भी कि उन्होंने स्वीकार किया था कि वह प्रांत अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता और अंत में उसे किसी न किसी से जुड़ना ही होगा।

(ब) नये पैराग्राफ बीस के आखिरी वाक्य की कड़ी प्रतिक्रिया रही। वह वाक्य था...भारतीय संविधान-सभा के यह निर्णय लेने के अधिकार में कोई फर्क नहीं आएगा कि जिस क्षेत्र पर उनका अधिकार है वह कालांतर में ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में रहे या न रहे।

यही वह वाक्य था जिसके लिए मैंने लंदन में सोचा था कि इससे गड़बडी पैदा होगी।

नेहरू ने कहा कि मेरी या हिज़ मैजेस्टी की सरकार की ईमानदारी में उनको संदेह नहीं लेकिन यह वाक्य इस बात की ओर इशारा करता है कि भारत कॉमनवेल्थ छोड़ भी दे तब भी पाकिस्तान को उसमें रहने दिया जाएगा।

मैंने कहा था कि इससे तो यह जाहिर होता है कि दोनों देशों को जब चाहें अलग हो जाने की इजाजत थी। नेहरू ने कहा, 'मगर सब लोग यह जानते हैं; आप उनका ध्यान इस ओर क्यों खींचना चाहते हैं कि एक अलग हो जाए तो भी दूसरा रह सकता है?' मैंने कहा यह हमारी ईमानदारी थी। वह बोले, 'अगर हिन्दुस्तान अलग हो जाए तो पाकिस्तान को साम्राज्य में बनाए रखने में अंग्रेज सरकार का हाथ नहीं होना चाहिए।' मैंने समझाया कि अंग्रेज़ सरकार कॉमन-वेल्थ नहीं चलाती, कि उसमें हर राज्य बराबर का, स्वतंत्र हिस्सेदार है। उनके लिए पाकिस्तान को निकालने का एक ही रास्ता था कि हिन्दुस्तान के अलग होते ही उनसे भी अलग होने पर जोर दिया जाए, या कॉमनवेल्थ अधिवेशन में इस प्रश्न को उठाकर दूसरे डोमिनियनों को इस तरीक़े पर राजी कर लिया जाए। आखिर में मैंने कहा, इस तरह का विवादपूर्ण विषय मैं जिन्ना के सामने नहीं रखूंगा, जिससे वह बौखला जाएंगे। उसके बाद हम लोग मीटिंग में चले गए।

24. एक बार फिर मैंने इस मीटिंग में नेताओं को बोलने नहीं दिया और बारी-बारी उनके लिए खुद बोला। जैसी अपेक्षा थी, इस योजना के भिन्न-भिन्न मुद्दों पर तीनों पार्टियों ने आपत्तियां कीं। चूंकि मुझे मालूम था कोई भी सुझाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार्टियों को पसन्द नहीं आएगा इसलिए इस मीटिंग में मैंने उन्हें उठाया ही नहीं। सारे नेताओं की सहमति मैंने मांगी जो मुझे मिल गई।

25. जैसे ही लगा कि पर्याप्त समर्थन मुझे मिल गया है मैंने अपने निर्णय की घोषणा कर दी। मेरे स्टाफ़ द्वारा तैयार किये हुए निबंध 'विभाजन के प्रशासनिक परिणाम' की प्रतियां मेज़ पर रख दीं। इससे जो धक्का लोगों को पहुंचा, अगर दुखद न होता तो मनोरंजक होता। बृहस्पतिवार को एक और मीटिंग की व्यवस्था करके मैंने मीटिंग समाप्त कर दी।

प्रकरण 14 : विभाजन के प्रशासनिक परिणाम

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 8, जून 1947**

(31)···आज सुबह 'विभाजन के प्रशासनिक परिणाम' पर सलाह करने के लिए मैंने भारतीय नेताओं से तीसरी मुलाक़ात की। चूंकि राजनीतिक भाषण देने के लिए सभी उत्सुक थे इसलिए हमारी प्रगति काफ़ी धीमी रही। जिन्ना ने यह जताने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि विभाजित हिस्से स्वतंत्र और हर तरह से बराबरी के दर्जे पर रहेंगे। नेहरू ने कहा, भारत जैसा चल रहा है वैसे ही चलेगा और जिन प्रान्तों को अलग होना है उनके अलग होने से न सरकार का काम रुकेगा न विदेश नीति बदलेगी।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

रिपोर्ट नं० 9, 12 जून, 1947

पिछला सप्ताह मैंने भारतीय नेताओं के साथ 'विभाजन के प्रशासनिक परिणाम' पर बात करके बिताया। इस दौरान 3 जून की अंग्रेज सरकार की घोषणा की प्रेस-प्रतिक्रिया इस देश में अनुकूल रही। देश में किसी दंगे-फसाद का जिक्र भी नहीं सुना गया।

2. पिछले हफ्ते मुझे आखिर में सूचना मिली की गांधी उदास और भावुक मनःस्थिति में हैं। कुछ अंग्रेज नेताओं को डर था कि अपनी अगली प्रार्थना-सभा में वह इस योजना की भर्त्सना करेंगे। मैंने उन्हें प्रार्थना-सभा में जाने से पहले अपने पास बुलाया। वह वाक़ई उदास थे। उन्होंने बातचीत की शुरूआत ही इस तरह से की, कि मैंने उनके ज़िन्दगी भर के किये-धरे पर पानी फेर दिया है।

●●●

5. गांधी से मिलकर उसी आधार पर बात करने को मैंने वी० पी० मेनन को कहा। उन्होंने रिपोर्ट दी कि मेरी बात का गांधी पर काफी असर हुआ है, वह अब, यह समझ गए हैं कि मैंने पूरी ईमानदारी के साथ उनकी सलाह मानने की कोशिश की है। इस तरह भारत का भविष्य दढ़ाने में उनका काफ़ी हाथ रहा है जो पहली नज़र में योजना से स्पष्ट न होता।

6. अंग्रेज सरकार के वक्तव्य ने देश में फैले तनाव को काफी कम कर दिया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक दंगों का खतरा मिट गया है। मगर, गुड़गांव के आसपास की स्थिति फिर भी असन्तोषजनक है। लाहौर और अमृतसर में भी अभी अव्यवस्था है पर बड़े पैमाने पर नहीं। बंगाल से मिली बरोज़ की रिपोर्ट के अनुसार कलकत्ता काफी शांत है।

●●●

8. सोमवार, 9 जून को आल इण्डिया मुस्लिम लीग काउंसिल ने गुप्त रूप से एक मीटिंग की है। उस मीटिंग में जो निर्णय लिए गए, मुझे ठीक लगे हैं। पटेल ने इस अधिवेशन की एक लिखित प्रति मुझे भेजी है जो उन्हें एक कांग्रेसी भेदिए ने दी थी। मैं इस प्रस्ताव की एक प्रति संलग्न कर रहा हूं। मैंने जिन्ना से कहा था कि मीटिंग में पेश करने से पहले वह मसविदा मुझे दिखा लें लेकिन उन्होंने कहा कि मीटिंग के दौरान ही उसकी रूपरेखा बनेगी, अभी उन्हें खुद कुछ नहीं मालूम।

9. मैंने यह तो नहीं सोचा था कि प्रस्ताव की शब्दावलि अलग होगी, जब यह प्रस्तुत, किया गया तब कांग्रेस प्रेस में हंगामा हो गया। नेहरू और पटेल ने विरोध-पत्र पेश किए। उन्हें डर था कि अगर इस योजना को समझौते के रूप में स्वीकार कराने की घोषणा में लीग असफल रहती है तो उनके लिए अखिल-भारतीय कांग्रेस-समिति को सम्भालना मुश्किल हो जाएगा।

10. विभाजन काउंसिल की तरह प्रशासनिक तैयारियों के लिए जो कैबिनेट-समिति मैंने बनाई थी, आज उसकी मीटिंग के बाद मैंने लियाकत-अली खां और पटेल को खुली बातचीत के लिए रोक लिया। पटेल ने स्पष्ट कहा कि पहले जब तक जिन्ना लिखित रूप में अपनी सहमति नहीं देंगे तब तक कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में क्या होगा इसकी गारंटी मैं नहीं मैं दे पाउंगा क्योंकि उनका प्रस्ताव तभी माना जाएगा जब 'मुस्लिम लीग काउंसिल भी इसे स्वीकार ले।' लियाक़तअली ने विरोध किया कि 'जब लीग ने कैबिनेट मिशन योजना स्वीकार करली थी तब कांग्रेस ने इसे नकार दिया था। उसने इतनी शंकाएं सामने रखी थीं कि लीग को अपनी स्वीकृति वापस लेनी पड़ी···अब वह फिर से इस तरह की तिकड़मबाज़ी में नहीं पड़ना चाहते।'

11. समझौते के तौर पर मैंने सुझाव दिया कि जिन्ना मुझे एक पत्र लिखें कि अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने उन्हें योजना को समझौते के रूप में स्वीकार करने का अधिकार इस शर्त पर दिया है कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति भी इसे उसी उत्साह से स्वीकार करले। लियाक़तअली खां जिन्ना को यह समझाने चले तो गए लेकिन ऐसे किसी खत पर जिन्ना दस्तखत करेंगे इसपर उन्हें सन्देह था। मैंने लियाक़तअली से कहा कि 'अगर जिन्ना दस्तखत करने से मना करें तो उन्हें मुझसे मिलने को कह दीजिएगा'। छः बजे शाम को वह आए और कांग्रेस से पहले दस्तखत करने से उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया। अपने ऊपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दायित्व लेते हुए मैंने एक बार फिर कांग्रेस के अध्यक्ष के नाम पत्र लिखा। मुझे उम्मीद है कि वह पत्र अपनी कागुज़ारी दिखाएगा।

12. पिछले हफ्ते की मेरी कैबिनेट मीटिंग बड़ी मुश्किल रही। मेरे इस प्रस्ताव पर कि ऊंचे अधिकारियों की नियुक्तियां और नीति-निर्धारणों को तब-तक रोक लिया जाए जब तक दोनों सरकारें चुनी नहीं जातीं, बड़ी गड़बड़ी हुई। किसी भी आवश्यक नियुक्ति या काम की रिपोर्ट कैबिनेट को मिल जानी चाहिए। मुस्लिम लीग ने कुछ अनुचित नियुक्तियां की थीं, आगे चलकर जिनमें से अधिकांश कांग्रेस के हिस्से में आतीं। कांग्रेस इस बात से काफ़ी रुष्ट थी। दोनों पक्षों ने इस शर्त के साथ मेरा सुझाव मान लिया कि कैबिनेट के सामने जो बात रखी जाएगी उसका निर्णय बहुमत से नहीं होगा क्योंकि इससे कांग्रेस सभी नियुक्तियों और हर विभाग की उच्चस्तरीय नीतियों को अपने हाथ में ले लेगी। मैंने कहा कि इससे बचाव का एक ही रास्ता है कि दोनों सरकारों में नियुक्ति का अधिकार दोनों पार्टियां मुझे दे दें, इस विषय पर बहुमत से निर्णय नहीं लिया जाएगा। यह सुझाव भी दोनों पक्षों ने मान लिया।

13···फिर नेहरू ने कहा कि उनके पास कुछ राजदूतों की नियुक्तियां थीं जिनपर मंजूरी बाक़ी थी। कैबिनेट के सामने इन्हें रखने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। उन्हें विश्वास था कि मैं कह दूंगा कि उन नियुक्तियों का सम्बन्ध पाकिस्तान से नहीं है। लियाक़त ने इस पर आपत्ति करते हुए कहा, कि ऐसा भी तो हो सकता है कि पाकिस्तान, रूस के लिए राजदूत नियुक्त करना ही न चाहे। नेहरू की बहन श्रीमती पण्डित को इस नियुक्ति के लिए चुना गया था। बाद में लियाक़त ने मुझे विश्वास दिलाया कि श्रीमती पण्डित का चुनाव इस पद के लिए हुआ है, यह बात उन्हें मालूम नहीं थी। लेकिन जब नेहरू ने यह घोषणा की, कि सरकारी मामलों में वह लीग का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करेंगे और यह अनुरोध किया कि ऐसे मामलों पर बहुमत से निर्णय लिया जाएगा, उनकी यह कोशिश रहेगी कि लीग हर बार हार जाए। इस बात पर मीटिंग में हंगामा हो गया। लियाक़त ने इस बात का कड़ा विरोध किया। नेहरू ने इस बात पर कहा कि अगर सरकार लीग को सौंप दी जाती है तो वह खुद इस्तीफ़ा दे देंगे।

●●●

16. अगले दिन नेताओं से मेरी मुलाक़ात उतनी ही मुश्किल रही। जिन्ना ने कहा कि उनकी राय में एक्ज़ेक्यूटिव काउंसिल में (वह कैबिनेट को एक्ज़ेक्यूटिव काउंसिल ही कहते थे) इस विषय पर ठीक से विचार नहीं किया गया था। उनका कहना था कि सारी व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी ब्रिटिश सरकार या गवर्नर-जनरल की थी, अंतरिम सरकार की नहीं। इस बात पर जिन्ना और नेहरू के बीच काफ़ी कहा-सुनी हुई। अंत में मैंने जिन्ना से कैबिनेट के सामने रखा गया यह प्रस्ताव मनवा लिया कि एक समिति बनाई जाए जिसमें कांग्रेस और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मुस्लिम लीग के दो-दो प्रतिनिधि हों। ये चारों अंतरिम सरकार के सदस्य तो हों, पर इस समिति को कैबिनेट समिति न कहा जाए। मैंने खुद अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव रखा जो स्वीकार कर लिया गया।

17. उस समिति के लिए चुने गए कांग्रेस से सरदार पटेल और राजेन्द्र प्रसाद तथा लीग से लियाक़तअली खां और अब्दुर रब निश्तर।

इस समिति का कर्त्तव्य होगा विभाजन को अंजाम देने के लिए उचित तंत्र की स्थापना के सम्बन्ध में सुझाव देना, न कि कोई अंतिम निर्णय लेना।

18. आज सुबह इस समिति की पहली बैठक हुई जिसमें तय हुआ कि एक संचालन-समिति बनाई जाए जिसके सदस्य कैबिनेट सचिव एच० एम० पटेल, और सैनिक-अर्थ-विभाग के आर्थिक सलाहकार मोहम्मद अली हों। इस संचालन-समिति और उप-समितियों में सिर्फ़ सरकारी अधिकारी ही हों। पटेल और मोहम्मद अली आशा करते हैं कि 15 अगस्त से पहले असली विभाजन का काम भी काफ़ी हद तक पूरा हो जाएगा।

19. एक और बात जो तय हुई कि जब विभाजन के निर्णय का पता लग जाए (यानी जैसे ही कोई एक प्रांत यह घोषित कर दे कि वह नई और अलग संविधान-सभा में शामिल होने को राज़ी है) तब एक विभाजन-परिषद बनाई जाएगी जो इस संचालन-समिति का काम अपने हाथ में ले लेगी। परिषद में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के दो-दो नेता होंगे, चाहे वे अंतरिम सरकार के सदस्य हों या नहीं। मैं अध्यक्ष रहूंगा, किन्तु मध्यस्थ नहीं।

ब. भारत और कॉमनवेल्थ
वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों के विवरण
20 वीं मीटिंग, 22 अप्रैल 1947
प्रकरण 2 : ब्रिटिश कॉमनवेल्थ में भारत का बने रहना

वाइसराय ने कहा कि लगभग आधे भारत के प्रतिनिधियों ने ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के अंतर्गत बने रहने की इजाज़त मांगी। इनमें मुस्लिम लीग, अनुसूचित जातियां और कई रियासतें शामिल हैं।

यह सभी समझते हैं कि कॉमनवेल्थ में रहकर यह ब्रिटेन पर एहसान कर रहे हैं। वाइसराय ने जानना चाहा कि क्या निकट भविष्य में भारत को या उसके हिस्सों को किसी तरह का डोमिनियन स्टेटस देने की संभावना है। ऐसी अवस्था में प्रतिरक्षा-परिषद के अध्यक्ष गवर्नर-जनरल हो सकते हैं जिन्हें निर्णायक मत देने का अधिकार होगा। परिषद में हिन्दुओं और पाकिस्तान का एक-एक प्रतिनिधि होगा। ब्रिटिश फ़ौज गवर्नर-जनरल के व्यक्तिगत आदेशों के अधीन रहेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एवेल ने कहा कि पाकिस्तान सरकार को बनने में कम-से-कम साल-भर लग सकता है और यही इस सुझाव की सबसे बड़ी दिक़्क़त है।

लार्ड इस्मे ने कहा कि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जाना चाहिए कि ब्रिटिश सरकार कॉमनवेल्थ में रहने की पाकिस्तान की एक-पक्षीय अर्ज़ी मंज़ूर नहीं करेगी। अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जहां भारत का एक ही हिस्सा कॉमनवेल्थ में रहना चाहता हो तो ब्रिटिश सरकार इस तरह की अर्ज़ी पर विचार कर सकती है। एक भी पक्ष को कॉमनवेल्थ में न बनाए रखने की अपेक्षा इस तरह युद्ध को रोकने की संभावना ज़्यादा है।

वाइसराय ने कहा, कि वह सोच रहे थे कि कृष्ण मेनन के द्वारा नेहरू को सूचित करें कि पाकिस्तान और रियासतों ने कॉमनवेल्थ में बने रहने की इच्छा प्रकट की है, कि वह इन अनुरोधों को दबा नहीं सकते, और यह कि ब्रिटिश कॉमनवेल्थ की लोक-भावना इन अनुरोधों को अस्वीकार नहीं करेगी। जून 1948 से पहले, शायद जनवरी 1948 तक, संयुक्त या विभाजित भारत को डोमिनियम स्टेटस देने की योजना प्रमुख निर्णयों से जुड़ी योजनाओं के साथ जारी रखी जानी चाहिए।

लार्ड इस्मे के अनुसार जून 1948 के बाद भी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान शायद यह चाहें कि अंग्रेज़ गवर्नर-जनरल बना रहे।

वाइसराय ने कहा कि जो व्यक्ति इस पद पर होगा उसका काम बहुत मुश्किल होगा। क्योंकि वह सत्ता का केन्द्र दीखेगा तो लेकिन वास्तव में होगा नहीं। सभी दलों द्वारा ऐसा अनुरोध किया जाना दुनिया के सामने प्रतिष्ठा की बात होगी।

●●●

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों का विवरण
25 वीं मीटिंग, 3 मई, 1947
प्रकरण 6 : कॉमनवेल्थ में भारत का प्रतिरक्षण

कॉमनवेल्थ में भारत को रखने पर वाइसराय और उनके स्टाफ़ के वरिष्ठ सदस्यों ने विमर्श किया। वाइसराय ने निम्नलिखित मुद्दे सामने रखे :

(अ) जब तक भारतीय नेता इस विषय को खुद नहीं उठाते तब तक इस पर उनसे बातचीत की जाए।

(ब) संविधान-सभा ने सर्व सत्ताधारी गणतंत्र का प्रस्ताव पास किया था, मगर, चूंकि इस संविधान-सभा में सिर्फ़ कांग्रेस पार्टी के प्रतिनिधि थे, इसलिए यह प्रस्ताव पूरे ब्रिटिश-भारत पर लागू नहीं होता। अतः अब तक उसके कॉमनवेल्थ छोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठा।

(स) अगर भारत का एक या उससे अधिक भाग कॉमनवेल्थ में रहने की इच्छा प्रकट करता है तो इस स्थिति में क्या करना चाहिए इसका निर्देश वाइसराय को नहीं मिला था। उन्हें किसी ऐसी बहस में न पड़ने को कहा गया था जिससे भारतीय एकता को खतरा हो, जिसे हासिल करना उनकी सबसे पहली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
आकांक्षा और संकल्प होगा। यह प्रश्न ऊंचे स्तर की नीति से सम्बन्धित था जिस पर निर्णय ब्रिटिश सरकार ही ले सकती थी।

(द) अगर पाकिस्तान ही नहीं, कुछ बड़ी रियासतें (जैसे हैदराबाद, कश्मीर, मैसूर) भी कॉमनवेल्थ से न निकाले जाने की सार्वजनिक अपील करें तो इसकी कल्पना करना मुश्किल है कि कॉमनवेल्थ के दूसरे सदस्य उनको निकाल देने पर सहमत होंगे।

(ई) वाइसराय की निजी राय थी कि सिर्फ़ भारत के हिस्सों को कॉमनवेल्थ में रहने की इजाज़त देना ठीक नहीं होगा, लेकिन ब्रिटिश सरकार से किए गए इन अनुरोधों को हम रोक नहीं सकते।

वाइसराय ने कहा कि यह वह नहीं चाहते कि पाकिस्तान असाध्य रूप से साम्राज्य से बाहर हो जाए या उसके साथ जुड़ा रहे। यह स्थिति विनाशकारी होगी। हर बार कौशल से यही जवाब दिया जाए कि निर्णय भारतवासियों के हाथों में होगा।

लार्ड इस्मे ने वाइसराय से पूछा कि क्या सेनाध्यक्षों से यह अनुरोध किया जाए कि वे सैनिक दृष्टि से केवल भारत के हिस्सों को कॉमनवेल्थ में रखने की संभावना पर विचार करें। वाइसराय ने सहमति प्रगट की कि सेनाध्यक्ष यह काम बड़े गोपनीय ढंग से करें।

वाइसराय के अनुसार सबसे जरूरी यह था कि कोई भी ब्रिटिश मंत्री इस समय इस मामले में किसी प्रकार से वचनबद्ध न हो।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **29 वीं मीटिंग, 9 मई 1947**

प्रकरण 5 : कॉमनवेल्थ में भारत का बने रहना

●●●

(डी) भारत के कॉमनवेल्थ में रहने से ब्रिटेन को संभव लाभ।

सर एरिक मेईविल ने कहा कि कॉमनवेल्थ में रहने से भारत को प्रत्यक्ष फ़ायदे होंगे; जब कि ब्रिटेन के फ़ायदे उतने प्रत्यक्ष नहीं हैं। संभव है कि कॉमनवेल्थ में भारत तब तक रहे जब तक उसका संविधान बन नहीं जाता। मिसाल के तौर पर यह अवधि तीन साल तक की हो सकती है। इसके बाद संभव है कि मतदान हो और समाजवादी या साम्यवादी सरकार सत्ता संभाल ले और भारत कॉमनवेल्थ से बाहर हो जाए। पिछले दिन जो तार भेजा गया था उसमें भारत के कॉमनवेल्थ में असीमित समय तक बने रहने को 'स्पोर्टिंग-चांस' कहा गया था। क्या ब्रिटिश सरकार वह 'स्पोर्टिंग-चांस' लेने को तैयार होगी ?

वाइसराय ने कहा कि इसके ठोस फायदे ब्रिटेन को निम्नलिखित होंगे :

(i) सत्ता के शीघ्र हस्तांतरण से उसकी धाक जमेगी।

(ii) हस्तांतरण से मौजूदा जिम्मेदारियां खत्म हो जाएंगी।

(iii) कॉमनवेल्थ में रहने का भारत का अनुरोध ब्रिटेन की संसार की आंखों में प्रतिष्ठा बढ़ेगी और यह तथ्य ही सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(iv) ऐसा अनुरोध देश की नजर में भी वर्तमान ब्रिटिश सरकार का यश बढ़ाएगा।

(v) साम्राज्य-रक्षा की दृष्टि से कॉमनवेल्थ में भारत का होना विश्वव्यापी रणनीति के ढांचे में ठीक बैठता है। तटस्थ भारत एक खाई पैदा करेगा जिससे बड़े पैमाने पर समस्याएं उपजेंगी, विरोधी भारत का मतलब आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड का ब्रिटेन से एकदम कट जाना होगा।

वाइसराय ने यह भी कहा कि तीन साल के बाद भी भारतीय सेनाओं का पूरी तरह से राष्ट्रीयकरण नहीं हो पाएगा और उन्हें अंग्रेज अफसरों की ज़रूरत पड़ेगी।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों का विवरण
30 वीं मीटिंग, 10 मई, 1947
प्रकरण 1 : कॉमनवेल्थ में भारत का बने रहना

वाइसराय ने सुबह कृष्ण मेनन से इस विषय पर हुई बातचीत की चर्चा की। कृष्ण मेनन ने कहा कि उन्होंने ही सबसे पहले डोमिनियन स्टेटस के आधार पर सत्ता के शीघ्र हस्तान्तरण की बात की थी। इस योजना का एक फ़ायदा जो पंडित नेहरू को पसन्द आया था वह था कृष्ण मेनन का विश्वास कि वाइसराय रियासतों पर काफी दबाव डाल सकेंगे। मगर मुश्किल यह थी कि अगर नेहरू और पटेल इस योजना को मान भी लें तो बाकी कांग्रेस पार्टी को भी राज़ी करवाना होगा। कांग्रेस पार्टी हमेशा सावधान थी कि कहीं कुछ नेता ब्रिटेन के हाथ बिक न जाएं।

राव बहादुर मेनन ने कहा कि भारतीय नेता अपने बामपंथ के सामने तर्क रख सकते हैं कि डोमिनियन स्टेटस केवल एक अंतरिम व्यवस्था है। पटेल ने पहले ही एक वक्तव्य भेजा था जिसमें डोमिनियन स्टेटस के जल्दी देने की मांग की थी। राव बहादुर ने पिछली शाम उनसे टेलीफ़ोन पर बात की थी तब पटेल का यह विचार था कि नेहरू, वाइसराय से यह कहते हुए हिचकिचा रहे हैं कि चूंकि संविधान के बनने में बहुत समय लगना था, इसलिए इन्हें डोमिनियन स्टेटस स्वीकार होगा।

स. भारतीय सशस्त्र सेनाओं का बंटवारा
वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
चौथी मीटिंग, 28 मार्च, 1947
प्रकरण 7 : भारतीय सशस्त्र सेना

वाइसराय ने कहा कि पिछली शाम उन्होंने भारत के कमाण्डर-इन चीफ और सेना के कमाण्डरों को रात के खाने पर बुलाया। फील्ड मार्शल ऑकिनलेक ने कहा था कि भारतीय सेना का संतोषजनक बंटवारा होने में पांच-दस साल

लगेंगे। मुस्लिम लीग की घोषित नीति है कि उन्हें एकीकृत सेना नहीं चाहिए। लेकिन अगर सेना का विभाजन साम्प्रदायिक आधार पर हुआ तो गैर-मुसलमान पार्टियां ज्यादा शक्तिशाली होंगी। मुख्य कार्यालय ही नहीं, मुख्य रसद-गोदामों पर और अधिकांश अफसरों पर उनका कब्जा हो जाएगा। मुसलमानों को बहुत कम हिस्सा मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को वह जिन्ना के सामने रखेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लार्ड इस्मे ने कहा कि भारतीय सेना में एक भी यूनिट ऐसी नहीं थी जिसमें सिर्फ़ मुस्लिम हों जबकि अनेक ऐसी यूनिटें थीं जिसमें अन्य सम्प्रदाय वाले ही थे।

वाइसराय ने ज़ोर देकर कहा कि जो भी एकीकृत या कुशलतम विभाजित सेना को काबू में रखेगा वही भारत पर शासन करेगा। सशस्त्र सेनाएं—भारतीय नौ सेना और वायुसेना को छोड़ा नहीं जा सकता—मोल-भाव का सबसे बड़ा मुद्दा थीं। कैबिनेट-मिशन-योजना की शायद एक कमज़ोरी यह थी कि अगर फ़ौज को दंगे-फ़साद को दबाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा तो अल्पसंख्यक पार्टी पर केन्द्रीय सरकार की मज़बूत पकड़ हो जाएगी। कोई हल ढूंढ़ना होगा ताकि ऐसा न हो पाए। दोनों प्रमुख पार्टियों के बहुसंख्यक मत पर शायद आंतरिक रूप से सेना का इस्तेमाल किया जा सके। केन्द्रीय सरकार सेना की तैनाती के द्वारा अपना प्रभुत्व जमा सकती है, हालांकि स्थानीय तौर पर सेना प्रांतीय सरकार के अधीन होगी। ऐसा तो हो सकता है कि सेना की तैनाती पर पहले से सहमति हो जाए या ऐसा ही कोई और उपाय किया जा सकता है।

लार्ड इस्मे ने कहा कि मूल रूप से कोई भी उपाय कारगर नहीं होगा अगर दोनों पक्ष सहयोग नहीं करेंगे। अगर वे सहयोग करते हैं तो नियमों का कोई महत्त्व नहीं होगा। वाइसराय ने कहा, काफ़ी हद तक यह सच है, फिर भी बचाव के मुमकिन उपायों पर विचार किया जाए ताकि वे उन्हें जिन्ना के समक्ष रख सकें।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
11वीं मीटिंग, 8 अप्रैल, 1947
●●● प्रकरण 2 : भारतीय सशस्त्र सेना

एबेल ने वाइसराय को लियाक़तअली खां का एक ख़त दिया जो उसी दिन आया था। इस ख़त में इस बात का जिक्र था कि भारतीय सशस्त्र सेना में मुसलमान कम हैं। लियाक़त ने यह भी लिखा है कि सेनाओं को फ़ौरन इस तरह संगठित किया जाए कि समय आने पर पाकिस्तान-हिन्दुस्तान के बीच उनका बंटवारा आसानी से हो सके। इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन के लिए कमाण्डर-इन-चीफ सीधे वाइसराय के प्रति जिम्मेदार होगा न कि रक्षा-सदस्य के प्रति।

वाइसराय ने कहा कि यह ख़त पिछले दिन हुई जिन्ना से मुलाकात का सीधा परिणाम लगता है जिसमें पाकिस्तान के पक्ष में जिन्ना के तर्कों पर उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
असहमति नहीं प्रगट की थी क्योंकि अपना कोई मत देने के पहले वह खुले दिमाग से सभी पक्षों को सुन लेना चाहते थे। जिन्ना ने इसे उनकी सहमति समझा।

लार्ड इस्मे ने कहा कि लियाक़तअली खां के अनुरोध पर कोई कार्रवाई करना राजनीतिक मामले पर पूर्व-निर्णय लेना होगा। जब तक वाइसराय ब्रिटिश सरकार को रिपोर्ट नहीं करते तब तक कैबिनेट-मिशन-योजना पर अमल करना होगा कि एकीकृत भारत को सौंपना संभव नहीं होगा। इस योजना का इरादा एक राष्ट्रीय सेना का था। जब तक पाकिस्तान बनाने का निर्णय नहीं लिया जाता तब तक सेना के बंटवारे की बात भी नहीं सोची जा सकती। इस निर्णय पर अमल भारतवासियों को करना होगा। भावी हिंदुस्तान और पाकिस्तान के प्रतिनिधि एक समिति में मिलकर (जिसकी अध्यक्षता वाइसराय खुद करेंगे या किसी को नामज़द करेंगे) निर्णय करेंगे कि सेना का बंटवारा कैसे होगा। सेना के बंटवारे के प्रश्न के अतिरिक्त लियाक़तअली के पत्र में सेना के अफ़सर वर्ग में हिंदू-मुसलमान अनुपात की अस्थाई समस्या भी उठाई गई थी।

एवेल ने कहा कि कई बार कैबिनेट में भी मुसलमान सदस्य अनुपात का प्रश्न उठा चुके थे और अभी तक कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया गया था। सरदार बलदेव सिंह और कमांडर-इन-चीफ़ योग्यता के आधार पर तरक़्क़ी के पक्ष में थे और यह तरीक़ा हिंदुओं के पक्ष में जाएगा क्योंकि योग्य और कुशल अफ़सर अधिकतर हिंदू थे।

मेईविल ने कहा कि न केवल सबसे अच्छे अफ़सर हिंदू हैं, बल्कि अगर भारत का विभाजन होता है तो हिंदुस्तान के पास अधिकांश वर्तमान गोदाम, शस्त्रागार और शस्त्रों की फैक्टरियां होंगी, और अगर पाकिस्तान यों टुकड़ों में हुआ तब तो भारत का तो इस विषय में एकाधिकार होगा। ब्रिटिश सरकार का आदेश भी था कि तब तक वह सेना के बंटवारे के लिए राज़ी न हों। संभव है कि वह एक ऐसी समिति की स्थापना के लिए राज़ी हो जाएं जो विभाजन की योजना बनाए और ऐसे उपाय को ढूढ़े कि अंग्रेज़ों के चले जाने के बाद कोई एक-दूसरे के खिलाफ सेना का इस्तेमाल न कर सके। ऑकिनलेक या लार्ड इस्मे इस समिति के अध्यक्ष हो सकते हैं पर केवल हिन्दुस्तानियों के अनुरोध पर ही, हालांकि बेहतर यही होगा कि अध्यक्ष अंग्रेज़ न हो। आखिर हिन्दू और मुसलमान आपस में बातचीत कर सकते हैं क्योंकि इसका विकल्प यह भी हो सकता है मुसलमान सामूहिक रूप से सेना को त्याग दें जिससे अव्यवस्था पैदा हो जाएगी। तब दो अलग-अलग सुरक्षा-संगठनों का क्या फ़ायदा होगा ?

वाइसराय ने इस बात पर पूरी निष्पक्षता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया, और कहा कि मध्यस्थता के ऐसे कोई क़दम न उठाए जाएं जिनसे कानून और व्यवस्था में गड़बड़ी हो। जब तक वह खुद ज़िम्मेदार हैं तब तक एक कार्यकुशल सेना का होना आवश्यक है। वह इस बात के लिए तैयार थे कि अगर मुस्लिम लीग के सदस्यों द्वारा औपचारिक अनुरोध किया जाए तो वह कोशिश करेंगे कि कैबिनेट अफ़सरों में अधिक उचित अंतर साम्प्रदायिक अनुपात की व्यवस्था के

लिए राज़ी हो जाए। और एक ऐसा संगठन बनाया जाए जो सेनाओं के ऊपर कांग्रेस के पूर्ण अधिपत्य को रोक सके।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर एरिक मेईविल ने याद दिलाया कि ब्रिगेडियर करीअप्पा का अनुभव है कि सेना के भारतीयकरण के लिए पांच से दस साल तक का समय चाहिए होगा। अगर सेना बंट जाती है तो यह अवधि और कितनी खिंचेगी !

इस्मे के अनुसार अगर पाकिस्तान बन जाए तो मुसलमान एक बड़ी सेना का हिस्सा बनने की बजाय अपनी छोटी सेना ज्यादा पसंद करेंगे, चाहे वह कमज़ोर ही क्यों न हो।

इसलिए इस सम्बन्ध में काम तभी होगा जब विभाजन का निर्णय हो जाएगा, और यह काम अंग्रेज़ों को नहीं, भारतवासियों को करना होगा। उसी वक़्त रियासतों की सेनाओं के भविष्य की समस्या सुलझानी होगी। वे स्वतंत्र रहेंगी या हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में से किसी एक से जुड़ना चाहेंगी ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाग-2 : साम्प्रदायिक समस्या

अ. गृह-युद्ध का आभास

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं०1, 2 अप्रैल, 1942

●●●

चाहता तो मैं यही हूं कि मेरे ऊपर जो प्रभाव पड़ा है मैं उसकी एक उत्साह-जनक तस्वीर खींचूं लेकिन वह भ्रामक होगा। यहां की स्थिति बड़ी ही विषाद-जनक है यहां तक कि कट्टर आशावादी फ़ील्ड मार्शल ऑकिनलेक ने भी किसी तर्कसंगत समझौते की आशा छोड़ दी है। इस वक्त मुझे समझौते की कोई सूरत नजर नहीं आती। कैबिनेट का बंटवारा साम्प्रदायिक आधार पर हो चुका है। हर पार्टी के पास उनका अपना हल है और कोई भी दूसरों के विचारों पर बातचीत करने को तैयार नहीं है।

पूरा देश अव्यवस्था की हालत में है। पंजाब, उ० प० सी० प्रां०, बिहार, कलकत्ता, बम्बई, उत्तर-प्रदेश यहां तक कि दिल्ली में भी साम्प्रदायिक दंगे-फ़साद, हो रहे हैं। पंजाब में तो सारी पार्टियां गृह-युद्ध की तैयारी कर रही हैं जिनमें सबसे ज्यादा सक्रिय सिक्ख हैं। इन लोगों ने पूरे पंजाब को काबू में करने के लिए प्रमुख सिंचाई केन्द्रों को कब्जे में करने की योजना भी बना ली है। हालांकि मैं जल्दी ही पंजाब और उ० प० सी० प्रां० में जाना चाहता हूं, मगर यहां दिल्ली में काम इतना है कि मैं यहां से हट नहीं सकता। इसलिए मैंने इस्मे को जेंकिस[1] और केरो से मिलने भेज दिया।

बंगाल के गवर्नर अपने मंत्रिमंडल को असम सीमा के मुसलमान प्रवासियों के बारे में कुछ करने के लिए राज़ी नहीं कर पाए हैं। और ऐसा लगता है कि अव्यवस्था और बढ़ेगी। बिहार में पुलिस के साथ काफी परेशानी रही है, मगर अब स्थिति काबू में आ गई बताई जाती है। हड़ताली काम पर लौट आए हैं

1. सर ईवान जेंकिस—15 अगस्त 1947 तक पंजाब के गवर्नर

और उनके नेता ने गांधी की सलाह पर आत्मसमर्पण कर दिया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो निष्कर्ष मैं निकाल सका हू वह यह कि जल्दी कोई क़दम नहीं उठाया तो गृह-युद्ध की शुरुआत हो जाएगी। कई लोग यह समझते हैं कि मैं अंग्रेज सरकार से सत्ता के हस्तान्तरण की कोई पूर्व निर्धारित योजना लेकर आया हूं, जो ठीक समय पर प्रस्तुत करूंगा। अपनी बातचीत में मैंने स्पष्ट कर दिया था कि ऐसा नहीं है पर मुझे विश्वास है कि फ़ौरन निर्णय लेकर ही हिन्दुस्तानियों को भावुकता से यथार्थ की ओर ले जाया जा सकता है और दंगे-फ़साद के सर्वनाशी विस्तार को रोका जा सकता है।

●●●

कैबिनेट मंत्रियों के साथ अपनी बातचीत में मैंने हरएक से पूछा कि वह सहमत है कि भारत जैसे देश में व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस के पीछे एक पक्षपात रहित और कुशल सेना की जरूरत होगी ? वे सब इस बात से सहमत थे। फिर मैंने पूछा, वे इस बात से सहमत हैं या नहीं कि सत्ता के हस्तांतरण के समय खून-खराबा कम-से-कम हो। वे इस पर भी सहमत हो गए। फिर मैंने सवाल किया कि जून 1948 तक भारतीय सेना का इतना काफी भारतीयकरण हो सकेगा कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो सके ? इस पर अलग-अलग राय थीं, लेकिन इस बात पर सभी सहमत थे कि विशेषज्ञों की समिति ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकेगी।

जब मैंने पूछा कि क्या जून 1948 तक साम्प्रदायिक लाइनों पर सेना का विभाजन हो सकेगा, तब कांग्रेसी सदस्यों ने बेझिझक कहा, इसका प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन मुस्लिम लीग को यह संभव लगा। फिर भी इस बात से सभी सहमत हुए कि विशेषज्ञ ही इसका उत्तर दे सकेंगे।

●●●

पिछले हफ्ते मैंने लगातार तीन कैबिनेट मीटिंग बुलवाईं जो लम्बी थीं। जिन्हें सम्भालना मुश्किल था। विशेष रूप से बजट काफ़ी मुश्किल विषय था। लियाक़तअली ने गरीब आदमी का ऐसा बजट पेश किया जिससे कर देने से बचनेवालों के खिलाफ़ कार्रवाई और पूंजीपतियों के मुनाफ़ों पर चोट करने के सुझाव थे। नेहरू बेहद मुश्किल में पड़ गए क्योंकि कांग्रेस पार्टी को उन्हीं उद्योगपतियों के दिए धन का सहारा था।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **दूसरी मीटिंग, 26 मार्च, 1947**

प्रकरण 3 : राजनीतिक लाइनों पर साम्प्रदायिक पार्टियों का विघटन

वाइसराय ने कहा कि दो दिन पहले नेहरू से जो बातचीत हुई थी उसमें उन्होंने यह माना था कि राजनीतिक आधार पर कांग्रेस के विघटन की संभावना थी। पार्टी में विभिन्न राजनीतिक मतों का जो सहयोग इस समय है वह राष्ट्रीयता की आकांक्षा के कारण है, और जब वह आकांक्षा पूरी हो जाएगी,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो साम्प्रदायिक कारणों की बजाय राजनीतिक मतों के कारण गठबंधन के टूटने की सम्भावना थी।

वाइसराय का मत था कि ब्रिटिश के चले जाने के बाद भारत की पूरी राजनीतिक व्यवस्था बदल सकती है। अगर जिन्ना को यह समझाया जा सके कि दोबारा पंक्तिबद्धता के बाद वह ज़्यादा ताक़तवर हो सकते हैं तो शायद वह अपना नकारात्मक रवैया बदल दें।

एबेल ने बताया कि हाल ही में बजट पर बातचीत में कांग्रेस में मतभेद पैदा हो गया है। अंत में जो समझौता हुआ वह पूंजीवाद की ओर झुका था और इससे वामपंथी असंतुष्ट हो गए थे। अलग निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था, जो 1919 के अधिनियम के अंतर्गत साम्प्रदायिक भावनाओं के दबाव से लागू की गई थी, साम्प्रदायिक आधार की बजाय राजनीतिक कारणों से फूट होने नहीं देगी।

वाइसराय ने ज़ोर देकर कहा कि ब्रिटेन में जनमत साम्प्रदायिक पार्टियों के टूटने और उनका कंज़र्वेटिव, लिबरल और सोशलिस्ट पार्टियों के अनुरूप दूसरी पार्टियों में शामिल होने का स्वागत करेगा।

●●●

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

तीसरी मीटिंग, 27 मार्च, 1947

प्रकरण 11 : राजनीतिक लाइनों पर साम्प्रदायिक पार्टियों का विघटन

वाइसराय ने अपनी राय देते हुए कहा कि जैसे ही जिन्ना रचनात्मक प्रस्ताव पेश करने लगे, मुस्लिम लीग को टूट जाना चाहिए। लीग को अब तक जिस चीज़ ने जोड़े रक्खा था वह था कांग्रेस का डर। वह आश्वस्त नहीं थे कि साम्प्रदायिक दलों में फूट को बढ़ावा देने में कोई बुद्धिमत्ता है।

उनको विश्वास था कि पंडित नेहरू अपनी पार्टी के विघटित होने के खतरे को समझते हैं। या तो वह जानबूझकर उसकी उपेक्षा कर रहे हैं या उसका मुकाबिला करने का गुप्त तरीका ढूंढ़ रहे हैं।

वाइसराय ने कांफ्रेंस-सेक्रेटरी को निर्देश दिया कि 'उलझानेवाले प्रश्नों' के मसौदे में बर्मा का उदाहरण शामिल करना न भूलें जिसका अनिवार्य राजनीतिक घटना-चक्र इसकी मिसाल है कि उसी तरह कांग्रेस और बाद में मुस्लिम लीग का भी विघटन हो सकता है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

रिपोर्ट नं० 1, 2 अप्रैल, 1947

संलग्न-1. राज्य-सचिव लार्ड पेथिक-लारेंस का वाइसराय के नाम एक पत्र। निजी और गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(5) 7 मार्च के अपने पत्र के साथ जो नोट जेंकिस ने भेजा था उसका आशय था मिली-जुली सरकार की ज़रूरत पर बातचीत। इसमें पंजाब के हित को ध्यान में रखकर किसी भी तरह के विभाजन के कड़े विरोध पर ज़ोर दिया गया था। मैं जेंकिस की सूझबूझ को स्वीकारता हूं, और मानता हूं कि यह नोट राजनीतिक नेताओं को समझाने के लिए तैयार किया गया था जिससे समझौते की भावना पैदा हो और तीनों पार्टियों की मिली-जुली सरकार बन सके।

(6) अगर पंजाब में तीनों समुदायों की सम्मिलित सरकार बनती है, अगर हम अखिल भारतीय समझौता कराने में असफल रहते हैं और अखिल भारतीय स्तर पर एक से ज़्यादा अधिकारियों को हस्तान्तरण करते हैं तो प्रांत की स्थानीय सम्मिलित सरकार ज्यादा टिक नहीं पाएगी। हमारे जाने के कुछ ही दिन बाद ऐसा हो सकता है, जो भारत के लिए सर्वनाशक तो होगा ही ब्रिटिश सरकार के लिए भी इससे परेशानी पैदा होगी। मेरे विचार से देर-सबेर ऐसा होगा ही क्योंकि पंजाब मुस्लिम लीग, सिंध (और उ० प० सी० प्रां०, बामपंथी कांग्रेस सरकार पर्याप्त सेना एकत्र कर ले तो) से मिलकर पाकिस्तान बनाना चाहेगी। दूसरी तरफ़ पंजाब सरकार के दूसरे तत्त्व इसका कड़ा विरोध करेंगे और चाहेंगे पंजाब अखिल भारतीय संविधान का हिस्सा बने। इसके अतिरिक्त अगर अखिल भारतीय समझौता हो भी जाता है तो केन्द्रीय सरकार को कम से कम दूसरे प्रान्तों को अन्य विषयों के लिए स्वायत्त अधिकार देने के आधार पर होगा। संभवतः यह प्रान्तों की गुटबंदी के आधार पर भी होगा। मेरा अनुमान है कि अगर ऐसा होता है तो पंजाब की मिली-जुली सरकार टूट जाएगी।

(7) अतः जून 1948 में सत्ता के हस्तान्तरण की दृष्टि से व्यावहारिक दिक़्क़तों के बावजूद पंजाब का इस तरह से विभाजन जिससे प्रांत के विपक्षी राष्ट्रवादी संतुष्ट हो जाएं, टाला नहीं जा सकता। फिर भी अगर पंजाब का विभाजन होता है तो हमें बंगाल में भी उन्हीं कारणों से विभाजन करना होगा। मगर बंगाल का विभाजन और भी मुश्किल होगा क्योंकि इसका मतलब है कलकत्ता को हिन्दुस्तान में रखना और चूंकि बंगाल में ऐसा कोई राजनीतिक संकट नहीं है, जिससे यह क़दम तर्कसंगत साबित हो सके। और शायद मुस्लिम लीग पंजाब के विभाजन से ज्यादा बंगाल के विभाजन और कलकत्ता के चले जाने का विरोध करेगी।

(8) अतः मुझे लगता है आप जल्दी से जल्दी कोई तारीख तय कर लें। बरोज़ और जिंकिस के साथ इस समस्या पर, पूरे भारत को नज़र में रखकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विचार कीजिए।

(9) मैं हिज़ मैजेस्टी की सरकार की तरफ़ से कोई निश्चित विचार नहीं रख रहा हूं। (दरअस्ल, इस समस्या पर अपने सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श करने का मौक़ा मुझे नहीं मिला है) मगर पंजाब की स्थिति पर कोई ठोस क़दम उठाने से पहले इन दो प्रांतों के गवर्नरों से हुई बातचीत के बारे में आपकी राय मैं जानना चाहूंगा ताकि यहां अपने सहयोगियों के साथ बातचीत कर सकूं।

हस्ता० पेथिक-लारेंस

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट,
रिपोर्ट नं० 2, 9 अप्रैल, 1947

2. पूरा देश बड़े खतरनाक रूप से अव्यवस्थित हालत में है, हालांकि साम्प्रदायिक दंगे, और झगड़े पिछले सप्ताह से कम दिखाई पड़ रहे हैं। कुल मिलाकर बिहार और असम की स्थिति थोड़ी बेहतर है, कलकत्ता और बम्बई भी थोड़े शांत हैं, मगर उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत और पंजाब अभी भी बहुत अस्त-व्यस्त हैं। दिल्ली से 20 मील दूर गुड़गांव में भी कुछ गड़बड़ हुई है जिसकी वजह से जेंकिंस को वहां एक दिन के लिए जाना पड़ा।

3. इस्मे जेंकिंस और केरो से मिलकर लौट आए हैं, पंजाब और उ० प० सी० प्रां० पर अपनी रिपोर्ट उन्होंने दे दी है। जेंकिंस इस महीने या अगले महीने धारा 93 से निकलने की आशा छोड़ चुके हैं। आम चुनाव से इस समस्या का हल नहीं निकलेगा। 175 सीटों में से मुस्लिम लीग को 5 सीटों का बहुमत मिलेगा जिससे वे सरकार बनाएंगे, इसमें सिख, हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व नहीं होगा। तब असली गड़बड़ शुरू हो सकती है। एक शान्तिपूर्ण संयुक्त पंजाब की आशा यूनियन या मिली-जुली सरकार से की जा सकती है, लेकिन अभी उसकी भी कोई आशा नहीं है।

4. यूनियन सरकार का विकल्प पंजाब का विभाजन है, यह सुझाव कांग्रेस ने दिया है मगर जेंकिंस के अनुसार उस पर अमल जोर के बल पर ही किया जा सकता है; जिसमें काफी सारी सैनिक टुकड़ियों की ज़रूरत होगी और जो प्रांत को आर्थिक रूप से नबाह कर देगा। मैंने पिछली रिपोर्ट में सिक्खों के द्वारा गृह-युद्ध की तैयारियों का जिक्र किया था। मैं उन्हें आवेश में आकर कुछ कर गुज़रने से रोकना चाहता हूं। जेंकिंस की सलाह पर मैंने उनसे परामर्श करने का निर्णय किया है। और बलदेवसिंह से तारासिंह[1] और ज्ञानी करतारसिंह[2] को दिल्ली बुलाने के लिए कहा है।

---

1. मास्टर तारासिंह, अकाली सिक्खों के नेता
2. ज्ञानी करतारसिंह, अकाली पार्टी के एक नेता और तारासिंह के सहयोगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5. उ० प० सी० प्रां० की समस्या, पंजाब की तरह साम्प्रदायिक नहीं है। यहां टकराव मुस्लिम लीग और उन मुसलमानों का है जिनको कांग्रेस से आर्थिक सहायता मिली है। हालात में उलझनें कबीलों के कारण पैदा हो गई हैं जो अधिकतर लीग के साथ हमदर्दी रखते हैं। वर्तमान कांग्रेस सरकार ने विपक्ष को जेल में बन्द कर रखा है और लोग अप्रसन्न हैं। कबीले भी किसी क्षण भड़क सकते हैं। गवर्नर के अनुसार, अगर स्थिति को इसी तरह छोड़ दिया जाए तो वह और भी खराब हो जाएगी और सीमा एकदम विघटित हो जाएगी।

6. केरो ने इस्मे से कहा कि सरकार को इस आधार पर आम चुनाव करवाने को बाध्य करना चाहिए कि हमारे जाने के बाद सत्ता किसको सौंपी जानी चाहिए, इस बात का निर्णय हो जाए। ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका मंत्रिमंडल को हटाना, सदन को बरख्वास्त करना और गवर्नर को धारा 93 के अन्तर्गत सत्ता अपने हाथ में ले लेनी होगी। तभी निष्पक्ष आम चुनाव की गारण्टी दी जा सकती है। लेकिन इस कठिन निर्णय से कांग्रेस के नाराज़ होने की सम्भावना है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट
रिपोर्ट नं० 3, 17 अप्रैल, 1947

●●●

2. देश की खतरनाक अव्यवस्थित स्थिति अभी जारी है। साम्प्रदायिक दंगे और झगड़े अभी उसी स्तर पर हैं। पंजाब का गुड़गांव क्षेत्र अब शांत है। पर अमृतसर में दंगे हुए हैं जिसमें 24 घंटे कर्फ्यू की ज़रूरत पड़ गई है। उ० प० सी० प्रां० में डेरा इस्माइल खां में लूट, दंगे और आगज़नी की खबरें आ रही हैं। लगभग आधा शहर लपटों में घिरा है और साम्प्रदायिक लड़ाई जारी है। पेशावर शांत है पर हजारा जिले में फिर गड़बड़ है। जिले के कमिश्नर और सहायक कमिश्नर की कारों पर पत्थर बरसाए गए। कबीले अभी भी बेचैन हैं मगर संयम से काम ले रहे हैं। पंजाब और उ० प० सी० प्रां० में तनाव बहुत ज़्यादा है। मैंने वहां के गवर्नर केरो को रोक लिया है और उनके मुख्यमंत्री डॉ० खां साहिब[1] को बुलवाया है। इस विस्फोटक स्थिति पर नेहरू के साथ मिलकर बातचीत करने के लिए।

3. बंगाल में, 13 अप्रैल, रविवार को कलकत्ता में और भी घटनाएं घटीं। बम्बई में रात के समय कर्फ्यू लगा दिया गया है और बनारस में भी जहां ज़िला मैजिस्ट्रेट ने कर्फ्यू के साथ पूरे शहर का, गड़बड़ियों और नुकसान के लिए, पचास लाख का जुर्माना भरने को कहा है।

4. काश मैं देश की इससे ज़्यादा आशावादी तस्वीर पेश कर सकता, लेकिन

---

1. डा० खान साहिब, उ० प० सी० प्रां० के मुख्यमंत्री (1937-39 और मार्च 1945 से)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसा करना गलत होगा। गवर्नरों के अधिवेशन (जिसका संदर्भ इस पत्र के अंत में है) को इसी तस्वीर को मानकर चलना होगा।

5. मुझको विश्वास है (उन गवर्नरों और नेताओं को भी है जिनसे मैंने इस विषय पर बात की थी।) कि साम्प्रदायिक झगड़ों को जल्दी ही कम या खत्म करने का एक रास्ता 1948 में सत्ता के हस्तांतरण के निर्णय को समर्थन दिलवाना है। मुझे लगा कि तनाव को कम करने के लिए फौरन एक ही कदम उठाया जा सकता है। अत: मैंने जिन्ना से पूछा, वह राजनीतिक मामलों में बल का इस्तेमाल न करने के लिए कांग्रेस के साथ एक संयुक्त अपील पर हस्ताक्षर करेंगे या नहीं। पहले तो लगभग बीस मिनट तक वह जनसंहार की भर्त्सना में दिए गए अपने भाषणों की चर्चा करते रहे, और जवाब को टालते रहे। जब वह चुप हुए तो मैंने कहा, "अगर आप समझते हैं कि बल प्रयोग की निन्दा करवाकर मैं आपको किसी असमंजस की स्थिति में डाल दूंगा या आपके लिए दिक्कतें पैदा करूंगा, तो मैं इस विषय पर आपसे बातचीत नहीं करूंगा।" एक अजीब-सी खामोशी : वह बोले, "इस विषय में पहल करके मुझे गर्व होगा, यह मौक़ा आपने मुझे दिया, मैं आपका आभारी हूं।"

6. अगली बार जब मैं उनसे मिला तो वक्तव्य के मसविदे की प्रति उन्हें दे दी। उन्होंने मुझको आगाह किया कि कलकत्ता जनसंहार के बाद इसी तरह की अपील पर लार्ड वैवेल गांधी से दस्तखत नहीं करवा सके थे। उनका विचार था कि इस बार मैं भी असफल ही रहूंगा। कांग्रेस की तरफ से निश्चित नहीं हुआ था कि कौन व्यक्ति दस्तखत करेगा, मगर इस्मे ने मुझे बताया कि जाते हुए जिन्ना ने उनसे पूछा था, 'कांग्रेस के लिए कौन दस्तखत करेगा—गांधी या कृपलानी ? इस्मे ने कहा यह तो खुद उनके सोचने की बात थी।

7. अगले दिन जिन्ना दस्तखत करने को तैयार हो गए अगर गांधी भी करें तो। मैंने गांधी को बुलवाया। उन्होंने वक्तव्य के शब्दों को थोड़ा संशोधन करके तीन प्रतियों पर दस्तखत कर दिए। तब मेईविल घोषणा को लेकर जिन्ना के हस्ताक्षर लेने गए, और कहा कि कांग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से कृपलानी उनके बाद हस्ताक्षर करेंगे। इस बार जिन्ना ने एकदम इन्कार कर दिया और कहा कि कृपलानी जैसे 'नाचीज़' के साथ एक ही कागज़ पर हस्ताक्षर वह नहीं करेंगे। किसी और के हस्ताक्षर के लिए भी मेईविल उन्हें मना नहीं पाए। फिर मेरे निर्देश पर वह नेहरू से मिले। नेहरू बहुत नाराज़ तो हुए लेकिन बाद में सब कुछ उन्होंने मुझ पर छोड़ दिया। तब कृपलानी ने कहा कि हस्ताक्षर करने का निर्देश उन्हें गांधी देकर गए और जब तक वह नहीं मानते अपना नाम निकलवाने नहीं देंगे। गांधी तब तक रेलगाड़ी से पटना रवाना हो चुके थे, इसलिए मैंने उन्हें तार भेजा। जवाब में उन्होंने नेहरू और मुझ पर सब कुछ छोड़ दिया। नेहरू ने दो पृष्ठों का विशेष पत्र लिखा और बात मुझ पर छोड़ दी। मैंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वक्तव्य जारी कर दिया ।

8. यह घटना मैंने इसलिए लिखी है ताकि यह पता चल सके कि साधारण से साधारण बातचीत भी कितनी मुश्किल से तय हो पाती थी। इस वक्तव्य को पास करने में हमें चार दिन लग गए, अनावश्यक रूप से मेरा, मेरे स्टाफ का, भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण नेताओं का वक्त जाया हुआ है। मैं बस यही आशा करता हूं कि दोनों पक्ष इस घोषणा के मुताबिक चलें। मगर मुझे डर है कि एक-दूसरे पर पहले संधि तोड़ने का आरोप लगाकर वे लोग इसे तोड़ भी सकते हैं।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 4, 24 अप्रैल 1947**

13. गत शुक्रवार सिक्खों के प्रतिनिधि तारासिंह, ज्ञानी करतारसिंह और बलदेवसिंह से मैं मिला। पाकिस्तान के बनने पर पंजाब के विभाजन से बचाने की जो भी आशाएं थीं, वह सब खत्म हो गई। तीनों सिक्ख नेताओं ने स्पष्ट कह दिया कि अगर उन्हें मुसलमानों की प्रमुखता में रखा गया तो वह आखिरी सिक्ख के जीवित रहने तक लड़ेंगे। वे यह मानते थे कि कैबिनेट मिशन ने उन्हें धोखा दिया था। लैण्डन सारस फील्ड की लिखी किताब 'द बिट्रेयल आफ द सिक्ख' मुझे भेंट की। राज्य सचिव के सामने से गुजरे हुए हर पत्र, 'हाउस ऑफ कॉमनंस' के हर वक्तव्य का उन्हें विश्वकोषीय ज्ञान है। अपने साथ वे 'हैंसार्ड' की प्रतियां और सारा पत्र-व्यवहार भी ले आए थे।

●●●

15. ·· मगर उन्होंने कहा कि स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि जब तक सिक्खों को पंजाब से एकदम अलग नहीं किया जाता और हमला न होने की गारण्टी नहीं दी जाती, जब तक उन्हें लड़ने से कैसे रोका जा सकता था। तब भी गृह-युद्ध की तैयारियों से अंदर ही अंदर क्या हो रहा था इसका अंदेशा हो गया था। मैंने सिक्ख नेताओं की 50 लाख रुपये की 'युद्धफण्ड' की अपील देखी है। यह बात ठीक नहीं।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 5, 1 मई, 1947**

23. पंजाब के विभाजन पर जेंकिस के साथ मेरी लम्बी-चौड़ी बात हुई। रावी और सतलज के बीच का क्षेत्र ही लड़ाई-झगड़े की जड़ होगा। ऐसा सीमा-निर्धारण जो दोनों पार्टियों को मान्य हो, बड़ा मुश्किल होगा। 'सिखिस्तान' बनाने की कोशिश में सिक्ख इस क्षेत्र का काफी बड़ा हिस्सा लेने को तैयार हैं जहां काफी ज़मीन सिक्खों की ही है लेकिन जनसंख्या में मुसलमान ज्यादा हैं। मैं इसका पूरा विरोध करता हूं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिक्ख यह भी चाहते हैं कि उनके तीर्थ भी बचे रहें जिनमें लाहौर भी शामिल है जो पाकिस्तान की राजधानी मनोनीत हुआ है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जब सिक्खों का प्रतिनिधि मण्डल मुझ से मिला था तो विशेष रूप से मुझसे कहा था कि सिक्खों के हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में शामिल होने का निर्णय मैं न लूं क्योंकि अभी उन्होंने तय नहीं किया है कि ख़ुद उन्हें किस तरफ जाना है।

24. जिन्ना ने मुझे बताया कि किसी ने उनके पूछा था कि वह 'सिखिस्तान' के भविष्य पर करतारसिंह से बात करेंगे ? जब मेईविल ने लियाक़तअली के साथ खाना खाया तब भी लियाक़त ने इशारा किया था कि शायद 'सिखिस्तान' पाकिस्तान में जुड़ जाए और यह कि मुस्लिम लीग की शर्तें उदार होंगी। इसमें पंजाब का विभाजन रुक जाएगा। क्योंकि दोनों हिस्से एक-दूसरे से जुड़े रहने के पक्ष में वोट देंगे। चूंकि सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण सेनाओं की तनख्वाहें और पेंशन है, पंजाब का विभाजन 'सिखिस्तान' में रहने वाले मुसलमानों के लिए बड़ा गंभीर होगा क्योंकि वहां कोई सेना नहीं होगी जिसमें वे शामिल हो सकें।

25. जेंकिंस के अनुसार विभाजन के विकल्प की घोषणा से गड़बड़ी हो सकती है। मैंने उनके साथ बात करके जरूरी टुकड़ियों को कमाण्ड करने वाले 'जनरल ऑफिसर' को निर्देश दिया है कि इस तरह की गड़बड़ी को शुरू में ही खत्म कर दें।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 6, 8 मई, 1947**

22. 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के एक लेख के संदर्भ में पिछले हफ्ते पटियाला के महाराजा मुझसे मिलने आए। इस लेख में लिखा था कि मैं पंजाब के 'नाजायज़' बंटवारे की सलाह दे रहा हूं। महाराजा ने कहा कि मैं 'सिखिस्तान' के विचार को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा था, इसलिए सिक्ख नेता परेशान हैं, क्योंकि जो सीमाएं मैंने चुनी थीं वे सिक्खों को बांट रही थीं—20 लाख पूर्वी पंजाब में और 18 लाख पश्चिमी पंजाब में।

23. मैंने महाराजा के सामने स्पष्ट कर दिया कि मैं मतदान के लिए राष्ट्रीय विभाजन कर रहा था। अगर वोटों से विभाजन का निर्णय होता है तो सारी सम्बद्ध पार्टियों को मिलाकर एक सीमा-कमीशन बनाया जाएगा ताकि एक उचित सीमा बनाई जा सके। मैंने उन्हें बताया कि विभाजन का अनुरोध कहां से आया था। कांग्रेस ने मुझसे मांग की थी कि गैर-मुसलमान बहुमत वाले क्षेत्र पाकिस्ताना में न डाले जाएं। मैंने महाराजा से कहा कि एक भी ज़िले में सिक्ख बहुसंख्या नहीं थी और पश्चिमी पंजाब के 17 प्रस्तावित ज़िलों में तो सिक्ख क्या हिन्दू संख्या भी नहीं थी।

CC-0. Punjab Digital Preservation Foundation, Chandigarh

24. पटियाला के महाराजा (और अगले दिन बलदेवसिंह ने) ने मुझसे अपील की है कि सिक्खों की जमीन, उनकी पवित्र इमारतें और उनके हितों के आधार पर विभाजन-सीमाएं तय की जाएं। मैंने कहा कि दुनिया का मत ऐसी कोशिश के खिलाफ होगा जो पश्चिमी पंजाब के मुसलमानों की बहुसंख्यक आबादी को सिर्फ जमीन की मिल्कियत और धर्म के आधार पर, सिक्ख-हिन्दू कांग्रेस के प्रभुत्व के अधीन कर देगी।

यह बैठक काफी तनाव से आरंभ हुई क्योंकि वे सदस्य जो नेताओं के साथ विभाजन के प्रशासनिक परिणामों के सम्बन्ध में हुई बातचीत में शामिल नहीं थे, वे इस बात से अप्रसन्न थे।

(25) वह काफ़ी चिंतित थे, "मुझे डर है कि ऐसी हालत में सिक्ख लड़ेंगे···।"

"अगर वे ऐसा करते हैं, महाराजा साहिब, तो उन्हें केन्द्रीय सरकार से लड़ना होगा, क्योंकि मैं और मेरी सरकार साम्प्रदायिक युद्ध की कोशिशों को सख्ती से नाकाम कर देने का फ़ैसला कर चुके हैं। सिर्फ टैंकों, बख्तरबंद गाड़ियों और तोपखानों से ही उनका विरोध नहीं होगा। हवा से उन पर बम बरसाए जाएंगे और मशीनगनें चलाई जाएंगी। आप अपने सिक्खों से कह दीजिएगा कि अगर वे युद्ध शुरू करते हैं तो वे मुस्लिम लीग से नहीं, सशस्त्र सेनाओं की पूरी ताकत से लड़ेंगे।" मैंने कहा। स्पष्ट था कि महाराजा घबरा गए और उन्होंने वायदा किया वह सिक्खों को बता देंगे।

(26) अगले दिन कैबिनेट में मैंने भारत के किसी और हिस्से में मुसलमानों, सिक्खों या हिन्दुओं द्वारा आक्रमण का प्रश्न उठाया। मैंने पूछा कि साम्प्रदायिक युद्ध के पहले चिह्नों को ही मैं ज़बर्दस्त ताक़त से दबा दूं, हवा से उन पर बम फिंकवाऊं, मशीनगनें चलवाऊं और यह प्रमाणित कर दूं कि साम्प्रदायिक युद्ध से काम नहीं बनेगा तो क्या मुझे कैबिनेट का समर्थन मिलेगा? कांग्रेस और मुस्लिम लीग के सदस्यों ने बड़ी तत्परता से इस नीति को मान लिया। जब मैंने रक्षा सदस्य बलदेवसिंह की तरफ़ देखकर पूछा, 'इस नीति में आप मेरा साथ देंगे?' तो उन्होंने तपाक से कहा, 'ज़रूर···।'

(27) अगर साम्प्रदायिक युद्ध पहले चरण में है। खत्म नहीं किया गया तो वह पूरे उत्तरी भारत में भड़क उठेगा। मैंने जेंकिंस, उनके कार्यकारी जनरल-आफ़िसर-कमाण्डिंग मेजर जनरल ब्रूस और कार्यकारी कमाण्डर-इन-चीफ़ ले० जनरल सर आथेर स्मिथ से कहा कि पंजाब में रावी और सतलुज के बीच विवादग्रस्त क्षेत्रों में अतिरिक्त सेना विभाजन के मतदान से काफी समय पहले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भिजवा दें। मैंने उन्हें उ० प० सीमा प्रा० पर भी तैयार रहने को कहा है।

28. मैं आशा करता हूं कि हिज़ मैजेस्टी की सरकार मुझको अपना पूरा सहयोग देगी। मैं सोचता हूं कि अगर पहले दौर में 10,000 लोगों को मिटा सकते हैं, तो हम 40 करोड़ लोगों को युद्ध में लपेटे जाने से भी रोक सकते हैं। किसी भी सूरत में यह काम ब्रिटिश वाइसराय नहीं भारत की मिली-जुली अंतरिम सरकार करेगी। दरअस्ल जहां हिंसा को दबाने में सेनाओं का इस्तेमाल नहीं किया गया, वहां जनसंहार ज़्यादा हुआ।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट
रिपोर्ट नं० 7, 15 मई, 1947

संलग्न 2 : अर्ल ऑफ़ लिस्टोवेल का वाइसराय के नाम पत्र
निजी और गुप्त **इण्डिया ऑफिस, व्हाइटहॉल**
9 मई, 1947

●●●

14. सच्चाई तो यह है कि भविष्य की व्यवस्था में सिक्खों को अपनी स्थिति के बारे में मुग़ालता है। (यह भावना कुछ तो इसलिए है कि वे पंजाब के शासक हुआ करते थे, कुछ इसलिए कि उनकी जांबाज़ी के लिए हमने उन्हें कुछ ज़्यादा ही ऊपर चढ़ा दिया है, और कुछ इस वजह से भी उनकी अपनी राय में पंजाब की समृद्धि में, उनकी अपनी जनसंख्या के हिसाब से, उनका योगदान बहुत ज़्यादा रहा है। दूसरी ओर 40 करोड़ लोगों में उनकी संख्या सिर्फ़ 60 लाख है। पंजाब के दो करोड़ अस्सी लाख लोगों में वे सिर्फ़ 40 लाख हैं। किसी भी लोकतंत्रीय आधार पर उन्हें अल्पसंख्यक तो माना ही जाएगा, बल्कि प्रमुख अल्पसंख्यक भी नहीं। फिर एक अलग सिक्ख राज्य के उनके दावे का प्रश्न ही नहीं उठता।

15. कैबिनेट मिशन के दौरान यह सब उन लोगों को अच्छी तरह समझाया गया था। ज़ाहिर है कि वह चिकने घड़े पर पानी की तरह था। मुझे बताया गया है कि सिक्खों से कहा गया था कि पाकिस्तान में भी कम से कम 1 करोड़ 20 लाख सिक्ख होंगे और उनके लिए विकल्प भी यही है कि या तो वे सारे लोग पाकिस्तान चले जाएं या हिन्दुस्तान।

●●●

17. इसमें शक नहीं कि इस स्थिति में सिक्ख बड़े खतरनाक तत्त्व हैं। आपके प्रस्तावों के अंतर्गत उनका बंटवारा हो जाएगा, और उसके बाद सीमा की कोई भी व्यवस्था उनके दावों को संतुष्ट नहीं कर सकेगी। इस्मे ने मुझे बताया कि वे लोग यह भी चाहते हैं कि सीमा-कमीशन के बनने तक, जिसमें सिक्खों के दावों पर विचार किया जाएगा, लाहौर डिवीजन को प्रस्तावित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभाजन से हटा लिया जाए। सिक्खों के दावों का आधार जनसंख्या नहीं, बल्कि पंजाब के कुछ हिस्सों में उनकी आर्थिक स्थिति और उन क्षेत्रों से जुड़ी धार्मिक भावनाएं हैं जिनमें गुरुद्वारे हैं। जब तक सीमा कमीशन को इन तथ्यों को ध्यान में रखने को नहीं कहा जाएगा तब तक वे हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख बहुसंख्या वाले जिलों को ध्यान में रख कर ही थोड़ा-बहुत हेर-फेर करते रहेंगे। लेकिन अगर आपको भरोसा है कि सीमा-कमीशन जिसको ऐसे निर्देश हों कि सिक्खों को सत्ता के हस्तांतरण तक संतुष्ट रखे, दोनों प्रमुख जातियों को नाराज़ किए बिना स्थापित किया जा सकता है, तो मैं अपने सहयोगियों से आपके विचारों का समर्थन करूंगा।

(18) असल में स्थिति को संभालने के लिए सिक्खों और मुसलमानों में समझौता होना चाहिए। उनके उद्देश्यों में कई बातें सामान्य हैं जैसा कि उनका पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी सिस्टम में कई सालों तक साथ-साथ काम करने से लगता है। इस तरह सिक्ख विभाजन से बच जाएंगे (यही उनकी चिंता का प्रमुख कारण है) और मुसलमानों को ज़्यादा बड़ा और ज़्यादा व्यावहारिक पाकिस्तान मिल सकेगा। लेकिन मुझको डर है कि हाल के खून-खराबे ने ऐसी किसी संभावना पर पानी फेर दिया है, कम से कम फ़िलहाल के लिए।

(ह०) लिस्टोवेल

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 8, 5 जून, 1947**

26. मंगलवार 3 जून को मैं ज्ञानी करतार सिंह से मिला। उन्होंने यह कहकर मुझे आश्चर्य में डाल दिया कि कटुता खत्म हो जाने पर वह जिन्ना से मिलकर उन सिक्खों के लिए बेहतर शर्तों पर बात करेंगे जो पाकिस्तान में जाकर रहना क़बूल करेंगे। इस निश्चय को मैंने बढ़ावा दिया। उन्होंने यह वायदा भी किया कि सिक्ख तब तक नहीं लड़ेंगे जब तक वहां अंग्रेज मौजूद हैं। मैंने इस पर संतोष प्रकट करते हुए उनसे कहा कि सत्ता के हस्तान्तरण के बाद भी उन्हें भारतीय सेनाओं द्वारा वैसा ही सलूक मिलेगा। मैंने आशा की, वे लोग आत्म-हत्या करने जैसी मूर्खता नहीं करेंगे।

27. मंगलवार को ही 4 बजे मैं देशी रियासतों की वार्ता-समिति के चौदह सदस्यों से मिला। उन्हें विभाजन और सत्ता के हस्तान्तरण की छपी हुई योजना दी और इसका स्पष्टीकरण भी किया। चांसलर, भोपाल के महाराजा ने जो मुश्किलें बताई थीं उसको दृष्टि में रखते हुए इस योजना का आश्चर्यजनक स्वागत हुआ। समिति ने यह बात मान ली कि अगले दो महीनों का उपयोग अस्थाई समझौते की बातचीत में किया जाएगा ताकि बाद में उपयुक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
समझौतों के लिए समय मिल सके।

28. तीनों नेताओं[1] ने उस शाम मेरे बाद प्रसारण का वायदा किया। आकाशवाणी स्टूडियो में शाम सात बजे हम मिले और मेरे बाद उन्होंने अपने अनुयायियों से इस योजना को हर संभावित शांतिपूर्ण तरीके से अपनाने को कहा। जब नेहरू ने भारत के कुछ हिस्सों को यूनियन से अलग करने की बात कही तब मुस्लिम लीगर्स के चेहरे पर वही उदासी थी जो कांग्रेस सदस्यों के चेहरों पर थी।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 10, 28 जून, 1947**

2. पंजाब को छोड़कर भीतरी स्थिति में कुछ सुधार आया है, मगर लाहौर, अमृतसर, और गुड़गांव में फिर दंगे हो गए हैं। लाहौर और अमृतसर में बड़े पैमाने पर आगज़नी और छुरेबाज़ी हो रही है। यह इतने रहस्यपूर्ण ढंग से किया जा रहा है कि उसको दबाना मुश्किल है। 26 जून को मेरी पत्नी फिर गुड़गांव गई थीं जहां जाटों और मियो में काफ़ी अरसे से बैर चला आ रहा है। अब चूंकि वहां अतिरिक्त फ़ौजी टुकड़ियों, मोटरों और वायरलेस की व्यवस्था हो चुकी है, मुझे आशा है कि हम लोग स्थिति को काबू कर सकेंगे। संयुक्त-प्रांत में भी इसी तरह के जाट-मियो के झगड़ों का निबटारा जल्दी हो गया क्योंकि अधिकारी इसके लिए तैयार थे।

3. हर जिम्मेदार व्यक्ति लाहौर और अमृतसर की स्थितियों से विशेष रूप से चिन्तित है। अगर यहां आगज़नी को रोका नहीं गया तो दोनों शहर भस्म हो जाएंगे। 23 जून को जिन्ना ने मुझसे याचना की कि लाहौर और अमृतसर के झगड़े को दबाने के लिए मैं कठोर से कठोर क़दम उठाऊं, 'आप मुसलमानों पर गोली चलाते हैं कि नहीं, इसकी मुझे परवाह नहीं, मगर इसको रोकना होगा···।' 24 जून को नेहरू ने भी इसी ढंग की बात की। उनका सुझाव था कि वहां से पुलिस को हटाकर, शहरों को सेना के हवाले करके मार्शल लॉ लगा दिया जाए।

4. मैंने गुप्त फ़ोन द्वारा जेंकिंस के विचार जानने चाहे जिससे अगले दिन की कैबिनेट मीटिंग में उन्हें उठाया जा सके। जेंकिंस ने कहा कि 23 जून को उन्होंने भी लाहौर एरिया कमाण्डर, पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल और पार्टियों के स्थानीय नेताओं के साथ ऐसे ही प्रस्ताव पर विचार किया था। मगर उनका (जेंकिंस का) निर्णय इसके पक्ष में नहीं था। चूंकि इन लुके-छिपे तरीकों के

---

1. नेहरू, जिन्ना, बलदेव

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
खिलाफ़ सेना की निर्णयात्मक कारवाई का प्रश्न नहीं उठता, इसलिए मार्शल लॉ भी असफल हो जाएगा। फिर पुलिस की तरह सेना पर भी साम्प्रदायिक हमले का खतरा होगा। यह मानते हुए कि स्थिति से उनको भारी चिंता है, जेंकिस के अनुसार इस तरह के झगड़े का हल मार्शल लॉ नहीं था।

5. 25 जून की कैबिनेट मीटिंग बड़ी मुश्किल थी। धारा 93 के अन्तर्गत अनुशासन बनाए रखने की 'ब्रिटिश' की असफलता को लेकर दोनों पार्टियों के नेताओं ने मुझ पर वार किया। नेहरू आपे से बाहर हो गए और गवर्नर तथा उनके नीचे काम करने वाले सारे सरकारी अधिकारियों को उसी दिन निकालने की मांग करने लगे। ऐसे ग़ैरज़िम्मेदार सुझाव के लिए मैंने उन्हें सबके सामने झिड़का। तब पटेल ने ब्रिटिश के खिलाफ़ बोलना शुरू किया और कहा कि जब कांग्रेस और स्वतन्त्रता आंदोलन को दबाना था तब तो अनुशासन बनाए रखने में कोई दिक्कत नहीं हुई। इससे मैंने उनसे कहा था कि मैं यह लांछन बर्दाश्त नहीं करूंगा। वह फ़ौरन बोले, उनका इरादा लांछन लगाने का नहीं था। तब लीग का प्रहार शुरू हुआ कि जल्दी ही उनके लेने के लिए कोई शहर नहीं बचेगा। बलदेव सिंह ने आवाज़ में आवाज़ मिलाते हुए कहा, 'जो दिखाई पड़े, उसी को गोली मारने का आदेश दिया जाना चाहिए।' इस पर पटेल बोले कि कर्फ़्यू के दौरान उन्हीं गृहस्थों पर गोलियां चलती थीं जो अपने जलते हुए घरों से बाहर सड़क पर निकल आने पर मजबूर थे।

6. अंत में सब मेरी इस बात पर सहमत हो गए कि गवर्नर से हिन्दू-मुसलमान और सिक्खों के स्थानीय नेताओं की एक रक्षा-समिति बनाने को कहा जाए, कि यह समिति उन स्थानीय अफ़सरों की सूची बनाए जिन पर तीनों पार्टियों को विश्वास हो, कि जहां भी सम्भव हो उन्हें अधिकार दिए जाएं। मेरा सुझाव था कि रक्षा-समिति की मीटिंग रोज़ हो और सब लोग—हाई कमाण्ड से लेकर नीचे तक—हिंसा समाप्त करने की पूरी कोशिश करें। ये प्रस्ताव मान लिए गए जिन्हें मैंने जेंकिंस के पास भिजवा दिए। मुझे खुशी है कि अब लाहौर की स्थिति सुधर गई है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 17, 16 अगस्त, 1947

परिशिष्ट 4 : चालू उपद्रवों की रोकथाम के लिए पंजाब सरकार के खिलाफ़, प्रमुख आलोचनाओं पर पंजाब के गवर्नर का ज्ञापन।

गवर्नमेन्ट हाउस, लाहौर
4 अगस्त, 1947

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रिय लॉर्ड माउंटबैटन,

20 जुलाई को आपने मुझसे चालू उपद्रवों की रोकथाम के लिए पंजाब सरकार के खिलाफ़ प्रमुख आलोचनाओं पर एक ज्ञापन तैयार करने को कहा है। मैं इसे संलग्न तो कर रहा हूं पर मुझे डर है कि यह बहुत सतही है। पूरा सर्वेक्षण तैयार है पर उसे व्यवस्था देने में समय लगेगा और मेरे पास काम बहुत है।

2. अलग-अलग समय पर व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा मुझ पर लगाए गए पक्षपात के इलज़ाम का जवाब मैंने इस ज्ञापन में नहीं दिया है। भारतीय राजनीतिज्ञ और पत्रकार यह कम ही महसूस करते हैं कि एक गवर्नर गवर्नर-जनरल के निकट सम्पर्क में रहता है और उसे बताए बिना कोई काम नहीं करता। 8 अप्रैल, 1946 से मेरे पंजाब का कार्यभार संभालने के बाद से मेरे पत्रों या तारों में कहीं किसी भी पार्टी के पक्ष या विपक्ष में पक्षपात की झलक मिलती है या नहीं, इसका निर्णय मैं आप पर और लार्ड वैवेल पर छोड़ता हूं। उन दस्तावेज़ों में समय-समय पर बदल रही पंजाब की राजनीतिक स्थितियों का चिट्ठा है। मेरे सुझावों और समालोचनाओं को लार्ड वैवेल और आपने माना है। सिर्फ़ एक मामले में एक आलोचक ने विशेष इलज़ाम लगाने की हिम्मत की है —'डॉन' के हाल ही के सम्पादकीय में कहा गया गया है कि उनके पास इस बात के सबूत हैं कि मैं ऊंचे अधिकारियों और सीमा-कमीशन के अध्यक्ष को सिक्खों के पक्ष में प्रभावित कर रहा हूं। इस संदर्भ में 'ऊंचे अधिकारियों' से गवर्नर-जनरल या ब्रिटेन के कैबिनेट मंत्रियों का ही अर्थ लगाया जा सकता है। मैं सिक्खों के विचार आपके सामने रखता हूं, लेकिन यह मैंने कभी नहीं कहा कि आप उन्हें मान लें। लंदन में कैबिनेट मंत्रियों के साथ मेरा सीधा सम्पर्क नहीं है। मिले हुए आदेशों के अनुसार अशांति के समय में राज्य-सुरक्षा से सम्बन्धित वास्तविक स्थिति की जानकारी तारों द्वारा उन्हें देता रहा हूं। न ही मैंने सीमा-कमीशन के अध्यक्ष से सीमा-समस्या पर कोई बात की है, न उन्हें या उनके सहयोगियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करने की कोशिश की है। उन बातों को प्रमाणित किया जा सकता है और इस विशेष इलज़ाम से पक्षपात के और इलज़ामों की किस्म का पता चल जाता है।

आपका
ई० एम० जेंकिंस

परिशिष्ट 4 : ज्ञापन

1947 के उपद्रव के प्रबंध के लिए पंजाब सरकार की बहुत आलोचना हुई है। जुलाई, 20 को अपनी लाहौर यात्रा के दौरान गवर्नर-जनरल ने मुझसे उन पर अपनी टिप्पणी देने को कहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2. प्रमुख आलोचनाएं :

(i) जब 1942 के उपद्रवों को अंग्रेजों ने बड़ी आसानी से दबा दिया था, 1947 के उपद्रवों का मुकाबला उस तरह करने में वे असफल रहे (कांग्रेस—विशेष रूप से **नेहरू** और **पटेल**);

(ii) अंग्रेज अफसर अयोग्यता और निष्ठुरता से पेश आए हैं और यह समझते हैं कि चूंकि अंग्रेज़ जाने वाले हैं, इसलिए जनसंहार, अग्निकाण्ड और लूटमार का कोई महत्त्व नहीं है, (कांग्रेस—विशेष रूप से **नेहरू** और **पटेल**);

(iii) पंजाब में अंग्रेज़ अफसरों के मातहत ज़िले ही बुरी तरह प्रभावित हुए हैं—भारतीय अफ़सरों ने अनुशासन बनाए रखा है (कांग्रेस—**नेहरू**);

(iv) कांग्रेस सरकार को उपद्रव दबाने में कोई परेशानी नहीं हुई—पंजाब में हालत सबसे ज़्यादा खराब रही है जो कि अभी भी 'अंग्रेज़ शासक' के मातहत हैं (कांग्रेस—**नेहरू**);

(v) शहरों में, विशेष रूप से लाहौर और अमृतसर में फ़ायर ब्रिगेड बेकार रहे हैं (कांग्रेस);

(vi) मैजिस्ट्रेट और पुलिस अयोग्य और पक्षपाती रहे हैं, और पुलिस ने आगज़नी, हत्या, लूटपाट की तरफ़ से आंखें ही नहीं मूंदीं बल्कि उसमें हिस्सा भी लिया है (कांग्रेस);

(vii) कम-से-कम लाहौर में और जहां-जहां सम्भावना थी वहां मार्शल लॉ लगना चाहिए था (कांग्रेस)।

प्रशासन पर वार सिर्फ कांग्रेस पार्टी ने ही नहीं किया मुस्लिम लीग ने भी उतनी ही कड़ी आलोचना की थी लेकिन मुझ पर पक्षपात का आरोप ही बराबर लगाते रहे, और कुछ खास नहीं।

3. उन आलोचनाओं के दो संक्षिप्त जवाब हैं।

पहला, आलोचकों ने पंजाब की गतिविधियों को समझा नहीं है। हमें राजनीतिक या साम्प्रदायिक हिंसा के साधारण से प्रदर्शन का सामना नहीं करना पड़ रहा है, बल्कि जो सत्ता हम छोड़ने जा रहे हैं उसके दावेदार समुदायों के आपसी संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। उत्तराधिकार के इस साम्प्रदायिक युद्ध पर सामान्य पैमाने नहीं लागू किए जा सकते जिसने आबादी के हर वर्ग को जैसा पहले कभी नहीं हुआ, ऐसे तनाव में डाल दिया है; पुरानी वफ़ादारियों की जगह नई बनाई गई हैं, क्रांति के कई चिह्न पैदा हो गए हैं।

दूसरा, जिन बातों पर वे अफ़सोस कर रहे हैं उनमें उन आलोचकों ने खुद हिस्सा लिया है। उपद्रवों के दौरान नेहरू, पटेल और बलदेवसिंह पंजाब के अलग-अलग क्षेत्रों में गए। केंद्रीय सरकार के सदस्य के रूप में तो नाम मात्र के लिए गए थे। वहां वे साम्प्रदायिक नेताओं की हैसियत से गए। जहां तक मेरा विश्वास है, उन्होंने किसी मुस्लिम से कोई महत्त्वपूर्ण संपर्क स्थापित नहीं किया। नेहरू ने संतुलन और समझदारी से काम लिया मगर बलदेवसिंह ने कम-से-कम दो बार सबसे हिंसक साम्प्रदायिक प्रचार को बढ़ावा दिया। गुड़गांव में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पटेल ने यह साबित किया कि ज़िले में हिन्दू, मुसलमानों के आक्रमण का शिकार हैं, जब कि बात इसकी ठीक उल्टी है। दूसरी तरफ जब लियाक़तअली या ग़ज़नफारअली खां[1] पंजाब आए तब प्रशासन की मदद के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों की मदद के लिए आए थे। जब कोई हिन्दू नेता 'नृशंशता' या 'मार्शल लॉ' की बात करता है तब वह चाहता है कि जितने ज़्यादा मुसलमानों को मारा जा सके मारा जाए। ये शब्द मुसलमानों को उतने प्रिय नहीं हैं, मगर हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख···सारे सम्प्रदाय अपने आपको बेगुनाह साबित करने की कोशिश में हैं।

इसमें शक नहीं कि कुछ हद तक दंगे उन लोगों और संगठनों से पैसे लेकर कराए गए हैं जो सीधे या परोक्ष रूप से मुस्लिम लीग, कांग्रेस और अकाली पार्टी के काबू में हैं। इसका सबूत रोज़ की खुफिया रिपोर्टों में है। इस तथ्य से भी इसी की पुष्टि होती है कि खास लोग (विशेष रूप) से हिन्दू बड़ी जल्दी अपने सम्प्रदाय के उन लोगों के मामले उठाते हैं जो दोषी पाए जाते हैं।

ऐसी आलोचनाओं को जो असली हालात को समझे बगैर की गई हैं या खास ग़लतफ़हमियों को लेकर हुई हैं यों ही नहीं माना जा सकता क्योंकि ये उन लोगों ने की हैं जिनकी सामुदायिक उपद्रवों में व्यक्तिगत दिलचस्पी है।

4. उन आलोचनाओं को अलग-अलग जांचने से पहले, पंजाब की पृष्ठभूमि को समझना बेहद ज़रूरी है। 1921 से 1942 के अंत तक पंजाब में वहीं के मुसलमान नेताओं का शासन रहा है। मुस्लिम लीग की नीति पूरी तरह इनके काबू में न भी हो, लेकिन ये उसे प्रभावित करते हैं। इन नेताओं को साफ़ मालूम था कि पंजाब (जैसा तब था और 15 अगस्त तक रहेगा) पर किसी साम्प्रदायिक पार्टी का शासन नहीं चल सकता। चाहे वह मुसलमान हो या गैर मुसलमान। अतः उन्होंने यूनियनवाद का प्रचार किया—मुस्लिम नेतृत्व में संयुक्त पंजाब की एक यूनियनवादी पार्टी के रूप में। यह सभी समुदायों के लिए खुली थी। जैसे-जैसे मुस्लिम लीग की ताकत बढ़ती गई, मुसलमान नेता की बातों में छल बढ़ता गया। वे पाकिस्तान को तो नकार नहीं सकते थे, इसलिए उस मुद्दे को पंजाब के बाहर के मुद्दों की तरह लेने की कोशिश करते रहे। लेकिन शुरू से ही यह स्पष्ट था कि पाकिस्तान एक महत्त्वपूर्ण आंतरिक मसला था और देर-सबेर पंजाबी मुसलमान या तो इसे स्वीकार कर लेते या उन्हें लीग में शामिल होना पड़ता, या यूनियनवादी विचारधारा में शामिल होना पड़ता। 1942 के अंत में सर सिकन्दर हयात खां[2] की मृत्यु से यूनियनवादी पार्टी भी खत्म होने लगी। 1945-46 के आम मतदान तक सर खिज़्ज़ार हयात खां तिवाना[3]

---

1. राजा ग़ज़नफ़ार अली खां, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के सदस्य और सलाहकार, अंतरिम सरकार में स्वास्थ्य सदस्य।
2. सरदार सर सिकंदर हयात खां, 1937-42 तक पंजाब के प्रधानमंत्री (प्रीमियर)
3. नवाब मलिक सर ख़िज़्ज़ार हयात खां तिवाना, 1942-47 तक पंजाब के प्रीमियर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के अंतर्गत आखिरी यूनियनवादी मंत्रिमंडल अच्छी तरह चला। यह चुनाव बेहद कटु साम्प्रदायिक लाइनों पर हुआ था। सिर्फ आठ या नौ यूनियनवादी मुसलमान बचे थे। एक-दो अपवादों को छोड़कर या तो हिन्दू यूनियनवादी हरा दिए गए या वे कांग्रेस पार्टी में खप गए और सिक्ख यूनियनवादी पंथिक पार्टी में मिल गए। पंजाब इतनी बुरी स्थिति में पहुंच गया कि एक तरफ सारे मुसलमान और दूसरी तरफ सारे ग़ैर-मुसलमान हो गए।

मुस्लिम लीग और कांग्रेस या पंथिक पार्टी के सही तरह से मिलने से इस स्थिति को सुधारा जा सकता था। मगर साम्प्रदायिक भावनाएं काफ़ी दृढ़ थीं और मुस्लिम लीग और कांग्रेस को पंजाब के बाहर से आदेश मिलते थे। 3 करोड़ लोगों का एक देश अखिल भारतीय राजनीति के भंवर में फंस गया था। पंजाबी, पंजाबी न होकर मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख बन गए थे। इनमें सिर्फ सिक्खों ने अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता क़ायम रखी थी। इस उपसंहार में एक अस्थाई सम्मिलित सरकार बनी जिसमें मलिक सर खिज़ार हयात खां तिवाना के नेतृत्व में कांग्रेस, पंथिक पार्टी और बचे-खुचे यूनियनवादी भी शामिल किए गए।

मार्च 1946 में इस नये सम्मिलित मंत्रिमंडल ने कार्यभार सम्भाला। 8 अप्रैल 1946 को जब मैं गवर्नर बना तब सभी का बजट अधिवेशन खत्म हो गया था लेकिन संविधान बनाने की कोई कोशिश नहीं हुई थी। मंत्रियों को न अपने आप पर विश्वास था न दूसरों पर। मुस्लिम लीग उनसे नफ़रत करती थी और विपक्ष से उनका सम्पर्क नहीं था। मार्च 1947 में मंत्रिमंडल के इस्तीफ़ा देने तक मैं ही विपक्ष के साथ सहज रूप से बिना किसी तनाव के बात कर सकता था।

मंत्रिमंडल के खिलाफ़ मुस्लिम लीग की कई शिकायतें अतिशयोक्तिपूर्ण और झूठी थीं। सम्मिलित मंत्रिमंडल का बर्ताव और उनके दांव-पेंच मुस्लिम लीग को खिझाते थे और इसकी वजह भी थी। सबसे बड़ी बात थी कि सबसे बड़ी पार्टी को सरकार से बाहर रखा गया था जिसे अपनी बारी के लिए असीमित काल तक इंतजार करना पड़ सकता था।

ऐसी विस्फोटक स्थितियों में बम्बई, कलकत्ता, नोआखली, बिहार, पश्चिमी संयुक्त प्रांत, और उ० प० सी० प्रां० से असाधारण पैमानों पर साम्प्रदायिक लड़ाइयों की खबर ने आतंक फैला दिया था। गर्मियों के शुरू में अमृतसर और मुल्तान में छोटे-मोटे दंगे ठीक तरह संभाल लिए गए थे। बाद में लुधियाना और रोहतक के गम्भीर उपद्रवों को सफलतापूर्वक दबा दिया गया था। रोहतक के उपद्रवों का सीधा सम्बन्ध पश्चिमी संयुक्त प्रांत के उपद्रवों से था जो काफ़ी खतरनाक थे। पूरे पंजाब में गृह-युद्ध का वातावरण बन रहा था। सारे समुदाय एक अनिवार्य संघर्ष के लिए सशस्त्र हो रहे थे। नवम्बर, 1946 में घोषित पंजाब सार्वजनिक रक्षा अध्यादेश ने स्थिति पर मंत्रिमंडल के विचार प्रगट किए।

मंत्रिमंडल ने देखा कि साम्प्रदायिक लड़ाइयों में 'गैर सरकारी सेनाएं' बड़ी भूमिका निभाएंगी। उनमें से दो—मुस्लिम लीग, नेशनल गार्डस और राष्ट्रीय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
स्वयं सेवक संघ—मुख्य थीं। ये तेज़ी से बढ़ रही थीं।

'नागरिक स्वतंत्रता रक्षा' प्रदर्शनकारियों का उद्देश्य छिपाने के लिए नाकाफ़ी था। 26 फ़रवरी के आस-पास मिली-जुली सरकार ने मुस्लिम लीग से समझौता कर लिया था।

इस आन्दोलन ने कानून-व्यवस्था के प्रति नफ़रत फैला दी। प्रदर्शनकारियों की हेकड़ी ने गैर-मुसलमानों को हिस्टीरिया की हद तक डरा दिया।

इस दौरान 20 फरवरी को ब्रिटिश सरकार ने 30 जून, 1948 से पहले भारत छोड़ने के निर्णय की घोषणा कर दी। यह भी कहा कि अपनी उत्तराधिकारी सरकार या सरकारों को सत्ता सौंपेगी। मुसलमान जोश में थे और पूरे पंजाब को पाकिस्तान के लिए छीन लेने को तैयार थे। गैर-मुसलमान कृतसंकल्प थे कि उन्हें ऐसा नहीं करने दिया जाएगा।

सम्मिलित मंत्रिमंडल सविनय अवज्ञा आन्दोलन से हिल गया था और 20 फरवरी के वक्तव्य से उदास हो गया। उसने निश्चय किया कि पहले तो जैसे-तैसे बजट अधिवेशन को पूरा करेंगे, फिर अधिवेशन के दौरान या उसके बाद पार्टी की पुनर्व्यवस्था करेंगे। कम-से-कम मुख्य मंत्री का यह आशय था और इस पर उनके सहयोगी भी राज़ी थे। मगर 2 मार्च को अचानक, उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया। इसका कारण मुझे भी नहीं मालूम था। इस्तीफ़ा उन्होंने शाम को दिया था। अगले दिन, 3 मार्च को, वित्त और विकास मंत्री (उन्हें इस खबर से बड़ा सदमा पहुंचा था) से मिलकर मैंने ममदोत[1] को बुलाकर मंत्रिमंडल बनाने को कहा।

गैर-मुसलमान सोचते थे कि मुस्लिम लीग मंत्रिमंडल उन्हें खत्म कर देगा। मिली-जुली सरकार की कोई सम्भावना नहीं थी। इसके बिना ममदोत को सभा में बहुमत नहीं मिल सकता था। इस बात को तय करने के लिए 3 मार्च की शाम को कांग्रेस और पंथिक सिक्खों ने लाहौर में एक विराट सभा की जिसमें बड़ उग्र भाषण दिए गए। मार्च की सुबह वहां दंगे-फ़साद शुरू हो गए।

उसी दिन शाम को जाने वाले मंत्रियों ने प्रचलित परम्परा के अनुसार काम करते रहने से इन्कार कर दिया, और 5 मार्च तक ममदोत के मंत्रिमंडल का कोई नाम-निशान नहीं दिखाई दिया। उसी शाम भारत सरकार अधिनियम 1935 की धारा 93 के अंतर्गत गवर्नर के शासन की घोषणा हो गई।

इस तरह मैंने व्यक्तिगत रूप से पंजाब का कार्यभार सम्भाला। मुसलमान पूरे पंजाब पर प्रभुत्व जमाने पर तुले बैठे थे, ग़ैर-मुसलमान इस प्रभुत्व के सामने झुकने को तैयार नहीं थे, कुल मिलाकर आसार अच्छे नहीं थे।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, 4 मार्च को लाहौर में दंगे-फ़साद शुरू हो गये। उस दिन से अब तक के दंगे-फ़साद की तीन अवस्थाएं हैं:

(i) 4 मार्च से 20 मार्च। लाहौर, अमृतसर, मुल्तान, रावलपिण्डी, जालंधर और सियालकोट में दंगे-फ़साद।

---

1. इफ़्तिखार हुसैन खां, पंजाब में मुस्लिम लीग के नेता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(ii) 21 मार्च-9 मई। कई ज़िलों में छोटी-मोटी घटनाएं। 11-13 अप्रैल को अमृतसर में गम्भीर दंगे-फ़साद और आगज़नी। लाहौर में भी इसकी प्रतिक्रिया हुई। गुड़गांव ज़िला के छोटे-से शहर, होडल में फ़साद जिसके बाद मेवात में भी विद्रोह शुरू हो गया।

(iii) 10 मई से अब तक साम्प्रदायिक विरासत का युद्ध लाहौर और अमृतसर में छुरेबाजी, आगज़नी, और बमबारी की खबरें।

कई ज़िलों विशेषकर गुजरान्वाला और होशियारपुर से भीषण घटनाओं की रिपोर्टें आई हैं। अमृतसर, लाहौर, फ़िरोज़पुर, जालंधर और होशियारपुर के गांवों पर भी छापे पड़ने शुरू हो गये हैं। 140 गांवों को जलाकर भारी मारकाट के साथ गुड़गांव में उपद्रव फिर शुरू हो गया है।

2 अगस्त तक तीनों अवस्थाओं में मारधाड़ की जो रिपोर्टें आई हैं उसके अनुसार 4632 आदमी मारे गए और 2573 बुरी तरह घायल हुए।

जाहिर है कि यह गिनती अधूरी है, विशेष रूप से गुड़गांव के लिए जहां आमतौर पर अपने घायलों और मृतकों को उनके दलवाले खुद उठा ले जाते हैं।

पंजाब अशांत क्षेत्र अधिनियम 1947, पंजाब अशांत क्षेत्र (सशस्त्र सेनाओं की विशेष ताक़त), अध्यादेश 1947, और पंजाब सार्वजनिक-रक्षा अधिनियम 1947 के अन्तर्गत इन उपद्रवों को विशेष तौर पर निबटाया गया।

इस ज्ञापन के दूसरे पैराग्राफ़ में जिन आलोचनाओं का ज़िक्र है, अब मैं उन्हें उठाता हूं।

6. (i) 1942 के उपद्रवों को अंग्रेजों ने बड़ी आसानी से दबा दिया था, मगर 1947 के उपद्रवों को उतनी आसानी से दबाया नहीं जा सका।

1942 के उपद्रव जिन प्रांतों में गम्भीर थे वहां (अ) एक अकेली पार्टी ने (ब) उन सरकारों के खिलाफ़ किये जो युद्ध में हिस्सा ले रही थीं और (स) उस समय किसी और ज़िम्मेदार व्यक्ति को सत्ता सौंप देने का आशय नहीं रखती थी।

1947 के उपद्रव (अ) समुदायों ने, (ब) एक-दूसरे के खिलाफ़, (स) एक ऐसी सरकार की उपस्थिति में किए जो जून, 1948 से पहले ही किसी अज्ञात उत्तराधिकारी या उत्तराधिकारियों को सत्ता सौंपने का निर्णय ले चुकी थी।

1942 के उपद्रवों का उद्देश्य जर्मन और जापानियों के हाथों अंग्रेजों की हार को सुगम बनाना था।

1942 में सरकारी नौकर और सरकारी सम्पत्ति पर हमले हुए थे।

1947 में इन पर कम ध्यान दिया गया था—'दोनों राष्ट्र' एक-दूसरे से सड़कों, बाज़ारों, मैदानों, गांवों में लड़ रहे थे। जब यह पता लगा कि दंगे दबाए जा सकते हैं तब इस लड़ाई ने आतंकवाद का रूप ले लिया।

यह स्पष्ट है कि आलोचक समान बातों की तुलना नहीं कर रहे हैं। दोनों स्थितियों में कोई समानता नहीं है। इससे बेहतर तुलना 1946 और 1947 की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
है। 1946 के दौरान पूरे समय पंजाब ख़तरे में रहा था। साम्प्रदायिक फ़सादों को संभालने के लिए क़दम मैंने उठाये थे, हालांकि संवैधानिक रूप से यह काम मंत्रिमंडल ने किया था। मेरे पास वही स्रोत 1946-1947 में थे। 1946 के उपद्रवों से ज़्यादा विस्तृत 1947 के उपद्रव का कारण यह जानकारी थी कि सत्ता का हस्तांतरण होगा।

7. (ii) अंग्रेज अफ़सर अयोग्यता और क्रूरता से पेश आए हैं और यह समझते हैं कि चूंकि वे जाने वाले हैं इसलिए जनसंहार, आगज़नी और लूटमार का कोई महत्त्व नहीं है।

ऐसी आलोचना करना आसान है लेकिन इसको प्रमाणित या अप्रमाणित करना उतना ही मुश्किल है। मुझे बताया गया कि दो मामलों में मदद के लिए आए लोगों को अंग्रेज अधिकारियों ने 'नेहरू या पटेल से सलाह' करने को कहा। मगर पूछताछ पर पता लगा कि दोनों इलज़ाम ग़लत थे। इस आलोचना के दो कारण मैं सोच सकता हूं। पहला तो यह कि अंग्रेज आदतन उन विषयों पर गम्भीरता से बात नहीं करते जिन्हें वे गम्भीर समझते हैं, दूसरे पढ़ा-लिखा औसत भारतीय अपने देशवासियों के व्यवहार के न्यायसंगत कारण खोज निकालता है। गुड़गांव के भूतपूर्व उपायुक्त का हताहतों का 'स्कोर' पूछना जिसपर नेहरू सदमे की हालत तक स्तम्भित रह गये, पहले कारण (अंग्रेज स्वभाव) का उदाहरण है। मगर यह एक जिलाअधिकारी की उस चिंता को व्यक्त करने का आसान तरीका है, जो हमेशा उसके दिमाग में रहती है—और वह यह जानता है कि जिस लड़ाई में दोनों ओर लड़ने वालों की संख्या बराबर हो उसमें आहतों की संख्या भी बराबर हो जाए तभी लड़ाई को रोका जा सकता है। दूसरा कारण इसमें कम स्पष्ट है लेकिन 'बलि का बकरा' बनने जैसी बात भारत में अफ़सरों के लिए कोई नई बात नहीं है।

मैं इस बात से संतुष्ट हूं कि कोई अंग्रेज़ अधिकारी क्रूर नहीं है। वैसे तो ब्रिटिश अधिकारी यहां हैं ही नहीं, और जो हैं उन्होंने इन उपद्रवों के दौरान बड़ी लगन और मानवता से काम किया है। फिर भी राजनीतिज्ञों ने इन्हें लगातार सताया है।

इन आलोचनाओं ने यह मान लिया गया है कि हम असफल हो गए हैं, और बचे-खुचे अंग्रेज़ अधिकारी इसके ज़िम्मेदार हैं। दरअसल जो व्यक्ति पिछले छः महीने पंजाब में नहीं रहा वह इस बात का अंदाज़ा नहीं लगा सकता कि हम किन मुसीबतों और ख़तरों से उलझ-उलझ कर बचे हैं। अपनी कलहप्रियता के लिए मशहूर तीन करोड़ लोगों का प्रांत लेकर उनमें साम्प्रदायिक उग्रता भर देना, उनसे यह कहना कि एक शताब्दी तक उन पर हुक्म करने वाले अधिकारी अब जा रहे हैं...उनके प्रांत के दो ऐसे टुकड़ों में बांट देना जिसमें धर्म को छोड़कर बाकी सब लोग समान हैं, और उनके दो प्रमुख शहरों को सीमा-शहरों में बदल देना—निश्चित रूप से ये सब साधारण काम नहीं हैं। अगर आलोचक यह समझते हैं कि इतना सब बिना उपद्रवों के हो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जायगा, तो यह सही नहीं है। ब्रिटिश की निष्पक्षता और दृढ़ता की वजह से ही पंजाब बच सका है।

●●●

13. अगर मैं यह प्रमाणित करने में सार्थक हुआ हूं कि पंजाब की स्थिति उतनी ही वास्तविक है जितनी फ़िलिस्तीन की, जिसका क्षेत्र भी लगभग उतना ही है और जनसंख्या मुल्तान और मुज़फ्फरगढ़ ज़िले की जनसंख्या के बराबर है; कि इन स्थितियों के लिए आलोचक भी एक हद तक ज़िम्मेदार हैं क्योंकि उन लोगों ने अधिकारियों की कोई मदद नहीं की है; कि ब्रिटिश अयोग्यता की बात इस तथ्य की अपेक्षा करती है कि हमारा आशय इस अयोग्यता को हटाने का रहा है; कि कुल मिलाकर एक कठिन स्थिति में हमने बेहतरीन काम किए; तो यह ज्ञापन सार्थक हो जाएगा। भविष्य अज्ञात है और उसका अनुमान भी बेकार है। पर, इतना तय है कि हमारे आलोचक दोनों तरफ़ से अपनी ही बात मनवाना चाहते हैं—स्थिति के बिगड़ने का कारण अंग्रेज़ हैं, और संभलने का कारण भारतीय कुशलता। इस बात का संकेत कर देना बेहतर होगा कि सेना के वर्गीकरण और समस्याओं का निदान 15 अगस्त से एकदम अलग तरीके से होगा, और उस दिन के बाद प्रगति हो या पतन, कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा।

ई० एम० जेंकिंस
पंजाब के गवर्नर
4. 8. 47

स. उ० प० सी० प्रां० में साम्प्रदायिक अशांति

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
8 वीं मीटिंग, 4 अप्रैल, 1947

प्रकरण 12 : उ० प० सी० प्रां० के गवर्नर और इस्मे की 2 अप्रैल, 1947 की भेंटवार्ता पर नोट्स

इस मीटिंग में एक नोट पर विमर्श हुआ जो 2 अप्रैल को उ० प० सी० प्रां० के गवर्नर से मुलाकात के बाद इस्मे ने बनाया था।

वाइसराय ने केरो के नाम नेहरू के पत्र का ज़िक्र किया जिसमें उन्होंने वैवेल को सुझाव देते हुए कहा था कि केरो को इस्तीफ़ा दे देना चाहिए। वाइसराय ने कहा कि नेहरू इतने ईमानदार हैं कि जो बात उन्होंने भूतपूर्व वाइसराय से कही वही गवर्नर के मुंह पर भी कह सकते हैं। वैवेल ने वाइसराय को पूरी स्थिति पहले ही समझा दी थी। केरो ने नेहरू को सीमा पर आने के लिए कड़े शब्दों में मना किया था और कहा था कि अगर उन्हें (नेहरू को) कुछ हो गया तो वह ज़िम्मेदार नहीं होंगे। दरअसल, वैवेल ने उन्हें वहां जाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
से रोका था मगर इस निर्णय को उन्होंने केरो का ही बताया। विदेशी मामलों के सदस्य होने के नाते और सीमा पर कांग्रेस सरकार के कारण नेहरू ने उसका बुरा माना।

वाइसराय ने यह भी कहा कि इस विषय में बेहतर होगा अगर सच्चाई का सामना किया जाए···और यहां नेहरू के बगैर काम नहीं चल सकता था। वाइसराय ने कहा कि वह खुद नेहरू को बताएंगे कि अगर वह (नेहरू) सीमा पर मारे जाते हैं तो उसके घातक परिणाम होंगे। यह स्पष्ट था कि उनका जितना नियंत्रण इस वक्त था, वह इससे ज्यादा चाहते थे।

वाइसराय ने यह भी कहा कि अगर नेहरू को सही वक्त पर पकड़ा जाए तो भावुकता त्याग कर काम करने में उनका जवाब नहीं था। मगर उसके लिए सही वक्त का चुनाव ज़रूरी था - जैसा कि पिछले दिन की मीटिंग में साबित हो गया था। एक रिपोर्ट के अनुसार त्रैवेनकोर ने एक 'विदेशी ताकत' (जो शायद ब्रिटेन ही था) के साथ यूरेनियम की खानों की बिक्री का समझौता किया था। नेहरू इस विषय पर निष्पक्ष नहीं थे मगर अंत में उन्होंने सुझाव दिया था कि वह अगर ज़रूरत पड़ती तो भारतीय वायुसेना को त्रैवेनकोर पर बम बरसाने भेज देते।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
18 वीं मीटिंग, 21 अप्रैल, 1947

●●● प्रकरण 3 : अपने भविष्य के लिए प्रांतों का चुनाव

(ब) उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत

वाइसराय ने उ० प० सी० प्रां० से संबंधित एक और मुश्किल का जिक्र किया। कांग्रेस सर ओलफ़ केरो पर लगातार गंभीर हमले कर रही थी। वैवेल ने केरो के इस्तीफ़े के लिए नेहरू का अनुरोध टाल दिया था। पटेल और डा० खां साहिब ने भी उन पर इलज़ाम लगाया था। जब जिन्ना ने इस बारे में सुना तो वह आगबबूला हो गये। वाइसराय के अनुसार केरो पूरी तरह ईमानदार थे, मगर इसी ईमानदारी ने उन्हें एक असम्भव स्थिति में डाल दिया था। कृष्ण मेनन ने तो गवर्नर ही नहीं सारे ब्रिटिश अधिकारियों पर मुस्लिम लीग की तरफ़दारी का इलज़ाम लगाया था।

वाइसराय ने याद दिलाया कि लियाक़तअली ने आशा की थी कि कांग्रेस के दबाव में आ कर वह (वाइसराय) वर्तमान गवर्नर को नहीं हटाएंगे मगर वाइसराय ने लियाक़तअली को भी वही चेतावनी दी जो गवर्नर को दी थी कि ज़रूरत पड़ने पर उन्हें अपना इस्तीफ़ा देना होगा।

अगर केरो को इस्तीफ़ा देना पड़ेगा तो उन्हें पूरे सम्मान के साथ विदा किया जाएगा, वाइसराय ने यह बात स्पष्ट कर दी थी। फिर भी जब तक उस प्रांत पर धारा 93 लागू नहीं की जाती तब तक उन्हें अपना पद सम्भाले रखना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होगा। क्योंकि उ० प० सी० प्रां० के साथ किसी नये उत्तराधिकारी की गुंजाइश नहीं थी। वाइसराय ने जानना चाहा कि गवर्नर के साथ ऊंचे दर्जे का सलाहकार भी नियुक्त किया जा सकता है या नहीं। मेईविल ने जवाब दिया, यह तो इस बात पर निर्भर होगा कि उत्तराधिकारी गवर्नर को सीमा का अनुभव है या नहीं। फिर भी, वाइसराय के अनुसार, किसी भी हालत में सलाहकार की नियुक्ति ठीक रहेगी।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 6, 8 मई, 1947

●●●

13. इस दौरान कांग्रेस के सदस्यों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अगर मैंने उ० प० सी० प्रां० का मंत्रिमंडल धारा 93 के अन्तर्गत ज़बरदस्ती खत्म किया तो यह कानूनी और नैतिक रूप से गलत होगा। कांग्रेस का मेरी निष्पक्षता में विश्वास तो हट जाएगा, भारत के दूसरे क्षेत्र में भी कानूनी तौर पर बनी और लोकमत से चुनी गई सरकार को उखाड़ने की कोशिशें भी की जाएंगी।

●●●

21. उ० प० सी० प्रां० के उस पार की जनजाति के बारे में मुझे बड़ा अफ़सोस होता है। फ़िलहाल तो उनका व्यवहार सामान्य है, मगर मुझे लगता है कि वे मौके की तलाश में हैं। जैसे ही ऐसी स्थिति पनपेगी वह लूट-मार करने से चूकेंगे नहीं।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 8, 5 जून, 1947

●●●

33. 5 जून की दोपहर, मुझे केरो से एक तार मिला जिसमें उन्होंने लिखा है कि वह प्रधान मंत्री की अनुपस्थिति में सरकार के दो सदस्यों से मिले। उन लोगों ने कहा कि घोषणा का चौथा पैरा उन्हें मान्य नहीं था और किसी भी हालत में लोकमत वे स्वीकार नहीं करेंगे। मैंने फ़ौरन खां साहिब को बुला कर कहा कि मैं ऐसे नज़रिए का आदी नहीं था। उन्होंने वायदा किया कि कल ही सीमा पर जा कर वह अपने सहयोगियों से चौथा पैरा स्वीकार करवा कर जनमत-संग्रह में सहायता करने को कहेंगे।

34. घोषणा के बाद मैं जिन लोगों से मिला उनमें से अधिकांश का विचार है कि इस घोषणा से साम्प्रदायिक तनाव काफ़ी कम हो गया है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 15, 2 अगस्त, 1947

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

19. उ० प० सी० प्रां० के मंत्रिमंडल के प्रश्न पर मैं फिर से मुसीबत में पड़ गया हूं। चालू मंत्रिमंडल लोकमत के विपरीत परिणामों के बावजूद इस्तीफ़ा देने को तैयार नहीं है। पहले तो मंत्रिमंडल के मुख्य मंत्री, डा० खां साहिब ने कहा था कि अगर लोकमत उनके विरुद्ध जाता है तो वह इस्तीफ़ा दे देंगे। पर, संभवतः हाई कमांड के आदेशों के बाद, अब उन्होंने निर्णय बदल दिया है। अब उनका कहना है कि जब तक आम चुनावों में वह हरा नहीं दिये जाते, तब तक मंत्रिमंडल से इस्तीफ़ा क्यों दें। अल्पसंख्यक के अधिकार-भार के कारण कांग्रेस के पास काफ़ी बहुमत है।

20. मैं गवर्नर को कानूनी तौर पर मंत्रिमंडल को खत्म करने का निर्देश दे सकता हूं, जिस पर कोई आक्षेप भी नहीं कर सकता। दूसरी तरफ़ यह कदम असंवैधानिक होगा क्योंकि विधान में मंत्रिमंडल का बहुमत है। इसे कांग्रेसी भी ग़लत समझेंगे क्योंकि अपने मंत्रिमंडल को जहां तक संभव हो बनाए रखना उनके लिए गरिमा का विषय है।

21. मैंने लॉकहार्ट को सूचना भेजी कि इस मामले में मैं पाकिस्तान की प्रांतीय सरकार से सलाह लेने जा रहा हूं ताकि निर्णय की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं की हो। आज सुबह की पाकिस्तान कैबिनेट मीटिंग में मुझे सलाह दी गई कि मैं गवर्नर को मंत्रिमंडल का इस्तीफ़ा मांगने का निर्देश दूं। और अगर वे इंकार करें तो उन्हें बर्खास्त करने का आदेश दूं। पर वाइसराय की हैसियत से अपने आखिरी हफ़्ते में मैं ऐसा कुछ नहीं करना चाहता जिसे असंवैधानिक करार दिया जाए।

22. मगर यह बात उन लोगों को जंची नहीं। अंततः उन्होंने सलाह दी कि अगर मैं गवर्नर से मंत्रिमंडल नहीं खत्म करवाता तो धारा 93 के अंतर्गत मुस्लिम लीग को अपना सलाहकार बनाकर गवर्नर को कार्य-भार खुद ही ले लेने का आदेश दूं। मुझे यह स्वीकार करने पर बाध्य किया गया कि अगर मैंने जल्दी ही कुछ परिवर्तन नहीं किए तो 15 अगस्त को मुस्लिम लीग उत्तराधिकार में उ० प० सी० प्रां० की अस्तव्यस्तता ही हासिल करेगी।

23. मैं अपने सहयोगियों की बात मानने को राज़ी हो गया मगर इससे पहले मैं विशेषज्ञों की राय जानना चाहता था कि मेरा यह कदम संवैधानिक होगा या नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
22वीं मीटिंग, 25 अप्रैल, 1947

प्रकरण 7 : भारतीय नेताओं से मिलने का प्रस्ताव

वाइसराय के अनुसार मुसलमान कलकत्ता और उसके आस-पास के क्षेत्रों में जनमत-संग्रह की मांग कर सकते हैं। यहां की जनसंख्या में लगभग एक-तिहाई मुसलमान हैं, एक-तिहाई उच्च जाति के हिंदू और बाकी अनुसूचित और दूसरी अल्पसंख्यक जातियां। उनके विचार में जिन्ना और लियाक़तअली की राय में कलकत्ता क्षेत्र में जनमत-संग्रह से मुस्लिम लीग को जीत जाना चाहिए। वाइसराय ने पहले ही जान लिया था कि प्रस्तावित मीटिंग में कलकत्ता पर बहस होगी। आखिरकार यह साम्राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर था। भारतवासियों को अपना भविष्य चुनने का मौका देने का मक़सद एकदम निष्पक्ष हल ढूंढ़ना था। आत्मनिर्धारण की कार्य-पद्धति ठीक न रहती क्योंकि उससे गलत उत्तर मिलने की संभावना थी। कुछ पद्धतियों पर अपवादस्वरूप काम किया जा सकता था।

पर इस्मे ने कहा कि अगर अपवाद एक जगह हुआ तो सब जगह उसी अपवाद की मांग होगी—मिसाल के तौर पर लाहौर···स्कॉट ने इसका समर्थन किया और कहा कि असम के लिए भी यह सही है। एबेल ने कहा कि जहां तक राजधानी का सवाल था वहां तक कलकत्ता अंग्रेज़ों और हिंदुओं का सृजन था। क्रिस्टी ने बताया कि टाईसन ने स्पष्ट रूप से कहा था कि कलकत्ता पश्चिम बंगाल का हिस्सा होगा। और जनमत-संग्रह से खून-खराबा होगा। इस्मे ने सुझाया कि बंगाल में क्रिस्टी और पंजाब में एबेल अपने-अपने गवर्नरों के साथ मसविदा-घोषणा पर बहस करें। वाइसराय को भी यह सुझाव अच्छा लगा। उन्होंने अकबर हैदरी (जो उस वक्त शायद दिल्ली में ही थे) से परामर्श की इच्छा ज़ाहिर की।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
34वीं मीटिंग, 31 मई, 1947

प्रकरण 2 : बंगाल

बंगाल के गवर्नर ने वाइसराय के नाम एक पत्र में कहा कि वह सुहरावर्दी[1] के साथ मुलाकात के लिए समय निश्चित कर लें। उन्होंने यह भी लिखा कि प्रांत के विभाजन के निर्णय की हालत में बंगाल की दोनों पार्टियां हमले के लिए तैयार हो रही थीं और हर संभावना थी कि इस स्थिति से गंभीर उपद्रव

1. एच० एस० सुहरावर्दी, 1946 से बंगाल के मुख्यमंत्री।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खड़ा होगा।

वाइसराय ने मेईविल से कहा कि सुहरावर्दी के साथ अपनी दोपहर की मुलाकात तय करें। उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेज़ सरकार स्वतंत्र बंगाल के विचार से सहमत थी—दरअसल वह उस हल से सहमत थी जो प्रमुख पार्टियों के नेताओं को मान्य हो। पर नेहरू तो पहले से ही स्वतंत्र बंगाल के प्रस्ताव से सहमत नहीं थे। ऐसी हालत में बातचीत के बेहतर रास्ता यह होगा कि पता लगाया जाए कि नेतागण इससे सहमत हैं या नहीं कि बंगाल को भारतीय राज्य का दर्जा दिया जाए और दोनों पक्षों से स्वतंत्र अनुबंध के लिए उसे इजाज़त दी जाए।

सर जॉन कोलविल[1] ने बताया कि लियाक़तअली के अनुसार सबसे मुश्किल विषय कलकत्ता का भविष्य था। अंग्रेज़ सरकार का आखिरी फ़ैसला हुआ कि कलकत्ता को स्वतंत्र शहर घोषित करना व्यावहारिक नहीं होगा और पूर्वी बंगाल को स्वतंत्र रूप से डोमिनियन स्टेटस नहीं दिया जा सकता। पूर्वी बंगाल पाकिस्तान के लिए उलझन होगा। नेहरू के विचार में, अभी या बाद में, पूर्वी बंगाल को भारत में शामिल होना होगा।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **26वीं मीटिंग, 1 जून, 1947**

प्रकरण 4 : बंगाल

सुहरावर्दी का मेईविल के नाम एक पत्र का संदर्भ इस मीटिंग में उठाया गया। इसमें सुहरावर्दी ने दो मुद्दों पर ज़ोर दिया था :

(अ) अनुसूचित जातियों के सही अधिकार और बंगाल में लोकमत की आवश्यकता, और (ब) कलकत्ता को स्वतंत्र शहर बनाने की वांछनीयता।

राव बहादुर मेनन ने कहा कि कलकत्ता की स्वतंत्रता के सुझाव का कांग्रेस पार्टी कड़ा विरोध करेगी। फिर भी, अगर वह थोड़े समय के लिए किसी निष्पक्ष अधिकारी के अंतर्गत (जैसे गवर्नर-जनरल) रहे तो शायद कांग्रेस इस पर विचार करने को तैयार हो जाए।

एबेल ने कहा कि इस हालत में अगर मसविदा-घोषणा में अनुसूचित जातियों की राय या कलकत्ता के लिए विशेष व्यवस्था के संदर्भ में कोई हेर-फेर होता है तो शायद कांग्रेस पूरी योजना को ही अस्वीकार कर दे।

---

1. लेफ़्टिनेंट कर्नल सर जॉन कोलविल, मार्च 1943 से बम्बई के गवर्नर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

●●● **रिपोर्ट नं० 5, 1 मई, 1947**

28. पंजाब के उ० प० सी० प्रां० से बुरा सिर-दर्द बंगाल ही हो सकता है। बंगाल के विभाजन पर चुनाव की मेरी योजना पर पहले तो बरोज़ अनिच्छा से सहमत हो गए थे। मगर जब मैंने अपने निजी संयुक्त सचिव को वहां भेजा तब तक वह अपना निर्णय बदल चुके थे और चाहते थे कि संयुक्त नियंत्रण में कलकत्ता स्वतंत्र शहर बन जाए। बुधवार, 30 अप्रैल को बरोज़ दिल्ली आए।

29. अगली सुबह इस पर हमारी लम्बी बहस हुई कि कलकत्ता को विभाजन से बाहर, संयुक्त नियंत्रण में रखा जाए या नहीं। मैंने कहा कि यह हल मुसलमान और कांग्रेसी बंगालियों को अच्छा लगेगा। मुझे पूरा विश्वास था कि अगर इस समय यह नई शर्त लग जाए तो पूरी योजना पर पानी फिर जाएगा क्योंकि कांग्रेस तो यह सुझाव अस्वीकार करेगी ही। और उनकी इच्छा के खिलाफ़ इसे लागू किया गया तो वे सरकार से इस्तीफ़ा दे देंगे। बरोज़ ने कहा कि इससे बंगाल की स्थिति मुश्किल हो जाएगी और कलकत्ता में दंगे हो सकते हैं। पूरे भारत की समस्याएं भी होंगी जो प्रांतीय समस्याओं से ज़्यादा महत्व की हैं।

30. अपनी बातचीत के परिणामस्वरूप मैं अपनी योजना का मसविदा फिर से तैयार कर रहा हूं। पहले मैंने सोचा था कि बंगाल संविधान-सभा के सदस्यों से 'विभाजन या एकता' पर एक ही दिन मतदान होगा। एकता के पक्ष में निर्णय होने पर यह पता लगाना होगा कि वह स्वतंत्र रहना चाहेंगे, पाकिस्तान में जाना चाहेंगे या भारत में? लेकिन नये प्रस्ताव के अनुसार बंगाल (और साथ में पंजाब भी) में प्रांत के एकीकृत, स्वतंत्र रहने, पाकिस्तान या हिंदुस्तान में शामिल होने के निर्णय पर एक प्रारंभिक मतदान होगा। इस निर्णय की रोशनी में वे विभाजन चाहते हैं या नहीं, इस पर हफ़्ता, पंद्रह दिन के अंदर फिर मतदान होगा।

31. बरोज़ के अनुसार उनके मुख्यमंत्री, सुहरावर्दी, को विश्वास है कि पहले मतदान में स्वतंत्रता के पक्ष में मत पड़ेंगे क्योंकि 60 में से उनके पास 33 सीटें हैं। इसके अलावा जिन्ना ने भी उन्हें पाकिस्तान में न शामिल होने की, इजाज़त दे दी है। एक बार इन सदस्यों के सामने स्पष्ट चुनाव आ जाए, कि उन्हें पाकिस्तान और विभाजन में नहीं स्वतंत्रता और विभाजन में से एक को चुनना है, तो प्रांत के एकीकृत रहने के कुछ आसार नज़र आते हैं। इसमें शक नहीं कि बंगाल के लिए एकता ज़रूरी है; क्योंकि अगर प्रांत का विभाजन हो जाता है तो सिलहट के साथ पूर्वी बंगाल भी एक अ-लाभकर क्षेत्र बन जाएगा, जिसे बाकी पाकिस्तान से कोई मदद नहीं मिलेगी। अगर वे कलकत्ता को बर्बाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करना चाहते हैं तो जूट की जगह अन्न उगाना शुरू कर सकते हैं।

32. मैंने बरोज़ से बंगाल की स्थिति के बारे में पूछा : "क्या आप अभी भी बारूद के पीपे पर बैठे हैं ?" उन्होंने कहा, "नहीं, नहीं। वह तो हमने बहुत पहले ही हटा दिया था। अब हम पूरे बारूदघर पर बैठे हैं जो कभी भी फट सकता है।"

33. उन्होंने बताया कि पुलिस-शक्ति के साथ कठिनाइयां गंभीर हो गई हैं। मंगलवार की रात कुछ गोरखाओं ने हमला कर पांच पंजाबी मुसलमान मारे, और पांच घायल कर दिये। बंगाल सरकार ने बी-कम्पनी को मुअत्तल कर दिया है और सारे ऐसे तत्त्वों को निकालने जा रही है जिन पर संदेह है। इसमें कम-से-कम 800-1200 गोरखा होंगे। फ़िलहाल पुलिस की जगह सैनिकों को इस्तेमाल किया जाएगा। मैं समझता हूं कि इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है।

34. जब-जब मैं भारत की समस्या पर सोच-विचार करता हूं, तब-तब मुझे लगता है कि विभाजन एक पागलपन है जो पूरे देश की आर्थिक क्षमता को प्रभावित करेगा। इसके लिए मुझे कोई भी सहमत नहीं करा सकता था, मगर इस साम्प्रदायिक पागलपन ने सबको जकड़ लिया है। अब और कोई चारा नहीं।

35. एक भयंकर उदाहरण। पिछले हफ़्ते जब जिन्ना मेरे साथ थे तो मेरी पत्नी ने मिस जिन्ना को चाय पर बुलाया। उसी दिन सुबह वह लेडी अरविन कालेज गई थीं, और यह बात उन्होंने मिस जिन्ना को बताई। उस संस्था में हिन्दू-मुसलमान लड़कियां एक-दूसरे के साथ घुली-मिली नज़र आईं। 14 हिन्दू और 2 मुसलमान लड़कियों की एक कक्षा में 'हेड गर्ल' एक मुसलमान लड़की चुनी गई थी। मिस जिन्ना ने कहा, "वहां मुसलमान लड़कियां खुश दीखती हैं, इससे आप धोखे में मत आइए। उस कालेज में हमने अभी अपना प्रचार शुरू नहीं किया है।"

36. हिन्दू भी ऐसे ही हैं। कोई हल इन्हें मान्य ही नहीं।

37. कैबिनेट-मिशन-योजना का अन्त तक समर्थन करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि भारत के लिए यही एक तर्कसंगत हल है। जिन्ना ने बार-बार कहा है कि वह इस पर बहस नहीं करना चाहते क्योंकि कांग्रेस का ईमानदारी से पेश आने का इरादा नहीं है। पाकिस्तान को कुचलने में वह अपना स्थायी बहुमत इस्तेमाल करना चाहते हैं। मैंने और पटेल ने ऐसे समझौते पर विचार किया जिससे विधान-सभा की तरह साम्प्रदायिक प्रश्नों पर भी जनमत संग्रह की व्यवस्था हो सके। पटेल ने मुझे आगाह किया, "अगर आप

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समानता का प्रश्न फिर उठाएंगे तो कांग्रेस से आपकी हमेशा के लिए दुश्मनी हो जाएगी; इसीको लेकर हम लड़ रहे हैं, और इसमें हम सहमति नहीं दे सकते।"

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 8, 5 जून, 1947

शुक्रवार, 30 मई की रात को मैं लंदन से वापस आया। मगर सोमवार की मीटिंग से पहले किसी नेता से नहीं मिला। बंगाल की हाल की स्थिति का पता लगना ज़रूरी था। मैंने मेईविल से सुहरावर्दी को संदेश भिजवाया कि वह मुझसे मिलें—ताकि कोर्ट सरकुलर में यह बातचीत शामिल न हो। मुझे यह जानकर अफ़सोस हुआ कि किरन शंकर राय कांग्रेस हाई कमांड को बंगाल की स्वतंत्रता के पक्ष में मतदान के लिए राज़ी नहीं कर पाए। सुहरावर्दी ने याचना की कि विभाजन के दौरान कलकत्ता को स्वतंत्र शहर रहने दिया जाए। उनके अनुसार विभाजन के समय साम्प्रदायिक कड़वाहट काफ़ी कम हो जाएगी और उसके बाद शायद कांग्रेस उसे स्वतंत्र शहर मानने को सहमत हो जाए। नहीं तो, उन्हें डर था कि विभाजन से पहले शहर में दंगे-फ़साद और क्षति को रोका नहीं जा सकता। मैंने वी० पी० मेनन को पटेल से मिलने भेजा ताकि कलकत्ता में छः महीने तक संयुक्त नियंत्रण के लिए उनकी सहमति मिल सके। पटेल का दृढ़ जवाब था, "छः घंटे के लिए भी नहीं।"

* * *

5. दिल्ली से थोड़ी दूर, पंजाब के गुड़गांव ज़िले में दंगे-फ़साद पूरे ज़ोर-शोर पर थे। मैं वहां के गवर्नर जेंकिंस के साथ उन क्षेत्रों में भी गया। ऐसा लगता है कि इस बार उपद्रवों की शुरुआत हिन्दुओं ने की है।

* * *

29. बुधवार को दस बजे सुबह मैंने संविधान-सभा हाल में एक प्रेस कांफ्रेंस की। इसमें 200 से ऊपर प्रेस के लोग आए थे। ढाई घंटे तक हर संभावित विषय पर, मुझपर सवालों के अग्निबाण छोड़े गए। मगर इन विषयों में ज़्यादातर सिक्खों, राज्यों और पाकिस्तान के डोमिनियन स्टेटस को कायम रखने की अनुमति पर प्रश्न हुए।

30. घोषणा के बाद सुहरावर्दी मुझसे फिर मिले। पश्चिम बंगाल में रहने वाले एक मुसलमान होने के नाते उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान बनाने के लिए आश्चर्य-जनक दृढ़ता और उत्साह दिखाया। उनके पास अभी से ढेर-सी योजनाएं थीं। इनमें पूर्वी बंगाल को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ज़रूरी मशीनरी, उर्जा संयंत्र हासिल करने की योजना प्रमुख थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अ सत्ता के हस्तांतरण की तैयारियां

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
31वीं मीटिंग, 12 मई, 1947
प्रकरण 1 : प्रांतों का अपने-अपने भविष्य का चुनाव

पंजाब

वाइसराय ने सुझाया कि सीमा-कमीशन को निर्देश दिया जाएगा कि एक पक्ष एक क्षेत्र के बदले सीमा-ज़िलों में से दूसरा कोई भी क्षेत्र, जहां विरोधी समुदाय का बहुमत हो, उसको दे दे।

बंगाल

बहस-मुबाहिसे के बाद वाइसराय ने निर्णय किया कि बंगाल या और किसी प्रान्त के लिए स्वतन्त्रता का विकल्प न देने के आधार पर योजना को फिर से तैयार करना चाहिए। बाद में, अगर स्वतंत्रता के लिए सम्मिलित अनुरोध होता है तो इस निर्णय पर दोबारा विचार किया जा सकता है।

बलूचिस्तान

वाइसराय ने डी० पी० एस० वी० को नेहरू के नाम एक पत्र का मसविदा बनाने का निर्देश दिया। जिसमें बलूचिस्तान के लोगों की इच्छा जानने के प्रस्ताव पर उनकी सहमति मांगी गई थी।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
●●● 33वीं मीटिंग, 16 मई, 1947

प्रकरण 7 : समझौते के प्रमुख विषय

इस विवरण के साथ "समझौते के प्रमुख विषय" का मसविदा संलग्न है, जिसे राव बहादुर ने तैयार किया था। आशा थी कि इसपर भारतीय नेताओं के हस्ताक्षर लिए जाएंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय ने कहा कि पिछले दिन की मुलाकात में जिन्ना और लियाक़त अली ने इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया था। उन्हें योजना तो स्वीकृत थी मगर लिखित रूप में वह कुछ देना नहीं चाहते थे। नेहरू के अनुसार जिन्ना की सफलता का राज़ है कभी भी, किसी भी बात से सहमत न होना। अन्तिम फ़ैसले के लिए कांग्रेस ने बड़ी-बड़ी रियायतें दी थीं। कुल मिलाकर मुद्दा यही है कि जिन्ना किस तरह का ख़त लिखेंगे। दोपहर को वाइसराय इसी पर उनसे बात करेंगे।

राव बहादुर मेनन उस सुबह नेहरू और पटेल से मिले।

नेहरू और पटेल ने साफ़-साफ़ कह दिया कि यह लीग की आखिरी क्षेत्रीय मांग होगी। और अगर जिन्ना घोषणा को स्वीकार कर लेते हैं या अपने प्रभाव को किसी अच्छे काम के लिए इस्तेमाल करते हैं तो कांग्रेस को संतोष होगा।

वाइसराय ने जिन्ना को बराबर धमकाने की कोशिश की कि अगर वह ज़रूरतें पूरी नहीं करते तो डोमिनियन स्टेटस के आधार पर अंतरिम सरकार को सत्ता दे दी जाएगी। जिन्ना ने शांत भाव से सुना और कहा कि इस कदम को वह किसी भी हालत में रोक नहीं सकते।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **45वीं मीटिंग, 17 जून, 1947**

प्रकरण 5 : कार्यकारिणी समिति का पुनर्निर्माण (वी० सी० पी 76)

कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं से, 15 अगस्त के बाद जिनके प्रधानमंत्री बनने की संभावना थी, कहा जाए कि वे अपनी-अपनी पार्टी के कैबिनेट नामज़द करें, कि भावी कैबिनेट सदस्यों का ओहदा बराबर हो, काउंसिल की मीटिंगों में भाग लेने का उनका हक बराबर हो, लेकिन मुस्लिम लीग के सदस्यों का सिर्फ पाकिस्तान के प्रशासन से मतलब हो।

लार्ड इस्मे ने कहा कि मुस्लिम लीग के मंत्री इस प्रस्ताव का स्वागत नहीं करेंगे। उनकी राय में 15 अगस्त से पहले वर्तमान व्यवस्था को बदलने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

एबेल भी इससे सहमत थे। उनकी राय में विभाजन का प्रशासनिक पक्ष संचालन समिति, और इस उद्देश्य से बनाई गई अन्य समितियों पर छोड़ देना चाहिए।

वाइसराय को पूरा विश्वास था कि ये प्रस्ताव कांग्रेस के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थे। इस विषय पर नेहरू को संभाला नहीं जा सकता था क्योंकि कार्यकारिणी समिति के फिर से संगठित न होने की सूरत में वह इस्तीफ़ा देने की धमकी बारबार दे रहे थे। वाइसराय को विश्वास था कि लियाक़तअली को इन प्रस्तावों की ज़रूरत वह समझा सकेंगे क्योंकि उनकी (लियाक़त की) दिलचस्पी पर्याप्त मुसलमान प्रशासकों को ट्रेनिंग देने में थी। अगर पाकिस्तान की स्थिति को बचाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का पूरा अधिकार उनको दिया जाए तो वह ये प्रस्ताव मान सकते हैं। सत्ता के हस्तांतरण के पहले छः हफ़्तों में कुछ ज़्यादा वैधानिक काम नहीं होगा। सारे मंत्रियों का ध्यान विभाजन पर केन्द्रित होगा। वाइसराय ने जानना चाहा कि इन प्रस्तावों में सुधार करके, सत्ता के हस्तांतरण तक, इसकी संभावना है कि मुस्लिम लीग अपना काम संभाले रहेगी ? राव बहादुर मेनन ने बताया कि नेहरू और पटेल ने यह प्रस्ताव एकदम अस्वीकार कर दिया था।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 10, 28 जून, 1947**

12. 26 जून को विभाजन समिति की आखिरी मीटिंग हुई जो काफ़ी कटु थी। दिल्ली के छः सरकारी प्रेसों में से एक को कराची में देने की लियाक़त की मांग पर पटेल गुस्से से आगबबूला हो उठे। लियाक़त के पास एक छोटा प्रेस था जो प्रान्तीय सरकार की ज़रूरतों के लिए ही पूरा नहीं पड़ता था, पाकिस्तान सरकार के कामों को संभालने का प्रश्न ही नहीं उठता था। पटेल ने कहा कि सारे प्रेस भारत सरकार के काम में व्यस्त थे और उनमें से एक भी खाली नहीं किया जा सकता था। नई भारत सरकार की असुविधा के बावजूद भी जब एक प्रेस पाकिस्तान को देने का मैंने अनुरोध किया तो पटेल फिर फट पड़े। लियाक़त बोले कि यही हाल रहा तो 15 अगस्त तक पाकिस्तान सरकार बनने की कोई उम्मीद नहीं।

13. फ़ैसला किया गया कि अगली मीटिंग में (27 जून) विभाजन समिति को 'विभाजन काउंसिल' में बदल दिया जाए। यह भी स्वीकार लिया गया कि इस काउंसिल में दोनों पक्षों के तीन नामज़द सदस्यों में से दो होंगे। इस तरह जिन्ना भी इस मीटिंग में शामिल हुए। पटेल के साथ निजी बातचीत में मैंने उन्हें पाकिस्तान को अस्थाई रूप से एक प्रेस देने पर सहमत कर लिया, मगर इस शर्त पर कि उसे दिल्ली से बाहर नहीं ले जाया जाएगा।

14. अंतरिम सरकार के पुनर्निर्माण का संकट मेरे लिए सबसे बड़ा था। विभाजन को सात हफ़्ते बचे हैं। मेरी आशा थी कि सारी पार्टियां वर्तमान अंतरिम सरकार के अंतर्गत ही काम कर लेंगी। मगर लगता है कि नेहरू ज़्यादा परिश्रम के कारण तुनुकमिज़ाज होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह विश्वासघात होगा क्योंकि मैंने कहा था कि मैं इस बात पर अंग्रेज़ सरकार की अनुमति प्राप्त करूंगा कि वह पाकिस्तान के क्षेत्रों की पर्याप्त सुरक्षा और पूरा अधिकार कांग्रेस पार्टी को सौंप देगी। उन्होंने अपनी कार्य समिति से कहा कि इस व्यवस्था के न माने जाने पर वह इस्तीफ़ा दे देंगे। इससे और कांग्रेस नेताओं के भी इस्तीफ़े का खतरा था जिससे मैं बिना एक ज़िम्मेदार कांग्रेस सरकार के रह जाता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

15. बंगाल के मामले में, जिसका कि विभाजन होने वाला था, जिन्ना ने मिले-जुले या प्रादेशिक मंत्रिमण्डल नहीं बनने दिए। मगर कार्यभार के बिना मंत्री रखने की बात वह मान गए ताकि पश्चिम बंगाल में लीग मंत्रिमण्डल पर निगरानी भी रखी जा सके और लोगों को ग़लत काम करने से रोका भी जा सके। मैंने उनसे कहा कि उनके विचार में अगर ऐसा प्रस्ताव पश्चिम बंगाल के हक़ों को पर्याप्त रूप से सुरक्षित रखेगा तो मैं समझता हूं कि ऐसी व्यवस्था पूरे भारत पर लागू की जानी चाहिए। मेरे प्रस्ताव के अनुसार कैबिनेट के सब सदस्यों का इस्तीफ़ा ले लिया जाए और दोनों पार्टियों के नेताओं से कहा जाए कि वे अपनी-अपनी पार्टियों के नौ सदस्यों को नामज़द कर कैबिनेट की दो समितियां बनाएं। 'यूनियन आफ़ इंडिया' के हर एक सदस्य को 18 पोर्टफ़ोलियो में से दो मिलेंगे, मगर अपनी गतिविधियों को वह 15 अगस्त के बाद बनने वाले 'यूनियन आफ़ इंडिया' के क्षेत्रों तक सीमित रखेंगे। लीग के सदस्यों को सिर्फ़ 'पाकिस्तान पोर्टफ़ोलियो दिए जाएंगे जिससे वे बचे हुए 6-7 हफ़्तों तक अपने क्षेत्रों की ज़िम्मेदारी उठा सकें। उन्हें सारे कागज़ात दिखाए जाएंगे और कार्रवाई के लिए कहने और वीटो का अधिकार होगा।

16. पाकिस्तान और 'यूनियन ऑफ़ इंडिया' के सदस्य अगर किसी मामले पर असहमत होते हैं तो उस मामले को 18 लोगों की कैबिनेट में उठाया जाएगा, फिर उस पर अमल होगा। किसी भी हाल में, सब लोग विभाजन में इतने व्यस्त हैं कि लगभग सारे क्रियाकलाप रुके पड़े हैं।

* * *

26. इधर कुछ अधिवेशन बड़े मुश्किल रहे, खासकर 13 जून वाला, जिसमें भारतीय राज्यों की स्थिति पर विचार-विमर्श हुआ। पारम्परिक कांग्रेस पार्टी लाइन का पालन करते हुए नेहरू ने कहा कि सत्ता के हस्तांतरण के बाद रियासतों को अपनी स्वतंत्रता घोषित करने का अधिकार नहीं होगा। राजनीतिक सलाहकार, सर कौनरैड कौरफ़ील्ड पर, उनके सामने ही, उन्होंने अधिकार का दुरुपयोग करने का आक्षेप लगाया। पहले की तरह, फिर वह आपे से बाहर हो गए।

जिन्ना इसके विपरीत बोले कि ब्रिटिश ताज के साथ की गई संधियों को छोड़कर हर मामले में भारतीय रियासतें सर्वसत्ताधारी हैं। काफ़ी लम्बी और कड़ुआहट से भरी बहस के बाद यह प्रस्ताव पास हुआ कि भारत सरकार एक नया 'रियासत विभाग' बनाए। प्रभुता से संबंधित मामलों के अलावा, शेष सभी काम वह वर्तमान राजनीतिक विभाग से ले लें।

27. नेहरू को इस नये रियासत विभाग का भार नहीं मिला इसकी मुझे खुशी है। नहीं तो सब कुछ खत्म हो जाता। पटेल यथार्थवादी और समझदार हैं और निश्तर के साथ-साथ इस विभाग की ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। वी० पी० मेनन इसके सचिव होंगे, यह इससे भी बेहतर बात है। इस तरह शायद हम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लोग रियासतों से संबंध एकदम तोड़ देने और उसके कुप्रभावों से बच सकें।

***

29. राज्यों के विषय पर नेहरू और गांधी विवाद-ग्रस्त लगते हैं। अपने मित्र शेख अब्दुल्ला (स्टेट्स नेशनल कानफ्रेंस के अध्यक्ष) को जेल से निकलवाने नेहरू कश्मीर जाना चाहते थे ताकि वह भी (शेख) रियासत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो जाएं। गांधी ने मुझसे मिलकर कहा कि नेहरू के लिए रास्ता तैयार करने के लिए उन्हें भी कश्मीर जाना चाहिए। मेरे पास कश्मीर के महाराजा का निमंत्रण था। अंततः मैंने उन्हें (नेहरू और गांधी) बताया कि मैं खुद महाराजा और उनके प्रधानमंत्री से बात करूंगा। वे लोग चाहते थे कि महाराजा स्वतंत्रता की घोषणा न करके संविधान सभा में शामिल होने की इच्छा ज़ाहिर करें।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
40वीं मीटिंग, 9 जून, 1947

●●●

प्रकरण 2 : डोमिनियन दर्जा

वाइसराय ने बताया कि विधान के लिए ज़रूरी है कि शुरुआत में दोनों डोमिनियनों के लिए एक ही गवर्नर-जनरल हो। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में डोमिनियन स्टेटस देने के लिए भारत सरकार अधिनियम के संशोधन के रूप में यह विधान लागू होने वाला था। जिन्ना को महीने भर के अंदर फ़ैसला कर लेना चाहिए कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का एक ही गवर्नर-जनरल चाहते हैं या नहीं।

वाइसराय ने कहा कि बहुत सोच-समझकर वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि उनके लिए किसी एक डोमिनियन का गवर्नर-जनरल बनकर रहना संभव नहीं होगा, लेकिन जिन्ना के लिए उनका ऐसा निर्णय घातक होगा।

मेईविल के अनुसार यह ठीक से ज्ञात नहीं था कि डोमिनियन दर्जे के अंतर्गत गवर्नर-जनरल के क्या अधिकार थे। 1926 की इम्पीरियल कांफ्रेंस के निर्णय का एक हिस्सा पढ़ते हुए मेईविल ने कहा कि संवैधानिक गवर्नर-जनरल का सम्पर्क अंग्रेज़ सरकार से नहीं हो सकता। उसका स्टाफ़ वाइसराय के स्टाफ़ की तुलना में काफ़ी छोटा होता है। आमतौर से डोमिनियनें ही गवर्नर-जनरल की तनख्वाहें देती थीं।

राव बहादुर ने कहा कि जहां तक अंग्रेज़ सरकार से सम्पर्क का संबंध है, सत्ता के हस्तांतरण के बाद गवर्नर-जनरल का कोई राजकीय स्थान नहीं होगा।

वाइसराय ने कहा कि उन्होंने नेहरू और पटेल को समझा दिया था कि डोमिनियन स्टेटस बनने के बाद केवल एक संवैधानिक गवर्नर-जनरल होगा। पंडित नेहरू ने कहा कि उस पदाधिकारी की स्थिति आम संवैधानिक गवर्नर-जनरल से भिन्न होगी। शुरू-शुरू में उसका बहुत प्रभाव होगा। नेहरू ने शंका

CC-0. Agamnigam (Varanasi) Research Institute. Digitized by eGangotri

व्यक्त की कि अगर वे (वाइसराय) स्वयं न रहे तो विभाजन की प्रक्रिया ठीक-ठीक पूरी की जा सकेगी या नहीं। वाइसराय ने कहा कि उन्होंने एटली से साफ़-साफ़ कह दिया था कि अगर वे संवैधानिक गवर्नर-जनरल बने तो उनको इतने बड़े स्टाफ़ की ज़रूरत नहीं होगी जैसा अभी है। लेकिन उनको बहुत योग्य विशेषज्ञों की ज़रूरत होगी अगर उनको मध्यस्थता करने को या परामर्श करने को कहा गया।

राव बहादुर मेनन ने कहा कि मौजूदा स्थिति में तो दोनों पक्ष निर्णय के लिए ग्रेट ब्रिटेन के पास जाते हैं। दूसरा कदम यह होगा कि वे मित्रतापूर्ण परामर्श के लिए ब्रिटिश प्रतिनिधि के पास जाएं। वे हिज़ एक्सेलेंसी की सहायता चाहेंगे। रियासतों के प्रश्न भी सोचने थे। एक स्वतंत्र मार्ग-दर्शक और सलाहकार का बहुत लाभ होगा। गांधी ने भी कहा कि लार्ड इस्में जिस कमेटी के अध्यक्ष होंगे उसके निर्णयों को वह पूरी तरह मानेंगे।

इस्मे ने भी कहा कि अगर दो गवर्नर-जनरल बनाने का फ़ैसला होता है तो वाइसराय और उनके उच्च श्रेणी के स्टाफ़ का काम खत्म हो जाएगा। पर, अगर वाइसराय दोनों डोमिनियनों के गवर्नर-जनरल बनते हैं तो अपने सुझावों से दोनों की मदद करने के लिए रुकेंगे। शायद वह एक प्रभावी सलाहकार की हैसियत से रहें। उनका स्टाफ़ और वह कोई कार्यकारिणी का काम नहीं करेंगे। मगर दोनों डोमिनियन अगर उनकी सलाह नहीं मानतीं तो उनकी स्थिति का समर्थन नहीं किया जा सकेगा।

वाइसराय ने कहा कि उनके गवर्नर-जनरल बनने से पाकिस्तान को सबसे ज़्यादा फ़ायदा होगा। मगर, अगर जिन्ना ने अपना अलग गवर्नर-जनरल बनाया तो उनकी सारी संभावनाएं नष्ट हो जाएंगी।

स्कॉट ने कहा कि सत्ता के हस्तांतरण की तारीख के बाद वाइसराय को कार्यकारी या राजनीतिक समितियों का अध्यक्ष नहीं बनना चाहिए। वाइसराय भी इससे सहमत थे। अगर वह दोनों डोमिनियनों के गवर्नर-जनरल बनते हैं तो दोनों पक्षों की मीटिंगों में, बिना किसी वोट के, सिर्फ़ विमर्श या मार्गदर्शन करने के लिए अध्यक्षता कर सकते हैं।

मेईविल ने कहा कि संवैधानिक गवर्नर-जनरल की सेवाओं को इस्तेमाल करने के निर्णय का भार भारतीयों पर होना चाहिए। राव बहादुर ने कहा कि विधान के मसविदे में इस बिन्दु को शामिल किया जा सकता है। इस्मे ने सुझाया कि अगले कदम के तौर पर दोनों पार्टियों द्वारा स्वीकृत एक वक्तव्य जारी होना चाहिए।

राव बहादुर ने इस बात पर ज़ोर दिया कि विधान में दोनों डोमिनियनों के एक गवर्नर-जनरल होने के लिए विशेष सुविधा रखनी होगी।

क्रिस्टी ने सुझाया कि वाइसराय दोनों डोमिनियनों के प्रतिनिधियों की समिति की अध्यक्षता राज्यमंत्री की हैसियत से करें। वाइसराय ने कहा कि यह अच्छा नहीं होगा और राव बहादुर बोले कि इसे स्वीकारा नहीं जाएगा।

वाइसराय ने कहा कि जिन्ना से गवर्नर-जनरल की उनकी पसन्द का पता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगाने का काम मौंक्टन को दिया जाए। वह जिन्ना को कॉमन गवर्नर-जनरल के फ़ायदे भी बताएं।

कैम्पबेल-जानसन ने लंदन के एक अख़बार में छपी रिपोर्ट पर ध्यान केंद्रित कराया जिसमें लिखा था कि एक सरकारी प्रवक्ता के अनुसार ह्वाइटहाल में यह आशा की जा रही थी कि संभवतः लार्ड माउंटबैटन पूरे भारत के गवर्नर-जनरल बनकर रहेंगे।

वाइसराय ने :

(i) प्रेस अटैची को निर्देश दिया कि वह जॉयस[1] से कहें कि इस वक्त सरकारी प्रवक्ता का ऐसा वक्तव्य देना ठीक नहीं।

(ii) सी० वी० एस० से कहा कि एक ही व्यक्ति को पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का गवर्नर-जनरल बनाने के फ़ायदों पर एक पेपर तैयार करें।

(iii) सी० वी० एस से, उनकी स्वीकृति के लिए, मौंक्टन और जिन्ना की मुलाकात का मसविदा तैयार करने को कहा।

(iv) सी० वी० एस० से कहा कि अगर मौंक्टन अपने काम में असफल होते हैं तो अगला कदम क्या होना चाहिए इसपर विचार करें। योजनाओं की वजह से जिन्ना का निर्णय महीने-भर पहले मिलना ज़रूरी था।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
41वीं मीटिंग, 10 जून, 1947

•••

प्रकरण 2 : डोमिनियन दर्जा

वाइसराय ने पिछले दिन की स्टाफ़ मीटिंग में मौंक्टन को गवर्नर-जनरल के बारे में जिन्ना की पसन्द जानने के लिए उनसे मिलने का सुझाव दिया था।

इस मीटिंग में इस्मे ने उस विषय पर एक मसविदा पेश किया जिसमें वैकल्पिक सुझाव था कि वाइसराय के स्टाफ़ में से एक सदस्य जिन्ना से मिलने जाए। वाइसराय के अनुसार यह एक बेहतर तरीका था। थोड़े दिनों में इस्मे और मेईविल, दोनों ही जिन्ना से मिलकर उनके मन्तव्यों का पता लगाएं। पहले वे लियाक़तअली से मिलें और मौंक्टन को भी जिन्ना के साथ बातचीत करने के बारे में समझा दें।

राव बहादुर का बनाया हुआ विधान का एक मसविदा उस मीटिंग में बांटा गया जिसमें दोनों डोमिनियनों के एक गवर्नर-जनरल होने की बात थी। वाइसराय ने कहा कि यह मसविदा जिन्ना के साथ बातचीत का आधार बन सकता है, पर इसे विधान में शामिल करना ठीक नहीं होगा।

वाइसराय ने कहा कि (यह मानते हुए कि वह दोनों डोमिनियनों के गवर्नर-जनरल बनते हैं) शिमला में वाइसरीगल लॉज को तटस्थ इलाका माना जाए।

---

1. एलेक होटन जॉयस, 1946, भारत के कैबिनेट मिशन में प्रमुख सूचना अधिकारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
जो भी हो यह इक़रारनामा तो होना ही था जिसके अंतर्गत किसी भी राज्य का मंत्री आकर किसी भी समय उनसे मिल सकेगा। जो अधिनियम तैयार हो रहा था उसमें यह सुविधा रखनी थी कि गवर्नर-जनरल का हेड-क्वार्टर वहीं होगा जहां वह उस वक्त रहेंगे।

वाइसराय समझते थे कि सत्ता के हस्तांतरण के बाद उनके स्टाफ़ के कई सदस्य भारतीय होना चाहेंगे, मगर इस बात को ध्यान में रखते हुए कि भारतीय प्रशासक मांगें पूरी नहीं कर पायेंगे, यह जरूरी हो जाएगा कि कुछ महत्त्वपूर्ण पदों पर अंग्रेजों को रखा जाए। इस विषय पर उन्होंने दोनों प्रधानमंत्रियों की राय जाननी चाही।

राव बहादुर ने कहा कि कांग्रेस नेता वाइसराय द्वारा चुने हुए स्टाफ़ पर आपत्ति नहीं करेंगे! और तो और, पटेल ने यह मान लिया था कि वर्तमान खर्च भावी डोमिनियन के राजस्व से पूरा किया जाएगा।

वाइसराय ने कहा कि अगर इस्मे और मेईविल न होते तो उन्हें नाजुक मुद्दों पर बातचीत करने में बहुत मुश्किल होती। इन लोगों ने उनकी बहुत मदद की। एटली ने तो ऐसा प्रबन्ध कर दिया था कि जून 1948 तक अंग्रेज सरकार उनके विशेष स्टाफ़ की तनख्वाह देती रहेगी।

राव बहादुर ने कहा कि सत्ता के हस्तांतरण के बाद यह विशेष स्टाफ़ रह जाता है तो यह समाजवादी प्रचार शुरू हो जाएगा कि अंग्रेज भारत छोड़कर नहीं जाएंगे। वाइसराय ने कहा कि वक्तव्य में इसपर ज़ोर देना होगा कि अतिरिक्त स्टाफ़ अस्थाई है। और यह स्पष्ट करना होगा कि विशेष स्टाफ़ भारतीय नेताओं की सहमति से रुक रहा है।

मेईविल ने कहा कि अंग्रेजो सेना की वापसी को भारत में कई लोग अंग्रेजी शासन का वापस जाना समझेंगे। इस्मे ने कहा कि उन्होंने फील्ड मार्शल ऑकिनलेक से अंग्रेजी फौज की वापसी की नई योजना मांगी थी। वह चाहते थे कि इस मामले पर जल्द-से-जल्द घोषणा हो जाए। वाइसराय ने इस्मे से कहा कि ऑकिनलेक को ज़ोर देकर निर्णय तक पहुंचने की अनिवार्यता समझाई जाए।

वाइसराय यह मानते थे कि जून 1948 को लेकर नेहरू के दिमाग़ में काफ़ी ग़लतफ़हमियां थीं। नये संविधान को इस समय से पहले तैयार करने के लिए वह काफ़ी दबाव में काम कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अगर इसमें वह सफल नहीं हुए तो खुद को ऐसी हानि पहुंचाएंगे जिसका कोई निदान नहीं होगा।

उन्होंने कहा कि इस बात पर जल्द-से-जल्द निर्णय लेना होगा कि पाकिस्तान और उसके प्रान्त भारत से अलग हो रहे थे या भारत ही दो हिस्सों में बंट रहा था। नेहरू ने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि पाकिस्तान बनने की बात वह तभी मान सकते हैं जब कैबिनेट-मिशन-योजना को थोड़ा बदलकर कुछ प्रान्तों को अपना निर्णय लेने का मौक़ा दिया जाए। उन्होंने हमेशा भारत की एकता पर बल दिया। वाइसराय ने कहा कि उन्होंने जिन्ना से कहा था कि अगर उन्हें एक सर्वसत्ताधारी स्वतंत्र राज्य और उसकी सम्पत्ति मिल जाती है तो उन्हें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
संतुष्ट हो जाना चाहिए। इस मामले पर कांग्रेस के साथ लड़ाई में कुछ रखा नहीं था। नेहरू द्वारा नियुक्त किए गए सारे राजदूत शायद अपनी नियुक्तियों पर बने रहेंगे। दूसरे देशों ने जो राजदूत भारत में नियुक्त किए हैं वे शायद दोनों उत्तराधिकारी अधिकारियों के हितों की देखभाल करेंगे। सर टेरेन शोन पाकिस्तान के लिए एक और उच्च आयुक्त की मांग कर रहे थे।

वाइसराय ने कहा कि जहां तक वह समझते हैं पाकिस्तान भारत से अलग हो रहा था। नये सिरे से शुरुआत करने में कोई नुक़सान नहीं था। किसी भी हालत में कांग्रेस को अपनी डोमिनियन को 'भारत' कहने से नहीं रोका जा सकता था।

स्कॉट ने कहा कि सारे अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारियों को दोनों राज्यों को दिया जाए।

इस्मे ने कहा कि इस मामले पर हमें निर्णय नहीं लेना है। राज्य-सचिव को बताया जा चुका था और अब उन्होंने बताया है कि फ़ारेन आफ़िस से अति-आवश्यक परामर्श किया जा रहा है।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
46वीं मीटिंग, 23 जून, 1947

●●●

प्रकरण 5 : गवर्नर-जनरल

राव बहादुर मेनन ने कहा कि ड्राफ्ट-बिल से तो ऐसा लगता है कि इण्डिया आफ़िस ने यह मान लिया है कि दोनों पार्टियां वाइसराय को ही दोनों डोमिनियनों का गवर्नर-जनरल बनने को कहेंगी। यह उम्मीद की जा रही थी कि जिन्ना और नेहरू उन्हें यह पद स्वीकार कर लेने के लिए पत्र लिखेंगे, फिर इन पत्रों को संसद में उद्धृत करने की संभावना हो सकती है। अतः 5 जुलाई तक जिन्ना का पत्र आ जाना चाहिए यदि विधान को वर्तमान रूप में ही रखना है।

वाइसराय ने कहा कि ड्राफ्ट-बिल की एक शर्त यह थी कि तीनों पार्टियों (वह खुद, नेहरू और जिन्ना) में से एक को सक्रिय क़दम उठाने होंगे। यह संभव था कि जिन्ना कुछ न करें। ऐसी हालत में एक रास्ता यह हो सकता था कि वाइसराय सार्वजनिक रूप से यह कह दें कि जिन्ना या नेहरू के कहने पर वह इस्तीफ़ा दे देंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

52वीं मीटिंग, 4 जुलाई, 1947

●●●

प्रकरण 2 : गवर्नर-जनरल

मीटिंग में कान्फ्रेंस सचिव द्वारा तैयार किए गए एक पर्चे पर चर्चा हुई जिसमें बताया गया था कि किन कारणों से हिज़ एक्सेलेंसी को सिर्फ़ भारत का गवर्नर-जनरल बनना स्वीकार करना चाहिए। यह सवाल इसलिए उठा क्योंकि जिन्ना ने दो दिन पहले अपने को पाकिस्तान का गवर्नर-जनरल बनाने का इरादा प्रगट किया था।

वाइसराय ने कहा कि उन्होंने हर संभव तरीके से जिन्ना को समझाने की कोशिश की थी कि सत्ता-हस्तांतरण के प्रारंभिक दिनों में दोनों देशों का एक ही गवर्नर-जनरल होने के क्या लाभ होंगे। उन्होंने आखिरी काम यह किया कि भोपाल के नवाव को बुलवा भेजा और उनसे जिन्ना को समझाने को कहा। यह कदम न हुआ। वाइसराय ने कहा कि सबसे कष्टप्रद बात यह थी कि अनजाने में उन्होंने कांग्रेस को धोखा दिया था। उन्होंने उनसे भारत का गवर्नर-जनरल बनने का अनुरोध इस विश्वास पर किया था कि वह पाकिस्तान के भी गवर्नर-जनरल रहेंगे। वाइसराय ने कहा कि जिन्ना के निर्णय ने उनको चकित कर दिया। जिन्ना ने भोपाल के नवाब को भी नहीं बताया था कि उनके मन में क्या है।

वाइसराय ने बताया कि नवाब भोपाल ने अपनी यह राय दी थी कि पाकिस्तान के लिए एक ही भरोसा है कि वह (वाइसराय) भारत के गवर्नर-जनरल बनें। उन्होंने यह भी कहा कि रियासतों के लिए भी यही एक भरोसा है। उनकी निजी राय थी कि निर्णय बड़ा कठिन है और इसके लिए तीन दिन का समय चाहिए।

मीटिंग में इसपर भी विचार किया गया कि जिन्ना के फ़ैसले की रोशनी में क्या भारत स्वतंत्रता बिल में संशोधन करना चाहिए जिससे एक व्यक्ति को दोनों डोमिनियनों का गवर्नर-जनरल बनने की अनुमति हो लेकिन वाइसराय ने कहा कि कुछ रद्दोबदल न की जाए।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों का विवरण

53 वीं मीटिंग, 7 जुलाई 1947

वाइसराय ने कहा कि भारत का गवर्नर-जनरल बनने के सुझाव से वह इसलिए सहमत नहीं थे क्योंकि लगभग तीन-चार सप्ताह पहले ही उनके पूरे स्टाफ़ ने कहा था कि सिर्फ एक डोमिनियन के साथ रुके रहने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी। इसलिए ब्रौकमैन को छोड़कर जब उनके बाकी स्टाफ़ ने कहा कि उन्हें रह जाना चाहिए तो वह आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें लग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रहा था कि इस प्रस्ताव को मान लेना बेईमानी होगी।

कर्नल करी[1] ने कहा कि वह भी अधिकांश स्टाफ़ की राय से सहमत थे। वाइसराय के चले जाने में निहित अर्थ, पूरी तरह से समझे नहीं गए थे—ये काफ़ी गंभीर हो सकते थे। उसका असर विनाशकारी भी हो सकता था।

मेईविल ने कहा कि दो-तीन हफ्ते पहले स्टाफ़ ने वाइसराय को एक ही डोमिनियन के गवर्नर-जनरल बनकर रहने के लिए मना इसलिए किया था क्योंकि हर सदस्य को लग रहा था कि ऐसी हालत में सत्ता के हस्तांतरण के बाद उनकी उपयोगिता खत्म हो जाएगी और वह विभाजन के और संयुक्त रक्षा समिति के अध्यक्ष नहीं हो पाएंगे। मगर अब, जिन्ना के नज़रिए की वजह से सब बदल गया था। वाइसराय ने बताया कि जिन्ना ने उन्हें यह समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि उनके (वाइसराय के) किसी भी हैसियत से रह जाने में पाकिस्तान को कितनी बड़ी मदद मिलेगी। उस मुलाक़ात में जिन्ना ने वाइसराय के संयुक्त-रक्षा-समिति का अध्यक्ष बन जाने पर सहमति प्रकट की थी। और यह भी कहा था कि वाइसराय की निष्पक्षता पर कोई प्रश्न नहीं कर सकता—मुस्लिम लीग के दिमाग़ में ऐसी बात उठ नहीं सकती थी।

राव बहादुर ने कहा कि कांग्रेस इस बात पर एकमत थी कि वाइसराय ही ऐसे व्यक्ति थे जो आनेवाले छः महीने या एक साल की मुश्किलों को हल करने में उनकी मदद कर सकते थे, और यह बात विशेष कर रियासतों की मुश्किलों से संबंध रखती थी।

बाद में ऑकिनलेक ने कहा कि वाइसराय के सिर्फ भारत के गवर्नर-जनरल बनकर रहने पर कुछ मुसलमान ग़लत टिप्पणी भी कर सकते हैं। इसी बात को सार्वजनिक मत बनाकर जिन्ना इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। ऑकिनलेक ने कहा, किसी भी हैसियत से वाइसराय को रुकना पड़ेगा क्योंकि उनके मार्ग-दर्शन और समर्थन के बिना वरिष्ठ अफ़सर काम नहीं कर पाएंगे।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंग का विवरण
55 वीं मीटिंग, 9 जुलाई, 1947

प्रकरण 1: गवर्नर-जनरल

इस मीटिंग में प्रधानमंत्री के उसी सुबह आए हुए दो तारों पर बातचीत हुई। पहले तार में था, 'मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस परिवर्तन के समय भारत का गवर्नर-जनरल बनना स्वीकार कर लें।'

दूसरा तार भारत और पाकिस्तान के गवर्नर-जनरलों की नामज़दगी पर वक्तव्य का मसविदा था जो अगले दिन लोक-सभा में, प्रधानमंत्री पेश करने जा रहे थे।

---

1. कर्नल करी डी० एच०, वाइसराय के मिलिट्री सचिव (एम० एस० वी०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रधानमंत्री को भेजे जानेवाले मसविदे की प्रतियां इस मीटिंग में सबको दिखाई गईं, वह दिन में ही तैयार कर लिया गया था ।

वाइसराय ने कहा कि उन्होंने इससे सक्रान्तिकाल के लिए सिर्फ भारत के गवर्नर-जनरल का पद स्वीकार करने का निर्णय किया है, हालांकि वह अब भी इस निर्णय से उदासीन और परेशान थे । फिर भी लंदन से मिली सलाह के अनुसार दोनों में से कम विपत्ति चुनी । वह मानते थे कि इस्मे को लंदन भेजना जरूरी था क्योंकि अंग्रेज सरकार को गुमराह किया जा रहा था ।

वाइसराय ने उस सुबह नेहरू और पटेल को प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मसविदा दिखाया । उन्होंने उसकी कोई आलोचना नहीं की, बल्कि प्रशंसा की ।

वाइसराय ने कहा कि कांग्रेस नेता चाहते थे कि वह जब तक रुक सकें, रुक जाएं । मगर उन्होंने खुद, "हर क़ीमत पर परिवर्तन-काल तक" वाले फ़ार्मूले का उपयोग किया क्योंकि इससे इज़्ज़त के साथ विदा लेने की तारीख निश्चित करना सम्भव हो सकेगा । वे लोग भी इस फ़ार्मूले से सहमत हो गए थे ।

प्रकरण 2 : रियासतें

राव बहादुर मेनन और सुन्दरम ने सुझाव दिया कि भारतीय स्वतंत्रता बिल के सातवें परिच्छेद के निवेश का संशोधन करके कस्टम, संचार, डाक-तार और ऐसे ही दूसरे विषयों पर समझौते भी उसमें शामिल कर लें ।

कोरफील्ड ने कहा कि बिल को लागू करने से पहले इन संशोधनों को कर देने पर उन्हें आपत्ति नहीं होगी । मगर इस समय बिल में संशोधन करना संदेह को जन्म देगा और उससे दिक्कतें होंगी ।

वाइसराय ने कहा कि इस मीटिंग से पहले ही वह नेहरू और पटेल से मिले थे । उन दोनों ने उनसे पूछा था कि भारत की सबसे मुश्किल रियासतों से संबंधों में वह कैसे मदद करेंगे । वाइसराय ने कहा कि मदद देना तो उन्होंने शुरू कर दिया था और—अब से समझौते के कारण वह उसे प्राथमिकता देंगे । राज्यों को केंद्र से तीन प्रमुख केंद्रीय विषयों पर जुड़ने की अनुमति देने के लिए उन्होंने नेहरू की और तीन दिन पहले वक्तव्य लागू करने के लिए पटेल की भी प्रशंसा की । उन्होंने कहा कि अगर उसी आधार पर काम किया गया तो वह समझौता हासिल करने के लिए जी-जान लड़ा देंगे । उन्होंने कहा कि रियासतों के प्रतिनिधियों से वह पहले अपने स्टाफ़ के साथ अकेले मिलेंगे । फिर रियासत विभाग से बात करेंगे । और फिर ज़रूरत पड़ी तो नेहरू से भी एक तरफ़ी बात करेंगे । इसके बाद हर पक्ष से मिल कर वह असहमति के नुक़्ते कम करेंगे, और जब उन्हें समझौता हासिल करने का विश्वास हो जाएगा तब वह सारे पक्षों को एक साथ बुलाएंगे । नेहरू और पटेल ने यह प्रस्ताव मान लिया था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाईसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट

रिपोर्ट नं० 11, 5 जुलाई, 1947

* * *

21. इस्मे का नेहरू से मिलने का प्रमुख कारण था साधारण गवर्नर-जनरल की हैसियत से मेरी दिक्कतों और कठिन स्थितियों को प्रधानमंत्री और कैबिनेट समिति के सामने रखना। मैंने कांग्रेस को (बड़ी मुश्किलों के बाद) इस बात पर सहमत कर लिया कि मुझे पाकिस्तान का सम्मान-प्रस्ताव स्वीकार करना होगा ताकि विभाजन के दौरान दोनों डोमिनियनों के हित मैं निष्पक्ष रूप से देख सकूं।

22. मेरे लंदन जाने से पहले जिन्ना कई बार कह चुके हैं, विभाजन हो जाने तक मेरे स्टाफ़ का और मेरा रुकना ज़रूरी है; हमने भी लगातार यही कहा है कि विभाजन को संतोषजनक तरीके से पूरा करने के लिए मेरा दोनों का गवर्नर-जनरल बनकर रहना ज़रूरी है, और यह उनका सौभाग्य ही है कि कांग्रेस भी इस प्रबंध से सहमत है।

23. पिछले तीन हफ्तों से हम जिन्ना से उनका जवाब निकलवाना चाह रहे हैं। काफ़ी टाल-मटोल करने के बाद उन्होंने कहा कि बिल देखने के बाद ही वह जवाब देंगे। मगर बिल देखने के बाद भी उनका जवाब देने का मन नहीं हुआ और वह बोले जनमत से स्वीकृत अपने दो नेताओं से सलाह करके ही वह कुछ कह सकेंगे। अंततः वह मेरे पास 'उन्हें क्या करना चाहिए' इस पर मेरी सलाह लेने आए। उन्होंने कहा कि सिंध के अलावा पाकिस्तान के हर प्रांत में वह अंग्रेज़ गवर्नर चाहते हैं। चूंकि वह सिंध पर कराची से व्यक्तिगत रूप से नज़र रख सकेंगे, इसलिए वहां के लिए मुसलमान गवर्नर ठीक रहेगा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान रक्षा-सेवाओं के तीनों सेनाध्यक्षों के पद वे अंग्रेजों को देने को तैयार थे। लेकिन पाकिस्तानियों से इन उच्च ब्रिटिश पदाधिकारियों के सुझाव को स्वीकृत कराने के लिए उन्हें स्वयं गवर्नर-जनरल बनना होगा।

24. उन्होंने कहा कि वह, यह क़दम उठाना नहीं चाहते थे किन्तु अपने तीन-चार घनिष्ठ मित्रों और सहयोगियों के कहने पर उन्होंने यह निर्णय लिया था। भोपाल के नवाब उनके प्रमुख मित्रों में से हैं। उन्होंने मुझे बताया कि तीन दिन पहले जब जिन्ना ने इस विषय में उनसे सलाह ली तब नवाब ने कहा, कि 31 मार्च 1948 (यह तारीख विभाजन-अवधि की समाप्ति मानी गई है) तक अंग्रेज टीम के साथ कॉमन गवर्नर-जनरल बनाने का मौक़ा छोड़ देना पागलपन होगा। स्पष्ट है कि लियाक़तअली का भी यही विचार है। सच तो यह है कि जिन्ना जिस सलाहकार की बात सुनते हैं वह खुद जिन्ना ही हैं।

25. वह बुरी तरह महत्वोन्माद (megalomania) से पीड़ित हैं। जब मैंने कहा कि संवैधानिक गवर्नर-जनरल की हैसियत से उनकी ताक़त सीमित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रह जाएंगी तो वह बिना किसी हिचकिचाहट के बोले, 'मेरी स्थिति में मैं सलाह दूंगा और दूसरे उस पर अमल करेंगे।'

26. तब मैंने बिल में एक शर्त रखने का विचार रखा, जिसके अंतर्गत जब पाकिस्तानी डोमिनियन के क्षेत्रों में गवर्नर-जनरल उपस्थित न हों तो एक स्थानापन्न गवर्नर-जनरल का होना जरूरी है। कांग्रेस के साथ की मुलाक़ात में मैंने इसे पास करवा लिया और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों से पास करवाने के लिए उनसे मिला।

27. संयोगवश सामने पड़ते ही जिन्ना ने कहा कि सारी कॉमन परिसम्पत्ति भारत-सीमा में स्थित थी, मुझे उनके अनुचरों के सामने यह कहने का मौक़ा मिल गया कि पाकिस्तान के हितों की रक्षा के प्रावधान हमने कॉमन गवर्नर-जनरल, उनके ब्रिटिश स्टाफ़ को नज़र में रखते हुए बनाए थे। इस व्यवस्था से निष्पक्षता बनी रहती और दोनों पक्ष इस पर विश्वास करते।

28. मैंने कहा, इस व्यवस्था से कांग्रेस सहमत थी, मुझे नामज़द किया था, मेरा स्टाफ़ और मैं 31 मार्च, 1948 तक रुकने को तैयार थे। मैंने सराहना की, कि विभाजन का अधिकांश काम दिल्ली में हो रहा था, और मेरे पास कराची के लिए वक्त नहीं था। अतः मैंने कांग्रेस सदस्यों से उन साढ़े सात महीनों के लिए एक कार्यकारी गवर्नर-जनरल की नियुक्ति की सहमति ले ली थी। सिर्फ पारस्परिक व्यवस्था के बाद ही मैं पाकिस्तानी क्षेत्रों में उसके स्थानापन्न गवर्नर-जनरल के साथ जाऊंगा।

●●●

30. जिन्ना की इच्छा थी कि विभाजन के दौरान मैं वाइसराय या पूरा गवर्नर-जनरल बनकर रहूं। मगर 1 अगस्त को वह पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल के पद के अलावा और कुछ स्वीकार नहीं कर सकते थे।

31. मैंने पूछा, 'आप जानते हैं आपको इसकी क्या कीमत देनी पड़ेगी?' ...'शायद सम्पदा के रूप में कुछ करोड़ रुपये' उन्होंने उदास होकर कहा। मैंने जल कर जबाव दिया, 'इसकी क़ीमत आपकी सारी सम्पदा और पाकिस्तान का भविष्य हो सकता है।' इसके बाद मैं कमरे से बाहर चला गया।

32. मेरे धमाके के बाद लगभग घण्टे-भर मीटिंग में उसी पर बहस होती रही। मगर कोई भी जिन्ना को अपनी जगह से नहीं हिला सका। लियाक़तअली ने कहा, 'मैं यही उम्मीद करता हूं कि आप भारत के साथ रहें नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी, और पाकिस्तान बहुत दुख पाएगा। जिन्ना ने भी मुझसे यही अनुरोध किया था क्योंकि उन्हें डर था कि एक सरपरस्त की ग़ैर-मौजूदगी में कांग्रेस सरकार पाकिस्तान सरकार के साथ पता नहीं क्या करे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
33. मैं अब द्विविधा में फंस गया हूं। मैंने हमेशा यही राय क़ायम रखी है कि या तो मैं दोनों पक्षों के साथ रहूं या किसी के भी साथ नहीं।

34. मैं चाहता हूं कि मैं वापस चला जाऊं क्योंकि मैंने हमेशा यही माना है कि एक पक्ष के साथ रहना नैतिक रूप से ग़लत होगा। लेकिन मुझे डर है कि अनजाने में मैंने नेहरू और कांग्रेस के नेताओं को भूल-भुलैया में डाले रखा। मैं नहीं समझता कि एक बार फिर जिन्ना को दी हुई आज़ादी के लिए वे मुझे माफ़ करेंगे। अतः मुझे लगता है कि इस संदर्भ में मुझे बेहतर निर्देश चाहिए, जिसके के लिए मैंने इस्मे को लन्दन भेजा है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 12, 12 जुलाई, 1947

20. जब सब लोग एकमत से मुझे गवर्नर-जनरल के पद और संयुक्त रक्षा समिति की अध्यक्षता को स्वीकार करने की सलाह दे रहे हैं, मैंने फ़ैसला कर लिया है कि मैं इसे निभाऊंगा। तब भी इस भावना को मैं लिखना चाहूंगा कि मैं इस बात को नहीं टाल सकता कि मैं इसे एक ट्रैजेडी मानता हूं। क्योंकि इसे मैं भुला नहीं पाया। मैंने अपनी निष्पक्षता बनाए रखने की हर संभव कोशिश की है। कांग्रेस के नेताओं के सामने विकट स्थिति पैदा होगी; क्योंकि पाकिस्तान के लिए भारतीय को गवर्नर-जनरल बनाना कांग्रेसियों के ऊपर जिन्ना की निसंदेह मनोवैज्ञानिक जीत होगी। अपने अनुयायियों पर यह स्थिति डालना कांग्रेस के लिए बहुत कठिन होगा।

21. कांग्रेस के नेताओं के संदर्भ में एक असंगत संकेत यह है कि मेरे गवर्नर-जनरल बने रहने से पाकिस्तान के मुकाबले भारत का अस्तित्व दुनिया की नज़रों में दृढ़ता से स्थापित हो जाएगा। दूसरे, मैंने सिर्फ़ 'परिवर्तन काल'—शायद आठ महीने के लिए इस पद को स्वीकारा है ताकि यह न लगने पाए कि दोनों डोमिनियनों के बीच एक स्थायी असमानता स्थापित की गई है।

29. अंत में, भारत की डोमिनियन के साथ हैदराबाद के सम्मिलन या 'जुड़ जाने' की मुश्किल मैंने हल कर ली है। अब तक सारी रियासतें सोचती थीं कि भारत की सरकार सारे केन्द्रीय विषयों पर संबन्धित रहने पर ज़ोर देगी, जिसका मतलब होगा आंतरिक स्वायत्तता का त्याग। अगर, नेहरू और पटेल ने कैबिनेट-मिशन-योजना के तीन केन्द्रीय विषय—रक्षा, विदेशी मामले और संचार के आधार पर मुझे बातचीत करने का अधिकार देकर बहुत यथार्थवादी कदम उठाया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों का विवरण
65वी. मीटिंग, 28 जुलाई, 1947

●●●

प्रकरण 6 : भारत के भावी डोमिनियन की सरकार

भारत की भावी डोमिनियन की सरकार के लिए मंत्रियों के चुनाव के बारे में राव बहादुर चिन्तित थे। उन्हें आशा थी कि इस मंत्रिमण्डल में प्रतिभाशील लोगों को लिया जाएगा, शायद कई नौजवानों को लिया जाएगा; मगर, ऐसा लग रहा था कि नेहरू को अपनी वफादारी भूलने में मुश्किल हो रही थी और तभी राजकुमारी अमृत कौर जैसे नाम प्रस्तावित किए गए थे। राव बहादुर की राय में राजकुमारी अमृत कौर में ज़रूरी क्षमता नहीं थी। इसके अतिरिक्त राजगोपालाचारी, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सरदार बलदेव सिंह के नामों पर भी विचार किए जा रहे थे।

वाइसराय के अनुसार वर्तमान भारत सरकार के चार सदस्य विशिष्ट थे, नेहरू, पटेल, डा० मथाई और मि० भाभा। और भाभा को छोड़ देना ट्रेजेडी होगी। भाभा ने तो खुद ही कहा था कि अपने सहयोगियों की अयोग्यता की वजह से वह मंत्रिमण्डल में रहना नहीं चाहेंगे। अगर इस मामले में कांग्रेस ने गलती कर दी तो वह कभी जम नहीं पाएगी।

राव बहादुर भी इससे सहमत थे। उन्होंने पटेल को आगाह किया था कि इन हालात में ऐसा हो सकता है कि कई वर्तमान सरकारी कर्मचारी यह महसूस करें कि सरकार से अलग होकर वह बेहतर काम कर पाएंगे।

बायसराय इस विषय पर नेहरू से अगली मुलाकात में ही बात करेंगे। हालांकि वह (वाइसराय) संवैधानिक गवर्नर-जनरल होंगे और इस विषय में हर सलाह उन्हें माननी होगी, फिर भी नेहरू उन्हें प्रस्तावित सूची पर सलाह-मशविरा करने का मौका दें।

राव बहादुर ने कहा कि इस विषय में वाइसराय के हस्तक्षेप की सूचना देना ठीक नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा कि पटेल के साथ इस विषय पर वायसराय बात न करें।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 15, 2 अगस्त 1947

●●●

36. प्रेस और सूचना के व्यक्तिगत स्रोतों से यह अफ़वाह फैली है कि नेहरू पुराने कांग्रेसियों की एक ऐसी कैबिनेट मुझे देने जा रहे हैं जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। मुझे विश्वास है कि ऐसी कैबिनेट विनाशकारी होगी। इसलिए

---

1. डा. जॉन मथाई 1946 में अंतरिम सरकार में वित्त और उद्योग और सप्लाई के सदस्य।
2. सी. एच. भाभा, 1946-47 में अंतरिम सरकार में वाणिज्य, माइन्स और ऊर्जा के सदस्य।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri Siddhanta Conservation Foundation, Chandigarh

मैंने उनके साथ नई कैबिनेट के संगठन पर विचार करने का फ़ैसला किया है।

37. मुझे नये सदस्यों का अन्दाज़ा तो नहीं था, पर इतना विश्वास ज़रूर था कि युवा, प्रतिभाशाली और उत्साही सदस्यों की प्रमुखता से बनी कैबिनेट के बिना वह देश की कल्पना को पकड़ने का सुनहरा मौका खो देंगे। मेरे हिसाब से नेहरू की कमज़ोरी उनके पुराने मित्रों और सहयोगियों के प्रति वफ़ादारी थी, और यह बात मैंने उनसे कही भी। राजगोपालाचारी, मौलाना आज़ाद जैसे विशिष्ट लोगों को नहीं हटाएंगे, तो उनके सामने अड़चनें आएंगी। मैंने कहा कि भाभा और मथाई को उनकी निर्भीकता, योग्यता के बल पर रखा जाना चाहिए। बलदेव सिंह रक्षा सदस्य के रूप में बेकार थे हालांकि वह अकेले सिक्ख थे जो कांग्रेस को उपलब्ध थे। राजेन्द्र प्रसाद एक भले इंसान थे और उन्हें सदन का अध्यक्ष बनाना चाहिए।

38. सैद्धांतिक रूप से तो नेहरू इस बात से सहमत हुए, पर यह भी कहा कि 30-45 वर्ष की उम्र के युवा-शक्ति की कमी थी। मगर उनका इरादा था कि कुछ अनजान युवा लोगों को उपमंत्री, और संसद सचिव बनाया जाए ताकि उन्हें अनुभव मिल सके। भारत के लिए यह बहुत ही गम्भीर मामला है, और नेहरू को इस पर बहुत ध्यान देना चाहिए।

39. हालांकि उन्होंने मेरी बात काफ़ी ध्यान से सुनी मगर अपनी प्रतिक्रियाएं ज़ाहिर नहीं कीं। बाद में मुझे पता लगा कि मेरे पास से जाने के बाद उन्होंने अपने सहयोगियों की मीटिंग बुलाई जिसमें प्रस्तावित कैबिनेट की सूची को फाड़ कर फेंक दिया, और कहा कि भारत के भविष्य के लिए एक ज़्यादा कल्पनाशील कैबिनेट बनाना ज़रूरी है। इसके लिए उन्हें नये सिरे से सोचना होगा। पटेल ने मेरी तरफ़दारी की।

ब. सीमाओं का निर्धारण (Delimitation)

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट

●●● **रिपोर्ट नं० 9, 12 जून, 1947**

20. एक बार फिर दोनों पक्षों ने मुझे मध्यस्थ बनने को कहा। मगर उन्हें समझाते हुए मैंने कहा कि वर्तमान व्यवस्था में ऐसा करने से मुझमें उन लोगों का विश्वास जल्दी खत्म हो जाएगा। अतः वे लोग विभाजन काउंसिल के साथ एक विवाचक अधिकरण बनाने पर सहमत हो गए। इसमें तीन सदस्य होंगे जिन्हें न्यायिक अनुभव हो, जो विभाजन समिति द्वारा चुने जाएंगे। सरदार बलदेव सिंह दूसरे सिक्ख नेताओं से विवाचक अधिकरण के बारे में सलाह लेकर उनके विचार विभाजन समिति को बताएंगे। इस अधिकरण की सेवाएं उन प्रान्तों के

लिए होंगी जिनका विभाजन होना है।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

21. सीमा कमीशन के संगठन पर अभी निर्णय नहीं लिया जा सका है, जिसके लिए दो सुझाव रखे गए हैं :

(अ) हर आयोग में संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा प्रेषित तीन सदस्यों के साथ दोनों पक्षों के हर विभाजित के प्रांत से तीन निर्धारक होंगे;

(ब) हर आयोग में एक स्वतन्त्र अध्यक्ष और चार सदस्य होंगे, जिनमें दो कांग्रेस और दो लीग नामज़द करेगी।

22. नेहरू ने कहा कि (अ) सुझाव में बड़ी देर लग जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ संभवत: अपनी हर सदस्य सरकार से सलाह लेना चाहे। इस तरह चुनाव में ही काफ़ी वक्त गुज़र जाएगा। इसके अतिरिक्त ऐसा भी हो सकता है कि अंतिम चुनाव कभी हो ही न।

23. दूसरे प्रस्ताव के संदर्भ में, यह सुझाव दिया गया है कि कांग्रेस और लीग से नामज़दा दो-दो व्यक्ति उच्च न्यायिक योग्यता के हों। ऐसा भी संभव हो सकता है कि ये चार हर समिति के लिए अपने अध्यक्ष का चुनाव खुद करें। अगर इसमें कोई मुश्किल पड़ती है तो दोनों पार्टियां अध्यक्ष की नियुक्तियों के लिए नाम सुझाएं। शुक्रवार 13 जून को मैं नेताओं के साथ मीटिंग में इसपर निर्णय लेने की आशा करता हूं।

24. मैंने पिछले हफ़्ते की मीटिंग का वातावरण पहले ही बता दिया था। कल की मीटिंग भी वैसी ही थी; लियाक़त ने मुझे आगाह किया कि वह उस कारपोरेशन के प्रस्ताव का विरोध करेंगे जिसके अंतर्गत सरकार और कुछ निजी कम्पनियां मिलकर अंडमान द्वीप समूह के जंगलों को इस्तेमाल (exploit) करेंगी। इस विरोध का आधार यह तर्क था कि अंडमान भारत की परिसम्पदा का एक हिस्सा था जिसे अभी पाकिस्तान-हिन्दोस्तान के बीच बंटना था।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट

रिपोर्ट नं० 9, 12 जून, 1947

निजी और विशिष्ट रूप से गुप्त

इंडिया आफिस,
ह्वाइटहाल
13 जून, 1947

●●●

2. 7 जून का आपका तार नं० 1348-एस मिलते ही मैंने लॉर्ड चांसलर के प्रस्तावित विवाचक अधिकरण (आरबिट्रल ट्रिब्युनल) के संभावित अध्यक्ष के विषय में बातचीत की। लगता है कि अन्य कारणों के अलावा, प्रिवी काउंसिल की न्यायिक समिति के सदस्यों के नाम उनकी उम्र के कारण, जो मेरी राय में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
अधिक-से-अधिक 60 होनी चाहिए, निकाल दिए गए हैं। उम्र 55 से ज़्यादा नहीं होनी चाहिए। जैसा कि आप समझ सकते हैं हाई कोर्ट के न्यायाधीशों के ऊपर इस समय दबाव बहुत ज़्यादा है। लार्ड चांसलर आपको इसका कोई भरोसा नहीं दे सकते कि आपके काम के लिए कोई मिल सकेगा। लेकिन सर सिरिल रैडक्लिफ़ से बात की जा रही है, जो मेरी राय में बहुत ठीक रहेंगे। कानूनी योग्यता के अलावा, उनका व्यक्तित्व भी अच्छा है। युद्ध के दौरान उन्हें प्रशासन का अनुभव भी मिल चुका है जो उनके काम आएगा। शायद वह थोड़े समय के लिए भी 'बार' न छोड़ना चाहें, फिर भी आशा है कि आपका काम शायद उन्हें आकर्षित कर ले।

(ह०) अर्ल ऑफ़ लिस्टोवेल

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 10, 28 जून, 1947

●●●

7. 20 जून को बगाल विधान सभा ने बंगाल के विभाजन का निर्णय किया। प्रारम्भिक संयुक्त मीटिंग में 90 : 126 मतों से यह फ़ैसला लिया गया कि उनका प्रांत अगर एक रहता है तो नई संविधान सभा (पाकिस्तान) में शामिल होगा। उसी दिन एक दूसरी मीटिंग में पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्यों ने 21:58 मतों से निर्णय लिया कि प्रान्त का विभाजन होना चाहिए। उतने ही बहुमत से यह भी फ़ैसला किया गया कि अगर विभाजन होता है तो पश्चिम बंगाल चालू विधान सभा में शामिल होगा। 34:105 मतों से यह फ़ैसला किया गया कि विभाजन की प्रक्रिया में पश्चिम बंगाल सिलहट में मिलने के लिए राज़ी हो जाएगा।

8. पंजाब ने भी विभाजन का निर्णय कर लिया है। 23 जून को दोनों सभाओं की प्रारम्भिक संयुक्त सभा में 91 सदस्यों ने विभाजन न होने पर नई संविधान सभा में शामिल होने के लिए मत दिया। पूर्व पंजाब विधान सभा ने अपनी मीटिंग अलग बुलाई और 27:99 मत विभाजन के विरोध में पड़े। नई संविधान सभा में शामिल होने के फ़ैसले को उतना ही बहुमत मिला।

9. जैसा कि अनुमान था, सिंध विधान सभा ने 26 जून की विशेष मीटिंग में 20:33 मतों से फ़ैसला किया कि सिंध नई पाकिस्तान विधान सभा में शामिल होगा।

10. मैंने पंजाब और बंगाल के सीमा कमीशन पर नेताओं के साथ विमर्श किया, जिनमें बलदेव सिंह भी शामिल थे। मुझे खुशी है कि उसकी साधारण शर्तें सबने मान लीं। ये शर्तें हैं :

पंजाब के लिए : सीमा कमीशन को निर्देश दिया गया है कि मुसलमान और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गैर-मुसलमान के निकटवर्ती बहुमत क्षेत्रों के आधार पर पंजाब के दो भागों की सीमाएं निर्धारित की जाएं। ऐसा करने में दूसरे तथ्यों को भी ध्यान में रखा जाए।

सिलहट के लिए : अगर जनमत असम के सिलहट ज़िले के पूर्वी बंगाल में शामिल होने से सहमत होता है तो बंगाल का सीमा-कमीशन सिलहट ज़िले में मुसलमान बहुमत क्षेत्रों और आस-पास के ज़िलों में निकटवर्ती मुसलमान बहुमत क्षेत्रों के आधार पर सीमा-निर्धारण करेगा।

11. सीमा-कमीशन अब बनाए जा रहे हैं। हर कमीशन के लिए लीग और कांग्रेस ने अपने दो-दो प्रतिनिधि नामज़द कर दिए हैं। अध्यक्ष का प्रश्न सबसे ज़्यादा मुश्किलें पैदा कर रहा है। विभाजन समिति की पहली मीटिंग में कांग्रेस ने जिन्ना का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि रैडक्लिफ़ का अन्तिम मतदान से दोनों सीमा-कमीशनों का अध्यक्ष नियुक्त किया जाए।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

रिपोर्ट नं० 12, 12 जुलाई, 1947

●●●

6. बंगाल में विभाजन का काम तेज़ी से नहीं चल रहा है। अभी कांग्रेस तो बहुत सहयोग दे रही है मगर मुस्लिम लीग पर सारी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि उन्हें ढाका में अपनी नई राजधानी बनाकर नया प्रशासन शुरू करना है। ढाका की सम्पदा बहुत कम है और समय भी कम है। मुस्लिम लीग हाई कमांड पूर्व बंगाल से ज़्यादा पश्चिमी पाकिस्तान में रुचि ले रहा है। मुझे डर है कि प्राथमिकता की सूची में पूर्व बंगाल का सबसे आखिरी नम्बर है। दिल्ली में हमारी संचालन-समिति का ध्यान ढाका को कुछ प्राथमिकताएं देने की ओर खींचा गया है और संभव है कि स्थिति में कुछ सुधार हो। मैं इस विषय में जिन्ना को लिखने जा रहा हूं।

●●●

8. दोनों सीमा कमीशनों के अध्यक्ष, रैडक्लिफ़, आज यहां आ गए। सब कुछ जानने के लिए मेरे साथ 48 घंटे रहने के बाद वह कलकत्ता एक प्रारम्भिक यात्रा पर चले गए। नेहरू, जिन्ना और सीमा कमीशन 15 अगस्त तक काम खत्म करने पर सहमत हैं और रैडक्लिफ़ भी मान गए हैं।

9. पंजाब के संदर्भ में सिक्ख अपनी मीटिंगों और सार्वजनिक वक्तव्यों में फिर से परेशानी पैदा कर रहे हैं। यहां तक कि 8 जुलाई की मीटिंग में बलदेव सिंह ने प्रेस से कहा, "सिक्खों की मांग है कि 15 अगस्त तक सीमा-कमीशन अपना निर्णय दे दे। मैं आशा करता हूं कि सीमा-कमीशन हमारे साथ सहानुभूति रखेगा। पर, अगर इसका निर्णय हमारे विरुद्ध हुआ तो हम उसका विरोध करेंगे और पंथ के सम्मान को बचाने के लिए कोई भी बलिदान कम नहीं समझेंगे।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैंने 9 जुलाई को पूरी कैबिनेट में उनसे इस विषय पर पूछा तो वह मुकर गए और बोले कि उनकी बात को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **59वीं मीटिंग, 15 जुलाई 1947**

प्रकरण 3 : पंजाब

मीटिंग में पंजाब के गवर्नर की दो चिट्ठियों पर चर्चा की गई। इनके अनुसार दो मामले ऐसे थे जिन्हें पंजाब विभाजन समिति ने केन्द्रीय विभाजन समिति के पास भेजने के लिए रख छोड़ा था।

इन पत्रों में यह माना गया था कि 15 अगस्त तक सीमा कमीशन का परिनिर्णय उपलब्ध नहीं हो सकेगा। मगर, सही धारणा यह होती कि तब तक परिनिर्णय उपलब्ध हो जाएगा, पर उस तारीख से पहले इतने कम समय में प्रारम्भिक समझौते संभव नहीं थे। वाइसराय ने कहा कि दरअसल वह 11 अगस्त की रात तक ही सीमा-कमीशनों के परिनिर्णय मिलने की आशा कर रहे थे।

वाइसराय मानते थे कि सिक्खों के आम जनमत को प्रभावशाली तरीके से दबाना आगज़नी और छुरेबाज़ी के इक्के-दुक्के मामलों को दबाने से ज़्यादा आसान होगा।

राव बहादुर ने कहा कि नगर के किनारे तोड़-फोड़कर ही सिक्ख क्षति पहुंचा सकते थे। सारी नहरों पर पहरा रखना संभव नहीं है।

वाइसराय ने अन्तिम सीमा के आस-पास के क्षेत्र पर दोनों नई सरकारों के अधिकार की ज़रूरत पर ज़ोर दिया। इस क्षेत्र पर संयुक्त-रक्षा समिति का अधिकार ज़्यादा बेहतर होगा। स्कॉट ने कहा कि पार्टी नेताओं (शायद नये डोमिनियनों के भावी प्रधानमंत्रियों) को भाषण प्रसारित करना चाहिए जिसमें कहा जाए कि सीमा कमीशनों के परिनिर्णय छपने के तत्काल बाद उपद्रवों को निर्दयता से खत्म किया जाएगा।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण

●●● **65वीं मीटिंग, 28 जुलाई, 1947**

प्रकरण 8 : पंजाब से उपद्रवों की संभावना (वी० सी० पी० 140)

अगले दिन की मीटिंग में बांटने के लिए इस परचे के साथ एक नोट था जिसमें खुफ़िया विभाग के निदेशक की रिपोर्ट की व्याख्या दी गयी थी। उसमें लिखा था कि अगर सीमा कमीशन ने परिनिर्णय में ननकाना साहिब को पूर्व पंजाब में न शामिल किया तो सिक्ख बड़े पैमाने पर उपद्रव मचा देंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस दिन के अखबारों की रिपोर्टों पर ध्यान दिलाते हुए वाइसराय ने कहा कि पिछले दिन ननकाना साहिब में सिक्खों की एक मीटिंग पर गोली चलाना ज़रूरी हो गया था। इसमें संदेह नहीं था कि यह मीटिंग ग़ैर-कानूनी रूप से हो रही थी। एबेल ने कहा कि इस कदम के परिणामस्वरूप भारी संख्या में लोग इस मीटिंग में शामिल नहीं हो सके थे।

राव बहादुर ने रैडक्लिफ़ को सुझाया कि ननकाना साहिब को 'वैटिकन' की तरह बनाया जा सकता है। सीमा कमीशन तो यह काम नहीं कर सकता था, मगर रैडक्लिफ़ मुस्लिम लीग के सामने यह सुझाव रख सकते थे।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों का विवरण
69वीं मीटिंग, 9 अगस्त, 1947

प्रकरण 1 : पंजाब

यह कहा गया कि रैडक्लिफ़ उस शाम पंजाब सीमा कमीशन के परिनिर्णय की घोषणा करेंगे। वाइसराय ने परिनिर्णय 10 अगस्त तक मांगा था। इस वक्त इस बात पर विचार किया जा रहा था कि इसे फ़ौरन छापना उचित होगा या नहीं। जितनी जल्दी वह छपता, उसके परिणामस्वरूप हुए उपद्रवों की ज़िम्मेदारी अंग्रेज़ों को ज़्यादा लेनी पड़ती।

इस्मे की राय में 14 अगस्त तक परिनिर्णय न छपने से बेहतर होगा।

सर जॉर्ज एबेल ने परिनिर्णय की घोषणा की सबसे उपयुक्त तारीख के बारे में जेंकिंस से सलाह ली। उन्होंने कहा कि जल्दी छप जाने के प्रशासनिक फ़ायदे थे।

वाइसराय ने ज़ोर दिया कि यह भी नहीं ज़ाहिर होना चाहिए कि उस तारीख तक वह परिनिर्णय तैयार हो जाएगा।

फिर पंजाब के गवर्नर के तार का ज़िक्र किया गया जिसमें लिखा था कि सीमा क्षेत्र पर स्थिति बहुत बिगड़ गई थी। जेंकिंस ने अतिरिक्त सैन्य सहायता के अलावा दिल्ली को उधार दिए 200 अतिरिक्त पुलिस सहायता और सीमा-कमीशन के परिनिर्णय की जल्द-से-जल्द सूचना मांगी थी।

पहले तीन मामलों पर लार्ड इस्मे सुबह ही कमांडर-इन-चीफ़ से बात कर चुके थे। मेजर-जनरल रीज़ अतिरिक्त बल जुटाने की भरसक कोशिश कर रहे थे। उत्तर-पश्चिम सीमा पर पाकिस्तान मिली हुई यूनिटें चाहता था। अधिकांश उपलब्ध फ़ौज दूसरी दिशाओं में व्यस्त थी। फ़ील्ड मार्शल ऑकिनलेक ने कहा कि एक कुशल गश्ती हवाई जहाज़ उपलब्ध था, जिसे वह जल्दी भेज देंगे।

लार्ड इस्मे ने कमांडर-इन-चीफ़ से सेना में सिक्खों की वफ़ादारी की चर्चा की। पंजाब सीमा बल की लगभग सारी यूनिटों में सिक्ख थे और उनकी वफ़ादारी परखी जा रही थी।

CC-0. Agamnigama Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय को चाहिए कि गवर्नर-जनरल के अंगरक्षकों में सिक्खों की वफ़ादारी निश्चित करने के लिए कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने एबेल को मेजर मैसी से मिलकर अंगरक्षकों के सामने यह स्पष्ट करने को कहा कि सीमा कमीशन के परिनिर्णयों में वाइसराय का कोई हाथ नहीं था, कि 15 अगस्त की परेड में वे अंगरक्षक न आएं जिनकी वफ़ादारी पर संदेह था।

उन्होंने कहा कि सीमा कमीशन का परिनिर्णय वाइसराय हाउस की विज्ञप्ति में न छपकर एक 'गजट असाधारण' के रूप में छपे।

वाइसराय ने :

(i) पी० एस० वी० (वाइसराय के निजी सचिव) को निर्देश दिया कि पंजाब के गवर्नर के साथ एक बार फिर सीमा कमीशन के परिनिर्णय की घोषणा की तारीख़ पर विमर्श करें;

(ii) पी० एस० वी० को निर्देश दिया गया कि एक 'गजट असाधारण' में सीमा कमीशन का परिनिर्णय छपे;

(iii) पी० एस० वी० को निर्देश दिया कि मैसी से गवर्नर-जनरल के अंगरक्षकों के बारे में कदम उठाने को कहें।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्ट
रिपोर्ट नं० 16, 9 अगस्त, 1947

निजी और अत्यधिक गुप्त

●●●

6. सीमा कमीशन के परिनिर्णय की घोषणा के बाद सिक्खों के उपद्रव की संभावना पर फैली अफ़वाहों का ज़िक्र मैंने पिछले हफ़्ते की रिपोर्ट में किया था। 5 अगस्त को जेंकिंस ने एक पुलिस अफ़सर के साथ एक ज़बानी रिपोर्ट भेजी। उसी दिन विभाजन काउंसिल की मीटिंग थी। मैंने इसका फ़ायदा उठाते हुए जिन्ना, लियाक़तअली और पटेल को रोक लिया ताकि वे लोग भी उसकी बात सुन सकें। यह अफ़सर पंजाब सी० आई० डी० कंट्रोल स्टाफ़ का सदस्य था। यह स्टाफ़ उपद्रवों की तहकीकात, विशिष्ट सवाल-जवाब और हर स्रोत से खुफ़िया सूचनाओं का समन्वय करता है। उपद्रवों के बाद गिरफ़्तार किए गए लोगों (जिन्होंने उपद्रव उकसाए थे) के वक्तव्य उसने सुनाए। सबसे ज़्यादा सूचना देने वाला आदमी भारतीय राष्ट्रीय सेना का भूतपूर्व सदस्य था जिसे युद्ध के दौरान पेनांग में जापानी स्थायी स्कूल में रखा गया और बाद में पनडुब्बी द्वारा भारत भेजा गया था। इस आदमी की सूचना के मुताबिक मास्टर तारासिंह बम बनाने के काम में शामिल थे और सिक्ख किसी हेडवर्क पर हमले की योजना बना रहे थे। दूसरे आदमियों के वक्तव्यों से सूचना मिली कि दिल्ली से कराची जा रहे पाकिस्तान के सरकारी स्टाफ़ की ट्रेनों को उड़ाने की योजना, और कराची में 15 अगस्त के आयोजन में जिन्ना की हत्या की योजनाओं में भी तारासिंह शामिल हैं। सुबूत इतने लपेटने वाले थे कि 15 अगस्त के बाद जेंकिंस

को शायद तारासिंह और उनके कोई सहयोगियों को गिरफ्तार करना पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

7. हाल ही में मैंने उत्तर प्रदेश के म्यूटिनी मेमोरियल्स के भविष्य के संदर्भ में वाइली[1] से संपर्क किया है। इस मामले पर मेट्रोपॉलिटन आफ़ इंडिया, जो पिछले हफ़्ते मेरे साथ थी, बहुत चिंतित है। वाइली ने सुझाया है कि :

(अ) लखनऊ की रेज़ीडेंसी वर्तमान व्यवस्था के अनुसार चलती रहे जिसके अंतर्गत रक्षा-विभाग (जो उसकी देखभाल का भार उठाता है) को आधिपत्य अधिकार दिया जाए जिसका अध्यक्ष क्षेत्र का कमांडर हो।

(ब) मेमोरियल वेल कानपुर के और बगीचे यूरोपीय व्यापारियों के ट्रस्ट की सम्पत्ति है। उन्होंने नगर निगम को 30 एकड़ ज़मीन मुफ़्त इस शर्त पर देने को कहा है कि उस जगह पर कभी कोई भवन निर्माण न हो। वाइली के सुझाव के अनुसार 10 एकड़ ज़मीन पर घेरा डालकर इलाहाबाद डायोसिस ट्रस्ट को देने की बात पर अब वह विचार कर रहे हैं—इस ज़मीन में कुआं और कब्रिस्तान भी शामिल हैं; मगर शायद वह कुआं और कब्रिस्तान के क्षेत्र की खुद देखभाल करना पसन्द करें।

(स) कानपुर का मैसाकर घाट। इसपर का क्रास दिखाई नहीं देता, इसलिए वाइली ने इसे वैसे ही छोड़ दिया है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 17, 16 अगस्त, 1947

पंजाब सीमा कमीशन के अध्यक्ष के वाइसराय के नाम रिपोर्ट के कुछ अंश

●●●

8. बीकानेर और बहावलपुर राज्यों की तरफ़ से कुछ प्रतिनिधि पंजाब सीमा कमीशन के सामने आए। दोनों राज्यों की दिलचस्पी उन नहरों में है जिनके उद्गम पंजाब प्रांत में हैं। क्योंकि प्रांतों के बंटवारे से निजी सम्पत्ति पर असर नहीं पड़ता, इसलिए मैं समझता हूं कि इस तरह की दिलचस्पी भारतीय संघ और पाकिस्तान के बीच पंजाब के बंटवारे में ज़्यादा मायने नहीं रखती। मैं समझता हूं कि मुझे यह मानने का अधिकार है कि दोनों में से किसी प्रांतीय सरकार से नहरों के पानी के बंटवारे के संबंध में जो समझौते किए हैं वे उस सरकार को मान्य होंगे जिसके अधीन अब वह आएंगे।

9. पंजाब में सीमा निर्णय का काम बहुत मुश्किल है। पार्टियों के हक कई क्षेत्रों पर हैं, मगर मेरे हिसाब से झगड़े की जड़ है व्यास और सतलुज के बीच का और उसके आसपास का क्षेत्र। यहां का विकास सड़कों, रेल, संचार-व्यवस्था, सबका विकास एक प्रशासन के आधार पर हुआ था। लाहौर और अमृतसर की

---

1. सर फ्रांसिस वर्नर वाइली, आई. सी. एस., 1945 से संयुक्त प्रांतों के गवर्नर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भौगोलिक स्थिति, और दोनों शहरों के दावे भी ध्यान में रखे गए थे।

10. सतलुज के पूर्वी और व्यास और सतलुज के बीच के क्षेत्रों को लेकर जहां मुसलमानों का बहुमत है, मैं अब तक हिचकिचा रहा था। लेकिन, कुल मिलाकर, मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि पश्चिम पंजाब के क्षेत्रों को सतलुज के सुदूर कोने तक ले जाना दोनों में से किसी भी राज्य के हित में नहीं होगा। रेल, संचार और पानी की व्यवस्था में रुकावट को पहले ध्यान में रखना होगा बनिस्बत बहुमत के दावे के। मगर दीपलपुर नहर, जो पश्चिम पंजाब को सींचती है, की तरफ़ आपका ध्यान खींचना ज़रूरी है क्योंकि यह फ़िरोज़पुर में से निकलती है। इन हेडवर्क्स पर निर्भर अलग-अलग नहरों पर संयुक्त अधिकार के बिना यहां एक संतोषजनक सीमा-निर्धारण बहुत मुश्किल है।

11. ऊपरी बारी दोआब नहर के अविभाजित सिंचाई व्यवस्था को बनाए रखने का कोई संभावित रास्ता मुझे नहीं मिला है। यह नहर पठानकोट तहसील में माधोपुर से लाहौर ज़िले की पश्चिमी सीमा तक फैली हुई है। मैंने लाहौर-अमृतसर ज़िलों की सीमा पर कुछ समझौते किए हैं जो इस बंटवारे के कुछ परिणामों को कम करेंगे; न ही मुझ 'मंडी हाइड्रोइलेक्ट्रिकल स्कीम' को एक प्रादेशिक न्याय-सीमा में सुरक्षित रखने का रास्ता सूझ रहा है—यह स्कीम कांगड़ा, गुरदासपुर, अमृतसर, लाहौर, जलंधर, लुधियाना, फिरोज़पुर, शेखपुरा और लायलपुर ज़िलों को बिजली देती है। जहां पर सिंचाई, नहर, रेल और बिजली के पावर ट्रांसमिशन जैसी सेवाओं की वजह से सीमा-निर्धारण नहीं हो पाता, वहां पर दोनों देशों के एक संयुक्त अधिकार के समझौते से हल ढूंढ़ा जा सकता है।

12. मैं यह भी समझता हूं कि परिनिर्णय दोनों तरफ़ की भावनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को संतुष्ट नहीं कर पाएगा, बल्कि सीमा-निर्धारण की वजह से उनमें द्वेष होगा। अगर इन भावनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं को पूरी तरह से संतुष्ट करने का तरीका निकाला जाता है तो वह इस कमीशन की शर्तों के अंतर्गत सीमा-निर्धारण के निर्णय में नहीं, राजनीतिक व्यवस्थाओं में होना चाहिए। बहरहाल, इससे मेरा कोई वास्ता नहीं है।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 17, 16 अगस्त, 1947

बंगाल सीमा कमीशन के अध्यक्ष की वाइसराय के नाम रिपोर्ट के कुछ हिस्से

●●●

7. हमारी शर्तों के मुताबिक पूर्व और पश्चिम बंगाल के बीच सीमा-रेखा

खींचने में सम्बद्ध पार्टियों ने तरह-तरह के हल ढूंढे।
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

8. मेरी दृष्टि में, पूर्व और पश्चिम बंगाल के बीच सीमा-निर्धारण कुछ मूल प्रश्नों के उत्तरों पर होगा। ये प्रश्न हैं :

(i) कलकत्ता शहर किसे दिया जाए, या उसे दोनों देशों के बीच बांट दिया जाए ?

(ii) अगर पूरे कलकत्ता को दोनों में से एक देश के जिम्मे दिया जाए तो नादिया नदी क्षेत्र की या कुल्टी नदियों पर किसका हक होगा ? इन दोनों नदियों पर कलकत्ता शहर और बंदरगाह, दोनों का जीवन निर्भर था।

(iii) क्या गंगा-पद्मा-मधुमती नदियों का आकर्षण जेसोर और नादिया ज़िलों में, हमारी शर्तों को क्षति पहुंचाए बिना, मुसलमान बहुमत के हक की जगह ले सकता है ?

(iv) क्या खुलना ज़िला एक देश और जेसोर ज़िला दूसरे देश के अधिकार में जा सकते हैं ?

(v) क्या माल्दा और दिनाजपुर ज़िलों को ग़ैर-मुसमलमान बहुमत वाले हिस्से को पूर्वी बंगाल को सौंपना ठीक रहेगा ?

(vi) दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी ज़िलों पर किस देश का हक हो ?—ये क्षेत्र प्राकृतिक रूप से बंगाल के दूसरे निकटवर्ती ग़ैर-मुसलमान बहुमत क्षेत्रों के मुकाबले में नहीं थे। दार्जिलिंग में कुल जनसंख्या के 2.32% मुसलमान थे, और जलपाईगुड़ी में 23.08%।

(vii) चटगांव पहाड़ी इलाके किस देश को सौंपे जाएं ? यहां पर मुसलमान बहुमत पूरी जनसंख्या का 3% था। जिस देश का चटगांव ज़िले पर अधिकार होगा, पहाड़ी रास्तों पर उसी के अलावा और किसी को अधिकार देना मुश्किल होगा ?

9. काफी बहस के बाद भी मेरे सहयोगी इन मामलों पर सर्वसम्मति से हल नहीं ढूंढ़ पाए। प्रांत के दक्षिण-पश्चिम, उत्तर-पूर्व और पूर्व में काफ़ी क्षेत्र ऐसा था जिसने दोनों तरफ़ से कोई विवाद नहीं उठाया, मगर, सीमा-रेखा खींचने पर जो प्रश्न उठे थे उनका प्रभावकारी समझौता न होने के कारण मेरे सहयोगी इस बात पर सहमत हुए कि मेरे पास अपने निर्णय के अलावा और कोई विकल्प नहीं था।

10. सबसे पहले मैं अपने सहयोगियों का आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने इन प्रश्नों को अपनी मदद से स्पष्ट किया। मैं अब यह करने जा रहा हूं : इस परिनिर्णय के परिशिष्ट 'अ' में सीमा-निर्धारण का विवरण है, और परिशिष्ट 'ब' में नक्शा है। संलग्न नक्शा चित्रांकन के लिए है और परिशिष्ट अ' और 'ब' के चित्रण में कोई फ़र्क है तो 'अ' का विवरण मान्य होगा।

11. रेलवे, संचार और नदी-व्यवस्था को बचाते हुए जो सीमा-रेखा मैं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
खींच सकता था, मैंने खींचा। मगर इस तरह के कुछ व्यवधानों कारण के बिना हमारी शर्तों के अनुसार सीमा-निर्धारण नामुमकिन था। मैं आशा करता हूं कि दोनों देश आपसी व्यवस्थाओं से, जहां तक संभव हो, इन व्यवधानों के परिणामों को कम करने की कोशिश करेंगे।

सिरिल रैडक्लिफ़
नई दिल्ली
12 अगस्त, 1947

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें
रिपोर्ट नं० 17, 16 अगस्त, 1947

अत्यधिक गुप्त और व्यक्तिगत

भारत में अंग्रेजी शासन का यह आखिरी हफ्ता बड़ा व्यस्त गुज़रा। हमारे धैर्य और श्रम की परीक्षा थी। लम्बे-लम्बे अरसे तक काम करना पड़ा। ऐसा भी हुआ कि एक दिन में दो-तीन बार विविध महत्त्वपूर्ण समस्याएं उठीं। हमारा अधिकांश समय राज्यों की समस्या में ही बीता। इनमें भी उन रियासतों की समस्याएं ज़्यादा थीं जिनके शासक अब तक, आख़िरी दम तक भी यह फ़ैसला नहीं कर पाए थे कि वह भारत से जुड़ें या पाकिस्तान से, या किसी से भी नहीं। मैंने कराची से विदा ले ली। दिल्ली में सत्ता के हस्तांतरण के दिन अविश्वसनीय घटनाओं में हिस्सा लिया। अब तक जिस मामले ने सबसे गंभीर और बड़ी कठिनाई पैदा की है वह है सीमा कमीशनों के परिनिर्णय से सम्बन्धित।

2. मैंने हमेशा से यही अनुमान लगाया था कि यह परिनिर्णय दोनों पार्टियों में पसंद नहीं किए जाएंगे। और शायद सीमा-कमीशनों के अध्यक्ष पर इनकी वजह से पक्षपात का आरोप लगे। इसीलिए मैं इन कमीशनों की बहस में शामिल नहीं हुआ। इस पूरे मामले से मैंने खुद को दूर ही रखा है, पर मुझे डर है कि इस देश की अधिकांश जनता अब भी यही समझती है कि अंततः सारी बातें मैं ही तय करूंगा और इसीलिए मैंने भारत संविधान सभा में सीमा परिनिर्णयों के सम्बन्ध में अपनी स्थिति एकदम स्पष्ट कर दी है।

3. मैं समझता हूं कि सीमा कमीशनों के इतिहास की संक्षिप्त समीक्षा रिकार्ड में रखना जरूरी है। मेरे विचार से जो संघर्ष पैदा हुए हैं वह अब तक के सबसे गंभीर संघर्ष हैं। लोगों में इतनी कड़ुआहट थी कि पिछले चार महीनों का सारा काम बर्बाद हो सकता था।

4. 10 जून को नेहरू ने खबर भेजी कि हर कमीशन का एक अलग अध्यक्ष और कांग्रेस तथा लीग द्वारा नामज़द किए गए दो-दो सदस्यों का प्रस्ताव उन्हें मान्य था। जिन्ना ने भी इसे स्वीकार लिया है।

●●●

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

9. परिनिर्णयों का स्वागत हमारे अन्दाज से भी बुरा होगा, इसका पहला संकेत हमें मिला पाकिस्तान कैबिनेट के सचिव (मोहम्मद अली) के एक संदेश से जो उन्होंने कराची से दिल्ली की यात्रा के दौरान लार्ड इस्मे को भेजा था। यह संदेश उन्होंने लियाक़तअली की तरफ़ से भेजा था, यह जबानी था, अगर उत्तर पंजाब क्षेत्र के गुरदासपुर ज़िले को, या उसके एक बड़े हिस्से को, सीमा कमीशन पूर्व पंजाब को देता है तो जिन्ना और पाकिस्तान इसे चिंता की बात मानेंगे। और अगर पता लगता है कि यह न्यायिक न होकर राजनीतिक निर्णय था तो इसे विश्वासघात माना जाएगा और पाकिस्तान-इंग्लैण्ड के भावी सम्बन्ध बिगड़ भी सकते हैं।

10. 11 अगस्त को लियाक़तअली को जवाब देते हुए इस्मे ने उन्हें याद दिलाया कि सीमा-कमीशनों से मेरा कोई वास्ता नहीं था (और यह कि मुझे भी अभी तक परिनिर्णय नहीं मिला था), कि मैं इस मामले से अलग रहने को दृढ़ संकल्प था, और यह कि भारतीय नेताओं ने खुद सीमा कमीशनों के कार्यकर्ताओं को चुना था, उनकी शर्तों का मसविदा तैयार किया था और उनके परिनिर्णयों पर अमल करने का फैसला किया था।

11. मंगलवार, 12 अगस्त को रैडक्लिफ़ ने मुझे सूचना भेजी कि अगले दिन दोपहर तक मुझे परिनिर्णय मिल जाएंगे। मैं इसे देख नहीं सकता था क्योंकि कराची के लिए चल पड़ा था। कुछ समय से मैं और मेरा स्टाफ़ इस सवाल पर सलाह कर रहे थे कि परिनिर्णय कब और कैसे छापे जाएंगे। कोरे प्रशासनिक दृष्टिकोण से फ़ौरन छपने के कई फ़ायदे थे ताकि 15 अगस्त से ही नई सीमाएं लागू हो सकें और अपनी-अपनी डोमिनियनों के अधिकारी इस तारीख से पहले अपने-अपने ज़िलों की देखभाल के लिए तैयार हो सकें। फिर भी यह स्पष्ट था कि इसके छपने में जितनी टाल-मटोल होगी अंग्रेजों की उतनी ही कम निंदा होगी।

12. 12 तारीख की शाम को स्टाफ़ मीटिंग में इस मामले को प्राथमिकता दी गई। तब तक बंगाल का परिनिर्णय आ चुका था। मगर मैंने अपने आपको उसे पढ़ने से रोक लिया, फिर भी मुझे बताया गया था कि चटगांव पहाड़ी इलाके पाकिस्तान को सौंपे गए थे। मेरे सुधार-आयुक्त वी० पी० मेनन उस मीटिंग में उपस्थित थे। उन्होंने मुझे पहले ही सजग कर दिया कि कांग्रेस के नेताओं पर उसका विध्वंसकारी प्रभाव पड़ सकता है। नेहरू और पटेल तो शर्तिया गुस्से से फट पड़ेंगे क्योंकि उन्होंने हाल ही में चिटगांव पहाड़ी इलाकों के एक प्रतिनिधिमण्डल को आश्वासन दिया था कि उसे पाकिस्तान को सौंपने का प्रश्न ही नहीं उठता। (वी० पी० मेनन ने स्वीकार किया कि ऐसा कहने का उन्हें कोई अधिकार नहीं था)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

13. फिर उन्होंने कहा कि 15 से पहले अगर परिनिर्णय के विवरण सामने आते हैं तो शायद कांग्रेस संविधान सभा की मीटिंग में न आए, जिसमें मुझे बोलना था। उस दिन अगर यह बाद में उन्हें दिया गया तो शायद शाम को राज-भोज में न आएं। किसी भी हालत में अगर स्थिति को संभाला नहीं गया तो कांग्रेस गुस्से से फट पड़ेगी। वी० पी० मेनन ने मुझे कभी गुमराह नहीं किया, इसलिए मैंने फ़ैसला किया कि 15 अगस्त तक परिनिर्णय के विवरणों को नेताओं के सामने न पड़ने दिया जाए। और अगर हम ऐसा न कर सकें तो हमारी सारी मेहनत और अच्छे भारतीय-ब्रिटिश सम्बन्धों की आशा पर पानी फिर जाएगा।

14. 13 अगस्त को मैंने जिन्ना और नेहरू के नाम ख़त लिखा कि कराची के लिए रवाना होने तक मुझे परिनिर्णय नहीं मिले थे, हालांकि उस दिन दोपहर तक उनके आ जाने की सम्भावना थी। मैंने सुझाया कि 16 अगस्त को गवर्नमेंट हाउस में परिनिर्णयों के छपने के समय, उसकी विधि पर विमर्श करने के लिए एक मीटिंग बुलाई जाए। इस मीटिंग में इस बात पर विचार हो कि विभाजन-परिषद के परिनिर्णयों को स्वीकार करने के बाद उन फ़ैसलों पर अमल के तरीके क्या हों।

15. नेहरू के नाम इस ख़त पर मैं दस्तख़त कर रहा था जब मुझे पटेल का एक ख़त मिला। यह इतना अविश्वसनीय था कि इसकी एक प्रति मैं परिशिष्ट 3 में संलग्न कर रहा हूं। इस ख़त से यह साबित होता है कि जिस आदमी को मैंने एक सच्चा राजनीतिज्ञ समझा था, जिसके पैर ज़मीन पर टिके रहे और इतना ईमानदार कि जिसके लिए उसके शब्द ही अनुबंध थे, वह भी बाकियों की तरह उन्मादी निकला। यहां उन्होंने लिखा है कि अगर चिटगांव हिल ट्रैक्ट्स पूर्व बंगाल को सौंपा गया तो परिनिर्णय का विरोध उचित होगा और केन्द्रीय सरकार उसे समर्थन देने पर विवश होगी।

16. पागलपन की सीमा यह है कि बरोज़ ने मुझे समझाया था कि हिल ट्रैक्ट्स के लोगों की आर्थिक जिन्दगी पूर्व बंगाल पर निर्भर है, कि असम के जंगलों के बीच एक या दो विलग पगडण्डियां ही हैं, कि इन लोगों को पूर्व बंगाल से काट देना विनाशकारी होगा। यहां की जनसंख्या लगभग ढाई लाख है, सारे लोग कबीले के हैं। ये बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। सीमा कमीशन की शर्तों के मुताबिक गैर-मुसलमान हैं। एक तरह से पूर्व बंगाल का इकलौता हिस्सा चिटगांव भी पहाड़ी इलाके पर निर्भर है। मुझे बताया गया है कि इसके जंगलों को काट दिया गया तो चिटगांव मिट्टी से पट जाएगा। इतनी छोटी बात इतनी बड़ी परेशानी बन जाएगी, यह देखकर मैं एकदम चकित रह गया था। मगर मैं भारत में इतने समय रह चुका हूं इसलिए समझता हूं, कि बड़ी परेशानियों के कारण हमेशा बड़े नहीं होते।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation

17. एक बार फिर मैंने वी० पी० मेनन का शुक्रिया अदा किया क्योंकि उन्होंने मुझे नेताओं से बात किए बग़ैर परिनिर्णयों को छापने से रोका था। इस तरह, मैं इससे पैदा होने वाले ख़तरों से बच गया। 15 अगस्त से पहले परिनिर्णयों की घोषणा न करने के फ़ैसले के बाद मेरे पास बस एक विकल्प बचा था। मैंने बंटे हुए प्रांतों के दोनों हिस्सों की सरकारों के गवर्नरों को निर्देश भेजे कि 15 अगस्त को वह अपनी राष्ट्रीय सीमाओं का कार्य भार ले लें। इसके बाद पारस्परिक रूप से स्वीकार की गई सीमा या परिनिर्णय पर अमल और उसका प्रकाशन रह जाएगा।

18. जब मैं कराची में था तब पूरी शाम और अगली सुबह जिन्ना को राज़ी करने में बीत गए ताकि वह लियाक़त को मेरे साथ 16 अगस्त को दिल्ली जाने दें। लियाक़त को रक्षा-काउंसिल की मीटिंग में पंजाब की भयानक स्थिति पर विमर्श तो करना ही था, सीमा-कमीशनों के परिनिर्णयों पर भी विमर्श करना था।

19. संयुक्त-रक्षा काउंसिल की मीटिंग आज सुबह हुई जिसमें जिन्ना की सहमति मुझे बड़ी मुश्किल में मिली। दोनों प्रधानमंत्री, नेहरू और लियाक़त, दोनों गृहमंत्री, पटेल और अब्दुर्रहमान, बलदेव सिंह और सुप्रीम कमाण्डर ऑकिनलेक उपस्थित थे। 14 की पंजाब-यात्रा की भयंकर रिपोर्ट ऑकिनलेक ने दी जिसका सारांश अगले तीन पैराग्राफ़ों में है।

स. सत्ता का हस्तांतरण

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों के विवरण

●●● **58वीं मीटिंग, 14 जुलाई, 1947**

प्रकरण 3 : सत्ता-हस्तांतरण पर समारोह

राव बहादुर मेनन ने कहा कि दिल्ली में 15 अगस्त के समारोहों की देख-रेख के लिए बनी समिति ने सर्वसम्मति से यह बात कही कि खूब शानोशौक़त और तड़क-भड़क होनी चाहिए। यह सुझाव दिया गया कि वाइसराय हाउस के प्रवेश से संविधान सभा तक सेनाएं सड़कों पर खड़ी हों, जहां गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया जाए।

वाइसराय ने कहा कि इन समारोहों में शामिल होने वाली हर अंग्रेज फ़ौज की टुकड़ी वाइसराय हाउस के सहन में ही रहे।

एबेल ने सुझाया कि वाइसराय हाउस और संविधान सभा के रास्ते में कहीं झण्डा फहराने का समारोह किया जाए—शायद सचिवालय को जानेवाले रास्ते की पहाड़ी के नीचे, जहां पुलिस अफ़सर खड़ा रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वाइसराय ने बताया कि जिन्ना ने कहा था कि मुस्लिम लीग पाकिस्तान के झण्डे के ऊपरी हिस्से में यूनियन जैक रखने को सहमत नहीं है।

राव बहादुर ने बताया कि लीग के इस निर्णय पर पटेल ने कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनके फैसलों से कांग्रेस के फैसलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना था।

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों के विवरण
60वीं मीटिंग, 19 जुलाई, 1947

प्रकरण 1 : हस्तांतरण की तारीख़ पर समारोह

(अ) कराची

कर्नल करी ने 14 अगस्त को कराची में होने वाले समारोहों के बारे में लियाक़तअली से विमर्श किया। यह सुझाव दिया गया कि वाइसराय लंच से थोड़ा पहले कराची आएं और जिन्ना के साथ 'लंच' में शामिल हों। फिर 3 बजे के लगभग वह संविधान सभा तक सड़क के रास्ते कार द्वारा आएं, दोनों ओर सेना की टुकड़ी खड़ी रहे जहां गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया जाएगा। संविधान सभा में बोलने के बाद वाइसराय और जिन्ना पूरी शानोशौक़त से गवर्नमेण्ट हाउस कार में जाएं। लियाक़त अली ने सुझाव दिया कि गवर्नर-जनरल के अंगरक्षकों का वह हिस्सा भी वहां उपस्थित हो जो पाकिस्तान को सौंपा गया है। मगर उन्हें समझाया गया कि यह असंभव होगा क्योंकि घुड़सवार सेना उपलब्ध नहीं है।

करी ने बताया कि लियाक़तअली ने सुझाव दिया कि शाम को एक शाही भोज दिया जाए। वाइसराय किंग की सेहत और पाकिस्तान की नई डोमिनियन के नाम, और जिन्ना वाइसराय और भारत की नई डोमिनियन के नाम जाम लें।

वाइसराय ने कहा कि रात्रि भोज की जगह अगर दिन में बगीचा पार्टी हो तो बेहतर होगा। इस पार्टी में कई लोगों को बुलाया जा सकेगा, और वह जल्दी ही दिल्ली भी लौट सकेंगे। अगर जिन्ना रात्रि भोज की ज़िद पर थे तो शाम को जल्दी करनी पड़ेगी। इस उपलक्ष्य में दिए गए भाषणों का 'कोई ज़िक्र नहीं होगा।' वाइसराय चाहते थे कि 14 अगस्त को इसमे भी उनके साथ कराची जाएं।

(ब) दिल्ली

दिल्ली में 15 अगस्त के समारोहों का जिक्र करते हुए राव बहादुर मेनन ने सुझाया कि सुबह वाइसराय हाउस में नई सरकार के मंत्रियों को शपथ दिलाई जाए। इसके बाद वाइसराय के आगे-आगे वे लोग संविधान सभा की ओर कार

से जाएं। उन्होंने कहा कि वाइसराय के लिए शपथ ग्रहण करना जरूरी नहीं होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइसराय ने कहा कि दिल्ली में भी रात्रि भोज की जगह गार्डेन पार्टी बेहतर रहेगी, पर बारिश की हालत में स्वागत-समारोह अन्दर होगा। राव बहादुर ने सुझाया कि इस अवसर पर पटाखे छोड़े जाएं। वाइसराय को यह बात बेहद पसन्द आई।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों के विवरण
64 वीं मीटिंग, 26 जुलाई, 1947

●●●

प्रकरण 3 : सत्ता के हस्तांतरण की तारीख पर समारोह

●●●

(फ) गवर्नरों और चीफ़ कमिश्नरों को यह निर्देश दिया जाए कि 15 अगस्त को यूनियन जैक नहीं लहराएगा और किसी भी हालत में वह झुकेगा भी नहीं; कि 15 अगस्त के समारोहों का मामला नये गवर्नरों और सरकारों का होगा और 14 अगस्त को एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जानेवाले गवर्नरों के समारोहों से अलग होगा।

●●●

(ज) रात्रिभोज में सिर्फ दो नामों के जाम होंगे, (i) सम्राट और (ii) पाकिस्तान की नई डोमिनियन। पहले जाम का प्रस्ताव वाइसराय या जिन्ना करेंगे, दूसरा वाइसराय। इस समय कोई भाषण नहीं होगा।

●●●

(य) एम० एस० वी० नृत्य कक्ष (बॉलरूम) में भारत की नई डोमिनियन का झण्डा होना चाहिए।

(व) जहां तक 'गॉड सेव द किंग' की धुन बजाने का प्रश्न है, इस तरह का कोई भी क़दम मूर्खतापूर्ण होगा, क्योंकि इससे उत्तेजना की सम्भावना पैदा होगी। इसे, जहां तक हो सके, टाल दिया जाए।

वाइसराय की मीटिंगों के विवरण
65 वीं मीटिंग, 28 जुलाई, 1947

प्रकरण 1 : सत्ता के हस्तांतरण की तारीख पर समारोह

वाइसराय ने नेहरू से पूछा कि 15 अगस्त को दिल्ली में समारोहों के उपलक्ष्य में वह और पटेल वाइसराय और वाइसराइन के साथ राज-बग्घी में जाना पसंद करेंगे या उपराज-बग्घी में। उन्होंने कहा कि अगर नेहरू और पटेल ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया तो उन्हें खुशी होगी। मगर व्यक्तिगत रूप से कहा कि इसे अस्वीकार करने से उनकी स्थिति मज़बूत होगी। नेहरू ने कहा कि वह भी यही सोचते थे। निमंत्रण न मिलने पर उन्हें बुरा लगता और उसे स्वीकारने में भी उतना ही बुरा लगता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाइसराय ने कहा कि नेहरू ने ही पहले कहा कि वह 15 अगस्त के समारोहों के दौरान यूनियन जैक को उतारने के पक्ष में नहीं हैं।

नेहरू के साथ बातचीत में वाइसराय को गवर्नर-जनरल और दूसरे मंत्रियों के शपथ ग्रहण करने का प्रश्न भी उठा।

राव बहादुर मेनन ने सुझाव दिया कि शपथ ग्रहण करते वक्त सम्राट् का सीधा संदर्भ छोड़कर मंत्रिगण संविधान से निष्ठा की शपथ लेते हैं तो वह सम्राट् के प्रति निष्ठा की शपथ भी होगी। क्योंकि संविधान सम्राट् को स्वीकार करता है। वाइसराय ने कहा कि यह सुझाव राज्य-सचिव के सामने रखा जाना चाहिए।

राव बहादुर ने यह भी कहा कि सार्वजनिक रूप से शपथ-ग्रहण करने में कोई आपत्ति नहीं थी। संविधान सभा के सदस्यों में यह भावना थी कि वाइसराय को जनता के सामने शपथ ग्रहण करना और मंत्रियों को शपथ दिलानी चाहिए।

वाइसराय ने कहा कि इसका प्रचार इस तरह होगा कि जहां पहले गवर्नर-जनरल इंग्लैण्ड के राजा और भारत के सम्राट् की शपथ ग्रहण करते थे, अब वह भारत में राजा की शपथ लेंगे जिससे इंग्लैण्ड का कोई सम्बन्ध नहीं होगा।

राव बहादुर ने कहा कि 15 अगस्त को सर पैट्रिक स्पेंस चीफ़ जस्टिस रहेंगे और वाइसराय को शपथ ग्रहण कराएंगे।

वाइसराय ने कहा कि संविधान सभा में शपथ लेने की प्रक्रिया और भाषणों में उनकी क़ानूनी स्थिति पर ध्यान दिया जाए क्योंकि वह 14/15 अगस्त की अर्द्धरात्रि में वाइसराय नहीं रहेंगे।

संविधान सभा में अपने भाषण के दौरान उन्होंने कहा कि नई सरकार का पहला काम क्षमादान होगा।

वाइसराय ने इच्छा प्रकट की, कि 15 अगस्त के बाद 'गॉड सेव द किंग' की धुन सिर्फ वाइसराय हाउस में बजाई जाए; बाहर कम-से-कम अवसरों पर बजेगी।

उन्होंने कहा कि 15 अगस्त की शाम को वाइसराय हाउस में रात्रि भोज और स्वागत दोनों होंगे। प्रेस को यह सूचना दे दी जाए कि राजा-सम्राट की जगह राजा की सेहत पर भारत में पहली बार जाम होंगे।

वाइसराय ने यह भी कहा कि 15 अगस्त को दिल्ली में होने वाले जश्न की सूचना पाकिस्तान सरकार को दे देने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। 14 और 15 अगस्त को पाकिस्तान में हो रहे समारोह दिल्ली के समारोहों जैसे ही होंगे। यह संकेत स्पष्ट रूप से प्रेस को दिया जाएगा।

फिर उन्होंने सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट के तार की तरफ़ ध्यान आकर्षित किया जिसमें उनके लिए राजकीय संदेश था जो पाकिस्तान और भारत की संविधान सभाओं में दिया जाना था। अपनी राय प्रकट करते हुए वाइसराय ने कहा कि इस संदेश का मसविदा ठीक नहीं था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाइसराय की स्टाफ मीटिंगों के विवरण

66 वीं मीटिंग, 2 अगस्त, 1947

प्रकरण 1 : सत्ता के हस्तांतरण की तारीख पर समारोह

15 अगस्त को जो परेड दिल्ली में होनी थी, उसमें सुप्रीम कमाण्डर के स्तर का प्रश्न करी ने उठाया। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कमाण्डर स्पष्ट रूप से जानना चाहते थे कि उनकी स्थिति क्या होगी, ताकि वह परेड में शामिल होने, न होने का निर्णय ले सकें।

वाइसराय ने कहा कि चूंकि इस परेड की व्यवस्था भारत की डोमिनियन कर रहा था, इसलिए सुप्रीम कमाण्डर इससे मूलरूप से सम्बद्ध नहीं होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि उनके (वाइसराय के) आगमन पर सिर्फ एक सलामी दी जाए। युद्ध के दौरान लाल किले में हुई विक्टोरिया क्रॉस के प्राप्तकर्त्ताओं की एक परेड के समानान्तर एक और परेड का जिक्र शायद इस्मे ऑकिनलेक के साथ करें।

करी ने सुझाया कि दिल्ली संविधान सभा में वाइसराय राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठें। राजेन्द्र प्रसाद ठीक उनके पीछे दाहिनी तरफ़ और वाइसराइन बाईं ओर (उनके पीछे) बैठें। वाइसराय ने करी से कहा कि वह राव बहादुर को यह सुझाव राजेन्द्र प्रसाद के सामने रखने को कहें।

जहां तक कराची संविधान सभा में बैठने की व्यवस्था का प्रश्न था, करी ने सुझाया कि वाइसराय राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठें और जिन्ना और वाइसराइन ठीक नीचे की ओर। वाइसराय ने करी से जिन्ना के नामज़द निजी-सचिव के साथ इस पर बातचीत करने को कहा।

इसके बाद मीटिंग में सत्ता के हस्तांतरण के दिन और उसके बाद राष्ट्रगान के विषय पर गवर्नरों के नाम तार के मसविदे पर बातचीत हुई। छोटा-सा संशोधन करके वाइसराय ने इस मसविदा पर सहमति दे दी।

वाइसराय की स्टाफ़ मीटिंगों के विवरण

67 वीं मीटिंग, 5 अगस्त, 1947

प्रकरण 1 : सत्ता के हस्तांतरण तिथि पर समारोह

(अ) संविधान सभाओं में समारोह

करी ने बताया कि 14 अगस्त को कराची में होने वाले समारोहों के विवरण के विषय पर वह जिन्ना के निजी-सचिव से विमर्श कर चुके थे। यह जाहिर था कि भारत में कहीं भी वाइसराय के लिए विशिष्ट सम्मान की सीट उपलब्ध रहेगी। मगर निजी-सचिव ने कहा कि चूंकि संविधान सभा एक सर्वसत्ताधारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
संगठन है इसलिए राष्ट्रपति को 'सीट ऑफ़ ऑनर' मिले। इस पर कोई क़ानूनी तर्क नहीं किया गया।

करी ने कहा कि 15 अगस्त को कराची में संविधान सभा में कोई समारोह रखने की मंशा नहीं था। ऐसा लग रहा था कि इस संदर्भ में 14 अगस्त को प्रमुख दिन माना जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि कराची संविधान सभा पर मुस्लिम लीग का झण्डा अभी से फहराया था।

लार्ड इस्मे ने अपनी राय देते हुए कहा कि यह स्पष्ट था कि इस अवसर पर वाइसराय दूसरी सीट ले ही नहीं सकते थे। उन्होंने सुझाया कि वाइसराय जिन्ना के नाम एक खत दें जिसमें उनके निजी-सचिव की ग़लतफ़हमी का ज़िक्र भी कर दें। इसके बाद भी अगर जिन्ना ज़िद करते हैं तो वाइसराय को संविधान सभा के समारोहों में शामिल नहीं होना चाहिए।

वाइसराय ने जानना चाहा कि 15 अगस्त के बाद जिन्ना का पाकिस्तान संविधान सभा का राष्ट्रपति बनना क़ानूनी तौर पर संभव होगा या नहीं। मौरिस जोंस ने अपनी राय देते हुए कहा कि कोई गवर्नर-जनरल उस 'संस्था' का राष्ट्र-पति नहीं बन सकता जिसे उसने खुद बुलाया हो। राव बहादुर ने कहा कि इस संदर्भ में जिन्ना जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं।

(ब) कराची का रात्रि भोज

करी ने यह भी बताया कि 14 अगस्त को कराची में राजा की सेहत का जाम पीने के लिए जिन्ना भोज देना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस भोज में वाइसराय और वाइसराइन को विशिष्ट सम्मान की जगह मिलेगी।

(स) कारें

वाइसराय ने कहा कि उनके पी० एस० वी० के दफ्तर की एक कार और उनकी अपनी रौल्स-रॉयस जिन्ना के लिए उपलब्ध करा दी जाए। कराची के समारोहों में शामिल होने के लिए उनकी ब्युईक कार के जाने के सवाल पर वाइसराय ने करी से एक बड़ी खुली कार की कोशिश करने को कहा और बाद में अगर ब्युईक के जाने का फैसला किया जाता है तो उसे फौरन लौटा दिया जाए।

वाइसराय की व्यक्तिगत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 16, 9 अगस्त, 1947**

(21) गांधी जी ने अपनी जिन्दगी अल्पसंख्यकों की देखभाल करते हुए पाकिस्तान में बिताने के निर्णय की घोषणा की है। इससे जिन्ना गुस्सा तो होंगे मगर कांग्रेस को काफ़ी राहत मिलेगी। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं, गांधी का प्रभाव बड़े पैमाने पर नकारात्मक या विध्वंसकारी होता है और एक ऐसे आदमी की ओर लक्षित होता है जिसके दोनों पैर जमीन पर टिके रहते हैं—वल्लभ भाई पटेल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(22) ज्योतिषी कहते हैं कि 13 और 15 अगस्त दोनों ही अशुभ हैं जबकि 14 तारीख शुभ है। सत्ता के हस्तांतरण की तारीख तय करने से पहले मुझे ज्योतिषियों से सलाह करने के बारे में किसी ने आगाह नहीं किया था। पर 14 तारीख की आधी रात संविधान सभा की मीटिंग बुलाकर उस शुभ घड़ी में ही सत्ता का हस्तांतरण तय करके इस बाधा को भी पार कर लिया गया।

वाइसराय की व्यक्तिमत रिपोर्टें

●●● **रिपोर्ट नं० 17, 16 अगस्त, 1947**

(55) 13 की रात को एक राजकीय भोज हुआ जिसमें 60 लोग आमंत्रित थे। इसमें यह बात स्वीकृत हो गई थी कि दो जाम होंगे और कोई भाषण नहीं होगा। यह बात सात बजे शाम तक पक्की भी हो गई थी। मगर जब जिन्ना ने अपनी जेब से आधा दर्जन टाइप किए हुए काग़ज़ निकाले तो मेरी हैरानी का अन्दाजा लगाया जा सकता है। उन्होंने भाषण दिया फिर राजा की सेहत का जाम पिया गया। बिना तैयारी के मुझे पाकिस्तान की सेहत के जाम का प्रस्ताव करते हुए बोलना पड़ा। इस भोज के बाद स्वागत हुआ जिसमें 1500 पाकिस्तान के मुख्य लोग आए थे। जिनमें कुछ अजीब 'जंगली' से लग रहे थे।

56. मैं मिस जिन्ना और बेग़म लियाक़त अली खां के बीच में बैठा था और वे दोनों दिल्ली में होने वाले आधी रात के समारोहों की यह कहकर मेरी खिल्ली उड़ा रही थीं कि इतने महत्त्वपूर्ण मामले में एक जिम्मेदार सरकार का ज्योतषियों का मार्ग-दर्शन लेना हैरत की बात है। मैं कहना चाहता था कि कराची का सारा कार्यक्रम सिर्फ इसीलिए बदलना पड़ा था क्योंकि जिन्ना रमज़ान के बारे में भूल गए थे और अपने ही सुझाए मध्याह्न के भोज को रात्रि के भोज में बदलना पड़ा था, लेकिन मैंने कहा नहीं।

●●●

62. 15 अगस्त निश्चित रूप से मेरी ज़िंदगी का सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रेरक दिन था। 8.30 सुबह लगभग 500 अधिकारी दर्शकों के सामने दरबार-हाल में शपथ ग्रहण करने के साथ सिलसिला शुरू हुआ। इन दर्शकों में रियासतों के शासक भी थे। इसके बाद सारे अधिकारी अतिथि गवर्नमेण्ट हाउस (भूतपूर्व वाइसराय हाउस) से जुलूस बनाकर काउंसिल चेम्बर की तरफ़ गए जिनमें राजदूत, राजे, और कैबिनेट के सदस्य भी शामिल थे।

63. जिन लोगों से मैंने बात की है उन्हें भी याद नहीं कि इतनी भीड़ पहले भी कभी जमा हुई थी। वे लोग छतों पर ही नहीं चढ़े थे, इतने ठसाठस भरे हुए थे कि उन्हें संभालना मुश्किल हो रहा था। सौभाग्य से काउंसिल चेम्बर में 100-100 आदमियों के दो गार्ड ऑफ़ ऑनर (आर० आई० एन० और आर० आई० एफ०) की व्यवस्था थी। वे 200 लोग पुलिस के साथ मिलकर भीड़ पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इतना काबू कर पाए कि हम लोग राजबग्घी से उतर पाए। वरना हमें बग्घी से बाहर खींच लिया जाता।

64. काउंसिल चेम्बर का समारोह बहुत गरिमापूर्ण रहा। मेरा भाषण भी अच्छी तरह सुना गया। प्रस्थान समारोह के लिए भारतीय सेना के दो 'गार्ड ऑफ़ ऑनर' और आने वाले थे। मैंने निर्देश दिया कि चारों 'गार्ड ऑफ़ ऑनर' काउंसिल चेम्बर में शस्त्र रख दें, फिर भीड़ को नियंत्रण में रखने की कोशिश करें। जब हम लौटने लगे तो लगा कि ये 400 आदमी भीड़ को पीछे नहीं रख पाएंगे। तब नेहरू छत पर चढ़ गए और भीड़ से रास्ता बनाने का अनुरोध करने लगे। किसी तरह चेम्बर का दरवाज़ा खोला गया और अपने स्टाफ़ से घिरे हम बग्घी की तरफ़ बढ़े।

65. उस थोड़ी-सी दूरी को पार करने में हमें आधा घंटा लग गया क्योंकि भीड़ में हम चींटी की चाल चल रहे थे। एक बार भीड़ की बाढ़ से हमें लगभग पांच मिनट रुकना पड़ा। 'जयहिंद', 'महात्मा गांधी की जय', 'पंडित नेहरू की जय' के बीच 'माउंटबैटन की जय', 'लेडी माउंटबैटन की जय' और 'पंडित माउंटबैटन की जय' के नारों से वातावरण गूंज रहा था।

66. लंच के बाद हमने रोशनआरा पार्क में हो रहे बाल मेले में जाने का कार्यक्रम बनाया। वहां जाना सफल रहा। हमारे आस-पास हजारों बच्चे जमा हो गए जो खुशी से चिल्ला रहे थे। हमसे हाथ मिलाने की कोशिश कर रहे थे। मुझे लगा कि कम से कम स्वाधीनता दिवस के एक उत्सव में अपनी वर्दी से निकलकर अनौपचारिक वातावरण में हमें आना चाहिए।

67. 6 बजे शाम को उस दिन का महान कार्य होना था—नई डोमिनियन के झण्डे की सलामी। इस कार्यक्रम में पहले यूनियन जैक का औपचारिक झुकाया जाना भी शामिल था मगर नेहरू से इस विषय पर बात करने के बाद पता चला कि अगर अंग्रेज़ यूनियन जैक को नीचे करने का बुरा मानते हैं तो ऐसा नहीं होगा क्योंकि उस दिन वह सबको खुश देखना चाहते हैं, यह भी कहा कि इसके अतिरिक्त साल में 12 बार डोमिनियन में यूनियन जैक फहराया जाएगा।

68. तीन सेनाओं की यूनिटों की परेड की व्यवस्था की गई थी, आदेश दिए गए थे, काफी दिनों से इसके रिहर्सल भी हो रहे थे और ऊंची जगहों पर सीटें भी बनाई गई थीं। मगर भीड़ पुलिस के काबू से बाहर थी। कुछ भारतीय अधिकारियों का अनुमान है कि लगभग 600,000 लोग वहां मौजूद थे, पर मुझे लगता है कि ढाई लाख से ज्यादा लोग वहां नहीं थे। जुलूस के रास्ते पर वह जमा थे। पत्नी सहित मुझे सुबह से भी बढ़िया स्वागत मिला।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

69. अगर हमारे अंगरक्षक और उनके प्रशिक्षित घोड़े न होते तो हमारा उतरना मुश्किल हो जाता। हमारे आगे धीरे-धीरे चलकर ग्रैण्ड स्टैण्ड और परेड के सामने उन्होंने भीड़ में से रास्ता बनाया। फिर भी, ग्रैण्ड स्टैण्ड दिखाई नहीं पड़ रहा था हालांकि रंग-बिरंगी पगड़ियों से पता लग रहा था कि भीड़ में सेनाओं की टुकड़ियां डूब गई थीं। मिलिट्री परेड का भी कहीं पता नहीं चल रहा था।

70. नेहरू अपना रास्ता बनाते हुए हमारी बग्घी में आए और खबर दी कि मेरी बेटी पैमिला सुरक्षित है। जॉर्ज एबेल (मेरे भूतपूर्व निजी सचिव) ने बताया, किस तरह भीड़ से घिर जाने पर नेहरू ने उसे बचाया था। पागलों की तरह इधर-उधर हाथ मारते हुए उन्होंने रास्ता बनाया, एक आदमी की टोपी उसके सिर पर दे मारी।

71. दिल्ली क्षेत्र के कमाण्डर, मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह, नेहरू और मैंने बात करके जल्दी से झण्डा फहराकर सलामी दागने के बाद लौट जाने का निर्णय लिया। इस तरह बाक़ी सारे कार्यक्रमों को रद्द करना पड़ा। अद्भुत आमोद-प्रमोद के बीच यह सम्पन्न हुआ। जैसे ही झण्डा खुला, आसमान पर एक इन्द्रधनुष निकल आया। लोगों ने इसे शुभ माना। इससे पहले मैंने कभी ध्यान नहीं दिया था कि नई डोमिनियन का जोगिया, सफेद और हरे रंग का झण्डा इन्द्रधनुष से कितना मिलता है।

72. इस दौरान किसी बड़ी दुर्घटना का खतरा इतना बढ़ गया था कि बेहतर यही था कि हमारी बग्घी धीरे-धीरे आगे बढ़े और भीड़ को अपने साथ लेती जाए। मैंने नेहरू से बग्घी में आने को कहा। वह स्कूली बच्चे की तरह सामने के हुड पर बैठ गए। उस दौरान जो शरणार्थी हमारी बग्घी के सामने बेहोश हो गए थे या पहियों के नीचे आ गए थे उन्हें निकाला जाने लगा। अंततः हमारी बग्घी में चार भारतीय स्त्रियां, उनके बच्चे, एक अंग्रेज अफ़सर की पोलिश पत्नी और एक भारतीय पत्रकार जमा हो गए। अंगरक्षकों ने धीरे-धीरे भीड़ में रास्ता बनाया फिर पूरी भीड़ हमारे पीछे-पीछे चलने लगी। इस प्रभावशाली दृश्य में लाखों लोग मौजूद थे, कई हज़ार हमारी बग्घी के साथ और तीन मील पीछे तक चल रहे थे। इन लोगों को गवर्नमेण्ट हाउस के फाटक पर पुलिस ने रोका।

73. उस दिन के बाद मैं जितने भी अंग्रेज या भारतवासियों से मिला, सबने यही कहा कि इतनी बड़ी भीड़ उन्होंने कभी नहीं देखी थी। मगर इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इस भीड़ ने जो स्वागत हमें दिया था वह उनके अपने नेताओं को दिए जाने वाले स्वागत से कतई कम नहीं था। यह बात अविश्वसनीय लगती है, मगर कल रात के भाषण में नेहरू ने इसका जिक्र करते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हुए कहा था कि दोनों देशों के भविष्य में अच्छे सम्बन्धों की यह शुभ सूचना है।

17 अगस्त की शाम को बम्बई से टेलिफ़ोन द्वारा हुई पुनर्वार्ता

अंग्रेज़ फ़ौज का प्रस्थान उत्साह से पूरा हो गया।

बम्बई में हमारा स्वागत दिल्ली से बेहतर हुआ। स्थानीय पुलिस के अनुमान से इस शहर के इतिहास में सबसे भारी भीड़ यहां जमा थी। हमारे रास्ते में कई लाख लोग थे जो बार-बार अपनी सीमा तोड़कर अपने दबाव से हमारी खुली कार को रोक रहे थे।

गवर्नमेण्ट हाउस में 'डॉक' और फिर प्रधानमंत्री की पार्टी तक कार में पहुंचने के दौरान प्रदर्शन अद्भुत थे। इस प्रदर्शन की कोई तैयारी नहीं हुई थी। अपने ढंग से लोग अपने आप अपनी खुशी ज़ाहिर कर रहे थे।

भीड़ नारे लगा रही थी 'इंग्लैण्ड जिन्दाबाद' और 'जयं इंग्लैण्ड।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नामानुक्रमणिका

अब्दुल्ला, शेख : 138
अली, मुहम्मद : 8, 97
आकिनलेक, फील्ड मार्शल : 46, 54, 69, 100, 102, 144, 163
आज़ाद, मौलाना अबुल कलाम : 149, 150
इस्मे, पग : 17, 19, 28, 37, 55, 56, 73, 81, 88, 90, 91, 98, 100, 102, 103, 104, 108, 109, 125, 129, 135, 161
ईडेन, राबर्ट एंथनी : 13
एबेल, सर जार्ज : 56, 74, 98, 100, 102, 106, 129, 130, 135
एटली, क्लेमेंट रिचर्ड : 12, 13, 15, 17, 18, 27, 28, 29, 45, 62
कराची : 70
करी, कर्नल डी० एच० : 58, 144, 164
कलकत्ता : 130, 131
कर्ज़न आफ़ क्रेडलैस्टन : 37
कालविल : सर जान ; 130
कामनवेल्थ : 55, 56, 57, 88, 97, 98, 100
कारफील्ड, सर कोनार्ड : 60, 137
कृपलानी, आचार्य जे० बी० : 42, 91, 92, 110
क्रिप्स, सर स्टेफ़ोर्ड : 13, 15, 16, 20, 29, 62, 90
क्रिस्टी, डब्ल्यू, एच० जे० : 139
क्रूम, कर्नल डी० एच० : 52
कैबिनेट मिशन योजना : 81, 83, 84, 85, 91, 95, 100, 102, 132
केरियप्पा, ब्रिगेडियर : 103
कैमरौन, जेम्स : 12
कैम्पबेल, जानसन : 13, 38, 59, 74, 140
कैरो, सर ओलैफ़ : 92, 104, 108, 109, 125, 126
कौर, राजकुमारी अमृत : 149
खान, अयूब : 46
,, , अली : 32
,, , डॉक्टर : 109, 126, 128
,, , बेगम लियाकत अली : 169
,, , लियाकत अली : 40, 47, 63, 84, 85, 86, 91, 95, 97, 100, 102, 105, 112, 120, 135, 161, 164
,, , राजा गजनफ़र अली : 120
,, , सर सिकन्दर हयात : 120
गांधी, मोहनदास कर्मचन्द : 8, 11, 29, 31, 40, 41, 42, 46, 50, 51, 65, 66, 67, 73, 80, 81,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

82, 91, 94, 110
चर्चिल, सर विन्स्टन : 24, 25, 27, 28, 53, 62, 63, 64, 65, 90, 91
जगजीवन राम : 68
जार्ज, छठा : 16, 29, 56, 57
जिन्ना, फ़ातिमा : 72, 169
,, , मुहम्मद अली : 9, 16, 21, 23, 29, 31, 35, 40, 41, 42, 47, 48, 50, 51, 52, 54, 63, 64, 65, 69, 70, 71, 72, 80, 81, 82, 84, 85, 87, 89, 90, 91, 92, 94, 102, 106, 110, 116, 126, 137, 162
जेनकिन्स : 104, 107, 108, 111, 112, 113, 116, 118, 125, 155
जोयेस : 140
टिवाना, नवाब मलिक खिजर हयात खां : 120
डिकी : 19, 20
डोमिनियन स्टेटस : 28, 55, 83, 87, 89, 97, 98, 100, 138
त्रिवेदी, सर चंदूलाल : 37, 87, 88
दरबार : 32
निश्तर, अब्दुर रबं : 91, 97,
नेहरू, जवाहरलाल : 6, 8, 11, 16, 29, 39, 40, 42, 43, 46, 50, 55, 58, 60, 72, 73, 85, 87, 88, 89, 90, 92, 94, 95, 100, 105, 106, 116, 117, 119, 125, 126, 135, 136, 137, 162
पंडित, विजय लक्ष्मी : 96
पटेल, एच० एम० : 97
पटेल, सरदार वल्लभ भाई : 8, 11, 35, 39, 40, 42, 43, 46, 50, 54, 85, 87, 92, 95, 97, 117, 119, 126, 135
पटियाला, महाराजा : 112, 113
पाकिस्तान : 44, 48, 51, 52, 54 69, 70, 71, 81, 98
पैथिक लारेंस : 106, 108
बंगाल : 69, 70, 132, 137
बरोज़, सर फ्रेडरिक : 36, 69, 132, 162
ब्रूस, मेजर जनरल : 113
ब्रॉकमैन : 17, 58, 59
भाभा, सी० एच० : 149
मथाई, जॉन : 149
ममदोट, इफ्तिखार हुसैन खां : 122
माउंटबैटन, पमीला : 58, 76, 171
,, , लार्ड : 7, 8, 10, 11, 12, 18, 30, 36, 45, 48, 61, 62, 70, 79, 80, 118
,, , लेडी : 14, 70
,, , एडविना : 11, 14, 32, 46,
मांकटन, सर वाल्टर : 140
मेइविल, सर एरिक : 85, 86, 90, 91, 99, 102, 103, 110, 112, 126, 130
मुडी, सर राबर्ट फ्रांसिस : 65
मेनन, कृष्णा : 38, 39, 55, 57, 58, 59, 60, 67, 69, 98, 100
मेनन वी० पी० : 32, 38, 39, 55, 56, 59, 60, 61, 67, 92, 94, 133, 135, 137, 161
रहमान, अब्दुर : 163
राजगोपालाचारी : 149, 150
राजेन्द्र प्रसाद : 72, 97, 150

राय, किरण शंकर : 86, 87
रैडक्लिफ़, सर सिरिल : 6, 68, 161
लससैलेस : 14
लिनलिथगो : 21, 30, 31, 63
लिस्टोवेल : 62, 63, 64, 114, 115. 152
विलियम्स, फ्रांसिस : 23
वैवेल : 15, 18, 19, 21, 23, 26, 29, 30, 33, 48, 110, 125, 126
सरस्फ़ील्ड : 130
सिक्खिस्तान : 111, 112
सुहरावर्दी, एच० एस० : 86, 87, 129, 130, 131, 133
सिंह, बलदेव : 85, 91, 92, 108, 111, 116, 117, 119, 163
,, ज्ञानी कर्तार : 108, 111, 115
,, तारा · 108, 111
स्मिथ, लोज : 113
स्पेन्स, सर जार्ज हेमिंग : 166
शिमला : 59, 60
हडसन, हेरी : 64
हबीबुल्ला, जनरल : 69
हाउज़ : 90
हैदरी, सर अकबर : 37, 129

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुद्रक: आई.बी.सी. प्रैस, शाहदरा दिल्ली-११००३२.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थायी महत्त्व की श्रेष्ठ पुस्तकें

विश्वविख्यात दार्शनिक डा० सर्वेपल्लि राधाकृष्णन् के अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त गौरव ग्रन्थ

हमारी संस्कृति : आज के विश्व में हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को साथ लेकर भी किस प्रकार से आधुनिक भावबोध के साथ कदम मिलाकर चल सकते हैं, इसका सही मार्ग दर्शाने वाली पुस्तक। 25.00

सत्य की खोज : धर्म और दर्शन के नये आयाम उजागर करने वाली पुस्तक। 16.00

रचनात्मक जीवन : रचनात्मक जीवन के कई पहलुओं पर नये विचार-सूत्रों का संकलन, जिनमें अन्य प्रश्नों का भी युक्तियुक्त विवेचन है। 15.00

भगवद्गीता : एक अद्भुत एवं उपयोगी टीका, जिसमें गीता के प्राचीन विवेक को नये रूप में हमारी आज की आवश्यकताओं के अनुकूल प्रकट किया गया है। 40.00

भारतीय संस्कृति : कुछ विचार : आधुनिक जीवन को प्रभावित करने वाली, धर्म तथा संस्कृति संबंधी अनेक विषयों पर प्रकाश डालने वाली कृति। 16.00

धर्म और समाज : नई विश्व-व्यवस्था में धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है, आदि महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का सम्यक् उत्तर देने वाली अत्यन्त विचारोत्तेजक पुस्तक। 30.00

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार 'अज्ञेय' की विशिष्ट पुस्तकें

'अपरोक्ष' (सात संवाद) : इन संवादों के साक्षात्कार के माध्यम से पूरे हिन्दी-साहित्य और भारतीय संस्कृति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। मूल्य : 35 रुपये

अद्यतन (निबंध और विचार) : नये विचारोत्तेजक निबन्धों का एक अनूठा संकलन। 20.00

युग संधियों पर : पत्रकार और चिंतक वात्स्यायनजी के ज्वलंत प्रश्नों से संबंधित विचारोत्तेजक लेखों का संकलन। 25.00

धार और किनारे : वर्तमान जीवन में बिखरी अनेकानेक समस्याओं—बाल-जगत्, अकादमी, शिक्षा, साहित्य, आधुनिकता—पर विचारोत्तेजक निबंध। 38.00

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान तथा लोकप्रिय उपन्यासकार गुरुदत्त के श्रेष्ठ उपन्यास

पिंजरे का पंछी : विचारोत्तेजक उपन्यास। 'पिंजरे का पंछी' में विद्वान लेखक ने धार्मिक संकीर्णताओं और उनसे प्रभावित दूषित राजनीति पर विभिन्न मतावलंबियों के माध्यम से विचार किया है। 25.00

धूप-छांह : जीवन के उजले-अंधेरे पक्षों के आधार पर लिखा गया अनोखा उपन्यास। 22.50

प्रवंचना : एक छोटे-से परिवार के माध्यम से भारतीय संस्कृति के संघर्ष की अनुपम कथा। 22.50

गिरते महल : एक बड़े परिवार के माध्यम से पूरे देश की स्थिति का चित्रण करने वाला उपन्यास। 22.50

सहज सगाई : दाम्पत्य जीवन की विचित्रताओं को लेकर लिखा गया लेखक का एक अनूठा उपन्यास जिसमें आधुनिक जीवन की विसंगतियां उभरकर सामने आती हैं। 18.00

निर्लेप : सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों को दर्शाने वाला नवीनतम उपन्यास 20.00

नदी तीरे : इस उपन्यास में जहां एक ओर एक दृढ़ निश्चयी युवती के अनोखे संघर्ष की अद्भुत कहानी दी गई है, वहीं हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का भी अनूठा विवेचन किया गया है। 22.50

जिंदगी : सामाजिक मनोभूमि पर लिखी गई एक पारिवारिक रचना। चरित्र और घटनाओं का अभूतपूर्व समन्वय। 32.00

लोकप्रियता के शिखर को छू लेनेवाली लेखिका शिवानी के अत्यन्त मार्मिक उपन्यास और कहानियां

कृष्ण वेणी : इस उपन्यास में एक ऐसी युवती के मन की पीड़ा को साकार किया गया है, जो भविष्यवाणी की दिव्यशक्ति से दूसरों में सम्मान पाती थी। 20.00

मेरी प्रिय कहानियां : शिवानी के सम्पूर्ण कथा-साहित्य में से लेखिका की सर्वप्रिय कहानियों का संकलन। 12.00

विषकन्या : संसार से अभिशप्त होकर मुंह छिपाती फिरती एक अनोखी युवती की रोचक कथा। 10.00

स्वयंसिद्धा : नारी को विभिन्न कोणों से उपस्थित करने वाली मर्मस्पर्शी कहानियां। 10.00

जालक : लेखिका के अपने जीवन, देश तथा समाज से सम्बन्धित अनूठे और दिलचस्प संस्मरणों का संकलन जो किसी उपन्यास से ज्यादा रोचक हैं। 18.00

माणिक : अविवाहिता बड़ी बहन के त्याग-तपस्या और फिर बाद में ऊपर आने वाली उसी नारी की यौन-कुंठा की अद्भुत कहानी। साथ में एक लघु उपन्यास 'तर्पण'। 12.00

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रथ्या : एक अल्हड़ मासूम ग्रामीण युवती की अन्तर के दर्द की कसक-भरी कहानी, जो कैबरे नर्तकी बन अत्यन्त वैभव के बीच भी रीती की रीती ही रहती है। 13.00

गैंडा : दो अंतरंग सहेलियों की अनोखी तथा मर्मस्पर्शी कथा। साथ में दो कहानियां। 12.00

झरोखा : उपन्यास और कहानियों से कहीं अधिक रोचक और अछूते संस्मरण, जो एक मार्मिक फिल्म की रीलों की तरह एक-एक कर खुलती-उघड़ती चली जाती हैं। 14.00

सुरंगमा : राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक सशक्त और साहसपूर्ण उपन्यास। 25.00

यात्रिक : विदेश-यात्रा के अनूठे संस्मरण 15.00

चल खुसरो घर आपने : एक शिक्षिता नारी का मनोविश्लेषण 20.00

उत्कृष्ट तथा बहुचर्चित कथा-साहित्य

सवित्तरी शैलेश मटियानी 15.00

इस उपन्यास में निम्नवर्गीय युवती सवित्तरी के जीवन की हृदयस्पर्शी कहानी है।

गोपुली गफूरन शैलेश मटियानी 25.00

एक हिन्दू स्त्री के मुसलमान औरत में परिवर्तित होने की संवेदनशील कथा। पाठक पाएंगे कि एक निहायत सामान्य आश्रयहीन और जाति-विपन्न औरत गोपुली का गफूरन बनना स्त्री का नदी बनते जाना है, जो सिर्फ आर्द्रा होती है। उदात्त नारी वृत्ति का मार्मिक और मनोवैज्ञानिक चित्रण।

चौखट द्रोणवीर कोहली 30.00

आधुनिक परिवेश में संश्लिष्ट असदृश मानसिकता वाले तीन केन्द्रीय पात्रों के आत्मीय एवं प्रगाढ़ सम्बन्धों की एक विलक्षण प्रेमकथा। 'चौखट' स्त्री-पुरुष के बीच की परिपाटीबद्ध, व्यवहार-सिद्ध प्रेम-कहानी नहीं, बल्कि इसका कथ्य अपनी परिधि में एक वृहत् संसार समेटे हुए है।

अकारण योगेश गुप्त 18.00

चुभती हुई भाषा और विचारोत्तेजक शैली में चित्रकार के जीवन पर लिखा गया एक सशक्त उपन्यास। उपन्यास में व्यक्ति की अपने प्रति निर्ममता की स्थितियों और उनके कारणों को वाणी दी गई है। आज के आर्थिक संकट और नैतिक मूल्यों पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

अनायास योगेश गुप्त 22.00

तीखी धार वाला यह उपन्यास समाज, शासन और पारस्परिक सम्बन्धों की विसंगतियों पर एक सशक्त व्यंग्य है। उपन्यास में आक्रोश है, किन्तु व्यर्थ की भाषणबाज़ी नहीं, पाठकों को कथा-रस प्राप्त होता है।

अपनी-अपनी यात्रा कुसुम अंसल 22.00

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भिन्न आदर्श और भिन्न जीवन-दर्शन की टकराहट के बीच जीवन के नवीन मूल्यों की खोज करने वाला मनोविश्लेषण-प्रधान उपन्यास ।

फ्री-लांसर शुभा वर्मा 25.00

फ्री-लांसर के रूप में साहित्यिक और पत्रकारिता का जीवन बिताने वाली युवती के जीवन-संघर्ष की अनूठी और यथार्थवादी कथा ।

पारू ने कहा था मणिका मोहिनी 9.00

दाम्पत्य जीवन की टूटन का सजीव सशक्त चित्रण ।

बीते हुए शुभा वर्मा 15.00

स्त्री-पुरुष के निजी जीवन की विविध समस्याओं की विशेषज्ञ श्रीमती शुभा वर्मा का दाम्पत्य जीवन को लेकर लिखा गया उत्तेजक उपन्यास ।

हे भानमती मणि मधुकर 20.00

आदमी की पीड़ा और संघर्षशीलता के कई आयामों का साक्षात्कार कराने वाली

झुनिया मिथिलेश्वर 16.00

ग्रामीण जीवन की जीवंत समस्याओं को लेकर लिखा गया एक मनोरम उपन्यास ।

भित्तिचित्र की मयूरी हिमांशु श्रीवास्तव 30.00

मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं का सूक्ष्म वर्णन करने वाला प्रतीकात्मक चरित्र-प्रधान उपन्यास ।

महानगर नरेन्द्रनाथ मित्र 18.00

एक ही परिवार के दो पीढ़ियों के पति-पत्नी की महानगरीय त्रासदी और उनकी वैचारिक टकराहट पर लिखा गया श्रेष्ठ उपन्यास ।

फेलूदा एंड कंपनी सत्यजित राय 18.00

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्म-निर्माता, लेखक और निर्देशक सत्यजित राय का मनोरंजक तथा व्यंग्यपूर्ण उपन्यास । बंगला में इसपर फिल्म का निर्माण भी हो चुका है ।

मल्लिका जरासंध 15.00

बंगला के बहुचर्चित उपन्यासकार जरासंध का एक मार्मिक उपन्यास, जिसमें एक ऐसी मां की करुण-कथा है, जो सामाजिक भय के कारण अपने नवजात शिशु की हत्या कर देती है ।

नंगे पैरों का सफर दलीपकौर टिवाणा 25.00

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत दलीपकौर टिवाणा की यह आत्मकथा प्रचलित ढंग का जीवन-चरित न होकर औपन्यासिक कृति की भांति आनंददायक है ।

बेगाने घर में मंजुल भगत 10.00

युवा पीढ़ी की चर्चित लेखिका मंजुल भगत का नई जमीन पर लिखा एक सशक्त उपन्यास ।

युद्धस्थल मिथिलेश्वर 22.00

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा 'अखिल भारतीय मुक्ति बोध पुरस्कार' से सम्मानित युवा कथाकार का सशक्त आंचलिक उपन्यास।

मेरी स्त्रियां मणि मधुकर 20.00

लेखक के सम्पर्क में आई विभिन्न क्षेत्रों की यादगार—स्त्रियों के माध्यम से भारत के सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचे पर प्रहार करने वाला सशक्त उपन्यास।

मुहब्बतनामा अमृता प्रीतम 22.00

लेखक, कवि, डाक्टर, चित्रकार, गायिका, अभिनेत्री, बनजारन आदि द्वारा मुहब्बत के संबंध में दिए गए अनेक निजी प्रश्नों के निजी और मार्मिक उत्तरों का मनोरंजक संकलन। उपन्यास से भी रोचक।

उनचास दिन अमृता प्रीतम 16.00

वर्तमान राजनीति के मुखौटेधारी व्यक्तियों के चेहरों को बेनकाब करने वाला एक विचारोत्तेजक उपन्यास।

ताकि सनद रहे रामकुमार भ्रमर 18.00

डाकू जीवन के अद्भुत चितेरे उपन्यासकार 'भ्रमर' का इसी जीवन पर नया रोमांचक उपन्यास।

पंखहीन तितली हंसराज रहबर 14.00

आधुनिकता के मोह में फंसी एक युवती के बंधनमुक्त जीवन को लेकर लिखा गया एक वैचारिक उपन्यास।

इसी का नाम दुनिया (उपन्यास) विमल मित्र 30.00

अनेकानेक भाषाओं में अनूदित बंगला के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार विमल मित्र की मार्मिक कृति। इसमें ह्रासोन्मुखी और दुहरे मानदंडों में जी रहे भारतीय समाज का जीवंत चित्र अंकित किया गया है।

तिरिया जनम (कहानी-संग्रह) मिथिलेश्वर 25.00

'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा 'अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार' से सम्मानित युवा लेखक मिथिलेश्वर की चुनी हुई कहानियों का संकलन, जिसमें नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है।

मन परदेसी (उपन्यास) कर्तारसिंह दुग्गल 25.00

जाने-माने कथाकार तथा नाटककार कर्तारसिंह दुग्गल की लेखनी से लिखा गया देश-विभाजन की पृष्ठभूमि पर आधारित मनोवैज्ञानिक उपन्यास। एक ऐसी नारी की मर्मकथा जो देह से एक देश में रहती है तथा मन से दूसरे देश में।

राजनैतिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथ

इन्दिरा गांधी कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' 15.00

भारतीय इतिहास के आधुनिक काल की सर्वाधिक चर्चित नारी तथा प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के अंतरंग जीवन की मनोरम झांकियां।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाई परमानंद और उनका युग प्रो० धर्मवीर 60·00

प्रस्तुत ग्रंथ भाई परमानंदजी का प्रामाणिक जीवन-चरित्र ही नहीं है, बल्कि बलिदानी वीरों की शौर्यगाथा है। हिन्दू-दृष्टि का यह एक मूल्यवान दस्तावेज है, तथ्यमूलक जीवंत इतिहास है। भारतीय स्वतंत्रता की कहानी इस ग्रंथ के बिना अधूरी है।

मेरी जेल डायरी चन्द्र शेखर 60.00

वन्दे मातरम् का इतिहास विश्वनाथ मुखर्जी 40.00

वर्षों के शोध और परिश्रम के बाद लिखा गया भारत के राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' का प्रामाणिक इतिहास।

निबन्ध एवं समीक्षा साहित्य

प्रश्नों के घेरे संपादक राजेन्द्र अवस्थी 40.00

पुरानी तथा नई पीढ़ी के सुप्रतिष्ठित और बहुचर्चित अनेकानेक साहित्यकारों के द्वारा दिए गए प्रश्नोत्तरों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का बेलाग चित्रण, शोधकर्ताओं, प्राध्यापकों और सुधी पाठकों के लिए उपयोगी ग्रंथ।

रोजनामचा इन्दु जैन व पुष्प धन्वा 35.00

राजनीति, साहित्य, धर्म, समाज, संप्रदाय, व्यक्ति, प्रेम आदि पर लिखे गए विचार तथा भाव-प्रधान निबंधों का अनूठा संकलन।

मीरा : एक अंतरंग परिचय डा० नीलिमा सिंह 30.00

इस पुस्तक में मीरा के जीवनवृत्त, भक्ति और काव्य के सम्बन्ध में नवीन समीक्षा दृष्टि के आलोक में मीराबाई के व्यक्तित्व और कृतित्व का पुनरालोचन किया गया है।

अन्य अभिनव कृतियां

कार्बेट नेशनल पार्क रामेश बेदी 50.00

नयनाभिराम आवरण, दर्जनों दुर्लभ चित्र और मानचित्रों से सुसज्जित पार्क के जीवजंतुओं की अनूठी कहानी। पर्यटकों के लिए अनमोल ग्रंथ।

मोर : हमारा राष्ट्रीय पक्षी रामेश बेदी 10.00

मोर से सम्बन्धित विविध जानकारी देने वाली रोचक तथा सचित्र पुस्तक।

प्रेम संसार डा० रतनकुमार जैन 32.00

प्रेम और दाम्पत्य संबंधों की आधुनिक और विज्ञान-सम्मत जानकारी देनेवाली एक महत्वपूर्ण पुस्तक। प्रेमोपहार देने के लिए उत्तम पुस्तक।

वे दिन वे लोग राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह 18.00

इतिहास के कई सुप्रसिद्ध लोकनायकों, शासकों और राजनेताओं के बारे में संस्मरणात्मक निबंधों का संकलन।

वेद-पुष्पांजलि (वेद-मंत्र) सत्यकाम विद्यालंकार 15.00

52 वेद-मंत्रों का सहज-सुगम भाष्य हिन्दी-पद्य में नयनाभिराम रूप-सज्जा में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रथम बार प्रस्तुत। भाष्यकार हैं, हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान तथा 'धर्मयुग' और 'नवनीत' के भूतपूर्व सम्पादक श्री सत्यकाम विद्यालंकार।

मेरी धारणाएं और दृष्टिकोण बलराज साहनी 11.00
दर्शन-सम्बन्धी प्रश्नों का पैनी दृष्टि से विवादास्पद विवेचन।

काव्य-संकलन

हिन्दी की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएं सं० बच्चन 30.00
पिछले दो वर्षों में सुप्रतिष्ठित और नवोदित कवियों द्वारा रचित श्रेष्ठ प्रतिनिधि कविताओं का संकलन।

हिन्दी की श्रेष्ठ प्रतिनिधि कविताएं : दूसरी पंखुड़ी सं० बच्चन 35.00
80 से ऊपर सुप्रतिष्ठित और नवोदित कवियों द्वारा रचित श्रेष्ठ कविताओं का अनुपम संकलन।

रूप और आवाज़ बच्चन 25.00
कवि की श्रेष्ठ कविताओं का एक महत्त्वपूर्ण संकलन।

तृष्णांकित कुसुम कुमार 20.00
विचार गांभीर्य और तत्त्वचिंतन के साथ गहन अनुभूतियों को शब्दों द्वारा सार्थकता प्रदान करने वाला अनुपम कविता-संग्रह।

उर्दू के लोकप्रिय शायर साहिर लुधियानवी 20.00
फिल्मी गीतों और उर्दू शायरी को नया मोड़ देने वाले अपने युग के सबसे अधिक लोकप्रिय शायर साहिर लुधियानवी की प्रसिद्ध गज़लों, फिल्मी गीतों और नज़्मों का अनूठा संग्रह। देवनागरी लिपि में प्रथम सर्वांगपूर्ण पुस्तक।

हंसिकाएं डॉ० सरोजनी प्रीतम 30.00
हास्य-व्यग्य की लघु कविताओं का सचित्र और अनूठा संकलन।

नाटक

विकल्प रामकुमार भ्रमर 8.00
लोकप्रिय उपन्यासकार रामकुमार भ्रमर का व्यंग्यप्रधान नाटक।

ययाति गिरीश कर्नाड 12.00
दो पीढ़ियों के संघर्ष का जीवंत चित्रण।

थैंक यू मिस्टर ग्लाड अनिल बर्वे 15.00
मराठी का हिन्दी में अनूदित आज का सर्वाधिक चर्चित नाटक, जिसमें एक नक्सलवादी कैदी ने अपने आदर्शवाद से एक निर्मम जेलर के चरित्र को ही बदल डाला।

पांचवां सवार बलराज पंडित 11.00
आधुनिक जीवन के छद्म और यंत्रणाओं को समान रूप से दर्शानेवाला एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तेजक नाटक जिसका कई शहरों में सफलतापूर्वक मंचन होता रहा है।

बैरिस्टर जयवंत दलवी 16.00

सामाजिक कुरीतियों और आधुनिकता के मोहजाल में फंसे चरित्रों को लेकर लिखा गया एक अनूठा नाटक।

खेल नहीं नाटक डा० लक्ष्मीनारायण लाल 12.00

अकादमी पुरस्कार विजेता डा० लक्ष्मीनारायण लाल के रंगमंच पर तहलका मचा देने वाले विचारोत्तेजक लघुनाटकों का अनूठा संकलन।

घास और घोड़ा गिरिराज किशोर 16.00

आज के समाज, कानून और न्यायालय पर चोट करने वाला सशक्त अभिनेय नाटक।

तमाशा रामकुमार भ्रमर 20.00

भ्रमर के उपन्यास 'कांचघर' पर आधारित महाराष्ट्र की लोकमंचीय शैली पर लिखा गया श्रेष्ठ अभिनेय नाटक।

इकतारे की आंख मणि मधुकर 12.00

मामा वरेरकर पुरस्कार से सम्मानित नाटककार मणि मधुकर का कबीर के जीवन पर आधारित युगबोध का नवीनतम नाटक।

दिल्ली ऊंचा सुनती है कुसुम कुमार 20.00

रंगमंच पर सफलता के साथ खेले जाने योग्य इस नाटक के माध्यम से समूचे देश में व्याप्त नौकरशाही, लाल फीताशाही और भ्रष्टाचार को अत्यधिक सशक्त ढंग से उजागर किया गया है।

संस्कार को नमस्कार कुसुम कुमार 20.00

तथा-कथित वर्तमान नेताओं की सुधार वादी मनोवृति पर एक सशक्त व्यंग्य।

State Museum Library * Lucknow *

सरस्वती विहार

जी० टी० रोड शाहदरा, दिल्ली-110032

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

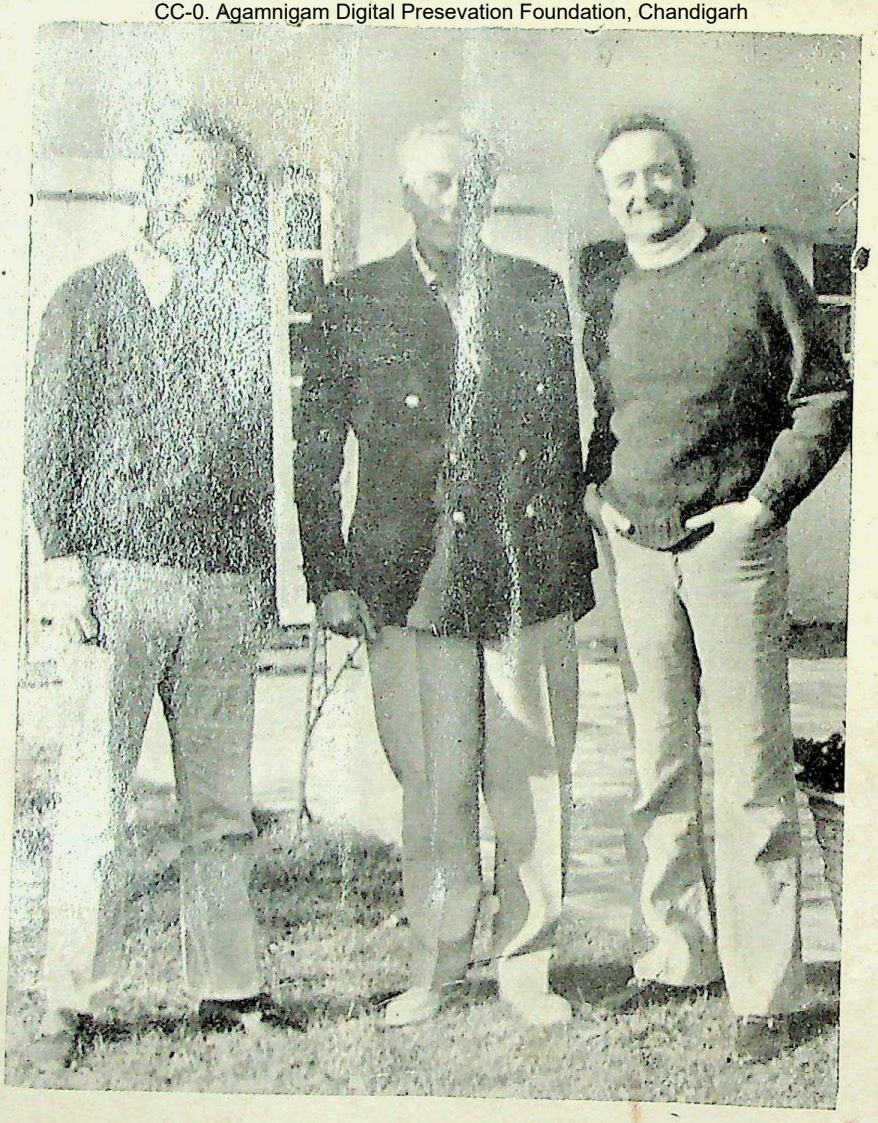

डोमिनीक लापियर, लॉर्ड लुई माउंटबैटन और लैरी कॉलिन्स

कॉलिन्स और लापियर ने अपनी पहली पुस्तक 'इज़ पेरिस बर्निंग' लिखने के लिए साथ-साथ काम किया था। उसके बाद 'ऑर आइ'ल ड्रेस यू इन मोर्निंग', 'ओ जेरुसेलम', 'फ्रीडम एट मिडनाइट' और 'फिफ्थ हार्समैन' शीर्षक पुस्तकें लिखीं जिनकी लाखों प्रतियां बिकीं, और कई भाषाओं में जिनके अनुवाद हुए, और अब वे कथा साहित्य और अन्य विधाओं की पुस्तकें लिखने में सबसे सफल लेखकों की जोड़ी के रूप में स्थापित हो चुके हैं।